विश्वास की वेदी पर

गनारायण श्रीवास्तव

रैरगपटल बुक डिपो, दिल्ली.

प्रकाशक
ओरिएण्टल बुक डिपो।
१७०४, नई सड़क, दिल्ली

मूल्य :
पांच रुपये पचहत्तर नए पैसे

मुद्रक
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस,
क्वीन्स रोड, दिल्ली।

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ, विद्वान् लेखक

तथा विचारक

भाई श्री परिपूर्णानन्दजी वर्मा एम. ए.

को

सस्नेह भेंट

—प्रतापनारायण श्रीवास्तव

पूर्वार्द्ध

प्राक्कथन

चीन के विश्वासघात की पृष्ठभूमि में प्रस्तुत उपन्यास की रचना हुई है, और इसके पात्र काल्पनिक हैं। कथानक कहाँ तक उसका यथार्थ चित्रण करने में सफल हुआ है, उसका निर्णय पाठक करेंगे।

जिस दूसरे महत्वपूर्ण विषय की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयत्न किया गया है, वह है मृत्योपरान्त चेतन तत्व का संघर्ष। वैज्ञानिकों की प्रयोगशाला में अभी स्थूल गत के प्राकृतिक उपकरण ही प्रवेश पा सके हैं और सूक्ष्म तथा चेतन तत्व उपेक्षित हैं। कुछ वर्षों पूर्व इंग्लैण्ड के स्वर्गीय सर आलीवर लाज तथा सर आर्थर कोनेन डायल ने वैज्ञानिकों को इस दिशा में अनुसन्धान करने की प्रेरणा दी थी, किन्तु उनकी चेष्टा विफल हुई। काशी विश्वविद्यालय के अवकाश प्राप्त आचार्य श्री आत्रेय वैज्ञानिक पद्धति से इस क्षेत्र में अनुसन्धान कर रहे हैं। प्राचीन भारत के तत्व-ज्ञानियों ने अपने अनुसन्धानों से जो निष्कर्ष निकाल कर समाज के सामने रखे थे, वे सम्प्रतिकालीन वैज्ञानिक कसौटी पर कसे न जा सकने के कारण उपेक्षित हैं तथा आज का वैज्ञानिक युग उन्हें कपोल कल्पना कहकर निरादृत करता है। प्रेतात्माओं का विषय यद्यपि कौतूहलवर्द्धक है, तथापि उनके सम्बन्ध में वैज्ञानिक रीति से अनुसन्धान करने की रुचि जाग्रत नहीं हुई। भारत में ही नहीं, वरन् पश्चिमीय देशों में भी मृतात्माओं से सम्बन्धित घटनाएँ घटित होती, देखी और सुनी जाती हैं, परन्तु ये वैज्ञानिक उन पर विश्वास नहीं करते, और उन्हें दृष्टिभ्रम बताकर टाल देते हैं। एक मृतात्मा से सम्बन्धित घटना मुझे अपने जीवन में साक्षात् देखने को मिली और उसी का चित्रण इस कथानक में कर भारतीय वैज्ञानिकों का ध्यान पुनः इस दिशा में आकृष्ट करने का मेरा क्षुद्र प्रयत्न है। घटना इस प्रकार है—

जोधपुर राज्य की सेवा करते हुए मेरा परिचय एक तपोनिष्ठ सात्विक

ब्राह्मण-गृहस्थ से हुआ, जिनका नाम रामदयाल था। वह प्रपंच रहित साधु स्वभाव के थे, और नियमित रूप से सब धार्मिक कृत्य करते, तथा अपने सत्याचरण के लिए विख्यात थे। उनके मुख पर ऐसा तेज प्रकट होता था, जो जनसाधारण पर उनकी सत्यनिष्ठा का प्रभाव डालता था। उनके साथ मेरी घनिष्ठता हो गई, और प्रायः धार्मिक विषयों पर चर्चा हुआ करती थी। सन् १९३४ में एक दिन दोपहर को मेरे पास आए और बोले कि उनका मँझला पुत्र रामसुख विचित्र बीमारी से ग्रस्त हो गया है। वह न किसी से बोलता है, और न किसी को कोई यन्त्रणा देता है—केवल पागल की भाँति भयंकर दृष्टि से देखता है, और किसी के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं देता। उन्होंने उसे देखने की प्रार्थना की, और मैंने सन्ध्या समय उनके घर आने को कहकर विदा किया। सन्ध्या समय उसको देखने पर मैंने उसी दशा में पाया। उसने मेरी उपस्थिति पर कोई ध्यान नहीं दिया, केवल विकराल दृष्टि से मेरी ओर देखता रहा। उसकी दृष्टि पागलों जैसी शून्य थी, तथा नेत्रों के कोए अँगारों की भाँति लाल थे। पूछने पर मालूम हुआ कि प्रत्येक एकादशी को पुष्कर तीर्थ के श्री रंगनाथ जी के मन्दिर में होने वाले कीर्तन में सम्मिलित होने का उसका नियम है, जिसका पालन वह कई वर्षों से कर रहा है। वह आज पुष्कर से इसी दशा में लौटकर आया है, और बिना कुछ खाए-पिए इसी भाँति लेटा हुआ है। लक्षणों से उन्माद रोग का निदान कर, और उसी का इलाज कराने का परामर्श देकर मैं चला आया। दूसरे दिन आकर उन्होंने बताया कि वह अब बिल्कुल ठीक हो गया है। अब इसके बाद उन्माद के दौरे आने शुरू हो गए, और दस-पन्द्रह दिनों के अन्तर पर उसकी दशा वैसी हो जाती थी, जैसा मैं देख आया था। मैंने उन्हें कई बार उसका समुचित उपचार कराने के लिए कहा, परन्तु वह उनको भगवान् की इच्छा कहकर टाल जाते और डाक्टरी इलाज के लिए जोधपुर नहीं गए। चैत्र सुदी नवमी को वह लगभग बारह बजे मेरे पास आए, और बोले—'आज एक विचित्र बात हुई है। वह यह कि आज प्रातःकाल रामसुखा को फिर दौरा आया और मैं उसे चारपाई पर लिटाकर अपने सन्ध्यो-

पासन के लिए बैठ गया। जब उससे निवृत्त हुआ, और रामनवमी की पूजा के लिए सामग्री एकत्रित कर रहा था, तब रामसुख अकस्मात् बोला—'पंडितजी, आज मेरे महाप्रस्थान का दिन है, मैं उसके पूर्व गीता सुनना चाहता हूँ।' मेरे पूछने पर कि महाराज आप कौन हैं, तो उत्तर दिया कि इसका उत्तर पीछे दूँगा, अभी मुझे गीता सुनाइए। मैंने कहा कि आज रामनवमी है, बारह बजे भगवान् रामचन्द्र का जन्म मनाया जाता है, उसके पश्चात् ही मैं गीता सुना सकता हूँ। वह इस पर राज़ी हो गए, और मैं सीधे आपको सूचना देने के लिए चला आया। अभी राम मन्दिर जाकर पूजन करता हूँ, फिर आप भी मेरे साथ चलकर देखिए।' मैं सहर्ष तैयार हो गया, राम मन्दिर में जन्मोत्सव मनाने के पश्चात् घर लौटते समय उन्होंने मुझे अपने साथ ले लिया। मैंने देखा कि रामसुख पहले जैसी अवस्था में पड़ा हुआ शून्य दृष्टि से छत की ओर देख रहा है। उसने मेरी उपस्थिति पर पुनः कोई ध्यान नहीं दिया। रामदयाल जी को देखते ही वह बोला—'आप पूजन कर आए, अब शीघ्र गीता सुनाने का प्रबन्ध कीजिए।' रामदयाल जी ने कहा—'महाराज, मैं संस्कृत पढ़ा-लिखा नहीं हूँ, इसलिए मूल श्लोकों के पढ़ने में अशुद्धि हो सकती है। यदि आप आदेश दें तो काशी में व्याकरण शिक्षित विद्याधर नामक ब्राह्मण को बुलाकर उससे आपको गीता सुनवा दूँ।' यह सुनकर वह बोला—'वह भ्रष्ट है—सत्पात्र नहीं है, उससे सुनने से मेरा कल्याण नहीं होगा। मैंने बहुत ढूँढ़कर आपको वरण किया है, आप ही सुनाइए।' रामदयाल जी प्रबन्ध में लग गए। एक चौकी पर विष्णु भगवान् का चित्र रखा। केले के बन्दनवार बाँधे, चौकी पूरी, और उसके बैठने के लिए आसन बिछाया, विधिवत् सब तैयारी कर उसको सुनने के लिए आमंत्रित किया। वह वेदी से काफी दूर था, किन्तु उसने उठकर वहीं से छलाँग भरी, और अपने आसन पर आ गया। मैं चकित होकर उसको देखने लगा। उसने बैठते ही कहा—'षोडसोपचार से पूजन कर गीता आरम्भ कीजिए। पूजन के समय उसके नेत्र भगवान् की मूर्ति पर स्थिर थे, और जब गीता-पाठ आरम्भ हुआ, वह एकटक रामदयाल को

देखने लगा। मैंने लक्ष्य किया कि उसके नेत्र जब तक पाठ चलता रहा, तब तक निमीलित एक बार भी नहीं हुए। पाठ समाप्त होते ही वह बोला—'महाराज, आपकी कृपा से इस योनि से छुटकारा होते समय मुझे यथार्थ ज्ञान प्राप्त हुआ। मैं मेड़ता का रहने वाला उदयचन्द्र नामक दायमा ब्राह्मण हूँ। मेरी व्यभिचारिणी स्त्री ने मुझे विष खिलाकर मेरी हत्या की थी। मेरे कोई सन्तान नहीं थी और उसने मेरी आत्मा की शान्ति के लिए कोई शास्त्रोक्त उपाय नहीं किया, क्योंकि विष खिलाने के पश्चात् वह अपने प्रेमी के साथ भाग गई थी। तब से मैं इस प्रेतयोनि में भटक रहा हूँ। जब मुझे मालूम हुआ कि इस योनि से छुटकारा पाने का समय आ गया है, तब से मैं किसी सत्पात्र की खोज में था, जो गीता सुनाकर सद्ज्ञान करावे, जिससे मैं निर्दिष्ट मार्ग पर जा सकूँ। मैंने आपके पुत्र को इस योग्य पाया कि मैं सहज ही उसके शरीर में प्रवेश कर सकता हूँ, और इसके माध्यम से आपसे गीता सुनने का निश्चय किया। इस योनि में रहने की अवधि अभी पूर्ण नहीं हुई थी इसलिए मैंने पहले कोई फिक्र नहीं किया, किन्तु बार-बार इसके शरीर में प्रवेश कर इसको अपना भार सहन करने के योग्य बनाता रहा। मैंने किसीको किसी प्रकार की यन्त्रणा नहीं दी, और न इस बालक को कभी सताया। आपकी दक्षिणा मुझको देनी है। मेरा मेड़ता का घर गिर गया है, और उसमें कोई नहीं रहता, किन्तु उसकी एक कोठरी बची है। उसकी चौखट के नीचे एक हाथ की गहराई पर एक ताँबे के कलश में कुछ चाँदी तथा सोने की मुद्राएँ रखी हैं। आप जाकर उन्हें निकाल लीजिए। मैं वह सब धन आपको दक्षिणा में प्रदान करता हू।'

रामदयाल जी ने हाथ जोड़कर निवेदन किया कि उन्हें उस द्रव्य की कोई आवश्यकता नहीं है। वह इतने से सन्तुष्ट हैं कि उसका कल्याण हुआ, और प्रार्थना की कि वह उनके पुत्र को पुनः कभी न सतावे।

उसने उत्तर दिया—'मेरा काम सिद्ध हो गया, मैं महाप्रयाण कर रहा हूँ, और यह इतना शुद्ध चरित्र वाला प्राणी है कि कोई दूसरी दुष्ट प्रेतात्मा इसके समीप नहीं आ सकती, जब तक वह मेरे ही समान शुद्ध भावनायुक्त

नहीं होगी। धन-धान्य से पूर्ण यह सुखी जीवन व्यतीत करेगा। अच्छा, मैं अब प्रस्थान करता हूँ।'

इसके पश्चात् उसने तीन बार 'हरिशरणम्', 'हरिशरणम्', 'हरि-शरणम्' कहा, और वेदी के सम्मुख साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करता लेट गया। रामसुख थोड़ी देर अचेत रहा, फिर उठकर बैठ गया, तथा चारों ओर चकित होकर देखने लगा। मेरे पूछने पर कि उसे क्या अनुभव हुआ, उसने उत्तर दिया कि उसे कुछ याद नहीं है।

इसके पश्चात् मैं सन् १६४८ तक जोधपुर में रहा, किन्तु वह प्रेतात्मा पुनः रामसुख के शरीर में प्रविष्ट नहीं हुई, और विद्याधर के सम्बन्ध में जैसा उस प्रेतात्मा ने कहा था, वह दुर्व्यसनी तथा कुमार्गगामी देखने में आया। मैं स्वयं प्रेतात्माओं पर विश्वास नहीं करता था, किन्तु इस घटना से मेरे विश्वास में संदिग्धता एवं शिथिलता ने अवश्य घर कर लिया। वस्तुस्थिति के सम्बन्ध में उस समय तक कुछ नहीं कहा जा सकता जब तक वैज्ञानिक अनुसन्धान नहीं होते। वैज्ञानिकों के लिए यह विषय सर्वथा उपे-क्षणीय नहीं है। यदि पाठकों का ध्यान इस दिशा में गया, तो मैं अपना प्रयास सफल समझूँगा।

१०४ ए/१८४ रामबाग, — विनीत

कानपुर — **प्रतापनारायण श्रीवास्तव**

७-२-६०

१

ब्रजमोहन का हृदय काँप रहा था। उसे साहस नहीं हो रहा था कि वह मंजुला के कमरे का द्वार खटखटा कर उसे जगाए। वह द्वार-सन्धि पर कान लगा कर भीतर की आहट लेने लगा। भीतर घोर शान्ति छाई थी—मंजुला के साँस लेने की आहट भी नहीं मिलती थी। क्षण भर के लिए वह स्तब्ध-खड़ा रहा, फिर किवाड़ों पर लगे हुए पीतल के कड़ों को घुमाने-फिराने लगा। उसे भय था कि यदि मंजुला की नींद टूट गई तो उसे उसके भयानक रोष का सामना करना पड़ेगा, और दंड-स्वरूप न मालूम उसे किस भाँति अपमानित होना पड़े।

इसी हैस-बैस में उसे सुनाई पड़ा—'बिरजू, क्या मंजू नहीं उठी?' प्रश्न करने वाले मंजुला के पिता कर्नल वेदप्रकाश सहगल थे।

ब्रजमोहन अर्थात् बिरजू की दशा इस प्रश्न के बाद लगभग वैसी ही हो गई जैसे साँप की छछूंदर के पकड़ने पर होती है।

उसने अपने बिखरे हुए साहस को एकत्रित किया, और धीमे स्वर में पुकारा—'मिस साहिबा! मिस साहिबा!'

मंजुला की नींद तो टूट गई थी, किन्तु अलसाई पड़ी थी। खुमारी से उसके शरीर के अवयव दुःख रहे थे, और सिर में मीठा-मीठा दर्द हो रहा था। ब्रजमोहन का स्वर पहचानते हुए भी उसने तीव्रता से कहा—'डेविल, हू आर यू?' (शैतान, तू कौन है?)

ब्रजमोहन उसका तीक्ष्ण स्वर सुनते ही चौखट को पकड़ कर दुबक गया। उसे कुछ कहने का साहस नहीं हुआ। पश्चिमीय सभ्यता को आपाद-मस्तक अपनाए हुए भारतीय परिवार में जब से उसने होश संभाला, तब से वह उसमें पल रहा था। फौजी हिन्दी मिश्रित अँग्रेजी भाषा से वह भली-भाँति परिचित था, और वस्तुतः उसको उसी का ज्ञान अपने आदि जीवन

में हुआ, किन्तु कर्नल सहगल की कृपा से कुछ वर्षों तक उसने स्थानीय स्कूल में भी शिक्षा पाई थी, और इसलिए हिन्दी भाषा का कुछ ज्ञान भी था। 'डेविल' शब्द सुनकर उसे कुछ चोट पहुँची, उसके मुख से अनायास निकल गया—'इस घर में सोकर उठने पर 'भगवान' नहीं, 'शैतान' का नाम लिया जाता है।' किन्तु उसका स्वर इतना धीमा था कि उसी ने स्वयं अपने कथन को सुना, और फिर भय-विह्वल दृष्टि से अवरुद्ध कपाटों की ओर देखने लगा।

मंजुला प्रश्न पूछ, करवट बदल कर नींद का आह्वान कर रही थी।

इसी समय कर्नल साहब ने पुनः पुकारा—'बिरजू! मंजू को उठाया या नहीं? कुछ जवाब ही नहीं देता! अजीब शैतान का बच्चा है!' अंतिम शब्दों को कहते-कहते उनकी दृष्टि सामने लगे हुए दर्पण पर अनायास पड़ गई। उसमें अपनी प्रतिच्छवि देखकर उनको किसी अतीत घटना की स्मृति हो आई, और उनके मन ने कसकर चिकोटी काटी। वह तिलमिला कर उस उठते हुए ग्लानि के आवेश को उष्ण चाय के घूंट से दबाने का प्रयत्न करने लगे।

इधर ब्रजमोहन अनिश्चित-सा खड़ा था। कर्नल साहब के क्रोध का वह भली भाँति भुक्त-भोगी था। उसने पुनः साहस एकत्रित किया, और मंजुला की झिड़कियों को कर्नल साहब के क्रोध के समक्ष कम समझ कर वह उसे पुनः पुकारने वाला ही था कि भीतर की घड़ी ने समय की सूचना देना आरंभ कर दिया। वह चुप होकर घड़ी के घंटों की पुकार सुनने लगा—घड़ी ने एक एक करके दस बजाए।

मंजुला की झपकी को आघात पहुँचा, उसने पुनः करवट बदली, और सक्रोध कहा—'इस डेविल घड़ी ने सोना मुहाल कर दिया। आज ही इसको इस कमरे से हटाती हूँ। टनटन करके परेशान कर दिया। बिरजू, ओ बिरजू!'

ईश्वर ने मुँह माँगी मुराद पूरी की। कपाटों से चिपके हुए बिरजू ने उत्तर दिया—'जी, मिस साहिबा!'

मंजुला को यह आशा न थी कि विरजू इतनी शीघ्रता से उत्तर देगा। उसने चिढ़ कर पूछा—'क्या तू गया नहीं ? तब से यहीं खड़ा है ?'

'जी, मिस साहिबा, आपके लिए टेलीफोन है।'

'टेलीफोन ! किसका टेलीफोन है ? कौन डेविल सुबह-सुबह आ मरा !'

'जी, बड़े हुजूर कर्नल साहब ने मुझे आपको जगाने का हुक्म दिया, और कहा कि कह दो कि कैप्टन नायर टेलीफोन पर बुलाते हैं !'

'ओह, वह डेविल कैप्टन नायर है। तू जाकर जवाब देदे कि मिस साहिबा अभी सोकर नहीं उठीं; एक घंटे बाद फोन करना।'

'जो हुक्म मिस साहिबा, लेकिन टेलीफोन के पास तो बड़े हुजूर कर्नल साहब बैठे हुए हैं।'

'जाता है या नहीं ? ज्यादा बकवास करेगा तो मार खायगा। जो मैं कहती हूँ वह जाकर कह दे। अभी ठीक से सुबह भी नहीं हुई, कैप्टन जान खाने लगा। बड़ा बदतमीज़ है। डैडी ने इस बेहूदे को मेरा बर होने के लिए चुना है ! अजीब चुग़द है। इसको यह भी नहीं मालूम कि शरीफ घरों में दस बजे के पहले सुबह नहीं होती है। भला ऐसे बंदर के साथ मेरा निर्वाह हो सकता है ! मैं इसको फेल करती हूँ। ऐसी तमीज़दारी से वह हरगिज़ मेरा बर होने योग्य नहीं है।'

ब्रजमोहन उसकी बड़बड़ाहट सुन रहा था। वह चुपचाप चला जाना चाहता था, किन्तु दुर्भाग्य से उसका हाथ कपाटों पर लगे हुए कड़ों से टकरा गया। कड़े खड़खड़ाए। मंजुला ने उसे सुनते ही क्रुद्ध स्वर में पूछा—'अभी तक गया नहीं, खड़ा हुआ सुन रहा है। बदमाश कहीं का ! इस गुस्ताख़ी का तुझे अभी मज़ा चखाती हूँ।' कहते-कहते वह पलंग पर से कूद पड़ी और एक ही छलांग में द्वार के पास पहुँचकर उसे खोल दिया, और बाहर झाँकने लगी। बरामदे के दूसरे सिरे पर ब्रिरजू तेजी से भागता हुआ उसे दिखाई दिया। अपनी धमकी का प्रभाव देखकर उसे कुछ सन्तोष हुआ। रोष भी कुछ मन्द पड़ा। उसने उसका पीछा नहीं किया, बल्कि अपने कमरे में पुनः द्वार को बन्दकर आ गई। उसने अँगड़ाई ली, और सामने के दर्पण

में अपनी छवि देखने लगी। कई बार अपनी आँखों को चलाकर उसने क्रोध, विद्रूप, लज्जा, हास्य आदि की भंगिमाएँ कीं, और फिर खिलखिला कर हँस पड़ी। जी भरकर हँस लेने के बाद उसने कहा—'मंजुला, तू वाक़ई, बहुत सुन्दर है। तेरा एक-एक अंग साँचे में ढाला गया है। तू अपने इस रूप के बलपर हरएक आदम के लड़के पर हुकूमत कर सकती है। आदम के बेवकूफ़ लड़के तेरे तलवे चाटने में अपनी किस्मत को दाद देंगे। तू उन्हें बन्दर की तरह नचा सकती है। इसी रूप ने तुझे 'मिस दिल्ली' बनाया है, और जब अगले साल तू आल-इण्डिया चुनाव में भाग लेगी, तब तू निश्चय ही 'मिस इंडिया' बन जायगी, और यदि तू आगे बढ़ी तो 'मिस यूनीवर्स' भी हो सकती है। ग्रैनी सच ही कहती हैं कि हौवा की औलाद लड़की अपनी खूबसूरती की ताक़त से दुनिया जीत सकती है। इतिहास इसका साक्षी है। मिस्र की रानी क्लिउपेट्रा, और यहाँ की नूरजहाँ ने अपने इस नायाब तोहफ़े की ताकत से दुनिया पर हुकूमत की है। क्या तू नहीं कर सकती है, मंजू ?"

यह कहकर मंजुला अपने रूप पर स्वयं मुग्ध होती हुई मुस्कराई। अपनी प्रतिच्छवि को निरखती हुई वह अपने शरीर के विविध अंगों पर हाथ फेर कर मन को चैतन्य करने लगी।

इसी समय द्वार पर थाप पड़ी। उसे सन्देह हुआ कि बिरजू फिर आकर कुछ कहना चाहता है। उसने झिड़क कर कहा—'डेविल, फिर परेशान करने को आ गया ? भाग जा, नहीं तो······। अच्छा, ठहर तो देखूँ, तू कितने कोड़े सह सकता है।' कहते-कहते उसने खूँटी पर टँगे हुए कोड़े को उतार कर द्वार खोल दिया। कुछ कहने जा ही रही थी कि सामने अपने पिता को देखकर क्षण भर के लिए वह स्तब्ध हो गई, फिर हँसकर कहा—'डैडी आप हैं। मैंने समझा था कि बिरजू है। वह आजकल बहुत बड़ा 'स्काउन्ड्रेल' (दुष्ट) होता जा रहा है। मुझे ठीक से आज उसने सोने नहीं दिया।'

कर्नल साहब चुपचाप कमरे के अन्दर आ गए, और एक उड़ती हुई दृष्टि कमरे में डालते हुए बोले—'मंजू, तू बहुत देर तक सोने लगी है ?'

'देर तक सोती हूँ ! यह आप क्या कहते हैं डैडी ? अभी तो सुबह ही हुई

है। ग्रैनी कहती हैं कि शरीफ घरों में रात्रि के दस बजे शाम होती है, और दिन के दस बजे सुबह।'

'यह नियम बच्चों के लिए नहीं, बड़ों के लिए है।'

'मैं अब बच्ची तो नहीं हूँ, डैडी! सत्रह-अट्ठारह वर्ष की हूँ और एम० ए० में पढ़ती हूँ। क्या अब भी मैं नन्हीं-सी बेबी हूँ।' मंजुला ने इस भावभंगी से कहा कि कर्नल साहब की गंभीरता उनकी हँसी के प्रवाह में बह गई।

कर्नल ने प्रेम से उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा—'अपनी समझ से तुम चाहे भले ही बड़ी हो गई हो, लेकिन मेरी नज़रों में तुम वही बात-बात में रूठने व इठलाने वाली बेबी हो। लेकिन मैं मंजूर करता हूँ कि तुम इतनी बड़ी हो गई हो कि तुम्हारी शादी कर दी जाय, और इसी का प्रबन्ध कर रहा हूँ। कैप्टन नायर......।'

मंजुला ने उन्हें आगे बोलने नहीं दिया। उनकी बात काटती हुई बोली—'डैडी! उस बूर (वहशी) का नाम न लीजिए। सुनते ही दिमाग दर्द करने लगता है। मैं उससे हरगिज़ शादी नहीं कर सकती।'

'यह कैसी ना-समझी की बात कह रही हो, मंजू! कैप्टन नायर बड़ा होनहार जवान है। उसके वाल्दैन भी बड़े अमीर हैं और उनका पुराना खानदान है। उसके पिता ज्वालासिंह को विक्टोरिया क्रास मिल चुका है और ब्रिटिश हुकूमत में तो उनका जितना बोलबाला था, उतना किसी हिन्दुस्तानी फौजी का नहीं था। उनकी इतनी बड़ी कोठी है कि हमारे सात बंगले उसमें समा जायें। खान्दान के हरएक आदमी के पास अपनी कारें हैं। उनकी कोठी को तो तुमने देखा ही है, उसमें भीतर-बाहर कैसी सजावट है। सबसे ज्यादा अहम बात यह है कि वह एकलौता बेटा है—सारी जायदाद का अकेला मालिक। एक बहिन है तो क्या, शादी होने के बाद वह अपने घर चली जायगी।'

मंजुला कुछ सोच में पड़ गई। उसको विचार में देखकर वे उत्साह के साथ कहने लगे—'वाल्दैन का यह पहला फर्ज है कि वह अपनी औलाद के लिए सारे सुखों का सरञ्जाम करे, और मंजू, सब सुखों की जड़ दौलत है।

दौलत है तो सब कुछ है, क्योंकि उसके जरिए सभी प्रकार के सुखों के साधन जुटाए जा सकते हैं। दरिद्रता से बढ़कर अभिशाप कोई दूसरा नहीं है। बल्कि मेरा तो विचार है कि वह सब पापों की जड़ है। इतना तो मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि अर्जुनसिंह दरिद्र नहीं है। उसका भविष्य भी बड़ा उज्ज्वल है। कमीशन मिलते ही वह कैप्टन हो गया है। उससे सभी फौजी अफसर खुश हैं। उत्साह और साहस उसमें कूट-कूटकर भरा है। वह पैदायशी अफसर है। अपने अधीन जवानों को वह हर तरह से सन्तुष्ट रखता है। वे उसपर अपनी जान न्योछावर करने को तैयार रहते हैं। ऐसे अफसर, जिनसे ऊपर के अफसर और मातहत सभी एक-से खुश हों, मिलते ही नहीं। कैसा आकर्षक उसका चेहरा है, कैसा चुस्त गठा हुआ उसका शरीर है, और सबसे बड़ी बात है उसकी खुश अखलाकी, दानिशमन्दी, देवताओं जैसा तेज, जिससे उसका चेहरा हमेशा दमदम करता रहता है।'

'डैडी, आप तो उस बूर को फरिश्ता बना रहे हैं। आप उसकी तारीफ क्यों कर रहे हैं, जैसे मैं बिल्कुल हेच और ना-चीज हूँ, जैसे मेरी कोई हैसियत ही नहीं है।' कहते-कहते उसका अभिमान आँखों से छलकने लगा।

'यह मैं कब कहता हूँ कि तुम उसके मुकाबले में किसी तरह कमजोर हो, बल्कि ऐसी बात कोई कहे तो मैं उसे गोली मार सकता हूँ। तेरे मुकाबले की लड़की करोड़ों में शायद ही मिले। तेरे लायक बर ढूंढ़ने में तो हम सब बहुत अरसे से परेशान हैं। अब कहीं जाकर हमारे मन लायक बर मिला है, लेकिन न मालूम तुझे वह क्यों नापसन्द है?'

'कह तो दिया वह जंगली है, उसे नहीं मालूम कि शरीफजादियों से दस बजे से पहले नहीं मिला जाता।'

कर्नल साहब की हँसी से कमरा प्रतिध्वनित हो गया। उन्होंने हँसते हुए कहा—'अब मालूम हुआ कि मेरी लाडली क्यों कैप्टन से नाराज है। मैं तो इसको बड़ी खुश-किस्मत समझता हूँ कि सुबह होते ही वह तेरी याद करता है। इससे साफ जाहिर है कि तूने उसके दिल में घर बना लिया है। जब मैंने बिरजू के कहने से उससे टेलीफोन पर कहा कि मंजू अभी तक सोकर नहीं

उठी तो यह सुनते ही उसकी घबराहट साफ टपकने लगी। उसने बड़े चिन्तित स्वर में पूछा—'ज़रा देख लीजिए कि कहीं उसकी तबियत तो खराब नहीं है। अक्सर उसे सिर दर्द हो जाया करता है। आप लोग उसका इलाज नहीं करते। पता लगाकर मुझे फोन करें, मैं फोन पर ही बैठा हूँ। देखा, अभी से वह तेरे लिए कितना चिन्तित है।' कहते-कहते उनका मुख प्रदीप्त हो उठा।

'आपकी तो कोई ज़रा-सी खुशामद कर दे, आप पानी-पानी हो जाते हैं।' कहते-कहते उसने तिरछी चितवन से अपने रूप को पुनः दर्पण में देखा, मानो वह कह रही हो—'मेरा रूप ही ऐसा है, इसमें आश्चर्य की बात क्या है?'

'इसमें खुशामद की क्या बात है? अपनी मँगेतर के लिए चिन्तित होना स्वाभाविक है। अच्छा तुम गुस्ल करो, मैं टेलीफोन से उसे सूचित करता हूँ कि तुम बिल्कुल स्वस्थ हो। अरे हाँ, क्या तुझे अक्सर सिर-दर्द रहा करता है?'

'नहीं डैडी, मैं भली चंगी हूँ। यही तो उसकी खुशामदी बातचीत है। आप निहायत भोले हैं। यदि वह यह नहीं कहता तो फिर वह आपका प्रिय पात्र कैसे बनता? झूठ-मूठ उलाहना देकर उसने आपके दिल में और ज्यादा जगह बना ली।'

यह कहकर मंजुला हँसती हुई बाथरूम में घुस गई। कर्नल सहगल क्षण भर वहीं खड़े रहकर अपनी पुत्री की तीक्ष्ण बुद्धि की मन ही मन सराहना करते रहे, फिर सन्तोष के साथ मुस्कराते हुए चले गए।

बिरजू अर्थात् ब्रजमोहन द्वार पर खड़ा हुआ पिता-पुत्री का आलाप सुन रहा था। जहाँ उसने बाथरूम के द्वार बन्द करने का शब्द सुना, वह वहाँ से तेज़ी से चल दिया। कर्नल साहब जब मंजुला के कमरे से निकले, उसके सामने का बरामदा खाली था। उन्हें नहीं मालूम हुआ कि कोई उनकी बातचीत सुन रहा था।

२

प्रातः सज्जा के पश्चात् जब मंजुला अपने कमरे से बाहर जाने लगी, तब घड़ी ने साढ़े ग्यारह बजने का एक घंटा बजाया। मंजुला क्षण-भर के लिए रुक कर, उसकी ओर वक्र-दृष्टि से देख कर बुदबुदाने लगी—'यह घड़ी भी अजीब अहमक़ है—ज़बरदस्ती सिर पर चढ़ कर अपनी बात सुनाती है। इसकी बात वह सुने जिसको समय की परवा हो। समय मेरे लिए है, मैं समय के लिए नहीं हूँ। कैप्टन बेचारा, टेलीफोन के पास बैठा 'बोर' हो रहा होगा। मैं इसके लिए जवाब-देह नहीं हूँ। इतना तो ज़रूर है कि वह कुछ थोड़ा-सा 'ब्रूट' है, बाकी सब बातें ठीक हैं। पैसा तो कुछ थोड़ा-बहुत है ही, शक्ल-सूरत देखकर मन में मतली पैदा नहीं होती—इतनी ही ग़नीमत है, वरना ऐसे बहुत हैं जिनके जिस्म से घोड़े की लीद की बदबू निकलती है—कहीं भूल से यदि उनके जिस्म से लगती हुई हवा सूँघने में आ गई तो तबियत मिचलाने लगती है। आदम की औलाद में बेशक हैवानों की ख़ूसूसियात मौजूद हैं।' कहती हुई मंजुला खिल-खिलाकर हँस पड़ी।

कमरे के बाहर निकलते ही उसकी दृष्टि बिरजू पर पड़ी। उसकी हँसी थम गई। उसने भ्रू-कुञ्चित करते हुए कहा—'फिरकी की तरह तू घूमा ही करता है, या कुछ काम-काज भी करता है?'

'हुज़ूर मिस बाबा, टेलीफोन पर बार-बार वह आपको बुला रहे हैं।'

'कह नहीं दिया कि मिस बाबा अभी ग़ुस्ल करता है?'

'हुज़ूर, कहा था, लेकिन हर दो मिनट के बाद पूछते हैं?'

'उफ़! कैसा ब्रूट है— एकदम वहशी, जंगली, ईडियट।' कहती हुई वह टेलीफोन के कमरे की ओर तेज़ी से चल पड़ी।

बिरजू मुस्कराता हुआ मंजुला के लिए प्रातकलेवा का प्रबन्ध करने चला गया।

मंजुला ने देखा कि उसकी माँ टेलीफोन के द्वारा किसी से बातचीत कर रही है—वह कह रही थी—'बेटा, घबड़ाने की कोई बात नहीं है। मंजू की तबियत बिल्कुल ठीक है। वह हाथ-मुँह धोकर अभी आती है। कल रात उसको शायद नींद नहीं आई······।' वह यह कह ही रही थी कि मंजुला ने झपट कर टेलीफोन का चोंगा उनके हाथ से छीन लिया।

वह अवाक् होकर उसकी ओर देखने लगी।

मंजुला तीक्ष्ण स्वर में टेलीफोन के द्वारा बोली—'हलो, मैं मंजुला बोल रही हूँ। कहिए, ऐसा क्या आसमान फट पड़ा, जो सवेरे से सबको परेशान कर रहे हो ?'

उत्तर में खुशामदी शब्दों को सुनकर उसका क्रोध कुछ मन्द पड़ा, और वह मुस्कराती हुई बोली—'इतना तो तुमको मालूम होना चाहिए कि भले घरों में सुबह उस वक्त होती है जब दुनिया के लिए दस बजते हैं।'

उत्तर सुनकर वह कुछ और सन्तुष्ट हुई। खिल-खिलाकर हँसती हुई बोली—'तब ठीक है, मैं माफ करती हूँ, परन्तु आयन्दा ख्याल रखना। हाँ, ज़रूर चलूंगी। लेकिन उस चुग़द को ज़रूर ले लेना—नहीं तो सारा मज़ा किरकिरा हो जायगा। उससे ज़रा फुसफुसाकर कह दो—'आई अपरीशियेट—(मैं दाद देती हूँ) बस जनाब फूलकर कुप्पा हो जायेंगे, और तब वह कर्त्तब दिखाएंगे कि हँसते-हँसते पेट दर्द करने लगेगा। अच्छा, ओ. के.। मैं तैयार हूँ, मुझे पिक-अप कर लेना। मैं नाश्ते पर बैठती हूँ, तुम आओ।' कहते हुए उसने टेलीफोन का चोंगा रख दिया।

उसकी माँ प्रकाश कुवँर ने ज़रा कुछ चिढ़े स्वर में पूछा—'कहाँ जाने की तैयारी हो रही है, ज़रा मैं भी सुनूँ।'

'अरे, इसमें सुनने की क्या बात, चाहो तो चल सकती हो। 'कैप्टेन' ने एक मोटर बोट खरीदा है, उसी का ट्रायल हो रहा है। ममी ! चलो, तुम ज़रूर चलो।'

मंजुला के मँगेतर कैप्टेन अर्जुनसिंह केवल कैप्टेन के नाम से सम्बोधित किए जाते थे।

'आज नहीं, फिर किसी दिन सैर की जायगी।'

'क्यों, आज कौन दिल्ली फतेह करनी है ?'

'तेरे 'डैडी' को फतेह करना किसी दिल्ली की फतेह से कम नहीं है।'

'बेचारे 'डैडी' के पीछे तुम क्यों पड़ी रहती हो ?'

'बिना पीछे पड़े रुपया कहाँ निकलता है ?'

'ममी, तुम्हारा बैंक बैलेन्स तो बहुत बड़ा है, उसमें से निकाल कर खर्च क्यों नहीं करतीं ?'

'उसे क्यों खर्च करूँ, वह मेरा स्त्री-धन है। किसी आड़े वक्त के लिए है। मुझको खाने-पिलाने-पहराने का भार तो तेरे डैडी पर है।'

'डैडी बेचारे कब इन्कार करते हैं—तुम फिजूल उनके पीछे पड़ी रहती हो।'

'अरे, यह तो अपने डैडी की अच्छी वकालत कर रही है, ममी, जरा सुनना अपनी लाडो रानी की बातें !'

इसी समय पूर्ण शृंगार किए हुए एक वृद्धा ने कमरे में प्रवेश किया, जो मंजुला की नानी श्रीमती केसर कुँवर थी, और पति के निधन के पश्चात् कर्नल साहब के साथ रहने लगी थी।

'क्या मेरी लाडो ने किया है, जिसकी तू शिकायत कर रही है ?' कहती हुई केसर कुँवर ने प्रवेश किया, और मंजुला के पास पहुँच कर उसका मस्तक चूमा। मंजुला ने भी अपनी नानी के गालों पर हाथ फेरा और फिर उन्हें चूमती हुई बोली—'ममी ने डैडी को परेशान करने की आदत-सी डाल ली है। उनसे पैसा इस तरह खींचती हैं जैसे कुएँ से पानी खींचा जाता है—या सूदखोर काबुली अपना रुपया वसूल करता है।'

केसर कुँवर ने उसके कपोलों को चूमते हुए कहा—'मेरी लाडो, तुम्हारी ममी ठीक करती है। जितना रुपया मर्दों से खींचा जा सके उतना खींच लेना चाहिए। मर्दुए, रुपयों की कीमत नहीं जानते। वे सिर्फ बैलों की तरह कमाना जानते हैं। खेतों में किसान बैलों की मदद से फसलें उगाता है, लेकिन बैलों को खाने नहीं देता—फसलों का फायदा उठाता है किसान ! उसी तरह

इस गृहस्थी की खेती में मर्द पैदा करता है, और हम औरतें उसे खर्च करती हैं ?'

'डैडी अपने ऊपर खर्च ही क्या करते हैं ?'

'उनको जरूरत क्या है। खाने कपड़े की फिक्र तो हम करती हैं।' मंजुला की माँ प्रकाश कुवँर ने कहा।

मंजुला कुछ कहने ही जा रही थी कि उसकी नानी ने कहा—'लाडो, तुम्हारी शादी होने वाली है, तुमको यह जानना चाहिए कि किस तरह मर्दों के नथुने छेदे जाते हैं। जिन्दगी की बाजी सिर्फ एक दिन खेली जाती है—उसमें जिसकी हार-जीत होती है, वही ज़िन्दगी भर हारता-जीतता है।'

'यह कैसे, नानी जी ?'

नानी ने उसको प्यार करते हुए कहा—'फिर किसी दिन बताऊँगी लाडो। तेरे नाना मक्खी तक नाक पर भिनकने नहीं देते थे, ज़रा-ज़रा बात पर आपे से बाहर हो जाते, लेकिन पूछो अपनी ममी से, मैंने उनको गऊ से ज़्यादा सीधा बना दिया था। इन्सान तो जंगल के शेर को भी अपने वश में कर लेता है, तब मर्द को वश में कर लेना औरत के बाएँ हाथ का करतब है, सिर्फ थोड़ी सी अक्ल चाहिए।'

'यह तुमसे सीखूंगी, नानी जी।'

नानी ने फिर उसका कपोल चूमते हुए कहा—'यह विद्या प्रत्येक औरत को जाननी चाहिए, मैं तुझे ज़रूर सिखाऊँगी। लाडो, सबसे बड़ी जरूरत है, अपने मन के ऊपर अपनी हुकूमत रखना। कभी मर्द की बातों पर विश्वास न करो। जब तक वह मन चाहा न करे, तब तक उसकी कोई बात न मानो। जब तक औरत अपने मन को काबू में रखती है, तब तक उसका होश-हवास दुरस्त रहता है, और वह अपनी बात पर अड़ी रहती है जो जीत की भूमिका है।'

'लेकिन वह भी अगर वैसा ही जिद्दी हो तो···।'

'मर्द दरअसल स्वभाव से ज़िद्दी नहीं होता—क्रोधी अवश्य होता है। गीता में भी कहा है कि क्रोध उत्पन्न होने से बुद्धि का नाश होता है, और बुद्धिनाश होने से क्षय को प्राप्त होता है। जितना ही आदमी क्रोधी होता

है, उतना ही जल्दी वह अधीन होता है।'

'यदि वह क्रोध में मार-पीट करता है, तब ?'

'एक तो हमारी समाज में औरतों पर कोई मर्द हाथ नहीं उठाता, और यदि कोई मर्द ऐसा करता है तो समाज में उसकी निंदा होती है, जिससे उसको मजबूर होकर अपनी आदत छोड़नी पड़ती है। मान लो कि वह बहुत बेरहम, बे-गैरत और उजड्ड है तो उसकी मार बरदाश्त कर लो, जिसका नतीजा यह होगा कि उसमें अपने काम के लिए पछतावा होगा, और वह अपने कुसूर की माफी चाहेगा। बस वही मौका है बाजी जीतने का—औरत उस वक्त तक उसे माफ न करे जब तक वह नेक चलनी का वायदा लेकर उस पर अपना रोब न जमा ले। लाडो होशियारी, समझदारी, और दूरन्देशी से ही हारी बाजी भी जीती जा सकती है। और मर्द ! वह तो औरत का गुलाम है। ईश्वर ने जहाँ उसमें ताकत दी है, वहाँ उसमें कमज़ोरी भी कूट-कूटकर भरी है—दूसरे मर्दों के मुकाबले में वह खूँख्वार है, मगर औरत के सामने वह खीसें निपोरता है—उसकी कृपा का भिखारी है।'

'वाह ग्रैनी, आप तो पूरी 'साइको-एनालीटिक' (मनोवैज्ञानिक) हैं।'

'हाँ लाडो, मैंने अपने बाल धूप में सफेद नहीं किए हैं।'

'लेकिन ग्रैनी, आपके बाल तो सब काले हैं; सफेद उनकी जड़ें जरूर हैं, लेकिन बाल काले-भँवराले हैं।' यह कहकर तीनों हँसने लगीं।

"हाँ लाडो, एक बात और है—वह यह कि औरत का सबसे ताकतवर औज़ार है—उसकी खूबसूरती, और उसका यौवन। एक समझदार औरत इन दोनों को कायम रखती है। इस पर शुरू से ध्यान देना चाहिए। मर्द को यह आभास न होने पावे कि उसकी औरत बूढ़ी हो रही है या बदसूरत। अब तो इस वैज्ञानिक युग में बनावटी साधन इतने प्राप्त हैं, जिनके ज़रिए औरत साठ-सत्तर वर्ष तक भी जवान देख पड़ती है। मुझको ही देखो, कौन कह सकता है कि मैं चालीस साल की हूँ। न मेरे बदन में झुर्रियाँ हैं, और न कोई ऐसी अलामत जिससे बुढ़ापा जाहिर हो। पारसाल से, जबसे वीयना जाकर प्लास्टिक का इलाज करवा आई हूँ, मेरा बुढ़ापा दूर हो

गया। खिज़ाब से बाल काले हैं, नकली दाँतों की चमक असली दाँतों को मात करती है, प्लास्टिक ने गालों में ललाई दे दी है, जिससे मैं फिर जवान देख पड़ती हूँ। आँखों का चश्मा मेरी खूबसूरती में चार चाँद लगाता है।'

'सचमुच ग्रैनी, तुम तो अब भी खूबसूरत देख पड़ती हो।'

'खूबसूरत देख नहीं पड़ती—बल्कि खूबसूरत हूँ। वह औरत ज़िन्दा ही मरे के बराबर है, जो अपनी खूबसूरती गंवा देती हैं। मैंने हमेशा खूबसूरत रहने का राज़ तेरी माँ को सिखाया है, तुझको भी सिखाऊँगी। सिर्फ थोड़ी-सी रोज़ाना मेहनत है।'

'वह क्या ग्रैनी?'

'अभी बताने से कोई लाभ नहीं होगा।'

'लाडो, दरअसल मर्द असलियत से गुरेज़ करता है, और बनावट—कृत्रिमता को गले लगाता है। जितनी ही ज्यादा औरत में बनावट होगी, उतनी ही वह दुनिया में कामयाब होगी।''

'मतलब यह कि औरत को अपनी असलियत हमेशा छिपा कर रखनी चाहिए।'

'लाडो, औरत का नाम ही माया है। माया में झूँठ, प्रपंच, छल, चञ्चलता, सभी समाए रहते हैं। यही सब औरतों के हथियार हैं। इनके कुशलता पूर्वक संचालन से औरत हमेशा मर्द को हराती है। लेकिन ये सब हैं दो-धारी तलवारें, जरा-सी चूक या भूल होने पर खुद को नुकसान पहुँचाती हैं।'

इसी समय बाहर मोटर का हार्न सुनाई दिया।

प्रकाश कुँवर ने चौंकते हुए कहा—'तू यहाँ बातों में उलझी है, और कैप्टेन नायर आ गए।'

'आगए तो क्या, कोई हौव्वा हैं जो खा जायंगे।'

'लाडो, हौव्वा की औलाद तो हम लोग औरतें हैं, उस निकम्मे आदम की निकम्मी औलाद को हौव्वा कैसे बनाती हो?'—कहकर मंजुला की नानी हँसने लगी।

कैप्टेन नायर ने सीटी बजाते हुए प्रवेश कर सबका अभिवादन किया। मंजुला की नानी ने उसके पास जाकर उसकी बलैयाँ लीं, और मस्तक को चूम कर आशीर्वाद दिया।

मंजुला की माँ ने कहा—'थोड़ा-सा नाश्ता कर लो। मंजुला ने भी अभी तक कलेवा नहीं किया। तुम दोनों बैठ जाओ।'

'नहीं माँ जी, मैं खा-पीकर आया हूँ। अब बिल्कुल इच्छा नहीं है।' कहते हुए उसने मंजुला की ओर देखा।

मंजुला ने उसकी ओर न देखते हुए कहा—'अच्छा, ममी, मैं जाती हूँ।'

'अरे, बिना जलपान, नाश्ता किए कहाँ जाती है?'

कैप्टेन नायर ने मुस्कराते हुए कहा—'माँ जी, मैं अब कलेवा करके जाऊँगा, लाइए, क्या खिलाती हैं।'

ग्रैनी हँसने लगी, फिर बोली—'लाडो, कहाँ जाती है, कैप्टेन के साथ पहले कलेवा कर ले। तू नाहक गुस्सा होती है, वह तो तुझे चिढ़ा रहा था।'

कैप्टेन नायर ने मंजुला का हाथ पकड़ते हुए कहा—'देर तो खुद करती है, और गुस्सा निकालती है मेरे ऊपर। चलिए, बैठिए; क्या खिलाएंगी आप मुझे।"

मंजुला चुपचाप भोजन करने की मेज़ पर बैठ कर अपने सामने की दीवार की ओर शून्य दृष्टि से देखने लगी।

३

मंजुला अभी लौटकर आई नहीं थी। कर्नल साहब अपनी पत्नी के साथ क्लब गए हुए थे। खानसामह के अतिरिक्त दूसरे नौकरों को छुट्टी दे दी गई थी। घर में सिवाय केसर कुँवर, बिरजू और खानसामह के कोई अन्य नहीं था। संध्या के पाँच बज चुके थे, सर्वत्र मोहल्ले में सन्नाटा छाया हुआ

था, जो कभी-कभी कुत्तों के भौंकने से भंग होता था। अकेलेपन से ऊबकर केसर कुँवर बँगले के लान पर आकर घूमने लगी। कर्नल साहब को पहाड़ी फूलों से बहुत प्रेम था। उनके यौवन के कुछ दिन कश्मीर में बीते थे, और वहीं से वह सुन्दर पुष्पों के पेड़ लाए थे। देहलिया के पौधे अनेक रंग के फूलों के साथ अपना सौंदर्य लुटा रहे थे। केसर कुँवर उनके समीप खड़ी होकर उनकी मौन रंगीनियाँ लुब्ध दृष्टि से देखने लगी। एक लाल फूल तोड़कर वह उसकी पंखुड़ियों से खेलने लगी। उनके कोमल स्पर्श से उसका मन पुलकित हो उठा—एक तप्त रोमांच उसके शरीर में दौड़ने लगा। उसने उसको अपनी आँखों से स्पर्श कराया, फिर उसकी पंखुड़ियाँ अपने कपोलों पर फेरने लगी। पुनः रोमांच की लहर दौड़ी और उसके मन की सुप्त वासनाएँ कुछ प्रदीप्त-सी होने लगीं। उसके मुख से एक दीर्घ निःश्वास निकल गया। उसे प्रतीत होने लगा कि मानो उसका सारा प्रयास जो उसने प्लास्टिक क्रिया द्वारा अपने में पुनर्यौवन प्राप्त करने में किया था, निष्फल जा रहा है। उसकी अतृप्त आकांक्षायें शमन का मार्ग ढूंढ़ने के लिए व्याकुल होने लगीं।

इसी समय अकेले बैठे-बैठे बिरजू का मन भी घबड़ा गया था। वह अँग्रेज़ी की एक पुस्तक लिए हुए लान पर चला आया। बिरजू के मन में पढ़ने-लिखने की बड़ी उत्कंठा थी, और कर्नल साहब उसे पढ़ाना भी चाहते थे, किन्तु मंजुला की माँ प्रकाश कुँवर को यह सह्य नहीं था। वह नहीं चाहती थी कि उसका नौकर उसकी पुत्री के साथ-साथ शिक्षा प्राप्त करे। कर्नल साहब के लाख समझाने-बुझाने का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा, और जब उन्होंने देखा कि उसकी वजह से गृह-कलह बढ़ती जा रही है, तब हार-कर उन्होंने बिरजू को उसके भाग्य पर छोड़ दिया।

कर्नल साहब बिरजू से बहुत स्नेह रखते हैं—यह बात प्रकाश कुँवर के मन में बैठ गई थी। उसने अनेक उपायों द्वारा इसका कारण जानने की चेष्टा की, किन्तु सब खोज-तलाश अनाथालय जाकर रुक जाती थी। जिस मैनेजर के समय में वह अनाथालय में लाया गया था, वे काल-कवलित हो

गए थे, और रजिस्टर में केवल इतना लिखा था—'लगभग चार-पाँच साल का एक बालक मेरे मित्र कर्त्तारसिंह द्वारा प्राप्त हुआ, जिसके भरण-पोषण का भार उन्होंने लिया है। बालक की माता पागल हो जाने के कारण अपने पुत्र का पालन-पोषण करने में असमर्थ हो गई और पिता फौजी नौकर होने से समुचित व्यवस्था नहीं कर सकता है।' फिर उसी के नीचे कुछ पंक्तियाँ बिना लिखी हुई थीं, और उसके पश्चात् लिखा था—'आज श्री कर्तारसिंह के मित्र श्री वेदप्रकाश सहगल ने इस लड़के ब्रजमोहन को अपने घर ले जाने तथा उसका पालन-पोषण करने का भार लिया। अतएव श्री कर्त्तारसिंह की सहमति से यह बालक उनके सुपुर्द किया गया।' इसके पश्चात् मैनेजर और उन दोनों के हस्ताक्षर थे। प्रकाश कुँवर ने कई बार कर्त्तारसिंह के विषय में जानना चाहा, परन्तु उसे सफलता नहीं मिली।

अपनी इस पराजय से प्रकाश कुँवर का द्वेष विरजू के प्रति बढ़ गया था। वह उसे बात-बात पर फटकारती, और जब कभी अधिक चिढ़ जाती तो उसे मार-पीटकर अपना आक्रोश शान्त करने की चेष्टा करती। मंजुला भी अपनी माँ के स्वभाव का अनुसरण कर रही थी। वह भी अकारण ही उस पर क्रुद्ध हुआ करती, तथा उसी की भाँति उससे दुर्व्यवहार करती थी। केसर कुँवर भी उसके साथ थी। विरजू इन सभी के अत्याचार बड़े सब्र से सहन करता था, और जब अवसर मिलने पर कर्नल साहब उसकी पीठ सहलाते, तब उसका दुःख विस्मरण हो जाता, और वह पुनः अपने सहज स्वभाव को प्राप्त कर लेता।

इधर कई महीनों से केसर कुँवर ने अपनी पुत्री और दौहित्री के अनाचारों में योग देना बन्द कर दिया था। वह एकान्त पाकर उससे मीठी-मीठी बातें करती और अपने कमरे से अच्छी-अच्छी वस्तुएँ खाने को दिया करती थी। उसके इस करुण व्यवहार का कारण उसकी समझ में नहीं आ रहा था, किन्तु वह अपने हाल में मस्त रहने वाला था, इसलिए वह उसकी कृपा का पात्र बनने के लिए अपनी ओर से सब प्रयत्न करने लगा। केसर-कुँवर जानती थी कि विरजू को पढ़ने से बहुत लगाव है, इसलिए वह उसको

पढ़ने का अवसर देती तथा बाज़ार से उसके लिए पुस्तकें भी चुरा-छिपाकर ले आती थी। जब घर में एकान्त होता तब बिरजू को पढ़ने का अवसर मिलता था।

इसी बीच प्रकाश कुँवर ने उसको मोटर ड्राइवर बनाने का विचार किया। वह उसे ड्राइवर के साथ भेजने लगी। बिरजू को भी स्वतंत्रता की यह नई राह दिखाई दी, जिसका उपयोग उसने मन लगाकर किया, और वह थोड़े दिनों में एक कुशल ड्राइवर हो गया। प्रकाश कुँवर इससे सन्तुष्ट हुई, और उसको अपनी मोटर का ड्राइवर नियुक्त किया। एक दिन प्रकाश-कुँवर ने अपनी माँ से प्रस्ताव किया कि वह भी अपनी गाड़ी में ड्राइवरी का काम बिरजू से लिया करे। केसर कुँवर को यह प्रस्ताव पसन्द आया, और बिरजू उनका भी ड्राइवर हो गया। एक बात उल्लेखनीय यह हुई कि बिरजू के ड्राइवर हो जाने से केसर कुँवर अब पहले से अधिक अपनी गाड़ी पर घूमने-फिरने जाने लगी, और इस प्रकार बिरजू को उसके साथ रहने का अधिक अवसर मिलने लगा। जब कभी वह घूमने जाती तब वह किसी रेस्तराँ में अवश्य जलपान करती, और बिरजू को भी भर-पेट खिलाने में चूकती नहीं थी। उसके लिए भड़कदार अच्छी पोशाकें भी यह कहकर सिलवाई थीं कि ड्राइवर से मालिक की प्रतिष्ठा का अन्दाज़ा बाहर वालों को मिलता है। पहले तो प्रकाश कुँवर ने बहुत आपत्ति की, परन्तु केसर-कुँवर के बहुत समझाने-बुझाने से वह मान गई थी।

उस दिन संध्या समय जब लॉन पर घूमते हुए उसकी दृष्टि बिरजू पर पड़ी, तो उसने उसे बुलाकर पूछा—'क्यों बिरजू, कैसी पढ़ाई चल रही है?'

'आपकी कृपा से ठीक है।' और यह कहकर उसकी लुब्ध दृष्टि से लज्जित होकर वह पृथ्वी की ओर देखने लगा।

केसर कुँवर ने चारों ओर देखा। बिल्कुल शून्य पाकर वह उसके समीप खिसक आई, इतने समीप कि उसकी तप्त साँसें उसके मस्तक पर पड़ने लगीं। बिरजू ने सिर ऊपर उठाकर देखा। केसर कुँवर ने उसके सिर पर

हाथ फेरते हुए कहा—'क्यों, क्या देखते हो ?'

उसके मुख से निकल गया—'आप मुझसे क्यों इतना प्रेम करती हैं ?'

'इसलिए कि तुमसे कोई प्रेम नहीं करता।'

'मेरा भाग्य ही ऐसा है।'

केसर कुँवर ने उसके कपोलों पर हाथ फेरते हुए कहा—'तुम यह बात अपने दिल से निकाल दो।'

बिरजू ने कोई उत्तर नहीं दिया।

'केसर कुँवर ने उसको एक निकुंज की ओट में ले जाते हुए कहा—'यहाँ आओ, और अब बताओ कि तुम्हें क्या दुःख है ?'

'दुःख तो अपार हैं। न मालूम मेरे माता-पिता कौन थे, और यदि वे मर गए तो मैं भी उनके साथ मर क्यों नहीं गया ? मातृ-पितृहीन बालक का जीवन निस्सार है।'

'पर किसके माता-पिता सदैव जीवित रहते हैं ? मेरे भी तो कभी के मर गए हैं।''

'किन्तु वे आपके लिए समाज में एक सम्मानीय स्थान तो निश्चित कर गए थे।'

'तुम्हारे लिए समाज में सम्मानीय स्थान मैं बनाऊँगी।'

'तो क्या आप माँ का स्नेह मुझे दे सकेंगी ?'

'यदि उससे अधिक दूँ तो ?'

बिरजू की बड़ी-बड़ी आँखें उसको देखने लगीं, जिसमें वासना साकार हो रही थी। उसकी आँखों की ज्योति, जो उसके चश्मे के काले शीशों को भेदकर निकल रही थी, प्रज्वलित दो स्फुलिंगों की भाँति उसे दिखाई दी। उसके हृदय में एक प्रकार का भय उत्पन्न हुआ, और उसने अपने नेत्र बंद कर लिए।

केसर कुँवर की अतृप्त वासना ने अंगड़ाई ली। उसके वशीभूत होकर उसने उसे खींचकर अपने हृदय से लगा लिया और झुककर उसका कपोल चूम लिया। उसके तप्त ओष्ठों के स्पर्श से बिरजू के शरीर में भय का तड़ि-

त्वेग सञ्चरित होने लगा। वह असहाय-सा सिकुड़कर दीन दृष्टि से पृथ्वी की ओर देखने लगा।

केसर कुँवर की अतृप्त वासना झूमकर उठ बैठी। उसने चारों ओर सतर्क दृष्टि से देखा, और फिर एकान्त पाकर उसकी वासना अन्धी हो गई। वह अपनी भरपूर शक्ति से उसको अपने हृदय से चिपटाकर बार-बार उसके कपोलों को चूमने लगी। बिरजू निर्जीव पाषाण-प्रतिमा की भाँति शीतल, असहाय और त्रस्त था।

केसर कुँवर ने बुदबुदाते हुए कहा—'बिरजू, मैं तुमको प्यार करती हूँ। तुम्हें अपना अटूट प्यार, असीम धन और सम्मान सब दूँगी। तुम्हें ये लोग बहुत दु:ख देते हैं, इसलिए मैं तुमको लेकर अलग रहूँगी। मैं कल ही अपने पुराने बँगले में रहने के लिए चलूँगी, और तुमको अपने साथ ले जाऊँगी। बोलो चलोगे?'

बिरजू कोई उत्तर नहीं दे सका। उसका मन बेंत की तरह काँप रहा था।

केसर कुँवर ने उसके कपोलों के पास मुँह ले जाकर कहा—'तुम वहाँ चलकर चाहे जितना पढ़ना—मैं तुम्हें पढ़ाऊँगी, तुम्हारे लिए मास्टर रख दूँगी, और स्कूल में यदि पढ़ना चाहोगे तो उसका भी प्रबन्ध कर दूँगी।'

बिरजू ने फिर भी कोई उत्तर नहीं दिया। उसका सिर घूम रहा था, उसके मस्तिष्क में उथल-पुथल मची हुई थी, और उसे अपना अस्तित्व ही प्रतीत न होता था।

केसर कुवँर ने उसका हाथ पकड़कर बँगले की ओर घसीटते हुए कहा—'चलो मेरे कमरे में चलो।'

बिरजू बँधे हुए पशु की भाँति खिंच कर उसके साथ जाने लगा। उसकी माँस पेशियाँ अनिर्वचनीय भय से काँप रही थीं। उसकी सारी चिन्तन-शक्ति लुप्त हो गई थी। बलि के लिए ले जाने वाले बकरे के मन में शायद उतना भय उत्पन्न न हो, जितना उसके मन में हो रहा था।

बिरजू को वह तेज़ी से घसीटती हुई बँगले की ओर ले जा रही थी। वह

उसने हाथ छुड़ाकर भाग जाना चाहता था, परन्तु शक्तिहीन था। केसर कुँवर का वह रूप उसके लिए सर्वथा नवीन था।

बँगले के पोर्टिको के पास वे दोनों पहुँचे ही थे कि एक मोटर बँगले में प्रविष्ट हुई। मोटर की भड़-भड़ाहट ने उन दोनों का ध्यान अपनी ओर घसीटा, और केसर कुँवर के मन में एक झटका लगा, जिसके प्रभाव से अभी वह मुक्त न हो सकी थी कि मोटर उसके समीप आकर ठहर गई।

उसमें उतरती हुई मंजुला ने अपनी नानी से तीक्ष्णता से पूछा—'ग्रैनी, मालूम होता है इसने फिर कोई बदमाशी की है, तभी आप उसका हाथ पकड़ कर घसीटती हुई लिए आ रही थीं। ममी सच कहती हैं कि यह बड़ा नालायक है। दो-चार बेंत लगा दीजिए कि मिज़ाज दुरुस्त हो जाय। बस पापा ने ही उसका दिमाग चढ़ा रखा है, नहीं तो हज़रत कब के सीधे हो गए होते।'

केसर कुँवर बड़ी विपत्ति में फँस गई। उसने स्थिति सँभालते हुए कहा—'नहीं लाड़ो, इसने कोई नई बदमाशी नहीं की। मैं इससे यही कह रही थी कि संध्या हो गई है, कमरों की बत्तियाँ जला दो, और……।'

वाक्य पूरा करने के पहले ही मंजुला ने कहा—'और इसका ध्यान इस ओर गया नहीं होगा, इसीलिए आप इस अन्धे को अँधेरा दिखाने के लिए पकड़कर लिए जा रही थीं। है न इसकी नालायकी?'

केसर कुँवर बिरजू की पीठ पर एक हल्की चपत लगाती हुई बोल उठी—'जा, जा, जल्दी से पोर्टिको की बत्ती जलाकर सब कमरों में रोशनी कर दे, और खानसामह से कह दे कि चार प्याले चाय बनाकर लाड़ो के कमरे में भेज दे, जहाँ वह अपनी सखी के साथ चाय पिएगी।'

इसी बीच मंजुला की सखी और सहपाठिनी दामिनी मोटर से निकल कर मुग्ध दृष्टि से जाते हुए बिरजू का अनुसरण कर रही थी।

मंजुला ने उसे ठेलते हुए कहा—'दम्मो, चलो, इस नौकर की वजह से हम सब लोग परेशान रहते हैं। न मालूम इसे कहाँ से पापा उठा लाए?'

दामिनी ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह उनके पीछे-पीछे मौन चली गई।

उनके जाने के पश्चात् केसर कुँवर एक दीर्घ निश्वास लेकर अपने मनोभावों को दबाने का प्रयत्न करने लगी।

४

दामिनी ने मंजुला के कमरे में पहुँचते ही पूछा—'यह नवयुवक कौन है ?'

'घर का नौकर है।'

'क्या इसको अभी हाल में ही नौकर रखा है ?'

'नहीं भई, नहीं, यह बहुत पुराना नौकर है। पापा न मालूम इसको क्यों ले आए ?'

'ले आए ! इसके क्या अर्थ ?'

'अरे भई, तुम तो इसके पीछे ही पड़ गईं। बात पूछती हो, फिर उसकी जड़, और फिर उस जड़ की शाखाएँ। कहाँ तक बताऊँ ?'

'नहीं बताना चाहती तो मत बताओ, किन्तु इतना नाराज़ क्यों होती हो ? बात दरअसल यह है कि इतना साफ-सुन्दर और तमीज़दार नौकर सहज नहीं मिला करता, इसलिए इतना खोद-खोद कर पूछ रही हूँ।'

'साफ-सुन्दर, तमीज़दार ! खूब पहचाना !'

'उसके साफ-सुथरे कपड़े और साँचे में ढला हुआ शरीर, गोरा निखरता हुआ रंग, बड़ी-बड़ी आँखें, और यूनानी पुरुषों जैसी नाक, पतले लाल होंठ, लम्बी भुजाएँ सभी तो दूर से दिखाई पड़ते हैं, फिर पहचानने की क्या बात है ?'

'ऊपर से जैसा वह दिखाई पड़ता है, भीतर से वह उतना ही बदसूरत तथा घृण्य है। असली बात यह है दम्मो, कि हम सब लोग—केवल डैडी को छोड़कर, इस उजबक से सख्त हैरान और परेशान हैं। ममी को यह फूटी

आँखों नहीं सुहाता। ग्रैनी भी अगर इसकी हरकतों पर नज़र न रखें तो न मालूम यह क्या नुक़सान कर दे; और अगर मैं इसको डाटूँ-फटकारूँ नहीं तो यह आसमान में थिगली लगाने लगे।'

'वाह, क्या नियंत्रण कर रखा है—गोया वह साधारण आदमी नहीं बल्कि कोई जंगली शेर है।'

'अरे, बेचारा शेर तो भूखा होने पर ही गुर्राता है, लेकिन हज़रत तो चौबीसों घंटे गुर्राया करते हैं।'

'क्या मतलब ? आपका यह नौकर एक विचार की सामग्री है।'

'शरारत और शोख़ी की सामग्री ज़रूर है।'

'यह कैसी शरारत और शोखियाँ करता है, ज़रा मैं भी सुनूं।'

'मेरी किताबें चुरा ले जायगा, कागज़, कलम, पेन्सिलें तो इतनी चुराता है, जिसकी कोई हद नहीं। घर का कोई काम नहीं करेगा, और अगर करेगा तो कुछ न कुछ नुकसान ज़रूर करेगा; गर्ज़ कि यह मन लगाकर कोई काम नहीं करता।'

'किताबें, कागज़, पेन्सिलें चुराकर क्या करता है ? बाज़ार में बेच आता होगा ?'

'बेचता तो नहीं है, इतनी ही अच्छाई है। आपको पढ़ने-लिखने का शौक है, चित्रकारी का शौक है, गाने-बजाने का शौक है, अच्छे भड़कीले कपड़ों के पहनने का शौक है। अरे भई, इसके कितने शौक गिनाऊँ। पैदा हुए हैं अनाथ, न बाप का पता है, और न माँ का। कुछ दिनों तक अनाथालय में रहे, फिर हम लोगों की शामत आई, तो डैडी इसको अनाथालय से ले आए।'

दामिनी ने हँसते हुए कहा—'अगर इतनी थोड़ी-सी बात मुझे पहले बता दी होती, तो इतना वितण्डावाद क्यों होता ?'

'एक तुम ही इतना खोद-खोदकर पूछ रही हो, नहीं तो आजतक किसी ने इसमें इतनी दिलचस्पी नहीं दिखाई।'

'भई, उसकी सूरत-शक्ल एक भले घर के युवक जैसी मालूम हुई, और जब तुमने उसको घर का नौकर बताया, इसलिए उसके विषय में कुछ जानने

की इच्छा हुई। मैं आज पहले-पहल तुम्हारे घर आई हूँ, इसलिए सबके विषय में पूछना-जानना आवश्यक है।'

'ठीक है, मैंने भी सब कुछ उसके बारे में बता दिया।'

'तुम्हारा यह नौकर कलाकार है?'

'हाँ, हैं तो इसमें कलाकार के लक्षण। पढ़ने-लिखने में दिलचस्पी लेने के अलावा अच्छा चित्रकार भी है। मेरा भी इसने एक चित्र बनाया है।'

'अच्छा! तुम्हारा इसने चित्र बनाया है? ज़रा देखूँ।'

'उसका भी एक दिलचस्प किस्सा है। यह तो कहो, मैंने उसकी चोरी पकड़ ली, नहीं तो पता ही न लगता कि इसने मेरा चित्र खींचा है।'

'यह कहिए कि उसने आपका चित्र आप से छिपाकर खींचा है।'

'जी हाँ, और वह भी मेरे एक फोटो से!'

'अच्छा।'

'मेरे कुछ फोटो इसी कमरे में टँगे हैं, और कुछ एलबम में रखे थे। एक दिन अकस्मात् अपने फोटो चञ्चला को दिखा रही थी। चञ्चला को तो तुम जानती हो वह वैसी ही चञ्चल है, जैसा उसका नाम है। इस कमरे के चित्रों को देखने के पश्चात् उसने दराज़ से वह एलबम निकाल लिया। मैंने उसको अपना एक विशेष चित्र दिखलाना चाहा, जो तैराकी प्रति-योगिता जीतने के पश्चात् उसी समय तैरने वाली पोशाक में खिंचवाया था। उसका पोज़ अकस्मात् बहुत अच्छा था, और फोटो भी बहुत साफ उतरा था। वह अपनी जगह से गायब था। मैंने उसे इधर-उधर बहुत खोजा, लेकिन वह कहीं न मिला। बस मुझे फौरन शक हो गया कि यह हरकत इन्हीं महाशय की है। इसके कमरे में गई, और मैंने इसके कागज़ों से ढूँढ़ निकाला। वह फोटो तो मिला ही, उसी के साथ नत्थी किया हुआ मेरा रंगीन चित्र भी मौजूद था—जो उसने बृहदाकार में बनाया था। दोनों लाकर मैंने चञ्चला को दिखाये। उसको देख कर वह बड़ी प्रसन्न हुई, और बृहदाकार की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगी। मैंने जब उसकी कृति—या यों कहिए उसकी चोरी ममी को बताई तो वह बहुत नाराज़ हुई, लेकिन

डैडी ने उसकी बड़ी तारीफ़ की, और 'आर्ट स्कूल' में भरती कराने की सोचने लगे, किन्तु ममी ने खुलकर इसका विरोध किया। नतीजा यह हुआ कि वह आर्ट स्कूल में तो भरती नहीं हुआ, किन्तु मोटर ड्राइवरी ज़रूर सीखने लगा।'

दामिनी ने एक निश्वास लेकर कहा—'तो इस प्रकार आप लोगों ने एक होनहार चित्रकार को मसल डाला।'

'मसल डाला! यह तुम क्या कहती हो?'

'बेशक। प्रोत्साहन के स्थान पर तुमने उसकी कला को ही नष्ट कर दिया। उसे साधारण मोटर ड्राइवर बनाया।'

'लेकिन घर का कोई काम तो उसे करना चाहिए, आखिर वह नौकर है।'

'आप लोगों ने उसका भरण-पोषण किया, इसके लिए वह जन्म भर कृतज्ञ रहेगा, किन्तु वह भी मनुष्य है, इसको आप लोग भूल गए। आपके डैडी जब इसको अनाथालय से लाए तब इसके भरण-पोषण का भार लेने जा रहे हैं, यही समझकर वह लाए होंगे।'

'बात यह है कि मैं उस समय छोटी थी, और मेरे साथ खेलने के लिए यह लाया गया था। बड़ा होने पर यह घर का एक विश्वास-पात्र नौकर बन सकेगा, इस विचार से इसे अनाथालय से ले आए थे।'

'हाँ, आपकी सब बातें मैंने मानी, और वह उसी प्रकार अपना कर्त्तव्य भी निभाने जा रहे थे, किन्तु आपकी ममी और आपने उसको मनुष्य बनने नहीं दिया। उसको मोटर ड्राइवर बनाकर आपने अपनी बचत करने की तरकीब निकाली। ड्राइवर आप पचास-साठ या ज़्यादा से ज़्यादा एक सौ रुपए में रख सकती हैं, किन्तु किसी ड्राइवर को आप कलाकार तो नहीं बना सकतीं, जब तक उसमें उसकी योग्यता न हो''

'ममी की गाड़ी के लिए कोई ड्राइवर नहीं था, इसलिए उससे कोई उपयोगी काम तो लेना ही चाहिए।'

'क्या आपके डैडी ने इस प्रबन्ध को स्वीकार कर लिया?'

'डैडी की चलने पावे तब न! ममी ग्रैनी और मैं सब तो विरोध में थे।

यह भी उसकी कैसी हिमाकत थी कि उसने मेरा चित्र बिना मेरी सम्मति के बना डाला।'

'कलाकार सुन्दरता का उपासक होता है। तुममें वह सौन्दर्य है जिसने उसे आकर्षित किया, और उसने तुम्हारे उस सौन्दर्य द्वारा अपनी कला को विकसित करने का आधार बनाया। तुम्हारा चित्र बनाकर उसने इतना बड़ा अपराध नहीं किया था कि तुम उसकी हत्या ही कर डालो।'

'क्या बकती हो ? तुम बड़ी भावुक हो।'

'भावुकता से मैं बातें नहीं कर रही हूँ। किसी कलाकार की हत्या उसकी कला को न पनपने देने से होती है। यदि कोई तुम्हारे सौन्दर्य को कुरूप बना दे, तो क्या यह तुम्हारी हत्या करना न हुआ ? तुम्हारे जीवन का सौख्य सदा के लिए नष्ट हो जायगा।'

'वाह, किस खूबसूरती से 'पोर्शिया'[1] का पार्ट अदा कर रही हो, किन्तु दम्मोजी ! आपके तर्क में असंगतता है। मेरे सौन्दर्य के नष्ट करने से मुझे शारीरिक क्षति पहुँचती है—किन्तु किसी अल्हड़ बेवकूफ कलाकार को (जिसको तुम कलाकार कहती हो, लेकिन मैं स्वीकार नहीं करती, बल्कि उसे बेवकूफी समझती हूँ) उसकी बेवकूफी से मुक्ति दिलाकर उसके भरण-पोषण के लिए एक कार्य सिखाना उसको जीवन देना है, या उसकी हत्या ?'

'तुम इस प्रश्न को ज़रा इस दृष्टिकोण से देखो कि यदि इसके माता-पिता जीवित होते तो क्या वे इसकी कला को इस प्रकार नष्ट होने देते ?'

'अब तुम तर्क-भूमि में पदार्पण कर रही हो। 'अगर-मगर' पर आधारित तर्क अधिकांशतः निस्सार होते हैं, और कठोर सत्य को छिपाने का काम करते हैं। यह एक सत्य है कि वह मातृ-पितृहीन है, यह सत्य है कि उसक अपनी जीविका का एक मार्ग तलाश करना है। अब उसको एक उपय कला सिखाना उसको जीवन-दान देना हुआ या उसकी हत्या ? यह

---

१. शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक 'मरचैन्ट आफ वेनिस' की नायिका जिसने शाइलाक के विरुद्ध एन्टोनियो की वकालत की और उसीके तर्क से उसको पराजित कर एन्टोनियो की जीवन-रक्षा की थी।

एक संदिग्ध प्रश्न है कि यह अपनी चित्रकला द्वारा अपनी जीविका-उपार्जन कर सकता—हाँ वह हमारे ऊपर अवश्य भार होकर सदैव रहता, और इसमें उसका हित किसी प्रकार नहीं था। ममी के इसी तर्क से डैडी भी पराजित हुए थे—और मैं समझती हूँ कि तुम्हारे पास भी इसका कोई समाधान नहीं है।'

दामिनी उत्तर देने ही जा रही थी कि खानसामह चाय लेकर कमरे में प्रविष्ट हुआ।

मंजुला ने उससे पूछा—'बिरजू क्या कर रहा है?'

'मुझे नहीं मालूम, हुजूर! शायद अपने कमरे में हैं।'

'उसको मेरे पास भेजो।'

खानसामह के जाने के पश्चात् उसने कहा—'यह आपको न समझना चाहिए कि हम लोग उसके साथ अन्याय करते हैं अथवा उसको मनुष्य नहीं समझते; परन्तु मेरा विचार है कि संसार के प्रत्येक मनुष्य की तथा वस्तु की एक सीमा निर्धारित है—उसको उसीके अन्दर रहना चाहिए। उसको जबरदस्ती अतिक्रमण करने से हानि के अतिरिक्त लाभ नहीं है।'

दामिनी ने चाय का प्याला मेज़ पर रखते हुए कहा—'यह मैं नहीं मानती। मनुष्य की शक्तियों की कोई सीमा निर्धारित करना उसको पंगु बना देना है, और यदि यही सत्य होता तो संसार की यह उन्नति आज दिन न होती। अभी तक हम पाषाण-युग में पड़े होते।'

'दम्मो, चाहे जो कहो, वस्तुस्थिति कभी भुलाई नहीं जा सकती। परिस्थितियाँ ही मनुष्य के प्रत्येक कार्य का संचालन करती हैं, क्योंकि वे सत्य हैं। कल्पना की उड़ान सदैव थोथी है—उसमें विहार करने में मन को क्षणिक आनन्द मिल सकता है, किन्तु जहाँ वह सत्यता की कठोर भूमि पर अवतरित होगा, वहाँ वह मोह काँच की भाँति टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा। यह भी संभव है कि उसका मन उन कल्पित लड्डुओं के खाने में असमर्थ होने से कुंठित हो, क्योंकि सत्य और कल्पना का सामंजस्य असंभव है।'

इसी समय बिरजू ने आकर पूछा—'आपने याद फरमाया था?'

मंजुला ने दामिनी की ओर देखा, फिर पूछा—'ममी कहाँ गई हैं ?'

'बड़े हुजूर कर्नल साहब के साथ क्लब गई हैं ?'

'तुम उनको लेकर नहीं गए ?'

'बड़े हुजूर ने मना कर दिया। वह खुद ही गाड़ी चलाकर ले गए !'

'तुमको छुट्टी मिली। इस छुट्टी में क्या करते रहे ?'

विरजू ने कोई उत्तर नहीं दिया।

'बस मटर गश्ती करते रहे—कोई तस्वीर-वस्वीर बना रहे थे ?'

बिरजू फिर भी चुप रहा।

दामिनी उसकी ओर मुग्ध दृष्टि से देख रही थी। उसने उसको उस परिस्थिति से उबारने के विचार से कहा—'मैंने सुना है कि तुम एक अच्छे चित्रकार हो। क्या मैं तुम्हारे चित्रों को देख सकती हूँ ?'

विरजू ने बुझी हुई कनखियों से मंजुला की ओर देखकर अपनी गर्दन झुका ली, और कोई उत्तर नहीं दिया।

दामिनी ने फिर कहा—'इनसे डरो नहीं, इस समय यह तुमको कुछ नहीं कहेगी। अपने चित्र लाकर तुम मुझे दिखाओ।'

बिरजू ने सिर झुकाए हुए कहा—'मैंने यह काम छोड़ दिया है और जो पहले खींचे थे वे फाड़कर फेंक दिए हैं।'

'कोई कला के साथ विश्वासघात नहीं करता !'

'उससे कोई लाभ भी नहीं था।'

'आगे चलकर लाभ होता।'

बिरजू ने फिर कोई उत्तर नहीं दिया।

मंजुला ने बड़े मृदु स्वर में पूछा—'सच कहना तुम ड्राइवरी सीख कर अच्छे हो, या कागज़ पर टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें खींचकर व्यर्थ समय नष्ट करने में सुखी थे ?' वह उसकी ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखने लगी।

बिरजू ने कोई उत्तर नहीं दिया। दामिनी भी उसका उत्तर सुनने के लिए उत्कंठित थी। उसने उसे आश्वस्त करते हुए कहा—'बोलते क्यों नहीं। मैं कहती हूँ कि किसी प्रकार का भय मत करो।'

उसने मंजुला की ओर देखते हुए कहा—'इतना मुझे ज्ञान नहीं है। जो कुछ मेरे हित में था वही प्रबन्ध हुआ है, मैं इसीमें सन्तुष्ट हूँ।'

'यह तो तुम भय से ऐसा कह रहे हो। अच्छा, यह कहो कि यदि तुमको किसी आर्ट स्कूल में भरती करा दिया जावे, तो क्या तुम इसे पसन्द नहीं करोगे ?'

'मुझे इसमें भी आपत्ति नहीं है, यदि मिस-बाबा इसे पसन्द करें।'

'मिस बाबा कौन हैं ?'

बिरजू मंजुला की ओर देखने लगा।

मंजुला ने झेंपते हुए कहा—'इसका इशारा मेरी ओर है।'

'अच्छा आप अभी तक मिस-बाबा बनी हुई हैं ?' दामिनी के अट्टहास से बिरजू और मंजुला दोनों अप्रतिभ हो गए।

मंजुला ने आँखों से बिरजू को जाने का संकेत किया। वह चुपचाप कमरे के बाहर चला गया। थोड़ी देर के लिए कमरे में सन्नाटा छा गया।

दामिनी ने चाय का प्याला मेज़ पर रखते हुए कहा—'अंग्रेज़ जरूर इस देश को छोड़कर चले गए हैं, किन्तु भारतीय अफसरों ने उनकी विकृत सभ्यता को इस प्रकार अपना लिया है कि भारतीय होते हुए भी उन्हें भारत का ज्ञान नहीं है। वे उसी प्रकार रहना चाहते हैं जैसे विदेशी रहते थे। उनको न अपने देश से सहानुभूति है, और न वे उसका गौरव अनुभव करते हैं।'

मंजुला उस कटाक्ष को सहन न कर सकी। उसने तमक कर उत्तर दिया—'यह सत्य नहीं है। हाँ, वे अब ब्रूट (जंगली) रहना नहीं चाहते। जब दो सभ्यताओं में संघर्ष होता है, तब जो सबल होती है वह अपना प्रभाव डालती ही है। यह तो निर्विवाद है कि पश्चिमीय सभ्यता हमारी दकियानूसी सभ्यता से कहीं उच्च है।'

'किन्तु कहावत है कि 'सब चमकने वाली वस्तुएँ स्वर्ण नहीं होतीं।' आपको यदि 'मिस बाबा' कहा जाता है, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है, परन्तु कुछ अजीब-सा और अभारतीय मालूम देता है।'

'मालिक की लड़की के लिए और क्या सम्बोधन हो सकता है आपकी भारतीय सभ्यता में ?''

'दीदी' यह क्या कोई बुरा अथवा अपमानजनक सम्बोधन है? हाँ, इसमें अपनत्व है—घरेलूपन है—आत्मीयता है, किन्तु इसमें स्वामी और नौकर के सम्बन्ध का अभाव अवश्य है।'

'मैं इसकी बहिन नहीं हूँ।'

'बहिन न होती हुई भी आप मालिक की पुत्री होने के नाते दीदी की भाँति सम्माननीय हैं, इसलिए दीदी कहना अनुपयुक्त नहीं है।'

'छोड़ो भी इस बक-झक को। बिरजू को लेकर तुमने आसमान सिर पर उठा लिया। भई, तुम लोग कांग्रेसी हो, देश-प्रेम की ठेकेदारी ले रखी है। हम लोग तो नौकर पेशा हैं—पहले ब्रिटिश सरकार के नौकर थे—अब कांग्रेस सरकार के नौकर हैं। आपकी माँ एम० पी० हैं, आपकी विचार-धारा हम लोगों से भिन्न होगी ही।'

'अच्छा, बहुत बातें न बनाओ। माँ यदि एम० पी० हैं, तो क्या हुआ? मैं तो तुम्हारी ही भाँति एक भारतीय बालिका हूँ।'

इसी समय मोटर आने की भड़भड़ाहट सुनाई पड़ी।

मंजुला ने उठते हुए कहा—'मालूम होता है मम्मी और डैडी आगए। चलो तुम्हारा परिचय उनसे करवा दूँ।'

दामिनी ने उठते हुए कहा—'चलिए, किन्तु मुझे जल्दी ही जाने की अनुमति देना, क्योंकि अम्मा मेरी प्रतीक्षा कर रही होंगी।'

'अच्छा, अभी तो चलो। जब इच्छा हो चली जाना। मैं कोई रुकावट नहीं डालूँगी।'

यह कहकर वह दामिनी को घसीटती हुई नीचे चली गई।

५

उस रात्रि को केसर कुँवर किसी भाँति न सो सकी। वह योजनाओं पर योजनाएँ बनाती रहीं, किन्तु प्रत्येक में कोई-न-कोई अड़चन सामने आ जाती, और तब वह उसे छोड़ने के लिए विवश हो जाती थी। अन्त में, अपनी कोठी में वापस जाने के अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय न देख पड़ा। दूसरे दिन अपनी साज-सज्जा बहुत जल्द समाप्त कर वह प्रकाश कुँवर के कमरे की ओर गई। कर्नल साहब अपने कार्यालय चले गए थे, किन्तु वह अभी तक लेटी हुई करवटें बदल रही थी।

प्रकाश कुँवर उसको असमय अपने कमरे में प्रवेश करते देख कर प्रश्न भरी दृष्टि से उसे देखने लगी। केसर कुँवर ने उसके समीप कुर्सी पर बैठते हुए कहा—'प्रकाश, मैं अब अपनी कोठी में वापस जाने का विचार कर रही हूँ।'

प्रकाश कुँवर मानो आकाश से गिर पड़ी। उसने उठते हुए पूछा—'क्या इस कमबख्त बिरजू ने फिर कोई नई शरारत की है ?'

'नहीं, नहीं। उसका तो अब स्वभाव ही बिल्कुल बदल रहा है। जब लड़कपन था, तब शरारत करता था, परन्तु वह अब जवान हो रहा है। मैं सब बातों का आगा-पीछा सोचकर उसको इस घर से दूर हटा कर ले जाने की सोच रही हूँ।'

प्रकाश कुँवर के मुख पर किसी अज्ञात भय की प्रतिच्छाया थिरकने लगी। उसने भय-विह्वल स्वर से पूछा—'क्या उसने मंजू के साथ कुछ असभ्यता की है ?'

'अजी नहीं। मेरी मंजू से तो वह बिल्ली की तरह डरता है।'

'फिर क्या बात है ?'

'वही तो बताने आई हूँ। यद्यपि अभी बिरजू घर के सभी लोगों से

डरता है, किन्तु संभव है कि कुछ दिनों बाद यह डर साहस में बदल जाय।'

'ममी आज आप पहेलियाँ बुझा रही हैं, साफ-साफ क्यों नहीं कहतीं ?'

'कह तो रही हूँ, किन्तु जब तुम कहने दो तब कहूँ।'

'अच्छा कहिए। तुमने उसकी जवानी की बात बताकर मुझे डरा दिया। मैंने समझा कि उसने फिर कोई नई शरारत की है। वह मंजुला से भय के कारण कुछ छेड़-छाड़ न भी करे, किन्तु उसकी सखियों से तो कह ही सकता है। अभी कल ही करुणासुन्दरी एम० पी० की लड़की दामिनी आई थी। मैंने सोचा कि उससे शायद उसने कोई असभ्य व्यवहार किया हो।'

'नहीं, कल तो उसने कोई असभ्यता नहीं बरती, किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि वह आगे क्या करेगा ? जवानी दीवानी होती है, इसलिए हमको अभी से सतर्क रहना चाहिए।'

'क्या कहूँ मंजू के डैडी को, जिन्होंने यह आपत्ति बैठे-बिठाए मोल ली। अनाथालय से इसको लाने की क्या जरूरत थी। मैंने कभी नहीं कहा कि मंजू के साथ खेलने के लिए किसी साथी को ले आओ। न मालूम क्यों इस अभागे को लाकर मेरे गले मढ़ दिया।'

'अब तो जो होना था, वह होगया। अब उससे छुटकारा पाने का उपाय विचारना चाहिए।'

'यही तो मैं कई दिनों से सोच रही हूँ, परन्तु कोई रास्ता नजर नहीं आता। जो उपाय मैं उससे छुटकारा पाने का करूँगी उसे मंजू के डैडी मंजूर नहीं करेंगे। न मालूम क्यों वह इस पर जान देते हैं।'

'यही प्रश्न मेरे सामने भी था, किन्तु मैंने सोच-विचार कर एक ऐसा हल इस समस्या का निकाला है कि वह कुछ भी न कर सकेंगे।'

'वह क्या ?'

'यही कि मैं अपनी कोठी में चली जाऊँ, और उसे अपने साथ लेती जाऊँ।'

'किन्तु आपको इसमें बड़ी परेशानी होगी।'

'परेशानी कुछ अधिक नहीं होगी।'

'क्यों, अकेले रहना पड़ेगा।'

'अकेले रहने में कौन डर है? तुम्हारे डैडी के देहान्त के बाद कई साल तक अकेली रही, अभी कई वर्षों से तुम्हारे साथ रहती हूँ। तुम लोगों के मोह से चली आई थी। मेरी कोठी खाली ही पड़ी है, वहाँ जाकर बड़े आराम से रह सकती हूँ।'

'किन्तु मैं अकेली ही जाऊँगी।'

'इसका दुःख तो मुझको भी है, किंतु अब अधिक दिनों तक बिरजू को इस घर में रखना आस्तीन में साँप पालना है। पानी की बाढ़ आने के पहले पाल बाँध देना चाहिए।'

प्रकाश कुँवर ने विचार-मुद्रा में कहा—'हाँ, यह तो ठीक है, लेकिन तुमको अकेले छोड़ने को मन गवाही नहीं देता।'

'मेरा मन भी नहीं देता, किंतु क्या किया जाय? मजबूरी सब करवाती है। अगर बिरजू को हटाया नहीं जाता तो मुमकिन है कि कोई ऐसी दुर्घटना हो जाय, जिससे इस घर की बदनामी हो। लड़की जवान हो रही है, और एक ऐरा-गैरा छोकरा भी जवानी पर आ रहा है। वह भी देखने-सुनने में खूबसूरत है। दुनिया बड़ी छल-फरेब से भरी है। अपवाद लगाना, बदनामी उड़ाना उसका एक फर्ज-सा हो गया है। कहावत है कि बर्तन का मुँह किसी चीज़ से ढका जा सकता है परन्तु दुनिया का मुँह बन्द नहीं किया जा सकता।'

'हाँ, यह भी ठीक है, किन्तु यह भी तो सोचना चाहिए कि इस घर से तुम्हारे जाने के कारण दुनिया नए-नए अटकल लगा सकती है।'

'उसकी परवाह तुम न करो।'

'दुनिया तो यह कह सकती है कि बिरजू से अवश्य कोई ऐसी घटना घटी है, जिससे कर्नल साहब की सास उसको लेकर दूसरी जगह रहने चली गई और इस तरह बिरजू को हटा दिया गया है।'

'हाँ, ऐसा वह सोच सकती है, परन्तु अभी यह सोचने का अवसर

आया है।'

'अच्छा, जब आपसे पूछा जायगा कि दामाद के घर से क्यों चली आई, तब आप क्या उत्तर देंगी ?'

'मैं कह दूँगी कि अब वहाँ रहना नहीं चाहती। अभी तक बंगला खाली न रहने से उनके साथ रहती थी, किन्तु जब मेरी कोठी खाली हो गई है, तब बेटी और दामाद के साथ रहना असंगत प्रतीत होता है। यह अच्छा-खासा बहाना है।'

'हाँ, है तो, लेकिन यह भी पूछा जा सकता है कि आप विरजू को क्यों ले आईं ? वह तो कर्नल साहब के यहाँ रहता था।'

'साफ बात है कि वह मेरा ड्राइवर है।'

'मंजुला इस फेर-बदल का कारण जानना चाहेगी, उसे क्या समझाया जायगा ?'

'जो मन में आवे कह देना।'

''किन्तु वह क्या तुम्हें छोड़ना पसन्द करेगी ? वह किस प्रकार तुम्हारे मुँह लगी है, यह तुमको भली भाँति मालूम है।'

'क्या तुम समझती हो कि मैं आना-जाना क़तई बन्द कर दूँगी ? रोज़ आया करूँगी, और जैसे रोज़ खोज-खबर अभी तक लेती हूँ वैसे ही लेती रहूँगी।'

'मेरा ऐसा ख्याल है कि मंजुला कभी तुम्हारा इस घर से जाकर दूर रहना पसन्द नहीं करेगी और न उसके डैडी ही।'

'यह तो ठीक है, किन्तु इस आती हुई विपत्ति से छुटकारा पाने की क्या सूरत है; तुम्हीं बताओ। मैंने तो दूरन्देशी से यह प्रस्ताव रखा है। इस प्रबन्ध में मुझे बहुत कष्ट होगा, किन्तु तुम लोगों की भलाई के लिए वह सब सहन करूँगी। बहरहाल इससे बेहतर कोई उपाय ढूँढ़ निकालो।'

'तुम्हारा भय ठीक है। आग और फूस एक साथ नहीं रखना चाहिए, लेकिन तुमको घर से हटाने की बात मन में नहीं पैठती।'

केसर कुँवर ने थोड़ी देर बाद कहा—'तुम्हारी अनिच्छा से तो मैं नहीं

जाऊँगी, किन्तु भविष्य के लिए कोई न कोई उपाय तो करना पड़ेगा। मेरी समझ में यही सबसे अच्छा उपाय था—इससे साँप भी मर जाता, और लाठी भी न टूटती।'

'बात तो ठीक है, किन्तु......।'

'किन्तु-विन्तु न करो, लाडो। अब मुझे जाने दो, इसी में भलाई है।'

'अच्छा, कब जाना चाहती हो।'

'जितना शीघ्र संभव हो। आज कर्नल साहब के आने पर उनसे कहूँगी कि मैं अब अपनी कोठी में जाकर रहना चाहती हूँ, और उसकी सफाई आदि के लिए अभी जाकर चौकीदार से कह आती हूँ। कल या परसों तक वहाँ चली जाऊँगी।'

'इतनी जल्दी।'

'हाँ, देर करने से कोई लाभ भी तो नहीं है, बल्कि जितनी शीघ्रता से मैं जा सकूँ उतना ही अच्छा है।'

'कोई न कोई बात तुमने ज़रूर देखी है। तुम मुझे बताती नहीं। मेरा मन कहता है कि तुम कुछ न कुछ मुझसे छिपा रही हो।'

केसर कुँवर ने हँसते हुए कहा—'यह तुम्हारा अच्छा शक है। अपनी कोख की सन्तान से क्या दुराव रखूँगी!'

'किन्तु कल शाम तक कोई बात नहीं थी, आज सुबह होते ही यह बात कैसे सामने आ गई?'

'जाने के विषय में मैं कई दिनों से सोच रही थी, और आज सब बातों पर गौर करने के बाद निश्चय किया है। लाडो, जब इस बिरजू को यहाँ से दूर करने का कोई दूसरा उपाय नजर नहीं आया तब अन्त में इसको अपनाया है। अच्छा तुम कोई दूसरा मार्ग बताओ।'

'जो कुछ तुम कहती हो, वह सब ठीक है। बिरजू को अलग करने का इससे बढ़कर कोई दूसरा उपाय नहीं है, परन्तु......।'

'मैंने अब निश्चय कर लिया है। मेरे इस निश्चय में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। मेरे जाने में ही भलाई है, नहीं तो बैठे-बिठाए कोई क...

लग जायगा। मैं विरजू को लेकर अपनी कोठी जाती हूँ, और वहाँ सफाई करने का आदेश देकर वापस चली जाऊँगी। आज शाम को कर्नल साहब को सूचित कर कल या परसों जब तुम कहोगी, चली जाऊँगी।'

यह कहती हुई वह उठ खड़ी हुई। प्रकाश कुँवर ने असहाय दृष्टि से उनकी ओर देखकर कहा—'ममी, अभी तुम्हारा जाना निश्चित नहीं है। मैं सोच कर जवाब दूँगी।'

'अच्छा, ठीक है, खूब सोच-विचार लो। यदि कोई दूसरा रास्ता निकाल सको तो मैं वह अपनाऊँगी। अपनी कोठी जाकर देखने-सुनने में तो कोई हर्ज नहीं है। दो-तीन घंटों में लौट आऊँगी। हाँ, बिरजू को अपने साथ लिए जाती हूँ।'

यह कह कर वह शीघ्रता से कमरे के बाहर आकर बिरजू को ढूंढ़ने लगी। वह अपने कमरे में बैठा गत सन्ध्या की घटना पर विचार कर रहा था। उसको बुलाकर उसने कठोर स्वर में आदेश दिया कि वह गैरिज से मोटर निकाल लावें। उसके मन में आया कि वह इन्कार कर दे, किन्तु केसर कुँवर के मुख की कठोरता ने उसे उसका आदेश मानने के लिए विवश कर दिया। वह सिर झुकाए हुए मोटर लाने के लिए चला गया।

केसर कुँवर मन ही मन मुस्कराई। मोटर आ जाने पर वह उसमें बैठ गई और गंभीर मुद्रा में उसे कुतुब रोड पर चलने का आदेश दिया।

६

लाला बंशीधर चौपड़ा लट्ठे वाले दिल्ली के प्रख्यात व्यापारी थे। इनके पिता लाला रामलाल ने अपने समय में लंकाशायर और मैनचेस्टर की कपड़ा-मिलों का बना हुआ "लांग क्लाथ" लट्ठा कहकर बेचने से "लठ्ठे वाले" की उपाधि अर्जित की थी। उनकी दूकान इस नाम से इतनी

प्रसिद्ध हुई कि वह उनके पुत्र बंशीधर की पैतृक उपाधि बन गई। उन्होंने भी अपने समय में द्रव्य तथा यश दोनों ही पर्याप्त मात्रा में उपार्जित किए। उनका व्यापार केवल भारतीय जनता तक सीमित नहीं था, वरन् ऐंग्लो-इण्डियन मंडली तथा सैनिक अफसरों में भी उनकी पैठ थी। वह बड़े हँस-मुख, दयालु तथा उन्नत विचारों के व्यक्ति थे। उनकी सर्वप्रियता का मुख्य कारण यही था कि वह उधार देने में कभी इन्कार न करते थे, और तकाजा करने के लिए किसी को भेजते न थे। ग्राहक की इच्छा पर था कि वह उधार लिए हुए कपड़े का मूल्य अदा करे या न करे। उनके इस विश्वास का फल यह होता कि कोई उनका पैसा रखता भी न था। यदि कोई ग्राहक समय पर अदा न कर कुछ दिनों या वर्षों बाद पहुँचता, और कहता कि कुछ झंझटों के कारण वह वायदे पर रुपया अदा करने में असमर्थ रहा, तो वह हँसकर कहते—'अरे भाई, यह तो मेरे प्रति तुम्हारा अविश्वास है जिससे तुम इतने दिनों तक कपड़ा लेने नहीं आए। तुम समझते होगे कि लट्ठे वाले लाला बिना उधार चुकाए कपड़ा नहीं देंगे, इसलिए दूकान भी छोड़ दी। इतने दिनों तक तुमने अपने घर वालों को कपड़े की तकलीफ़ दी और वह भी मेरी वजह से। तुम ही बताओ, इस पाप का प्रायश्चित मैं क्या करूँ?' बेचारा ग्राहक शर्म से कट जाता, और सदा के लिए उनका अनुगत हो जाता। यदि रास्ते में आते-जाते किसी ग्राहक से उसके घर पर भेंट हो गई तो वह बिना संकोच के उसके घर के चबूतरे या कमरे में बैठ जाते तथा कुशल-समाचार पूछने के पश्चात् उसके बाल-बच्चों का सत्कार मिठाई आदि खरीदकर किया करते। शीतकाल में कम्बल और ऊनी कपड़े तथा ग्रीष्म में लट्ठे के कपड़े तो प्रत्येक वर्ष बाँटते ही रहते थे। अपने इन्हीं कई गुणों के कारण लाला बंशीधर दिल्ली-निवासियों के सर्वप्रिय थे।

सार्वजनिक जीवन जितना सुखी था, उतना ही उनका गार्हस्थ जीवन अपूर्ण था। यद्यपि उनका विवाह उनकी किशोरावस्था ही में हो गया था, किन्तु उनकी उस पत्नी से कोई सन्तान उत्पन्न नहीं हुई। उसके जीवित रहते वह दूसरा विवाह करने से सदैव इन्कार करते रहे, और जब उसका

शरीर-पात हुआ, तब वह प्रौढ़ हो चले थे। वयस-वृद्धि के बावजूद उनके घर बसाने की चिन्ता अनेकों को थी। अन्त में एक वृद्ध सैनिक की पुत्री के साथ उनका विवाह हो गया, जिसके ऊपर उनका हज़ारों रुपया कर्ज़ था। उनकी इसी दूसरी पत्नी का नाम था केसर कुँवर।

केसर कुँवर एक ग़रीब सैनिक अफसर की इकलौती कन्या थी, और उसका बाल्यकाल ऐंग्लो-इंडियन सभ्यता के मध्य बीता था। इसलिए उसी भाँति उसका रहन-सहन बना था। चाँदनी चौक वाली कोठी को छोड़ कुतुब रोड वाली कोठी में रहना उसका सर्व-प्रथम परिवर्तन था, जो उसके आगमन से उनकी गृहस्थी में होने प्रारम्भ हुए। धीरे-धीरे उनकी गृहस्थी ऐंग्लो-इण्डियन रहन-सहन में पूर्णतः रँग गई।

केसर कुँवर ने यथा समय एक लड़की को जन्म दिया। उसके पदार्पण से अँधेरे घर में प्रकाश हुआ, इसलिए पति-पत्नी ने उसका नाम प्रकाश कुँवर रखा। अभी प्रकाश कुँवर पाँच-छः वर्ष की हुई थी कि लाला बंशीधर का यकायक देहावसान हो गया। केसर कुँवर की गृहस्थी का भार पड़ा उसके पिता के ऊपर, किन्तु उनमें व्यापार चलाने की क्षमता नहीं थी। वृद्धावस्था के साथ-साथ उनमें शराब पीने का दुर्व्यसन भी था। केसर कुँवर के पास चल तथा अचल सम्पत्ति पर्याप्त मात्रा में थी, इसलिए उसने व्यापार बन्द करने में कल्याण देखा, और बैंक के ब्याज तथा मकानों के किराए पर अपना निर्वाह करना स्थिर किया।

केसर कुँवर के दिन उसके विधवा होने के पश्चात् बड़े आनन्द से बीतने लगे। इस समय उसके पास वे सभी वस्तुएँ उपलब्ध थीं जो ऐंग्लो-इंडियन समाज में रहने वाली नारी के लिए आवश्यक थीं। उसके पास सौन्दर्य, अपार धन-सम्पत्ति, यौवन और स्वतन्त्रता से उन सबके भोगने की इच्छा तथा अवसर थे। लाला बंशीधर कभी उसके हृदय पर विजय नहीं पा सके थे, और उनका गार्हस्थ-जीवन कभी सुखी नहीं हो सका था। दोनों की प्रकृति, रहन-सहन और विचारों में आकाश-पाताल का अन्तर था। वह उसको स्वच्छन्द रूप से जीवन व्यतीत करने का अवसर न देते थे। केसर

कुँवर का बाल्यकाल मातृहीन होने से नियंत्रित व्यवस्था में नहीं बीता था। इसलिए वह हठीली और मनमानी करने वाली थी। वह उस समय शर्म से कट जाती जब उसके मित्र उसका उपहास 'बुड्ढे की बीवी' कहकर करते थे, किन्तु उसमें दर्प की इतनी अधिकता थी कि वह उसके प्रत्युत्तर में कहती—"यदि बूढ़े से विवाह न किए होती तो तुम्हारी ही भाँति दर-दर भिखारिणी की तरह ठोकरें खाती। वह बेचारा बूढ़ा कितने दिनों चलेगा, फिर उसके धन का तो मैं ही उपभोग करूँगी—और तुम इसी प्रकार रो-रोकर जीवन बिताओगी।"

लाला बंशीधर की आकस्मिक मृत्यु से दिल्ली निवासियों की जो क्षति हुई थी, वह अपार थी; परन्तु आश्चर्य और शंका ने सबको अभिभूत कर लिया था। उन्हें सन्देह था कि उनके जीवन के साथ विश्वासघात हुआ है। उन्हें उनकी मृत्यु का समाचार तभी मिला, जब उनका शरीर जलकर पञ्चतत्त्वों में मिल गया था, और उनकी अर्थी के साथ जाने की इच्छा सबके मनों में रह गई थी।

उनकी मृत्यु से केसर कुँवर के जीवन की धारा बड़े वेग से परिवर्तित हो गई। उसने अपने पति के सब सम्बन्धियों से सम्पर्क तोड़ दिया, और स्वच्छन्दता से रहने लगी। उसने उन सभी भोगों को जुटा लिया, जिनका स्वप्न वह अपनी किशोरावस्था से देखती आ रही थी। उसकी कोठी इतनी सजी हुई थी जितनी सजावट राजमहलों में हो सकती थी। उसकी इन्द्रिय-भोग की लालसा दिनों-दिन तीव्र होती जाती थी।

लाला बंशीधर की मृत्यु से वह बिल्कुल स्वच्छन्द हो गई थी, और अब वह अपने पिता के एक फौजी मित्र ओमप्रकाश की उपपत्नी के रूप में रहने लगी। वृद्ध पिता की आँखों में धूल डालना उसके लिए कुछ कठिन नहीं था। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके प्रेमी ओमप्रकाश ने उसके साथ खुलकर रहने का एक उपाय ढूढ़ निकाला। बंशीधर से उत्पन्न उसकी पुत्री प्रकाश-कुँवर जो कान्वेन्ट स्कूल में शिक्षा पा रही थी, अब वयस्क हो गई थी। उसने उसके साथ अपने एक मात्र पुत्र वेदप्रकाश का विवाह करने का प्रस्ताव

केसर कुँवर के सामने रखा। पहले तो उसने इसे अस्वीकार किया, किन्तु अन्त में उसके समझाने-बुझाने से वह राज़ी हो गई, और इस प्रकार वह खुल्लम-खुल्ला अपनी बेटी और दामाद के साथ उनके घर जाकर रहने लगी, किन्तु अभाग्य ने उसका पीछा न छोड़ा। वेदप्रकाश के पिता की मृत्यु प्लेग से अकस्मात् हो गई, और पुनः केसर कुँवर एकाकी जीवन व्यतीत करने के लिए विवश हुई।

वेदप्रकाश स्वभावतः सीधे-सादे और छल प्रपंच से सर्वथा अनभिज्ञ व्यक्ति थे। वह केसर कुँवर का माँ की भाँति सम्मान करते थे, तथा अपने परिवार में उसको वैसा ही अधिकार दिए हुए थे। धीरे-धीरे उन्नति करते हुए वह कर्नल पद पर पहुँच गए, और केसर कुँवर को गृहस्थी का सब भार सौंपकर निश्चिन्त हो गए। जब मंजुला का जन्म हुआ, तब केसर कुँवर को मनोरंजन का एक साधन अवश्य मिल गया, परन्तु उसकी वासना की तृप्ति का कोई उपाय नहीं हुआ जो उत्तरोत्तर बढ़ रही थी। वह अपने को आधुनिकतम प्रसाधनों से सजाती, उसने प्लास्टिक सर्जरी से अपने बुढ़ापे छिपाने का प्रयत्न भी किया, किन्तु कोई उसकी ओर आकर्षित नहीं हुआ। इससे वह सदैव मन में मलीन और कुढ़ी-कुढ़ी रहती थी, परन्तु ऊपरी दिखावे में वह हँसमुख बने रहने का प्रयत्न करती।

धीरे-धीरे उसकी लुब्ध दृष्टि ब्रजमोहन पर पड़ी। उसने उसको अपनी वासनाओं का शिकार बनाने का संकल्प किया। कूटनीति से काम लेने का निश्चय कर वह एक ओर मंजुला आदि को भड़काने लगी और स्वयं उस पर दया-दिखाकर उसको अपने वश में करने लगी।

जब उसने देख लिया कि बिरजू उसके प्रभाव में बहुत कुछ आ गया है, और वह उस पर विजय प्राप्त कर सकेगी, तब उसने अपनी कोठी में जाकर रहने का विचार किया, क्योंकि वहाँ जितनी स्वच्छन्दता थी, वह यहाँ संभव न थी, और भेद भी खुल जाने का भय था। उसने एक चतुर शतरंज के खिलाड़ी की भाँति धीरे-धीरे अपने मोहरे आगे बढ़ाए थे, और उसको अपनी सफलता में कहीं कोई त्रुटि नहीं देख पड़ती थी। उसी उद्देश्य

से वह कई वर्षों बाद अपनी अनेकों वासनाएँ लिए, तथा उनकी पूर्ति का सुख-स्वप्न देखती हुई पुनः अपनी पुरानी क्रीड़ा-भूमि में जाने की भूमिका तैयार करने लगी।

७

जब केसर कुँवर अपनी कोठी के सामने पहुँची, तब उसकी विचार-धारा अपने आप टूट गई, और उसने बिरजू को ठहरने का संकेत किया। उसने ब्रेक लगाकर मोटर खड़ी कर दी तथा प्रश्न भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा। केसर कुँवर ने मोटर का द्वार खोलते हुए कहा—'बस आगे नहीं चलना है, इसी बँगले में जाना है। जानते हो यह किसका है ?'

बिरजू को इसके पूर्व इस बँगले में आने का सुयोग नहीं मिला था। उसने सिर हिलाकर अपनी अनभिज्ञता जाहिर की। बँगले का फाटक बन्द था। उसको खोलने के लिए वह उतर कर अग्रसर हुआ। केसर कुँवर भी उतरती हुई बोली—'फाटक के खम्भे में जो संगमरमर की पटिया में लिखा है ज़रा उसे पढ़ो।'

बिरजू ने पढ़ा—'केसर भवन।'

केसर कुँवर ने सुनकर मुस्कराते हुए कहा—'दूसरे खंभे पर लगी हुई पटिया की लिखावट भी पढ़ो।'

बिरजू ने पढ़ा—'लाला वंशीधर लट्ठे वाले।' यह कह कर फाटक खोलने का प्रयत्न करने लगा। भीतर से बन्द पाकर उसने कहा—'यह तो भीतर से बन्द है। आवाज़ दूँ ?'

'नहीं आवाज़ देने की कोई ज़रूरत नहीं है। नाम लिखी हुई पटिया के बीचों-बीच एक सूराख देख रहे हो। इसमें उँगली डालकर उसके नीचे के बटन को दबाओ। फाटक खुल जायगा।'

बिरजू ने वैसा ही किया। बटन दबाते ही विद्युत् शक्ति संचालित हुई और फाटक खुल गया। बिरजू आश्चर्य से देखने लगा।

केसर कुँवर ने मुस्कराते हुए कहा—'अब इसमें ऐसा परिवर्तन करा दूँगी कि मोटर फाटक के पास पहुँचते ही दरवाज़े अपने आप खुल जाया करें।'

बिरजू ने साश्चर्य पूछा—'तो क्या यह आपका बँगला है?'

'हाँ।' यह कहती हुई उसने बँगले के अहाते में प्रवेश किया। वह उसके साथ बँगले में न जाकर मोटर की ओर जाने लगा। केसर कुँवर ने पूछा—'कहाँ जा रहे हो? इधर आओ। मोटर वहीं खड़ी रहने दो।'

बिरजू को लौटकर उसके पीछे-पीछे चलना पड़ा। उसने देखा कि एक बड़े उद्यान के मध्य में दो-मंजिली कोठी बनी हुई है, जिसके चारों ओर खुला हुआ लॉन है, तथा उसके पश्चात् फलों के वृक्ष हैं। लॉन के किनारे और बीच के रास्तों पर मौसमी फूलों के पौधे कतारों में सजे हैं और उनसे घिरे हुए संगमरमर के कृत्रिम सरोवर हैं, जिनके बीच में फव्वारे लगे हैं। कोठी का अगला भाग जैसलमेर के पीले प्रस्तर खंडों से जड़ित है, जिनको सूर्य की रश्मियाँ स्वर्ण की भाँति चमका रही हैं। रंग-बिरंगे पक्षियों के कलरव से ही उसकी शान्ति भंग होती थी, और वे भी परम मोद से वृक्षों की डालियों के पत्तों की आड़ में अपने परिवार के साथ विहार करने में तल्लीन थे। आज के पहले बिरजू ने इतनी सुन्दर कोठी नहीं देखी थी। उसका सौन्दर्य देखते-देखते वह उसमें खो-सा गया। केसर कुँवर कनखियों से उसके मुख-मंडल पर क्षण-क्षण परिवर्तित होने वाले विचारों की छाया देखकर मन-ही-मन प्रसन्न हो रही थी। उसके वासना पूरित मन ने प्रश्न किया—'क्या यह वैभव अब भी उसे अन्धा नहीं बनावेगा?'

उनके आगमन की आहट पाकर माली और चौकीदार ने आकर केसर कुँवर का अभिवादन कर कहा—'हुज़ूर के 'दरसन'...।'

उसने उन्हें आगे बोलने नहीं दिया और कहा—'अब मैं फिर अपने घर में रहने के लिए आ रही हूँ। आज यह कहने के लिए आई हूँ कि कोठी की

सफाई कराने के लिए मदद लगा दो।'

'हुजूर, कोठी बिल्कुल साफ़ है। हुजूर मुआयना फरमाएँ।' चौकीदार यह कहकर आगे-आगे चलने लगा।

केसर कुँवर और बिरजू चारों ओर का मनोहर दृश्य देखते हुए आगे बढ़ने लगे। बिरजू की विचित्र अवस्था थी। वह प्रत्येक वस्तु को इस प्रकार देख रहा था, मानों उसकी जानी पहिचानी है। घूमते-फिरते वे फव्वारे के पास आए। कुंड के पास एक खाली चबूतरे को देखकर बिरजू ने सहसा चौकीदार से पूछा—'यहाँ यूनानियों की सौन्दर्य देवी 'वीनस' की मूर्ति थी, वह कहाँ गई?'

केसर कुँवर और चौकीदार चकित होकर उसकी ओर देखने लगे। बिरजू कह रहा था—'वह मूर्ति यूनान से मँगवाई गई थी—बड़ी खूबसूरत थी। वायसराय भी उसको देखकर मोहित हो गए थे। उन्होंने माँगा भी था, उन्हें दी नहीं गई, इसीसे वह कुछ रुष्ट भी हो गए थे।'

केसर कुँवर और चौकीदार ने फिर एक-दूसरे को प्रश्न भरी दृष्टि से देखा, मानों एक-दूसरे से पूछ रहे थे कि वर्षों बीती घटना उसे कैसे मालूम हुई?

बिरजू आँखें बन्द किए हुए स्वप्न देखते हुए व्यक्ति की भाँति कह रहा था—'इसी प्रकार की तीन दूसरी मूर्तियों के बनाने की बात चली थी—शायद पेशगी रुपया भी भेज दिया गया था, मालूम नहीं कि वे आईं या नहीं? प्रत्येक फव्वारे के पास उनके लगाने की बात थी। क्यों चौकीदार तुम्हारा नाम माधवसिंह है न?"

वस्तुतः माधवसिंह चौकीदार का नाम था। उसने उसकी ओर विस्मित दृष्टि से देखते हुए कहा—'जी हाँ, मेरा नाम माधवसिंह है।'

'तुमको उन मूर्तियों के सम्बन्ध में कुछ मालूम है?'

'हुजूर, वे मूर्तियाँ बनकर आई थीं, लेकिन बड़े हुजूर के परलोक वास हो जाने से वे फिर यहाँ लगवाई नहीं गईं, बल्कि चारों कमरों में लगाई गई हैं। हुजूर अन्दर चलकर देखेंगे।'

केसर कुँवर अत्यन्त विस्मय के साथ बिरजू को देख रही थी, जो कुंड की जगत पर आँखें बंद किए निश्चेत-सा बैठा था। जब चौकीदार को उसे हुजूर कहकर सम्बोधन करते हुए सुना, तब केसर कुँवर ने कहा—'वह मेरी मोटर का ड्राइवर है, उसे 'हुजूर' मत कहो।'

चौकीदार चुप होकर बीती बातों को याद करने लगा। फिर धीमे स्वर में कहा—'हुजूर, उसको पुरानी बातें कैसे मालूम हुईं, क्या आपने कभी जिक्र किया था।'

'नहीं, मैं खुद ताज्जुब कर कर रही हूँ।'

बिरजू कहे जा रहा था—'कमरों में लगाने के लिए तो छोटी-छोटी दूसरी मूर्तियाँ मँगवाई गई थीं। राधाकृष्ण की भी कई मूर्तियाँ थी, जिन्हें जयपुर से मँगवाया गया था। उफ़! मेरे सिर में बड़ी पीड़ा हो रही है।' कहते-कहते उसने दोनों हाथों से अपना सिर दबा लिया। केसर कुँवर उसके पास आकर खड़ी हो गई और विस्मय-मिश्रित भीत स्वर में कहा—'बिरजू, तू अपने होश में है?' यह कहकर वह उसे पकड़ कर हिलाने लगी। उसका हाथ लगते ही उसका शरीर काँपा और निर्जीव की भाँति वह नीचे गिरने वाला था कि केसर कुँवर ने अपने हाथ का सहारा देकर रोक लिया।

चौकीदार ने भी उसके समीप आकर उसको पकड़ लिया। बिरजू अचेत होकर उसकी बाँहों में लुढ़क गया। उसने उसे गोद में उठाते हुए कहा—'मालूम होता है कि इसको मिरगी आती है। मेम साहिबा, आप अपने कोठी के अन्दर चलकर आराम करें। रामखिलावन की मदद से इसको अपनी कोठरी में ले जाकर मैं इलाज का प्रबन्ध करता हूँ। जहाँ सात बार इसको जूता सुँघाया, यह होश में आ जायगा। आप चिन्ता न कीजिए, दस-पन्द्रह मिनट में चंगा हो जायगा।'

केसर कुँवर इतनी ध्यान-मग्न थी कि उसने उसके कथन का एक शब्द भी नहीं सुना। वह अपलक उसे देख रही थी। जब रामखिलावन की सहायता से माधवसिंह उसके हाथ-पैर पकड़ कर उठाने लगा, तब केसर कुँवर की चेतना वापस आई और उसने जड़ित स्वर में कहा—'बड़े गोल कमरे में ले

चलो और कोठी के टेलीफोन से डाक्टर दास को शीघ्र ही आने के लिए बोलो।' फिर क्षणभर बाद कहा—'तुम लोग चलो, मैं ही जाकर फोन करती हूँ।'

यह कहकर वह शीघ्रता से फोन करने के लिए चली गई।

८

मंजुला ने दामिनी के साथ घर में प्रवेश करते हुए प्रकाश कुँवर से पूछा—

'बिरजू का आज पता ही नहीं मिलता। न मालूम कहाँ छिपकर बैठ गया है?'

'वह तुम्हारी ग्रैनी के साथ गया है।'

'ग्रैनी! इतनी जल्दी तैयार होकर कहाँ गई है?'

'वह अपनी कोठी में जाकर रहना चाहती है, इसलिए उसकी सफाई कराने के लिए कुतुबरोड वाले बँगले में गई है।'

'ग्रैनी क्यों यहाँ से जा रही है?'

'उन्हीं से पूछना।'

'क्या तुमने उन्हें कुछ कहा-सुना है?'

'पगली, मैं अपनी माँ को क्या भला-बुरा कुछ कह सकती हूँ।'

'फिर क्यों, यहाँ से जाने का विचार उनके मन में उठा है?'

'कह तो दिया, उन्हीं से पूछना! मैं कुछ नहीं जानती।'

'तुमसे कहकर तो गई होंगी। तुमने कारण क्यों नहीं पूछा?'

'कहाँ तक तुम्हारी जिरह का जवाब दूँ। मैं अब जाकर तुम लोगों के लिए चाय तथा कलेवा भेजती हूँ। दामिनी बेटी, इस देर के लिए मुझे क्षमा करना।'

'वाह माँ जी, आप क्या फरमाती हैं। मैं तो चाय पीकर आई हूँ। मंजू ने कल बताया था कि बिरजू अच्छा चित्रकार है, इसलिए उसकी कला के कुछ नमूने देखने आई थी।'

'अरे, वह चित्रकार या मुसव्विर कुछ नहीं है। बड़ा अभागा और नट-खट है। उसको मुँह लगाना पाप है। उससे मैं बहुत परेशान हो गई हूँ—शीघ्र ही उसे हटाऊँगी।'

'माँ जी, यदि उसे आप अपनी नौकरी से पृथक करती हैं, तो उसे मेरे यहाँ काम करने की अनुमति देने की कृपा करें।'

'अरे उस जाहिल, निकम्मे को अपने यहाँ रखकर क्या करोगी?' यह कहकर वह शीघ्रता से चली गई।

मंजुला ने उसके जाने के बाद कहा—'ममी के सवाल का जवाब मैं दे सकती हूँ। कहो, तो तुम्हें सुना दूँ।'

'जी नहीं, आपके सुनाने की जरूरत नहीं है। तुम्हारी मूर्खताएँ सुनते-सुनते जी ऊब गया है।' दामिनी ने एक पत्रिका उठाते हुए कहा।

'लेकिन आप भी पत्रिका तो नहीं पढ़ सकतीं।' कहते हुए उसने पत्रिका छीनकर कमरे के बाहर फेंक दी।

'अच्छा, तो मैं अब चलती हूँ। ग्यारह बज गया है। बारह बजे प्रमोद भैया के साथ बाज़ार जाना है।'

'अमेरिका और इंगलैंड की जलवायु ने उन पर क्या प्रभाव डाला है, यह तो बताओ?'

'जानने की इतनी उत्सुकता क्यों है? क्या उनसे विवाह करने का इरादा है? हाँ मंजू, अगर मेरी भौजाई बनना तुम मंजूर करो तो फिर बड़ा मज़ा आए। हमारा-तुम्हारा साथ कभी नहीं छूटेगा।'

'और तुम अगर मूर्खराज बिरजू से विवाह कर लो, तो दम्मो बड़ा मज़ा आए?' यह कहकर वह हँसने लगी।

'मूर्खों की रानी तुम हो, यह तुमने भली भाँति साबित कर दिया?'

'वह कैसे?'

'मूर्ख को यदि अपनी मूर्खता प्रकट हो जाया करे तो थोड़े दिनों में वह सुधर जायगा। मुश्किल यही है कि उसे अपनी मूर्खता का पता नहीं चलता, इसलिए वह सदैव मूर्ख बना रहता है।'

'तुम्हारा यह विचार ठीक है, इसीलिए तुम इतनी मूर्ख बनी रह गई।'

'मेरे भाई के साथ तुम अपने विरजू की बराबरी करती हो, अब तुम ही फैसला करो कि मूर्ख तुम हो या मैं?'

मंजुला ने हाथ जोड़कर क्षमा-याचना करते हुए कहा—'बेशक, मैं मूर्खता स्वीकार करती हूँ, परन्तु इतना तो मैं कहूँगी ही कि तुम उसके प्रति आकर्षित हो।'

'यह तुम्हारी दूसरी मूर्खता है। सहानुभूति या दया अथवा अन्याय की आलोचना कभी प्रेम नहीं हो सकता; हाँ मनुष्यत्व भले ही कहो।'

'अच्छा, यह भी मंजूर किया। अब तो खुश हो।' यह कहकर वह उसे गुदगुदाने लगी।

दामिनी ने हँसते हुए कहा—'अरे भई, अब तो बस करो। तुम्हारा यौवन अब धरे-बाँधे नहीं रहता।'

'और तुमने उसे बन्द कर ताला लगा दिया है?'

'किन्तु विवेक के कपाट अवश्य लगा रखे हैं।'

इसी समय खानसामह चाय की ट्रे लिए हुए कमरे के द्वार पर दिखाई दिया। उसे देखकर दोनों का हास्य-विनोद तत्क्षण बन्द हो गया।

खानसामह ने चाय की ट्रे मेज़ पर रखते हुए दामिनी से कहा—'आपके लिए टेलीफोन है।'

'मेरे लिए टेलीफोन है?'

'जी हाँ, मेम साहब ने यही फरमाया है। कोई प्रमोद साहब आपसे बात करना चाहते हैं। मेम साहब ने आपको इत्तिला करने का हुक्म दिया है।'

'प्रमोद भैया इन्तज़ार करते-करते थक गये हैं।' यह कहती हुई दामिनी नीचे जाने लगी।

मंजुला ने उसे पकड़ते हुए कहा—'मैं यहीं टेलीफोन मँगाये लेती हूँ।'

फिर खानसामह से कहा—'जाओ, यहीं टेलीफोन ले आओ।'

दोनों चाय पीने के लिए बैठ गईं। एक घूंट पीने के पश्चात् मंजुला ने कहा—'तुम्हारी बारह बजे जाने की बात तय हुई थी ?'

'हाँ, वह भी तुम्हारी तरह आजकल दस-ग्यारह बजे तक सोते हैं। उस समय वह सो रहे थे, जब मैं तुम्हारे यहाँ आ रही थी। उनकी मेज़ पर एक चिट लिखकर रख आई थी कि बारह बजे तक वह अवश्य तैयार हो जायँ।'

'ठीक है; तब वे 'परफेक्ट जैन्टिलमैन' हैं। ग्रैनी कहती हैं कि भले आदमियों के सोकर उठने का समय दस-ग्यारह बजे है।'

'तभी तो कहती हूँ कि तुम्हारा और उनका जोड़ा ठीक रहेगा।'

'फिर वही बात ! यह तुमको नहीं मालूम कि मेरी मँगनी हो गई है।'

'कब यह तुमने नहीं बताया ?'

'अभी औपचारिक रूप से उसका अनुष्ठान तो नहीं हुआ, परन्तु डैडी और मम्मी लगभग तय कर चुके हैं।'

'वह कौन भाग्यवान है ? जरा मैं भी सुनूं तो।'

'वह एक बड़ा-सा लंगूर है।'

'बहरहाल वह देशी लंगूर नहीं है, कोई विलायती ही मालूम देता है।'

'नहीं है तो देशी—सिर्फ उसका मुँह न काला है, और न उसके पूँछ है।'

'किन्तु लंगूर के पूँछ होती है।'

'छोटी-सी' परन्तु उसकी घिस गई है।'

'अब तुम उसकी रंग-बिरंगी पूँछ बनकर उसे 'मोर' बना लेना। आखिर, उसका नाम तो बताओ। वह है कौन ?'

'अब सब बातें जानकर क्या करोगी ? जब औपचारिक रूप से मँगनी का अनुष्ठान होगा, तब सब प्रकट हो जायगा; परन्तु इतना तो तुमको बता ही दूँ कि मैंने अभी अपनी सम्मति नहीं दी है।'

'क्यों ?'

'मुझे वह कुछ जंचता नहीं है।'

'क्यों नहीं पसन्द आता ? क्या उसमें कोई त्रुटि है ?'

'ज़ाहिरा में कोई त्रुटि नहीं है, परन्तु वह मेरे योग्य भी नहीं है।'

'कुछ बताओ तो, उसमें कौन-सी अयोग्यता है ?'

'अरे छोड़ो इन बातों को—लो टेलीफ़ोन आ गया, अपने भाई साहब से बातें करो। हाँ, यदि उनको यहीं बुला लो तो क्या कोई हर्ज है ? वह क्या यहाँ नहीं आ सकते ?'

'आ क्यों नहीं सकते ?'

'तो फिर ज़रूर बुलाओ। मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी। मुझे भी कई चीज़ें ख़रीदनी हैं। क्यों, मुझे साथ ले चलना मंजूर है ?'

'प्रमोद भाई साहब भी तुमसे मिलना चाहते थे। मैंने तुम्हारे सौन्दर्य की बड़ी तारीफ़ की थी।'

मंजुला मन ही मन सन्तुष्ट हुई। उसने उसे छिपाते हुए कहा—'जाओ तुम बड़ी दुष्ट हो।' खानसामह के कमरे के बाहर चले जाने के बाद दामिनी ने टेलीफोन से कहा—'मैं दामिनी बोल रही हूँ। क्या प्रमोद भैया बोल रहे हैं ?"

स्वीकारात्मक उत्तर मिलने के बाद कहा—'आप मंजुला के यहाँ चले आइए, वह भी हमारे साथ बाज़ार चलेगी। यहीं पर आपका परिचय करवा दूंगी। आप स्वयं देख लेंगे कि मैंने उसकी सुन्दरता के बारे में एक शब्द भी बढ़ाकर नहीं कहा है।'

मंजुला ने टेलीफ़ोन के चोंगे को हाथ से ढकते हुए कहा—"क्या बेहूदा बक रही हो ! तुम शरारत से बाज़ नहीं आतीं।'

दामिनी ने उसका हाथ हटाते हुए कहा—'मंजुला पास ही बैठी हुई तो कहती है कि मेरी सुन्दरता का बखान मत करो। अच्छा आप आ जाइए।'

मंजुला ने उसके हाथ से टेलीफोन छीन कर रखते हुए कहा—'बस करो। मेरे सम्बन्ध में क्या अनर्गल बकने लगी।'

'क्या कुछ झूठ कहा है ?'

'झूठ न सही, किन्तु कोई बात कहने की होती है और कोई नहीं।

बड़ी विवेक-बुद्धि वाली बनती हो, परन्तु शऊर नाम को नहीं है !'

'इतना बिगड़ती क्यों है ? मैंने ऐसा कौन-सा अपराध कर दिया है ?'

'देखो, मैं कहती हूँ कि तुम शरारत मत करो।'

'नहीं तो क्या करोगी ? अपनी शादी में नहीं बुलाओगी ?'

'बेशक ! अगर तुम्हारे यही लक्षण रहे तो शादी की बात बहुत दूर है, आज ही तुमसे बोलना बन्द कर दूँगी।'

'अभी नहीं, जब प्रमोद भाई साहब से परिचय करवा दूँ, तब आप मुझसे बोलना छोड़ दीजिएगा। अभी परिचय कराने के लिए मेरी आवश्यकता है।'

'आज तुम्हें हो क्या गया है ! बहुत बढ़-बढ़कर बोल रही हो।'

'जब तुम बड़े लोगों से बोलना पड़ता है तब ·····।'

मंजुला उसे गुदगुदाने लगी। दामिनी उठकर खड़ी हो गई और उसने उसका हाथ पकड़ लिया।

मंजुला ने अपना हाथ घुमाते हुए कहा—'तुम इस तरह नहीं मानोगी ?'

'अरे भई, मैं अब कुछ नहीं कहूँगी। न मालूम क्यों मुझे बड़ी गुदगुदी लगती है।'

''जिसका शरीर कोमल होता है, उसे गुदगुदी लगती है। तुम्हारा शरीर तो हलुआ है !'

'भई, इस हलुए पर दाँत मत लगाना।'

'मैं क्या दाँत लगाऊँगी ? यह अधिकार तो किसी दूसरे का है। मैं अमानत में खयानत नहीं करती।'

'यह तो बताइए, मुझे अमानत बनाकर किसने आपके पास रखा है ?'

'बता दूँ।'

'हाँ, अवश्य !'

मंजुला बाथरूम का दरवाजा खोलकर अन्दर चली गई और द्वार बन्द करते हुए बोली—'तुम्हारे किसी अनजान प्रीतम ने।' यह कहकर वह द्वार बन्द कर हँसने लगी।'

दामिनी ने हँसकर कहा—'अच्छा, बाहर निकलने पर बताऊँगी।' यह कहकर वह कमरे में टंगे हुए चित्रों को देखने लगी।

९

प्रमोद और मंजुला मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। प्रमोदकान्त का जैसा बाहरी रूप रंग आकर्षक और भव्य था, वैसा ही उसका अन्तरंग स्वच्छ, विकार रहित और उन्नतशील था। भारत के स्वातन्त्र्य संग्राम में प्रमोद के माता पिता ने प्रमुख भाग लिया था, और उनके जीवन का एक बहुत बड़ा भाग जेल में बीता था। प्रमोद के पिता मनोहरलात ने सन १९२१ में महात्मा गांधी के आह्वान पर कालेज की पढ़ाई छोड़ आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने लगे। उनके पिता ने उनके इस आचरण का अनुमोदन नहीं किया। उनको उस कंटकाकीर्ण मार्ग से विरत करने के लिए अनेकों चेष्टाएँ कीं, परन्तु देश-प्रेम की लगन कुछ इस प्रकार उनके मन में बैठ गई थी कि वह निकाले न निकली। और जब उन्होंने अपने अंतिम अस्त्र, अर्थात् अपने उत्तराधिकार से वंचित करने का उनके पिता ने जब उन्हें भय दिखाया तब मनोहरलाल ने स्वयमेव त्याग-पत्र लिखकर अपने पिता के चरणों में अर्पित कर दिया और एक धोती-कुरता पहने हुए वह रण-प्राङ्गण में कूद पड़े। उन पर अनेकों आपत्तियाँ, अनेकों कठिनाइयाँ आईं, परन्तु वह सदैव अचल और अडिग रहे। ईमानदारी और लगन के साथ वह स्वदेश सेवा में बराबर एक मन-वचन-कर्म से लगे रहे। उनकी निस्पृहता और अटूट सेवा ने कांग्रेस के आंदोलन में जान डाल दी, तथा घर-बाहर उनकी ख्याति फैलने लगी। सन् १९२८ में जब उनके पिता मृत्यु-शय्या पर पड़े थे तब उन्होंने मनोहरलाल को बुलवा भेजा। तीन वर्षों बाद पिता-पुत्र में भेंट हुई। पिता ने उन्हें एक दान-पत्र दिखाते हुए कहा कि उन्होंने अपनी सब सम्पत्ति उनकी विमाता को दान

कर दी है, और उसमें उनकी स्वीकारोक्ति में हस्ताक्षर करने का आदेश दिया। मनोहरलाल ने बड़ी तत्परता से उनके सम्मुख अपने हस्ताक्षर करके सौंप दिया। उनके पिता ने उसे अपनी दूसरी पत्नी को रखने के लिए दिया; परन्तु उसने लेकर दीपक के समर्पण कर दिया। उनके पिता हा-हाकार कर उठे, परंतु उस रमणी ने उत्तर दिया—'यह धन ही आपकी शान्ति में बाधक था। अब इसकी उचित व्यवस्था हो गई। आप भगवान का ध्यान करिए, मेरा नहीं। मैं इतना धन लेकर क्या करूँगी? मुझे दो रोटियाँ चाहिएं। उससे मुझे कोई वंचित नहीं कर सकता।' मनोहरलाल ने पिता के चरणों को स्पर्श करते हुए कहा—'यद्यपि चाची ने दानपत्र जला दिया है, परन्तु मैं आपकी आज्ञा अक्षरशः पालन करूँगा। जब तक चाची जीवित रहेंगी, तब तक आपकी सम्पत्ति उन्हीं की रहेगी, और जिस प्रकार मैं अभी तक रहता आया हूँ, वैसे ही रहूँगा।' पिता के नेत्रों से अश्रु-धारा निकल पड़ी, और उन्होंने निश्चिन्त होकर अपने प्राण विसर्जित किए।

मनोहरलाल ने अपनी प्रतिज्ञा का अक्षरशः पालन करने का निश्चय किया, किन्तु उनकी विमाता ने भी अपने हृदय का समस्त स्नेह उन पर उँडेल दिया, और पिता के निधन के पश्चात् उसने उनको पैतृक कारबार सँभालने का आदेश दिया। स्वयं मनोहरलाल गांधीवादी थे, किन्तु सशस्त्र क्रांति में विश्वास करने वालों के साथ भी उनकी पूरी सहानुभूति थी। देश के प्रायः सब बड़े-बड़े षड्यन्त्रकारी आर्थिक सहायता प्राप्त करने लगे। पुलिस की निगाहों में वह चढ़ गए, रोजाना उनके घर की तलाशियाँ होने लगीं, परन्तु उस भयंकर अग्नि से उनका खेलना बंद न हुआ। दामिनी का जन्म हुआ, तब वह जेल में थे। उनके लौटने पर प्रमोद की माँ का भी देहान्त हो गया। वह स्वयं देश के कार्यों में लगे रहते, और प्रमोद तथा दामिनी का पालन-पोषण, शिक्षा आदि का समुचित प्रबन्ध करने के लिए उन्होंने दूसरा विवाह किया। भाग्यवश उनको इस बार ऐसी पत्नी मिली, जैसी वह कामना करते थे। उनकी इस दूसरी पत्नी का नाम करुणा सुन्दरी था। यद्यपि विवाह के समय वह शिक्षिता नहीं थी, तथापि उसके संस्कारों तथा व्यव-

स्थित शिक्षा ने उसे वैसा बनाने की प्रेरणा दी जैसा मनोहरलाल चाहते थे। प्रमोद और दामिनी को उसने माँ का वात्सल्य भी दिया, और साथी जैसा सौहार्द्र भी। वह भी पति के साथ स्वदेश-सेवा के कार्यों में हाथ बढ़ाने लगी। उनका घर प्रेम-स्नेह, तथा अतिथि-सेवा का पर्याय बन गया। प्रत्येक देश-सेवक के लिए उनका घर खुला हुआ था, और वे निस्संकोच वहाँ आश्रय लेते थे।

मनोहरलाल के परिवार के साथ उनकी एक विधवा चाची भी रहती थीं। उन्होंने ऐसा ममतापूर्ण हृदय पाया था कि सभी कार्यकर्त्ताओं को अपनी ही सन्तान जानती, समझती और वैसा ही व्यवहार तथा आचरण भी करती थी। उन्हें आलस्य तो छू ही न सका था। गृहस्थी चलाने का सारा भार अपने ऊपर लेकर सबको देश-सेवा के लिए मुक्त कर दिया था। मनोहरलाल तथा करुणा सुन्दरी की अनुपस्थिति में भी वह अपनी सहज उदारता, स्नेह, तथा ममता से आगन्तुकों को आश्रय देती, भोजन की व्यवस्था तथा रक्षा करती थी। ऐसे कई अवसर आए जब उन्होंने अपनी प्रत्युत्पन्न बुद्धि से पुलिस को चकमा देकर उन षड्यन्त्रकारियों की रक्षा की थी जिनको पकड़ने के लिए बड़े-बड़े पुरस्कार घोषित हुए थे। मनोहरलाल भी सब भार उन पर डालकर बिल्कुल निश्चिन्त रहते।

मनोहरलाल ने करुणा सुन्दरी को अपनी नई पद्धति के अनुसार शिक्षित करना आरम्भ किया। वर्णमाला का ज्ञान कराने के पश्चात् दैनिक पत्र पढ़वाने लगे। इस प्रकार राजनीति में घटित होने वाली घटनाओं से परिचित कराते हुए उनके प्रति सुरुचि तथा आसक्ति उत्पन्न करते, और उनमें सक्रिय भाग लेने के लिए प्रोत्साहन भी देते। नारी स्वयं-सेविकाओं के साथ उसे भी धरना देने के लिए भेजने लगे, और इस प्रकार निम्नतम श्रेणी से सभी बातों का ज्ञान प्राप्त करते हुए वह भली-भाँति मंज गई। जब-जब बड़े-बड़े नेताओं का सम्मेलन उनके घर में होता, तब तब उनकी सेवा-प्रबन्ध का भार मनोहरलाल उसपर डालकर उसको स्वावलम्बी बनाने लगे। काँग्रेस अधिवेशनों में चोटी के नेताओं से उसका सम्पर्क कराकर और उसके सामने उनके आदर्श उपस्थित

कर उसमें वक्तृत्व शक्ति जागृत करने लगे। वर्षों के अध्यवसाय, तपस्या, निष्ठा तथा शिक्षण-शिविरों में क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् वह नेतृत्व करने में पूर्ण समर्थ हो गई। इसके परिणाम स्वरूप उसे काई बार जेल भी जाना पड़ा, और उससे जीवन में दृढ़ता, सहिष्णुता तथा आत्म-निर्भरता भी आई।

जब भारत स्वाधीन हुआ और कांग्रेस के हाथ में राजसत्ता आई, तब मनोहरलाल से मिनिस्टर बनने के लिए आग्रह किया गया, किन्तु उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया। वह जनसेवक ही बने रहना चाहते थे। अधिकार एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने की भावना उनके मन में जाग्रत ही न होती थी, किन्तु जब करुणा सुन्दरी को राजसभा का सदस्य मनोनीत कर उससे वह स्थान ग्रहण करने का अनुरोध किया गया, तब न मनोहरलाल ही इन्कार कर सके और न करुणा सुन्दरी ही उससे दूर भाग सकी।

प्रमोद और दामिनी की शिक्षा राजनीति में भाग लेते हुए बराबर चल रही थी और जब देश स्वाधीन हुआ, तब मनोहरलाल ने उसे विदेश भेज दिया। दामिनी की भी इच्छा थी कि वह भाई के साथ जाय, किन्तु करुणा सुन्दरी ने उसे नहीं जाने दिया। पैतृक गुणों ने प्रमोद में विकास पाया था, और राजनीतिक वातावरण ने उसमें देश-प्रेम की वह नींव लगा दी थी, जिसका मिटना असंभव था। विदेश में रहते हुए भी उसने वहाँ के गुणों को ही अपनाया और सब बातों का सूक्ष्म अध्ययन किया, जिनसे देश की उन्नति संभव थी। विदेश से लौटकर वह अपने भविष्य का कार्यक्रम बना रहा था, परन्तु कोई मार्ग अभी तक निश्चित नहीं हुआ था।

दामिनी और मंजुला सहपाठिनी थी और एम० ए० में साथ-साथ शिक्षा प्राप्त कर रही थीं। मंजुला के सौन्दर्य से आकर्षित होकर वह प्रमोद के साथ उसका विवाह करना चाहती थी, परन्तु जब उसे मालूम हुआ कि उसकी मँगनी कहीं अन्यत्र होने जा रही है, तब उसके मन को ठेस पहुँची।

दोपहर को बाजार में खरीदारी के पश्चात् प्रमोद ने दामिनी से कहा—'दम्मो, चलो कुछ जलपान किया जावे। अपनी सखी का इतना भी

सत्कार नहीं करोगी ?'

'मैं इनको घर ले चलकर भोजन कराऊँगी। अम्मी ने यही कहा भी था।'

मंजुला ने तुरन्त उत्तर में कहा—'मैं कुतुब रोड ग्रैनी के पास जा रही हूं। मैं आज नहीं चल सकूँगी।'

'वाह, यह कैसे हो सकता है कि आप हमारे घर न चलें। अम्मी हमारी प्रतीक्षा कर रही होंगी।'

'किन्तु कुतुब रोड अभी जाना जरूरी है। मैं ग्रैनी को हरगिज वहाँ नहीं रहने दूँगी।'

'हाँ उनको वहाँ नहीं रहना चाहिए, यह मेरा भी मत है। पहले घर चलकर हम सब भोजन कर लेवें, फिर वहाँ से कुतुब रोड चलेंगी। क्यों प्रमोद भैया, आपका क्या मत है ?'

'मत मेरा भी यही है, परन्तु मंजुला जी की इच्छा के विपरीत कुछ न होना चाहिए।'

'पहले ही दर्शन में मंजुला जी के भक्त बन गए।' दामिनी उसकी ओर देखती हुई हँसी।

मंजुला के कपोल लाल हो गए, उसने अपना मुँह फिराते हुए कहा—'व्यर्थ की छेड़-छाड़ अच्छी नहीं होती।'

'आजकल क्या नाक पर ग़ुस्सा धरा रहता है ?'

प्रमोद ने अपना सुझाव रखते हुए कहा—'पहले कुतुब रोड ही चला जावे और फिर वहाँ से हम लोग घर आकर भोजन करें तो कैसा रहेगा ? क्यों दम्मो ?'

'मैं स्वीकार करती हूँ, अब शायद मंजुला रानी को कोई आपत्ति नहीं होगी।'

'अभी कुतुब रोड तो चलो, आगे का कार्यक्रम फिर बनेगा।'

यही बात स्थिर होने पर वे तीनों कुतुब रोड पर स्थित केसर कुँवर की कोठी की ओर चल दिए।

१०

मंजुला तब प्रमोदकान्त और दामिनी के साथ अपनी नानी के बँगले में पहुँची, तब बिरजू को होश आया ही था और वह आश्चर्य से इधर-उधर देखकर परिस्थिति को जानने के लिए उत्सुक था। केसर कुँवर के मस्तिष्क में अब तक अनेकों विचार-तरंगें उठी थीं और वह एक ऐसे मायाजाल में फँस गई थी, जिससे छुटकारा पाना उसके लिए असंभव हो रहा था। उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि बिरजू को उन अतीत घटनाओं को किसने बताया, जिनकी याद उसको भी नहीं थी और न उसने कभी किसी से उसकी चर्चा की थी। इसके अतिरिक्त उसको चौकीदार का नाम कैसे ज्ञात हुआ, जिसको उसने कभी नहीं देखा था, क्योंकि वह इसके पहले इस बँगले में नहीं आया था। उसका मन इन विचित्रताओं को देखकर बहुत परेशान हो रहा था, परन्तु इसका रहस्यभेद न होता था। डाक्टर दास ने जब उसकी परीक्षा कर बताया कि उसकी बीमारी मिरगी नहीं है, वरन् वह किसी मानसिक उथल-पुथल के कारण अचेत हो गया है, तब उसके मन में अनेक आशंकाएँ उठने लगीं। साधारण उपचार के पश्चात् भी जब वह अचेत बना रहा, तब डाक्टर दास को भी चिन्ता हुई। उन्होंने कई इन्जेक्शन दिए, दवाएँ पिलाईं, परन्तु उनसे कोई लाभ नहीं हुआ। उसका चेहरा पीला था, जैसे उसकी शिराओं का रक्त संचालन ही बंद हो गया हो, परन्तु इससे उसकी सुन्दरता में न्यूनता के बजाय कुछ अधिकता ही आ गई थी। डाक्टर दास जब अपने प्रयत्न में असफल रहे, तब उन्होंने अपने एक साथी डाक्टर बैनर्जी को बुलाया और उन्होंने बताया कि यह अचेतनता किसी मानसिक आघात के कारण हुई है जो अपने आप दूर होगी। नितान्त वैसा हुआ भी। लगभग तीन घंटे की बेहोशी के बाद उसे होश आया और

वह चारों ओर देखने लगा। दोनों डाक्टर उसके लिए सर्वथा अपरिचित थे। केसर कुँवर ने उसके पास आकर चिन्तित स्वर में पूछा—'बिरजू, अब कैसी तबीयत है ?'

'सिर में थोड़ा दर्द है और यह जगह घूमती हुई दिखाई दे रही है। मैं कहाँ हूँ ? मुझे क्या हो गया था ?' बिरजू ने धीमे स्वर में पूछा।

केसर कुँवर के उत्तर देने के पहले ही डाक्टर दास ने पूछा—'तुम बताओ कि तुम्हें कौन-कौन बातें स्मरण हैं।'

बिरजू ने आँखें बन्द कर लीं। डाक्टर बैनर्जी ने औषधियों का घोल एक गिलास में तैयार किया और उसके मस्तक पर हाथ फेरते हुए कहा—'मुँह खोलो। इस दवा से तुम्हारे सिर का दर्द मिट जायगा और ताक़त मालूम होगी।'

बिरजू ने बिना किसी आपत्ति के औषधि पी ली। कुछ मिनटों पश्चात् ही उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि एक अद्भुत स्फूर्ति उसके शरीर में उत्पन्न हो रही है, जिससे उसका अवसाद नष्ट होने लगा है।

केसर कुँवर ने पूछा—'क्यों बिरजू, अब ताक़त आ रही है ?'

बिरजू के उत्तर देने के पहले डाक्टर ने उसे चुप रहने का संकेत किया और उसको धीरे-धीरे हटा दिया। वह बड़े स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोला—'अब तो तुम्हें कोई पीड़ा नहीं मालूम होती होगी। अनुभव करो तुम्हारे शरीर में शक्ति की एक लहर दौड़ रही है। अपनी स्मरण शक्ति पर ज़ोर देकर बताओ कि तुम्हें कौन-कौन बातें याद हैं ? सोचने से सब स्पष्ट हो जायगा।'

बिरजू कुछ आश्वस्त हुआ और बोला—'आज सुबह 'ग्रैनी हज़ूर' के साथ मैं कुतुब रोड वाले बँगले के भीतर आकर उसकी खूबसूरती देखकर चकित रह गया। सहसा मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि कोई भार मेरे शरीर पर आ पड़ा है। उससे मेरा आपा खो गया और इसके पश्चात् कुछ स्मरण नहीं है।'

केसर कुँवर ने पास आकर पूछा—'क्या तुम फव्वारे की जगत पर

बैठकर पूछ रहे थे कि वहाँ की मूर्तियाँ कहाँ गईं ?'

बिरजू ने आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुए कहा—'नहीं ग्रैनी हुजूर, मैंने नहीं पूछा ?'

'क्या इस कमरे को पहचानते हो ?'

चारों ओर देखने के पश्चात् उसने उत्तर दिया—'नहीं, यह मेरे लिए बिल्कुल अपरिचित है। जब मैं यहाँ आया ही नहीं, तब कैसे जानूँगा ?'

चौकीदार माधवसिंह को उसके सामने खड़ा करते हुए पूछा—'इसको पहचानते हो, और क्या इसका नाम जानते हो ?'

उसको ध्यान से देखने के पश्चात् कहा—'नहीं, न इसका नाम जानता हूँ, और न इसे पहचानता हूँ। आपके साथ जब बँगले में आया था, तब यह और एक दूसरा आदमी आपसे मिलने आए थे, और आपने इसे चौकीदार बताया था।'

'क्या तुमने इससे उन मूर्तियों के सम्बन्ध में कुछ प्रश्न नहीं पूछे थे ?'

'जी नहीं, मुझे याद तो नहीं पड़ता।'

'सोचो-सोचो, अवश्य याद आएगा।' डाक्टर ने साहस बँधाते हुए कहा।

बिरजू नेत्र बन्द कर सोचने लगा, किन्तु जब वह कृतकार्य नहीं हुआ, तब कहा—'नहीं हुजूर, मुझे कोई बात स्मरण नहीं है।'

'तुम सोचकर यह तो बता ही सकते हो कि बेहोश होने के पहले तुमने क्या कहा था ?'

'केवल इतना याद है कि मैं ग्रैनी हुजूर के साथ-साथ आ रहा था, और बँगले में घुसते ही किसी ने मुझे दबा लिया। इसके बाद मुझे कुछ याद नहीं है।'

'फव्वारे की जगत पर आकर बैठना भी तुम्हें स्मरण नहीं है ?' केसर-कुँवर ने पूछा।

'नहीं।'

डाक्टर बैनर्जी ने अपने साथी डाक्टर दास से कहा—'यह बड़ा दिल-

त्रस्त केस है। अध्ययन के लिए इसमें काफी सामग्री है।'

'अवश्य, हम लोग इस पर विचार करेंगे। मुझे तो यह कुछ ऊल-जलूल विकृत मस्तिष्क का विकार-सा प्रतीत होता है। मुझे यह एक भावुक, संवेदनशील किशोर मालूम होता है। मस्तिष्क भी इसका बहुत सबल नहीं है, कम-से-कम परिष्कृत नहीं है। मन भी बड़ा कमजोर है, और वह सदैव चिन्तित तथा दुखित रहता है। ऐसे मनुष्यों का स्वभाव प्रायः चंचल होता है, और वे दिवा-स्वप्न देखने लगते हैं। मेरा अनुमान है कि यह विचारते-विचारते सो गया और स्वप्न देखने लगा। जब उत्कट विचारों की शक्ति दुर्बल मनोवृत्ति वाले व्यक्तियों के मस्तिष्क को उद्वेलित कर देती है तब दोनों विरोधी शक्तियों में संघर्ष होता है, और जब वह उनका वेग सहन करने में असमर्थ हो जाता है, तब वह अचेत अथवा निद्रा-मग्न हो जाता है। संघर्ष यदि अधिक सबल है तो वह व्यक्ति को अचेत कर देगा और यदि साधारण-सा है तो वह निद्रा लावेगा। दोनों अवस्थाओं में मस्तिष्क को शान्ति प्राप्त होती है, और यह विराम पुनः उसे साधारण गति में ले आता है तथा जीवन की गाड़ी पुरानी लीकों पर चलने लगती है।'

केसर कुँवर कुछ कहने जा रही थी कि मंजुला 'ग्रैनी, ग्रैनी' चिल्लाती हुई कमरे में प्रविष्ट हुई। प्रमोद और दामिनी भी उसका अनुगमन करते आ रहे थे।

केसर कुँवर उनको देखकर अवाक्-सी हो गई। मंजुला ने चकित वाणी में पूछा—'ग्रैनी, यह भीड़-भाड़ क्यों? क्या कोई तमाशा हो रहा था?'

बिरजू उसकी वाणी पहचान त्रस्त होकर उठने लगा, किन्तु डाक्टर दास ने उसे पुनः लिटाते हुए कहा—'तुम उठो नहीं। उठने से 'फिट' फिर आ सकता है।'

मंजुला और दामिनी वहाँ पहुँचकर बिरजू को देखने लगीं। वह उनसे नेत्र नहीं मिला सका। मंजुला ने एक बार डाक्टरों को, फिर बिरजू को और फिर केसर कुँवर को प्रश्नपूर्ण दृष्टि से देखा। दामिनी किसी ओर न देखकर केवल बिरजू को एकटक देख रही थी।

केसर कुँवर ने परिस्थिति समझाते हुए कहा—'लाड़ो, मैं बिरजू को लेकर अपनी इस कोठी की सफाई कराने के लिए चौकीदार को सूचित करने आई थी। कोठी में आने के साथ उसे गश आ गया। तीन-चार घंटों में डाक्टरों के अनेक प्रयत्नों के बाद उसे अभी-अभी होश आया है।''

मंजुला ने केवल 'हूँ' कहा, किन्तु दामिनी ने पूछा—'हिस्टीरिया का फिट तो नहीं था ?'

'अरे क्या बकती हो, हिस्टीरिया लड़कियों की बीमारी है, लड़कों की नहीं।' मंजुला ने चिढ़े स्वर में कहा।

'नहीं, वह स्नायु मंडल की दुर्बलता की बीमारी है। केवल लड़कियों तक वह महदूद रहे, यह आवश्यक नहीं है। किसी लड़के का भी स्नायु मंडल कमज़ोर हो सकता है; क्यों डाक्टर साहब ?' दामिनी ने डाक्टर दास की ओर अपने कथन का अनुमोदन पाने के लिए देखा।

डाक्टर दास ने सिर हिलाकर अपनी सम्मति बताई।

मंजुला ने उस ओर ध्यान नहीं दिया। उसने केसर कुँवर से कहा—''आप भी ग्रैनी, इसकी मक्कारी में फँस गई। अब इसने अपना एक नया रूप दिखाया है।'

दोनों डाक्टर मंजुला की प्रगल्भता देखकर क्षुब्ध हो रहे थे। डाक्टर बैनर्जी ने कहा—'मिस, शायद आप हम लोगों से अधिक समझती हैं ?'

'डाक्टरी विद्या के सम्बन्ध में तो दावा नहीं कर सकती, किन्तु पात्र के विषय में यह दावा अवश्य कर सकती हूँ। बिरजू की मक्कारियाँ, जितनी मैं जानती और समझती हूँ, उतनी दूसरा नहीं जान सकता।'

केसर कुँवर विरक्ति से ओत-प्रोत हो रही थी। उसे मंजुला की प्रगल्भता से कष्ट हो रहा था। उसने कुछ तीक्ष्णता से कहा—'लाडो, चुप क्यों नहीं रहती। बिरजू सचमुच बेहोश हो गया था।'

'मैं पूछती हूँ ग्रैनी, यह क्यों बेहोश हो गया। कहीं गिरा-पड़ा नहीं, कहीं चोट लगी नहीं। अपने आप कोई बेहोश नहीं होता।'' मंजुला ने भी तीव्रता से कहा।

डाक्टर बैनर्जी ने रुक्ष स्वर में डाक्टर दास से कहा—'चलिए, अब हमारी कोई आवश्यकता नहीं है।'

डाक्टर दास स्वयं क्षुब्ध हो रहे थे। उन्होंने अपना बेग उठाते हुए कहा—'चलिए।'

फिर केसर कुँवर से कहा—'यह दवा तीन घंटे बाद पिलाइयेगा। कल तक यह बिल्कुल ठीक हो जायगा।'

यह कहकर वे दोनों चले गए। उनके जाने के बाद दामिनी ने कहा—'मंजू, तुमने डाक्टरों को नाराज़ कर दिया।'

मंजुला ज़ोर से हँस पड़ी, जिससे उपेक्षा के कण निकलकर सबको व्यथित करने लगे। दामिनी ने आहत स्वर में कहा—'गरीबों और अनाथों की ज़िन्दगी का कोई मूल्य नहीं होता। उनकी बीमारी भी ढोंग समझी जाती है।'

'जी हाँ, जब वह गरीब और अनाथ एक बड़ा मक्कार भी होता है।' मंजुला ने बिना संकोच उत्तर दिया।

वाद-विवाद रोकने की गरज़ से केसर कुँवर ने कहा—'लाड़ो, तुम क्या घर से आ रही हो ?'

'नहीं ग्रैनी, घर से दम्मो के साथ बाज़ार गई थी, वहीं से आ रही हूँ। आज सबेरे ममी से मालूम हुआ कि आप हम लोगों को छोड़कर यहाँ रहने के लिए आ रही हैं।'

'हाँ, अब मेरा ऐसा ही इरादा है।'

'आपके विचारों में सहसा यह परिवर्तन क्यों हुआ ?'

'अभी तक मेरी कोठी खाली नहीं थी, इसलिए बेटी-जमाई के साथ रहती थी, किन्तु अब वह खाली हो गई है, इसलिए यहाँ रहूँगी ?'

'अगर आप यहाँ रहेंगी तो फिर मैं भी रहूँगी। आपके बिना वहाँ नहीं रहूँगी।'

केसर कुँवर ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने प्रमोद की ओर संकेत करते हुए पूछा—'इनका परिचय नहीं दिया ?'

दामिनी ने उत्तर दिया—'यह मेरे बड़े भाई हैं। अभी हाल में अमेरिका से डाक्टरी पास करके लौटे हैं।'

केसर कुँवर ने उनसे स्वागत पूर्ण स्वर में कहा—'तुमसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। आओ-बैठो। यहाँ आज ही मैं आई हूँ, स्वागत-सत्कार का कोई प्रबन्ध नहीं है, क्षमा करना।'

प्रमोदकान्त ने बैठते हुए कहा—'आप इसकी चिन्ता न करें। हम लोग रेस्तराँ से चाय पी चुके हैं।'

केसर कुँवर ने चौकीदार से कहा—'माधवसिंह, चाय बनाकर ला सको तो बड़ा अच्छा हो। मेरा भी गला सूख रहा है।'

माधवसिंह प्रबन्ध करने के लिए चला गया।

मंजुला ने कहा—'यहाँ आकर तो मैं मुसीबत में पड़ गई। सोचा था कि आपको लेकर दम्मो के यहाँ जाऊँगी, क्योंकि वह चाहती है कि हम लोग लंच उसके घर पर करें ?'

केसर कुँवर को राहत मिली। उसने अपनी प्रसन्नता को छिपाते हुए कहा—'मुसीबत में क्यों पड़ गई। तुम्हारे जाने में क्या आपत्ति है ?'

'किन्तु आप ?'

'मैं अब कैसे चल सकती हूँ। बिरजू को अकेले छोड़ भी तो नहीं सकती।'

'यहाँ चौकीदार तो है।'

'किन्तु अब मुझे सभी प्रबन्ध करना है। तुम लोग जाओ।'

'तो क्या आज आप यहीं रहेंगी ?'

'आज ही नहीं, अब हमेशा यहीं रहूँगी।'

'किन्तु मैं आपको रहने नहीं दूँगी।'

'नहीं, लाड़ो, जिद न करो। वहाँ रहने से मेरी बदनामी होती है। बेटी-जमाई के घर नहीं रहा जाता। मजबूरी से अब तक रहती रही।'

'मैं यह सब कुछ नहीं मानती, आप यहाँ हरगिज़ नहीं रह सकतीं।'

'अच्छा, देखा जायगा; तू जिद मत कर।' फिर प्रमोद से कहा—'यहीं

इसमें बड़ी कमजोरी है। मेरे बिना यह कहीं नहीं रह सकती।'

'आपको तब इसकी ससुराल में ही रहने के लिए जाना पड़ेगा।' कह-कर दामिनी हँसी।

इसी समय माधवसिंह पास के रेस्तराँ से चाय की ट्रे लेकर वहाँ आया। केसर कुँवर ने सबको चाय पीने के लिए आमंत्रित किया। उसकी स्निग्धता ने वातावरण की शुष्कता किसी सीमा तक दूर कर दी।

११

जब केसर कुँवर किसी प्रकार वापस चलने को तैयार न हुई, तब मंजुला रूठी हुई मुद्रा में दामिनी और प्रमोद को लेकर वहाँ से रवाना हुई, और जैसे ही उसकी मोटर बँगले के बाहर निकली, वैसे ही उसकी दृष्टि एक बिगड़ी हुई मोटर के समीप खड़े युवक पर पड़ी, जो चिन्तित दृष्टि से उसे देख रहा था। मंजुला ने अपनी गाड़ी की गति ब्रेक लगाकर रोक दी, और पास बैठी दामिनी से कहा—'सामने देखो वही लंगूर खड़ा है।'

दामिनी ने देखा कि एक सुन्दर युवक गाड़ी का हुड खोले, उसके बिगड़े हुए पुर्जे को ठीक करने में असमर्थ होकर बड़ी विकलता से कुछ सोचता हुआ खड़ा है। उसने मंजुला के संकेत को न समझ कर पूछा—'कहाँ? मुझे तो कोई लंगूर दिखाई नहीं पड़ता। तुम भी क्या कोई दिवा-स्वप्न देख रही हो?'

'अरी बेवकूफ उस मोटर के पास वह लंगूर ही तो खड़ा है।'

'वाह! वह लंगूर है, या अच्छा-खासा खूबसूरत युवक?'

'तुम्हारी दृष्टि में वह भले ही कामदेव का अवतार हो, परन्तु मैं तो इसे पुच्छ-विहीन बन्दर ही समझती हूँ। यदि तुम्हें पसन्द आया हो तो मैं तुम्हारा विवाह इससे करवा सकती हूँ।'

सहसा दामिनी को याद आया कि मंजुला ने जिसको अपना मँगेतर बताया था, उसे लंगूर बताकर परिचय दिया था। उसने पुलकित स्वर में कहा – "अब समझी, यह महाशय आपके वही लंगूर हैं जिनके साथ आपकी मँगनी हुई है।'

'चुप बेवकूफ! हुई नहीं, होने की बात है; परन्तु यह ज़रूरी नहीं कि हो ही जाय।'

'लेकिन, कोर्टशिप तो चल रही है।'

'बेवकूफों की कमी नहीं ग़ालिब, एक ढूँढ़ो हज़ार मिलते हैं।'

'गलत उद्धरण कर क्यों बेचारे ग़ालिब का जनाजा निकाल रही हो?'

'होगा गलत शेर, लेकिन मेरा मतलब तो निकलता है।'

'मेरे सामने तो कोई बात नहीं, लेकिन किसी पढ़ी-लिखी समाज में ऐसे गलत शेर न पढ़ना, नहीं तो तुम्हारे उर्दू ज्ञान का परदाफाश हो जायगा।'

प्रमोद इनकी कानाफूसी नहीं सुन रहे थे, उसने दामिनी से पूछा—'दम्मो, गाड़ी क्यों रोक दी, क्या कुछ भूल आई हो? बताओ, मैं जाकर ले आऊँ।'

दामिनी ने हँसते हुए कहा—'आप उतर कर उस खड़े हुए युवक को बुला लावें, हमारी मंजू जिसे लंगूर कह कर पुकारती है······उफ़।'

मंजुला की चिकोटी से पीड़ित होकर वह आगे न बोल सकी। वह अपनी जाँघ सहलाने लगी।

प्रमोद ने अपनी सीट से आगे की सीट झाँकते हुए कहा—'क्या हुआ, चिहुँकी क्यों? किसी कीड़े ने काट खाया क्या?'

दामिनी कुछ उत्तर देने जा रही थी कि मंजुला दूसरी चुटकी भरने के लिए अपना हाथ उसकी जाँघ पर ले गई, परन्तु उसने उसे पकड़कर कहा—'अच्छा भई, मैं कुछ न कहूँगी, तुम अपने आप कह लो। तुम्हारा 'लंगूर' तुम्हारे लिए 'रिज़र्व्ड' है। उसके सम्बन्ध में बात करने का भी अधिकार मैं छोड़ती हूँ।'

'बताओ भी तो, बात क्या है ?

'जब लाड़ो जी के तीखे लम्बे नाखून बताने की इजाजत दें तब तो बताऊँ। उस बिगड़ी हुई गाड़ी को सुधारने का जो प्रयत्न कर रहा है, वह हमारी लाड़ो रानी का लंगूर है, जिसे वह पालतू बना रही है। अच्छा, अच्छा, अब न कहूँगी।'

मंजुला की दूसरी चुटकी ने उसे चुप कर दिया।

प्रमोद ने अनुमान करते हुए कहा—'ठीक है, शायद उनकी गाड़ी बिगड़ गई है, मैं उन्हें बुलाकर लाता हूँ।'

मंजुला ने गाड़ी चलाते हुए कहा—'आप उतरिए नहीं। मैं वहीं गाड़ी लिए चलती हूँ।'

यह कहकर वह तीव्रता से हार्न बजाती हुई आगे बढ़ी और उस युवक के पास आकर मोटर खड़ी करते हुए बोली—'वैल कैप्टेन! कोई मदद चाहिए।'

कैप्टेन नायर चकित होकर मंजुला तथा उसके साथियों की ओर देखने लगे।

मंजुला ने दामिनी के कान के पास मुँह लेजाकर कहा—'देखो, इसकी दृष्टि बिल्कुल लंगूर की भाँति है न! मैंने सब कुछ देख-समझ कर ही यह नामकरण किया है।'

प्रमोद मोटर से उतर पड़े और कैप्टेन को नमस्कार करते हुए बोले—'मालूम होता है कि आपकी गाड़ी में कोई खराबी आ गई है।'

प्रत्युत्तर में नमस्कार करते हुए कैप्टेन ने कहा—'जी हाँ, स्टियरिंग में कुछ खराबी आ गयी है।'

मंजुला उतर कर बोली—'आइए, आप लोगों का परिचय करा दूँ।'

दामिनी ने दूसरी खिड़की से निकलते हुए कहा—'आप माफ कीजिए हम लोग स्वयं अपना परिचय दे देंगे।' यह कहकर उसने उनके अभिवादन में हाथ जोड़कर नमस्ते कहा।

'औपचारिक परिचय न होते हुए भी मैं आपके लेखों के माध्यम से

आपसे भली भाँति परिचित हूँ। अभी तक तो आपके चित्र जो उन लोगों के साथ छपते थे, देखा करता था, परन्तु आज साक्षात् दर्शनों का भी सौभाग्य प्राप्त हो गया। सत्य ही इस गाड़ी के बिगड़ने का परिणाम बहुत शुभ हुआ है।'

दामिनी लजाकर रक्ताभ हो गई। उसी समय ईर्ष्या का एक क्षुद्रकीट मंजुला के मन में प्रविष्ट हुआ। दामिनी प्रतिष्ठित लेखिका है, सहसा उसे स्मरण हुआ। उसकी इस श्रेष्ठता को वह सदैव भूली रहती, और उन दोनों में इस सम्बंध की कोई चर्चा न होती थी। दामिनी भी उस ओर से उदासीन रहती।

'जब आप लोग परिचित हैं, तब मेरी कोई आवश्यकता नहीं।' कहकर मंजुला मुख फेर कर दूसरी ओर देखने लगी।

दामिनी ने प्रमोद की ओर संकेत करते हुए कहा—'यह मेरे बड़े भाई डाक्टर प्रमोदकान्त है।'

मंजुला तुरन्त बोली—'आप योरोप तथा अमेरिका में आठ वर्ष तक रहकर आए हैं।'

कैप्टेन नायर ने प्रसन्नता से हाथ मिलाते हुए कहा—'यह दूसरी अच्छाई प्रकट हुई। सत्य की बुराई में भी कोई न कोई भलाई छिपी रहती है। कहिए अब आप क्या करना चाहते हैं?'

'अभी कोई विशेष कार्यक्रम मेरे सामने नहीं है। हमारा देश छोटे-छोटे गाँवों का है, जहाँ के निवासी ही हमारे देश के वास्तविक निवासी हैं। उनकी सेवा करने का विचार है। उसीके लिए एक कार्यक्रम बना रहा हूँ।'

'दूसरे शब्दों में, आप अपना बेशकीमत जीवन वहशियों की सोहबत में गुज़ारना चाहते हैं।' कहकर उपेक्षा से हँस पड़ी।

'किन्तु वे वहशी हमारे अपने सगे हैं।' दामिनी ने मंजुला की बात काटी।

'यह मैं नहीं मानती, देश में पशु भी रहते हैं, उन्हीं की भाँति मनुष्य भी रहता है, तो इससे क्या वे हमारी बराबरी के हो सकते हैं।'

'यह प्रजातन्त्र नहीं, पूँजीवाद बोल रहा है।'

'प्रजातन्त्र तो एक धोखे की टट्टी है, जिसकी आड़ से पूँजीवाद अपना शिकार करता है। यदि यह कहा जाय कि इस प्रजातन्त्र का अस्तित्व अथवा उसका आधार पूँजी है, तो अतिशयोक्ति न होगी। मैं तो आपके प्रजातन्त्र को पूँजीवाद का ही एक रूप समझती हूँ।'

'शायद आपकी यह भ्रान्ति है। पूँजीवाद में दूसरों का शोषण होता है, प्रजातन्त्र में उनका पोषण होता है—यही तो सबसे बड़ा अन्तर है।' प्रमोद ने मंजुला के उत्तर में कहा।

'ये दिखावटी बातें केवल भूसे पर लीपने का प्रयत्न है। दरअसल दोनों का ध्येय शोषण है—केवल सुनहले शब्दों के आवरण में प्रजातन्त्र अपने को छिपाए है, और उसी सुनहले जाल में भोली-भाली जनता को हमेशा सब्ज़ बाग दिखाया करता है। जितना पैसा इन प्रजातान्त्रिक चुनावों में उम्मीदवारों को खर्च करना पड़ता है, उतना पूँजीपति के अतिरिक्त क्या कोई गरीब खर्च कर सकता है? शासन की बागडोर लेने के लिए हजारों बेईमानियाँ, हज़ारों तरह की रिश्वतें देनी पड़ती है। वे क्या बिना पूँजी के संभव है?' कहते-कहते मंजुला के स्वर में तीव्रता आ गई।

'इसलिए विभिन्न विचारधारा वालों की विभिन्न पार्टियाँ बन जाती है, और वे चुनाव लड़ती हैं।'

'जी हाँ, और यदि पार्टियाँ पूँजीपतियों से भीख माँगकर, अथवा उन्हें प्रलोभन देकर, अथवा डरा-धमका कर, और शासनारूढ़ पार्टी अनेक प्रकार के 'लाइसेन्स' तथा 'परमिट' देकर चुनाव लड़ने के लिए धन प्राप्त करती हैं, और पूँजीपति अपनी पूँजी के बल से उनसे मनचाहा करवाते हैं। पूँजीपति की यह लीला देखो कि वह अपने जानी-दुश्मन कम्यूनिस्ट को चुनाव लड़ने के लिए पैसा देता है। प्रमोद भैया, आप तो अमरीका में कई वर्ष रह कर आए हैं, वहाँ आपने नहीं देखा कि प्रायः सभी पूँजीपति, जो बड़े-बड़े उद्योगों के सञ्चालक हैं, जिनमें हज़ारों की तादाद में कर्मचारी काम करते हैं, अपने अधीन कामकरों के 'वोटों' पर अपना अधिकार जमाए हुए हैं?

दरअसल सत्ता उन्हीं पूँजीपतियों के हाथ में आती है। अन्तर केवल इतना है कि प्रजातान्त्रिक विचारधारा के पहले सत्ता भूमि के अधिकारियों के हाथ में रहती थी और जब से औद्योगिक विकास आरंभ हुआ, तबसे वह उद्योग-पतियों के हाथ में चली गई है।'

'वाह कैसा सुन्दर विश्लेषण किया है, आपने, मिस मंजू!' प्रमोद के मुख से बरबस निकल गया।

मंजुला ने उनकी ओर कृतज्ञ दृष्टि से देखा, और गर्व से उसका मस्तक कुछ ऊँचा हो गया। कैप्टेन नायर भी प्रभावित हुए, किन्तु दामिनी ने उत्तर दिया—'पूँजी को सर्वथा मिटाया नहीं जा सकता। आवश्यकता है उसके जहरीले दाँतों को उखाड़ने की। यह शिक्षा प्रसार से ही संभव है। ज्यों-ज्यों शिक्षा का प्रसार होगा, त्यों-त्यों मानव अपने अधिकारों से परिचित होता जायगा, वह अपने 'वोट' का इस्तेमाल स्वेच्छा से करेगा। प्रजातन्त्र शिक्षितों की वस्तु है।'

'यह दूसरा धोखा है, जो जनता को अपना उल्लू सीधा करने के लिए दिया जाता है। पूँजीवाद का प्रहार सीधा होता है, कम-से कम सब्ज बाग तो नहीं दिखाता; किन्तु प्रजातन्त्र में तिकड़म से वोट प्राप्त किए जाते हैं।'

'अन्त में वोट उन्हीं को मिलते हैं, जो जनता का सेवक है।'

कैप्टेन नायर ने वाद-विवाद को स्थगित करने के उद्देश्य से कहा—'अभी तक मैं यह नहीं जान पाया था कि मंजू जी इतनी कुशल तर्किका हैं। सड़क के किनारे बहस करने से लोग अनुमान करेंगे कि झगड़ा हो रहा है।'

इसी समय जाती हुई एक मोटर गाड़ी रुक गई, और उससे चीनी पोशाक पहने एक सुन्दरी उतरकर उनकी ओर आने लगी। सबका ध्यान उस ओर आकर्षित हुआ।

कैप्टेन नायर ने आगे बढ़कर उसका स्वागत करते हुए कहा—'आप इधर कैसे आ गईं, मिस चिनमिन्ह? आइए, आपका अपने इन साथियों से परिचय करा दूँ।'

उसने भारतीय रीति से सबको हाथ जोड़कर नमस्कार किया, फिर

विशुद्ध हिन्दी में कहा—'घर में बैठे बैठे जी ऊब गया था, इसलिए सोचा कि चलो कुतुब तक घूम आयें।'

कैप्टेन नायर ने उसकी ओर संकेत करते हुए कहा—'आप दाँतों के डाक्टर चिनमिन्ह की पुत्री हैं और कुछ दिन पहले चीन से आई हैं। हिन्दी चीनी मैत्री संघ की सेक्रेटरी हैं। आपने हिन्दी में एम० ए० पास किया है, और भारतीय संस्कृत की हिमायती हैं।'

इसके पश्चात् एक-एक कर अपने साथियों का परिचय दिया।

परिचय होने के पश्चात् उसने कहा—'यहाँ सड़क के किनारे खड़े होकर क्या वाद-विवाद हो रहा था?'

नायर ने उत्तर दिया—'मेरी गाड़ी का स्टियरिंग सहसा बिगड़ गया था। उसी को ठीक करने के प्रयत्न में था कि आप लोग आ गए, और जैसा आजकल का रिवाज है—फिजूल के बकवासों में माथा-पच्ची करना, वही प्रजातन्त्रवाद तथा पूँजीवाद को लेकर तर्क-युद्ध हो रहा था।'

'और मैं जनवाद अर्थात् कम्यूनिज़्म की समर्थक हूँ। अब तो गोष्ठी खूब जमेगी। आइए किसी रेस्तराँ में बैठकर इन समस्याओं पर विचार किया जाय।"

मिस चिनमिन्ह की कथन से दामिनी को याद आया कि लंच के लिए उनकी माता प्रतीक्षा कर रही होंगी। उसने हड़बड़ाकर कहा—'आज क्षमा कीजिए, मिस चिनमिह्न! घर पर हमारी माँ प्रतीक्षा कर रही होंगी। लंच भी खाना है।'

मिस चिनमिह्न ने उसकी कमर में हाथ डालते हुए कहा—'यह नहीं हो सकता। मैंने भी लंच नहीं लिया। चलिए, कनाट सरकस के किसी अच्छे होटल में हम सब लंच करेंगी, और आप से बातें होंगी।'

'परन्तु माताजी तो इन्तजार कर रही हैं?'

'कोई हर्ज नहीं है, होटल से आप फोन द्वारा उन्हें बता दीजिएगा। हिन्दी-चीनी मैत्री के उपलक्ष में मैं आपको निमंत्रित करती हूँ। क्यों कैप्टेन नायर, आप मेरे प्रस्ताव का अनुमोदन करेंगे?'

कैप्टेन नायर की ओर उसने एक मोहक कटाक्ष किया, जिससे वह प्रभावित होकर प्रमोद से बोले—'क्यों भाई साहब, आपका क्या विचार है ?'

'मेरा तटस्थ रहना ही उचित है। दम्मो, इसका निर्णय करेंगी।'

मिस चिनमिन्ह ने दामिनी की कमर घसीटते हुए कहा—'मुझे विश्वास है कि आप मेरा अनुरोध मानेंगी। आज जब सहसा हम लोग एकत्रित हो गए हैं, तब मैत्री की दृढ़ता के लिए हमें कुछ कोई सामाजिक कृत्य करना चाहिए, और एक साथ भोजन करने से बेहतर कोई दूसरा कृत्य नहीं है। मैं आपकी माताजी से भली-भाँति परिचित हूँ। मैं इस 'डकैती' के लिए उनसे क्षमा माँगकर उनकी अनुमति प्राप्त कर लूँगी।'

दामिनी को स्वीकार करना पड़ा। कैप्टेन नायर अपनी गाड़ी को वहीं छोड़ मिस चिनमिन्ह के साथ बैठ गए, किन्तु इस आचरण का प्रभाव मंजुला पर पड़ा, और वह कुछ गम्भीर होकर विचारने लगी।

१२

नई दिल्ली के कनॉट सरकस में डाक्टर चिनमिन्ह दन्त चिकित्सक की दूकान अपने कारबार के लिए तो प्रसिद्ध थी ही, हिन्दी-चीनी सांस्कृतिक संघ का मुख्य कार्यालय होने से उसकी और प्रतिष्ठा बढ़ गई थी। प्रायः प्रत्येक कनॉट सरकस का दूकानदार उससे परिचित था, और डाक्टर भी अपनी स्वाभाविक नम्रता, मिलनसारी और हँसमुख स्वभाव होने से हर दिल अजीज हो रहे थे। संघ की सेवा करना उसका मुख्य उद्देश्य था और उसका बहुत समय उसके सदस्यों की संख्या बढ़ाने में व्यय होता था, जिसका परिणाम यह हुआ कि संघ का आकार दिनोंदिन वृहत् होता जा रहा था। नई व पुरानी दिल्ली के बड़े-बड़े मुहल्लों में उसकी शाखाएँ थीं, और प्रायः प्रत्येक शनिवार को उनमें सांस्कृतिक कार्यक्रम रखे जाते थे। चीनी भाषा

सिखाने का भी प्रबन्ध था, जिसका विचार उनकी कथित पुत्री सूया ने ग्रहण किया था। सूया मिस चिनमिन्ह के नाम से प्रख्यात थी और उसके अद्भुत सौन्दर्य से प्रभावित होकर अनेकों संघ के सदस्य बनते थे। सूया चिनमिन्ह भी अपने कथित पिता की भाँति हँसमुख तथा मिलनसार थी। उसके मुख पर सदैव खेलती हुई मुस्कान प्रत्येक तरुण को प्रभावित करती, और वह उसकी ओर इस प्रकार खिंच जाता, जैसे लोहा चुम्बक की ओर स्वतः घिसट जाता है। सूया की राह-रस्म फौजी युवकों से अधिक थी, और उनकी क्लबों में जाकर वह उनको संघ का सदस्य बनाती थी। प्रत्येक शनिवार की रात्रि को कनॉट सरकस वाली दूकान के ऊपर वाले कमरे में उनका जमघट लगता और नृत्य आदि उत्सवों में कभी-कभी सब रात बीत जाती थी। फौजी क्लब में आने-जाने के कारण सूया का परिचय कैप्टेन नायर से हुआ था, और वह सूया की स्वतन्त्र प्रकृति से दिन पर दिन घनिष्ठ होता जा रहा था।

डाक्टर चिनमिन्ह अपनी अकबर रोड वाली कोठी में लॉन पर टहल-टहलकर एक पत्र पढ़ रहे थे और सूया उनसे थोड़ी दूर गुलदस्तों के लिए फूल चुन रही थी। पत्र समाप्त कर उसने सूया को बुलाकर कहा—'सू, यह पत्र तुम भी पढ़ लेना, तुम्हारे जानने के लिए इसमें कई बातें हैं।'

सूया को वह केवल 'सू' कहकर पुकारते थे। उसने वहीं से पूछा—'क्या लिखा है? आप ही बता दीजिए।'

डाक्टर ने उसके पास आकर धीमे स्वर में कहा—'हम लोगों के कार्य की रिपोर्ट माँगी है।'

'अभी भेज तो चुके हैं। हथेली पर सरसों नहीं उगाई जा सकती।'

'यह ठीक है, हमारी कठिनाइयाँ हम जानते हैं, परन्तु हैड आफिस वाले पीकिंग में बैठे सिर्फ कामों का परिणाम देखते हैं।'

'परिणाम कुछ बुरे नहीं हैं। हमारे सदस्यों की संख्या कई लाख हो गई है। सारे हिन्दुस्तान को हिन्दी-चीनी संघ का सदस्य नहीं बनाया जा सकता।'

'हाँ, यह ठीक है, उनका संकेत हिन्दुस्तान के फौजियों की ओर है,

अभी उनकी संख्या में अधिक वृद्धि नहीं हुई है।'

'इस प्रयास में भी हमें सफलता मिली है। नवयुवक फौजी जवानों पर मेरा प्रभाव पड़ता है, किन्तु बूढ़े-प्रौढ़ फौजी अफसरों को प्रभावित करना कठिन है।'

'बूढ़े और प्रौढ़ तो बहुत जल्द उल्लू बनाए जा सकते हैं।'

'वहाँ भी कोशिश करती हूँ, और ऐसा नहीं है कि कामयाबी न मिलती हो, परन्तु काम धीरे-धीरे होता है।'

'क्या कैप्टेन नायर से अब सहायता नहीं मिलती ?'

'उसीके प्रयत्न से तो पिछले हफ्ते चार अफसर संघ के सदस्य बने थे।'

'किन्तु यह हफ्ता खाली जा रहा है।'

'शायद शनिवार तक दो-तीन और बन जावें। यहाँ के अतिरिक्त दूसरे शहरों की छावनियों में हमें सफलता मिल रही है। वहाँ भी फौजी जवान सदस्य बने हैं, तथा बनाए जा रहे हैं।'

'मिस्टर तिनलिन यही सब देखने के लिए पीकिंग से आ रहे हैं ?'

'तिनलिन आवे, चाहे कोई आवे मैं किसी से नहीं डरती।'

'डरने का प्रश्न नहीं है। वह हमारा काम देखने आ रहा है। उसीकी रिपोर्ट पर हमारे वेतन में वृद्धि होगी, और तुम जानती हो कि वह कितना खूँख्वार और ज़ालिम है।'

'यदि बहुत चीं-चपड़ की तो कह दूँगी कि यह काम किसी दूसरे को सौंप दीजिए।'

'ऐसा करने से तो हमारा ही नुकसान है।'

'नुकसान हो या फायदा, मैं हैडआफिस वालों की घुड़कियाँ नहीं सह सकती।'

'जो पैसा देगा, वह काम भी देखना चाहेगा।'

'काम देखे, लेकिन नुकताचीनी करना तो बुरा है।'

'नुकताचीनी नहीं करते, सलाह देते हैं।'

'जैसा वह कहते हैं, वैसा हम लोग करते हैं। हमारी कठिनाइयों को

समझना भी तो उनका काम है। हमारी कार्यवाही केवल पुरुषों तक सीमित नहीं है। अधिकारी यह भी देखें कि नारी-समाज में हमने कितना काम किया है। फौजियों की पत्नियाँ और जवान लड़कियाँ काफी तादाद में हमारे संघ की सदस्य हो गई हैं। घर फोड़ने की क्रिया में हमें कितनी सफलता, कितनी कठिनाइयों से मिली है, इसको भी कोई देखे-समझे।'

'यह हमारे दिखलाने की बात है। तिनलिन को सब दिखाया जायगा। उसी के लिए तैयारी करना है। अंतरंग सभा की सदस्याओं की संख्या क्या है?'

'चालीस-पचास तो हो गई है; और दो-तीन कुछ दिनों में बन जायगी। कल कैप्टेन नायर ने मिस मंजुला और मिस दामिनी से परिचय कराया है। मंजुला कर्नल वेदप्रकाश की इकलौती बेटी है, और दामिनी श्रीमती करुणा सुन्दरी एम० पी० की बेटी है। दामिनी के भाई प्रमोद से भी परिचय हुआ है। वह एक सुन्दर जवान है, और सात-आठ साल तक योरोप तथा अमेरिका रहकर आया है।'

'ठीक है, ठीक है। नायर तो तुम्हारा गुलाम बन ही चुका है, अब प्रमोद पर भी अपना जादू चलाओ। अंतरंग सभा के सदस्यों से उसकी भेंट करवा दो, फिर वह हमारे जाल से निकल नहीं सकता। युवकों को केवल युवतियाँ ही वश में कर सकती हैं।'

'हाँ, यह मैं अच्छी तरह जानती हूँ। अपनी सीख अपने पास रखिए।'

'सू, तुम आजकल बात-बात में झल्लाने लगती हो।'

'जब आप लोग परेशान करते हैं, तब क्या करूँ। दिल तोड़कर मेहनत करती हूँ, रात-दिन काम में चिपटी रहती हूँ, फिर भी आप लोग खुश नहीं होते। आपको पिता बनाकर आपकी भी घुड़कियाँ सहनी पड़ती हैं। जब मुझे पीकिंग में गुप्तचरी की शिक्षा दी जा रही थी, तब मुझे यह नहीं बताया गया था कि मुझे चिनसिन्ह की लड़की बनना पड़ेगा।'

'तो क्या तुम्हें मेरी पुत्री बनकर रहने में कोई एतराज है? तुम्हारे पारिश्रमिक से मैं एक पाई भी नहीं लेता, और मुफ्त में तुम्हारे खाने-पीने

का खर्च उठाता हूँ।'

'खाने-पीने का खर्च आप उठाते हैं या पीकिंग का संघ ?'

'किन्तु तुमको मैं प्यार भी तो करता हूँ। तुम्हारे बहुत से खर्चों का बोझ मेरी जेब पर पड़ता है, तुम्हारे टॉयलेट (साज-सज्जा) का व्यय संघ नहीं देता।'

'उस पर आपका कितना व्यय होता है ? मैं भी तो आपके 'बिलों' में अनेकों झूठे 'आइटम' लिखवा कर आपका लाभ करवाती हूँ, यदि उसका एक प्रतिशत आपने खर्च कर दिया तो आपकी जेब पर क्या भार पड़ा ?'

'हम लोगों को इस प्रकार लड़ना न चाहिए।'

'आप एहसान जताते हैं, और आप ही······।'

'सू ! मेरा यह मतलब नहीं है······।'

'आपका मतलब मैं बखूबी समझती हूँ। बस रहने दीजिए, बातें न बनाइए। यदि आप मुझे दबाना चाहेंगें तो मैं हरगिज आपसे दबकर नहीं रह सकती।'

'नहीं नहीं, मैं तुम्हें क्यों दबाना चाहूँगा, दरअसल संघ की फुलवाड़ी तो तुम्हारे ही कारण हरी-भरी है। अगर तुम नहीं होतीं तो अकेले मेरे किए-धरे कुछ न होता। गुप्तचरी तो केवल स्त्रियों का व्यवसाय है। तुम्हारी जैसी सुन्दरियाँ ही ऐसे नाजुक काम उठा सकती हैं।'

अपनी स्तुति सुनकर सूया का क्रोध शान्त हुआ। उसने सन्तुष्ट होकर कहा—'अब आए हैं आप रास्ते पर। आप अपने काम की रिपोर्ट दीजिए, और मैं अपनी रिपोर्ट अलग भेजूँगी।'

'ऐसा न करना, नहीं तो हैड आफिस वाले समझेंगे कि हममें फूट पड़ गई है।'

'किन्तु मुझे ऐसा मालूम होता है कि आप मेरी सफलताओं की चर्चा या तो करते नहीं, या फिर बहुत कम करते हैं; नहीं तो हैड आफिस वालों को मुझसे शिकायत न होती। भारत में जो काम हो रहा है, उतना क्या दक्षिण-पूर्व एशिया के किसी भूखंड में हुआ है ?'

'नहीं, इसका शतांश भी नहीं हुआ, परन्तु इस सफलता के दूसरे कारण भी हैं; जैसे भारत और चीन के शीर्ष नेताओं में मैत्री, भारत की विदेशी नीति, तथा सबसे अधिक भारतीय नेताओं का यह विश्वास कि हमारी उत्तरीय सीमा को पहाड़ों ने ऐसी सुरक्षा प्रदान की है जो भंग नहीं की जा सकती, अर्थात् उत्तर से कोई आक्रमण नहीं हो सकता, और उनकी सबसे बड़ा मूर्खता यह है कि तिब्बत से अपना नियंत्रण भी उन्होंने हटा लिया है, और चीन को पाँव पसारने की छूट दे दी।'

'हमको इन बातों से कोई मतलब नहीं। वे तो 'शीर्ष नेताओं' के देखने-समझने और उपयोग की बातें हैं। हमको 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' के इस मंत्र को घर-घर पहुँचाना है, उनकी कार्य-क्षमता को पंगु बनाना है और जब चीन भारत पर आक्रमण करे तो बन्धुत्व के नाते वह सैनिक कार्यवाही न कर उसका स्वागत करे। संक्षेप में हमें वहाँ के नर-नारियों को चीनी सभ्यता का अनुयायी बनाना है, पुजारी बनाना है, और उनमें अपनी उच्चता का सिक्का बैठाना है।'

'वही तो हम कर रहे हैं। यदि चीन के प्रभाव में भारत आ जाय तो समझ लीजिए कि संसार की आधी से अधिक जनसंख्या कम्यूनिस्ट विचार-धारा की हो जायगी। आदि काल से मध्य एशिया के निवासी भारत पर शासन करते आए हैं—मुगल बादशाहों की यह दिल्ली मध्य एशिया के तिमूर, चंगेज खाँ, बाबर आदि विश्व विजेताओं की रही है—और इस समय भी वह चीन का दक्षिणी भाग बन कर रहे, यही हमारा ध्येय है। एशिया पर एशिया के निवासियों का ही कब्जा होना चाहिए। इन दोनों देशों की सम्मिलित सेना एक बार विश्व-विजय करने में समर्थ है।'

'बड़ी दूर की हाँक रहे हैं, आप! इस कूटनीति से हमें कोई मतलब नहीं है।'

'जब तक हम ध्येय को अपने सामने नहीं रखेंगे, तब तक हमें अपने कार्य का अन्तिम बिन्दु मालूम नहीं होगा, और हमसे भूलें हो सकती हैं। हम लोगों को अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचना है, चीन का पक्षपाती पंचभांग यहाँ

स्थापित करना है।'

'वह तो हम कर ही रहे हैं। अच्छा, मुझे पाँच सौ रुपए दीजिए। अगले शनिवार के जलसे का प्रबन्ध करना है।'

'यह तो बड़ी रकम है, किन्तु तुमको नाराज करना भी नहीं चाहता। अब मैं दूकान चलता हूँ, दोपहर को चैक ले लेना।' यह कहकर डाक्टर चिनमिन्ह चले गए, और सूया आगे का कार्यक्रम सोचने लगी।

१३

औरंगजेब रोड पर हिन्दी-चीनी मैत्री संघ का मुख्य कार्यालय था, जहाँ प्रत्येक शनिवार को सांस्कृतिक आयोजन हुआ करते थे। दिल्ली के प्रायः सभी चीनी निवासी अपने-अपने परिवारों सहित आते, और भारतीय सदस्यों के साथ भाई-चारे का व्यवहार करते, आमोद-प्रमोद करते, तथा नृत्य-संगीत के कार्यक्रमों में भाग लेते थे। उसमें चीनी भोजन की व्यवस्था थी, और वहाँ चावल से बनी शराब पी जाती थी। वे सांस्कृतिक जलसे सर्व-साधारण के लिए खुले नहीं थे, उनमें केवल उसके विशिष्ट सदस्य ही भाग ले सकते थे। सूया चिनमिन्ह इन जलसों की संयोजिका थी। उनके अधीन वे सब चीनी नवयुवतियाँ थीं जो चीन से भेजी गई थीं, और जिनका काम था भारतीय फौजियों से परिचय बढ़ाना, तथा उनमें मैत्री सम्बन्ध स्थापित करना।

उस दिन शनिवार था। कैप्टेन नायर ने इसी दिन शाम को काश्मीर होटल में सूया को वचन दिया था। वह अपने सामने कॉफी का प्याला रखे हुए उसके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। ज्योंही सूया की गाड़ी होटल के सामने रुकी और वह अपने सौन्दर्य से सबका ध्यान अपनी ओर खींचती हुई उत्सुक कैप्टेन के सामने आकर बैठ गई, एक उड़ती हुई दृष्टि उसने

अपने चारों ओर डाली और सबको अपने प्रति आकृष्ट देखकर मृदु मुस्कान से बोली—'हिन्दी-चीनी भाई-भाई।' संघ के सदस्यों का आपसी अभिवादन इसी भाँति होता था।

नायर ने प्रसन्न मुद्रा में उत्तर दिया—'हिन्दी-चीनी भाई-भाई।' और बेटर को बुलाकर काफी लाने का आदेश दिया।

सूया ने पुनः चारों ओर देखते हुए पूछा—'मिस मंजुला और दामिनी आपके साथ शायद नहीं आई? यहाँ मैं उनको नहीं देख रही हूँ।'

'नहीं, वे लोग आज सिनेमा गई हैं?' फिर धीमे स्वर में कहा—'आज आप दुनिया का सौन्दर्य लूट कर आई हैं।'

'नायर, तुम दुनिया के सबसे बड़े बेवकूफ हो।' यह कहकर वह मुस्कराई, और मेज के नीचे उसने उनका पैर दबाया।

अपने दूसरे पैर से उसका पैर दबाते हुए नायर ने कहा—'बेवकूफ न होता तो तुम्हारी पूजा क्यों करता?'

'फिर वही बेवकूफी की बातें बकने लगे।'

'मुझे अपनी यह बेवकूफी बहुत पसन्द है—अगर आपको नापसंद हो तो दूसरी बेवकूफी भी कर सकता हूँ, परन्तु······।'

'तुम ज्यादा बोलकर अपनी बेवकूफी जाहिर न करो। हमारे चीनी बुर्जुग कह गए हैं कि मौन रहना स्वर्ण सदृश मूल्यवान है।'

कैप्टेन चुपचाप काफी पीने लगे। थोड़ी देर दोनों मौन हो एक दूसरे को देखते रहे। चुप्पी से उकताकर सूया बोली—'चुप क्यों हो गए, ईडियट?'

'आप ही ने तो चुप रहने का आदेश दिया है।' कैप्टेन ने किंचित रूखे स्वर में कहा।

'ईडियट, तुम नारी को नहीं समझते। वह मुँह से जितना चुप रहने को कहती है, उतना मनसे सुनने के लिए आकुल रहती है।'

'चीनी नारियों की गति निराली है।'

'क्यों, चीन देश क्या इस धरातल पर नहीं है। इस पृथ्वी पर जन्मी सभी नारियों की गति एक जैसी है। मानविक स्वभाव तो सर्वत्र एक है।'

'तो फिर लीजिए, मेरी यह तुच्छ भेंट स्वीकार कीजिए।' यह कहकर जेब से एक छोटी डिबिया निकाल कर उसके सामने रख दी।

सूया उत्सुकता से उठाकर देखने लगी। ज्योंही उसने उसे खोलने का प्रयत्न किया, नायर ने उसका पैर दबाते हुए कहा—'यहाँ मत खोलो, मोटर के अन्दर खोल कर देखना ?'

'क्यों, यहाँ क्या बुराई है ?'

'तुम्हारे अपूर्व सौन्दर्य ने सबकी दृष्टि इधर ही आकृष्ट कर रखी है।'

'इससे क्या हुआ, उनको भी थोड़ा देख लेने दो—नारी का सौन्दर्य तो सबके देखने की वस्तु है।'

'परन्तु नज़र लगने का भी भय है।'

'तुम्हारी भारतीय नारियों के लगती होगी नजर, हम चीनियों के वह नहीं लगती।' यह कह कर उसने डिबिया खोल डाली। बिजली के प्रकाश में पन्ने की अँगूठी से निकलती हुई हरी आभा उसको चकाचौंध करने लगी। फिर डिबिया बन्द कर उसे लौटाती हुई बोली—'धन्यवाद, मैं अँगूठियाँ नहीं पहनती।'

नायर का सारा उत्साह भंग हो गया। उसने आकुल कंठ से पूछा—'चीन में न पहनती होगी, किन्तु यहाँ तो पहनी जाती है।'

'नहीं, नहीं, मैं यह भेंट स्वीकार नहीं कर सकती। क्षमा कीजिए।'

'किन्तु मैं भी इसे वापस नहीं ले सकता।'

'तब इसको मैत्री संघ के कोष में दे दीजिए।'

'क्या सचमुच तुम इसे अस्वीकार कर रही हो ?'

'नहीं तो क्या झूठ-मूठ !'

'अभी तुमने कहा था कि नारी की 'नाहीं' के अर्थ 'हाँ' होते हैं।'

''ईडियट, तभी तो तुमको मैं ईडियट कहती हूँ। यह बात मैंने दूसरे सन्दर्भ में कही थी, जहाँ नारियों की प्रशंसा की जाती है—न कि भेंट-उपहारों में।'

'किन्तु तुम्हारे स्वीकार करने में बाधा क्या है ?'

'यही कि मेरे लिए यह अनुचित है। शुद्ध मैत्री में उपहारों का आदान-प्रदान नहीं होना। और फिर यदि उपहार भी लिया जाय तो क्या इन छोटी-छोटी चीजों का।'

'अच्छा, अब मालूम हुआ कि आपकी दृष्टि में यह नगण्य है ?'

'नहीं नगण्य क्यों, कम से कम हजार रुपए का यह अकेला पत्थर होगा।'

'तब फिर क्यों स्वीकार नहीं करती। सुधा, तुम नहीं जानती कि तुम्हारी इन बेवफाई से मुझे हार्दिक पीड़ा होगी।'

'अच्छा, अगर तुम्हें पीड़ा होगी, तो मैं स्वीकार करती हूँ, किन्तु भविष्य में सचेत रहना।' यह कह कर उसने अँगूठी अपनी तर्जनी में पहन ली। नायर ने सन्तुष्ट होकर उठते हुए कहा—'तुमने मुझे एक अद्भुत स्थान में ले चलने का वायदा किया था। याद है ? अब यहाँ से चलना चाहिए।'

'आज शनिवार है—अवश्य ले चलूँगी।' यह कह वह उठ खड़ी हुई, और बिल चुकाने के बाद दोनों होटल से बाहर आए।

बाहर आकर सुधा ने कहा—'आप अपनी गाड़ी घर भेज दीजिए।'

'क्यों, अपनी-अपनी गाड़ी से चलने में क्या हर्ज है ?'

'हर्ज तो कुछ नहीं है, किन्तु हमारा साथ छूट जायगा। वाकई तुम ईडियट हो।'

नायर ने लज्जित होकर कहा—'मैंने इस पर ध्यान नहीं दिया था। अच्छा मैं अपनी गाड़ी इसी होटल के गैरेज में रखवाए देता हूँ।'

'यह तुम्हारी दूसरी 'ईडियॉसी' होगी। हमारे आपसी सम्बंधों की चर्चा दुनिया में करवाना चाहते हो।'

'तब तुमको मेरे साथ घर तक चलना होगा, वहाँ गाड़ी गैरेज में रख कर तुम्हारे साथ चलूँगा।'

घड़ी देखते हुए सुधा ने कहा—'किन्तु इसमें देर होगी।'

'फिर क्या किया जाय ?'

'अरे बेवकूफ! सामने ही तो मोटरों की मरम्मत का करखाना है। वहाँ

जाकर सफाई के लिए अपनी गाड़ी छोड़ आओ, कल आकर ले लेना।'

'हाँ, यह उपाय बिल्कुल उपयुक्त है।'

नायर के वैसा करने के पश्चात् सूया ने उसे गाड़ी में बैठाते हुए कहा—'अब डार्लिंग, आओ मेरे पास बैठो। मुझे तुम्हारी बेवकूफ़ी पर बहुत तरस आता है।' कहते हुए उसने उनका हाथ पकड़ कर दबाया।

नायर ने प्रत्युत्तर में हाथ दबाते हुए कहा—'इसी भाँति मेरी बेवकूफ़ी पर तुमको तरस आया करे, यही तो मैं चाहता हूँ।'

सूया एक हाथ नायर के हाथ में ढीला छोड़े हुए, दूसरे से गाड़ी चलाने लगी।

उसके हाथ की उष्णता से व्याप्त होकर नायर ने कहा—'सूया, वास्तव में तुम बड़ी सुन्दर हो।'

सूया ने अपना हाथ छुड़ाते हुए कहा—'फिर तुम बेवकूफी करने लगे। तुमको आज ऐसे परिस्तान की सैर कराऊँगी, जहाँ तुम मुझे भूल जाओगे।'

'यह असंभव है—मेरी दृष्टि में तुमसे अधिक सुन्दर कोई नहीं है।'

'दामिनी और मंजुला भी नहीं।'

'नहीं, वे तुम्हारे पैर की छोटी उँगली के तुल्य भी नहीं है।'

'तुम फौजियों की बात पर विश्वास करना सबसे बड़ी मूर्खता है।'

'क्यों, फौजियों के क्या दिल नहीं होता, या वे मनुष्य के अलावा और कोई जन्तु हैं ?'

'नहीं, परन्तु उनकी प्रीति बहती हुई नदी है। उसके जीवन में स्थिरता नहीं हो। जब जीवन ही अस्थिर है तब उनकी चिकनी-चुपड़ी बातों में स्थिरता किस प्रकार आएगी ?'

'मानो या न मानो, मैं तो तुम्हारा भक्त हूँ।'

'इसकी परीक्षा लूँगी।'

'जब मन में आवे तब परीक्षा लेकर मेरे प्रेम की गहराई देख लेना।'

सूया ने गाड़ी औरंगजेब रोड़ की पीली कोठी के सामने खड़ी करके कहा—'हमें इसी कोठी में चलना है।'

'यह तो पोर्ला कोठी के नाम से विख्यात है—हमारे मैत्री संघ का एक कार्यालय है।'

'हां।' यह कह कर वह पोर्ला कोठी में प्रविष्ट हुई।

१४

उन सुन्दरियों का जमघट देखकर वास्तव में कैप्टेन दंग रह गए। चीनी नवयुवतियां भांति-भांति के शृंगारों से सुसज्जित, अप्सराओं को भी लजाती हुई बड़े हाल में एकत्रित थीं। सूया को देखकर सभी ने उठकर उसका स्वागत किया, और उत्सुक दृष्टि से कैप्टेन की ओर देखने लगी। सूया ने उनको सम्बोधन करते हुए कहा—'आज का दिन संघ के लिए बड़े गौरव का है, क्योंकि आज हमारे मध्य भारतीय फौज के कैप्टेन अर्जुनसिंह ने यहाँ आने का कष्ट किया है। आशा है कि आप लोग इनका दिल खोलकर मनोरंजन करेंगी, और हिन्दी-चीनी मैत्री को दृढ़तर बनाएँगी। अभी तक भारत और चीन, जो एशिया के सबसे बड़े राष्ट्र हैं, जहाँ की सभ्यताएँ सबसे प्राचीन हैं, पृथक्-पृथक् थे, क्योंकि हिमालय उनके बीच खड़ा था, किन्तु आधुनिक वैज्ञानिक उन्नति के साथ हम उसका अस्तित्व मिटा देंगे। दोनों जातियाँ दृढ़ संकल्प हैं आपस में मिलने के लिए—आपसी सम्बन्ध व्यवहार बढ़ाने के लिए, और फिर एक दूसरे से इस प्रकार मिल जाने के लिए जैसे दूध और पानी मिल जाते हैं। पश्चिमीय राष्ट्र हमारे इस सम्मिलन को अच्छी दृष्टि से नहीं देखते—वे हमारे बीच में फूट डालना चाहते हैं, परन्तु हम कभी पृथक् न होंगे। हमारी संगठित शक्ति संसार पर अपना शासन कायम कर सकती है, और एक बार फिर चीनी राष्ट्र विश्व पर उसी प्रकार विजयी होगा, जैसा अनादिकाल से वह रहा है। दरअसल चीन वह देश है जो भारतीय शास्त्र-पुराणों में इन्द्रलोक से विख्यात है। चीनी सुन्दरियों को उन

प्राचीन लेखकों और विचारकों ने अप्सराओं के नाम से विभूषित किया था, चीनी पुरुषों को देवताओं की उपाधि दी थी, तथा हमारे देश ने चीन को स्वर्ग बताया था।'

यह कहकर उसने उड़ती हुई दृष्टि से सबको देखा। एकत्रित श्रोताओं ने करतल ध्वनि से उसके कथन का अनुमोदन किया।

सूया ने कैप्टेन नायर की ओर मन्द मुस्कान से देखते हुए कहा—'हमारे आज के अतिथि कैप्टेन नायर भारत के एक उच्च फौजी घराने के होनहार युवक हैं। आज उनका हमारे इस भू-स्वर्ग में पधारने का पहला दिन है। उनका सत्कार आप उसी भाँति करें जैसे प्राचीन समय में देवतागण उन भारतीय वीरों का करते थे, जो स्वर्ग में इन्द्र की सहायता करने जाते थे अर्थात् जब असीरियन देश के निवासी असुर उनपर आक्रमण करते थे। भारत के एक अति प्राचीन ग्रन्थ—महाभारत में एक वर्णन पांडुनन्दन अर्जुन के स्वर्ग जाने का मिलता है—आज उसी महापराक्रमी सव्यसाची अर्जुन की भाँति कैप्टेन अर्जुनसिंह हमारे बीच उपस्थित हैं। आप लोगों से मेरी प्रार्थना है कि आप उनका उसी भाँति स्वागत करें कि जिससे वह भूलोक अर्थात् भारत की सुन्दरियों को भूल जाय। आओ, हम लोग पुनः दोहराएँ—'हिन्दी-चीनी भाई-भाई।'

उन सभी ने उसका समर्थन किया। समस्त कार्यक्रम ने औपचारिक रूप ले लिया था। सूया को उत्तर देना कैप्टेन के लिए अनिवार्य हो गया। वह बोले—'स्वर्ग की देवियों के मध्य में अपने को पाकर आज मेरी प्रसन्नता का ओर-छोर नहीं मिलता। मेरे पास वे शब्द नहीं हैं, जिनसे मैं अपने मन का भाव प्रकट कर सकूँ। चीन और भारत की मैत्री की ऐतिहासिक खोज के लिए मैं हृदय से मिस चिनमिन्ह का आभारी हूँ। ज्यों-ज्यों उनके सुझाव पर ध्यान देता हूँ, त्यों-त्यों उसका सत्य मुझे स्पष्ट हो रहा है। सत्य ही हमारे प्राचीन ग्रन्थों में जिस स्वर्ग की कल्पना की गई है, वह चीन देश है, क्योंकि वह भारत के उत्तर में सुमेरु पर्वत से कुछ आगे बताया गया था। सौन्दर्य-वेश-भूषा में वहाँ के निवासी देवताओं और अप्सराओं से मिलते-

जुलते थे। चीन सम्राट् को इन्द्र माना गया था, और भारत के नरेशों ने सदैव उनकी सहायता की है। जब-जब असुरों ने स्वर्ग पर आक्रमण किया है रेशम से वस्त्र बनाने का आविष्कार चीन ही में हुआ था और चीनी सुन्दरियाँ इन चमकीले परिधानों में सत्य ही अप्सराएँ दिखती थीं। भारत और चीन की मैत्री संसार के इतिहास में एक नया अध्याय आरम्भ करेगी। दोनों की सैनिक शक्तियाँ संगठित होकर विश्व की सम्मिलित शक्ति को पदाक्रान्त करने की शक्ति रखती हैं। दोनों देशों की जनसंख्या समस्त विश्व की जनसंख्या की अर्धांश से कुछ कम है। मुझे विश्वास है कि हमारा सम्मिलन पश्चिमी राष्ट्रों के लिए एक चुनौती है और हमारे सम्मिलित प्रयत्न उनका गर्व चूर्ण करेंगे, क्योंकि अब हिन्दी-चीनी भाई-भाई हो गए हैं।'

'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' की ध्वनि से पीली कोठी का हाल गूँज गया।'

उत्साहित होकर वह फिर कहने लगे—'हमारे पुराणों में देवताओं को अग्नि-पुत्र भी कहा गया है। अग्नि का वर्ण पीले और लाल रंग का सम्मिश्रण है, और यही रंग चीन देश के निवासियों का भी है, अतएव इससे मिस-चिनमिन्ह के कथन की पुष्टि होती है कि हमारे देश के विद्वानों ने चीन को ही स्वर्ग माना था। अतएव देवलोक के निवासी होने के कारण आप हमारी स्तुत्य हैं—आदरणीया हैं, और आराध्या हैं।'

चीनी सुन्दरियों ने पुनः करतल ध्वनि से अपनी प्रसन्नता प्रकट की।

सूया ने फिर कैप्टेन नायर का परिचय एक-एक सुन्दरी से कराना आरम्भ किया। परिचय समाप्त होने के पश्चात् उसने कहा—'आइए हम लोग अपना कार्यक्रम आरम्भ करें और भारतीय अतिथि का मनोरंजन स्वर्ग की अप्सराओं की रीति से करें।'

यह कहकर सूया ने कैप्टेन को एकान्त में ले जाकर कहा—'कहिए, है यह परिस्तान ?'

'हाँ, परन्तु इनमें एक भी तुम्हारे समान सुन्दरी नहीं है।'

सूया ने हाथ दबाते हुए कहा—'मैं जानती थी कि थोड़ी-बहुत बुद्धि तुम्हारे कपाल में होगी, परन्तु अब मेरा वह विचार गलत मालूम पड़ता है।

तुम हमेशा 'ईडियट' रहोगे।'

'वाह, अच्छा 'ईडियट' बना रखा है।'

'ईडियट बनाए नहीं जाते, कुदरती पैदा होते हैं। मुझसे उम्र में कम और सौन्दर्य में अधिक कितनी सुन्दरियाँ हैं, और तुम मुझे सर्वोत्तम बताते हो। है न यह तुम्हारी ईडियासी ?'

'यदि तुम मेरी आँखों से अपने को देखो तो तुम ऐसा न कह सकोगी—और शायद उसमें भी कुछ कमी रहेगी, यदि मेरे हृदय की भावना नहीं लोगी !

'खुशामद करके नारी को बेवकूफ बनाना तुम पुरुषों का व्यवसाय है।'

'नहीं, सत्य ही तुम इन सुन्दरियों की रानी देख पड़ती हो।'

'अब तो तुम कविता भी करने लगे।'

'ऐसा कोई प्रेमी बताओ, जो कवि न रहा हो। प्रेम स्वयं काव्य है—जगत का सबसे मनोरम काव्य, जिसके स्मरण से रोमांच होता है, स्पर्श से शरीर भर में लुभावनी विद्युत् तरंगें उठती हैं जो मन में अदम्य उत्साह-प्रेरणा और अनेकानेक सुप्त कोमल भावनाएँ जाग्रत करती हैं।'

सूया खिलखिलाकर हँस पड़ी, और बोली—'अब तुम सचमुच कवि हो गए। बताओ, इन सब में कौन सुन्दर है ?'

'यों तो सब एक से एक बढ़कर हैं, परन्तु तुम्हारे समान एक भी नहीं।'

'अच्छा, बकवास बन्द करो, अब कुछ खाया-पिया जाय।' यह कहकर वह घसीटती हुई एक छोटे कमरे में ले जाकर नायर से बोली—'तुमने आज तक अनेकों प्रकार की मदिराएँ पी होंगी, किन्तु चीनी मदिरा न पी होगी। चीनी अपने पीने के लिए चावल से मदिरा बनाते हैं। दरअसल यही सोमरस है, जिसके पीने से नशा नहीं, वरन् एक प्रकार का आनन्द मिलता है, जैसा सोमरस के पीने से देवताओं को मिलता था।'

यह कहकर उसने एक गिलास में मदिरा उँडेलकर उससे पीने का अनुरोध किया। कैप्टेन ने उसे लेकर गिलास उसके मुख से लगाते हुए कहा—'पहले देवी इसका पान करे, पुजारी बाद में प्रसाद पाने का अधिकारी है।'

'तुम्हें सन्देह हुआ है कि शायद इसमें विष मिला हुआ है, तभी मुझे

पहले पिलाना चाहते हो।' यह कहकर वह मोहक कटाक्ष के साथ मुस्कराई।

कैप्टेन ने तुरन्त गिलास हटा लिया, और कहा—'यदि ऐसी शंका तुम्हारे मन में आई है तो लाओ पहले मैं पी लूँ।' यह कहकर उन्होंने गिलास से एक घूंट पी लिया।

सूया ने दूसरा गिलास भरते हुए कहा—'तुम्हारे सामने यह गिलास पीकर तुम्हारा सन्देह मिटाए देती हूँ।' कहती हुई सूया ने मदिरा पी डाली। कैप्टेन ने भी अपना गिलास खाली कर दिया।

'अरे, कैसी भोंडी गलती हो गई, तुम्हारी बकवास ने मेरा दिमाग़ खराब कर दिया और भूल होगई।'

'कैसी भूल!'

'नारी की सबसे बड़ी कमज़ोरी होती है अपने सौन्दर्य की प्रशंसा सुनना। भोंडी और बदशकल नारियाँ भी अपनी झूँठी तारीफ सुनकर अपनापना खो बैठती हैं। आपने आज खुशामद और झूँठी तारीफ की हद कर दी है, इसी से मेरी विचार शक्ति भ्रमित हो गई और ग़लती होगई।'

'आखिर, वह कैसी भूल है? क्या अब वह सुधारी नहीं जा सकती?'

सूया ने दूसरा गिलास भरते हुए कहा—'भूल तो हो ही गई है, अब यह बोतल खाली करके उसे सुधारेंगे।' इसके बाद उसने अपना गिलास भरा और कहा—'हमें सबसे पहले अपने इस संघ के दीर्घजीवन की कामना में पीना चाहिए था।'

'लीजिए वह भूल सुधारे देता हूँ—हिन्दी-चीनी मैत्री संघ दीर्घजीवी हो।' कहते हुए उसने दूसरा गिलास भी खाली कर दिया।

मदिरा की ऊष्मा उनके शरीर में व्याप्त होने लगी। अपने मदिर नयनों से कैप्टेन के मन में शैतान को जाग्रत करती हुई सूया बोली—'आओ, हम लोग अब अपने-अपने आराध्य नेताओं की आरती उतारें।' यह कहते हुए वह कैप्टेन के हाथ में लटक कर उसकी नयन-पुतलियों में अपनी छवि देखने लगी।

कैप्टेन भावुकता से सराबोर होकर बोले—'ओह, तुम कितनी सुन्दरी

हो, कितनी रूपसी हो!' उसने यह कहते हुए ज्योंही उसे अपनी बाहों में भरना चाहा, त्योंही सूया विद्युत् गति से छिटक कर दूर खड़ी हो गई, और बोली—'कैप्टेन, तुम्हारी बातों में जादू भरा हुआ है, जो मुझे बार-बार पथ-विचलित करता है। चलो पहले यहाँ के नियमानुसार अपने देवता की आरती उतार कर शपथ लेवें। उस शपथ के पश्चात् ही तुम पूर्ण रूप से इस संघ के सदस्य हो सकोगे, और तभी तुम मेरी सेवा पाने के अधिकारी होगे।'

मदिरा और उससे अधिक सूया के मादक आचरण से कैप्टेन के मस्तिष्क के विचार-तन्तु मूर्च्छित-से हो गये। उसने अधीरता से कहा—'चलो, जल्दी से वह काम भी पूरा कर डालो। मैं हर तरह की शपथ लेने को तैयार हूँ।'

सूया उसको लिए हुए एक दूसरे कमरे में गई, जिसमें दीवाल पर एक भयावने अजदहे का चित्र टँगा हुआ था, तथा उसके नीचे एक मेज़ थी, जिसके दोनों सिरों पर दो बड़े-बड़े धूपदान रखे हुए थे, जिनसे सुगन्धित धूप निकल कर कमरे को गमका रही थी। उस सुगन्ध से मन तो आह्लादित होता ही था, किन्तु साथ ही एक हल्का सरूर भी चढ़ रहा था।

सूया ने एक धूपदान स्वयं उठाया, और दूसरा कैप्टेन को उठाने का संकेत करते हुए कहा—'जैसे मैं बोलूँ, वैसे ही आप भी बोलते जाइए। एक बार फिर अच्छी तरह समझ लीजिए कि आप मैत्री-संघ के उत्थान के लिए शपथ ले रहे हैं, जिससे आप उसके मुख्य सेवकों में शुमार किए जायंगे, और भारत तथा चीन के पार्थक्य को भूल जाना पड़ेगा। दोनों देशों की एकता की आप तन, मन, प्राण देकर रक्षा करेंगे, और चीन के इस देवता को अपना देवता स्वीकार कर, उनके आदेशों का यथार्थ पालन करेंगे। यदि आप पीछे हटना चाहते हों, तो अब भी समय है—आप बड़ी प्रसन्नता से शपथ लेना अस्वीकार कर सकते हैं।'

उसके मोहक कटाक्ष के सन्मुख कैप्टेन नायर बिलकुल पराजित खड़े उसकी रूप-माधुरी का पान करने में व्यस्त थे। मदिरा की उष्णता से विचारों की दृढ़ता तो पहले ही नष्ट हो चुकी थी और जो कुछ अवशिष्ट था, उसे

धूपदानों से निकलता हुआ धूम नष्ट कर रहा था।

संज्ञा-शून्य व्यक्ति की भाँति कैप्टेन निश्चेष्ट खड़े थे। उनके नेत्र केवल सूया का भुवन मोहक रूप एकटक निहार रहे थे।

सूया ने उसके समीप आकर उसकी ओर दूसरा मोहक कटाक्ष निक्षेप किया, और उनके कपोलों पर हाथ फेरते हुए कहा—'इस संघ में स्वेच्छा से सब प्रवेश करते हैं। यदि सौगन्ध लेना नहीं चाहते तो कोई ज़ोर-जबरदस्ती या भुलावा नहीं है। आप खुशी से इनकार कर सकते हैं, किन्तु यह बखूबी समझ लीजिए कि शपथ लेने के पश्चात् आप उसमें बँध जायँगे, और यदि फिर पीछे हटे तो संघ के साथ विश्वासघात का परिणाम क्या हुआ करता है, इसके कहने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह विश्वविदित है कि चीनी जहाँ विश्वास में अपनी जान देने के लिए कटिबद्ध रहते हैं, वहाँ विश्वासघाती के प्राण हरण करना भी जानते हैं।'

'शपथ लेने पर तुम तो मुझे प्राप्य होगी?'

'इसमें भी कोई सन्देह है। चीनी बाला चीनी अथवा चीन भक्त से ही प्रेम कर सकती है।'

'तब मुझे कुछ नहीं सोचना-विचारना। मैं तो केवल तुमको प्राप्त करना चाहता हूँ।'

'शपथ लेने के पश्चात् आप लगभग चीनी हो जायेंगे, और तब मेरे पिता को तुमसे विवाह करने में कोई आपत्ति नहीं होगी।'

'डाक्टर चिनमिन्ह को मैं खुश कर लूँगा।'

'हाँ, उनको खुश करने का सबसे सहल नुस्खा यही है कि आप अधिक से अधिक फौजियों को संघ का सदस्य बनावें।'

'यह काम मैं बखूबी कर सकूँगा। फौजी भाइयों पर मेरा विशेष प्रभाव है—अफसरों और सैनिकों पर लगभग एक-सा। मैं उन सब को संघ का सदस्य बनवा दूँगा। इसमें हानि ही क्या है? भारत और चीन ने सर्वप्रथम सह-अस्तित्व तथा पंचशील के सिद्धान्तों को माना है, और वे इसको कार्यान्वित करना चाहते हैं। हमारा सहयोग उसको बल प्रदान करेगा, और हम

उन्हीं को असली जामा पहना रहे हैं। जब तक चीन और भारत में वैवा-हिक सम्बन्ध नहीं बनेंगे, तब तक असली अर्थों में मैत्री-भावना नहीं पनप सकती।'

'बेशक, यही मेरा विचार है।' कहते-कहते वह उसके हृदय से लगकर खड़ी हो गई, और क्षुब्ध दृष्टि से उसको देखने लगी।

सूया की केशराशि कैप्टेन की ठुड्डी को स्पर्श करती हुई उसे पुलकित कर रही थी। उसके सिर से निकलती हुई सुगन्ध उसे मुग्ध कर विवेकहीन बनाने लगी। उसने उसे ज्योंही बाहु-पाश में बाँधना चाहा, त्योंही वह छिटक कर दूर खड़ी हो गई, और नयनों को नचाती हुई बोली—'नहीं, नहीं, पहले शपथ लो।'

'शपथ दिलाओ न, मैं कब इनकार कर रहा हूं।'

सूया ने गंभीर होते हुए कहा—'बोलिए, मैं अर्जुनसिंह अपने पूर्ण होश हवास में, स्वेच्छा से चीन के देवता के समक्ष शपथ द्वारा विश्वास दिलाता हूँ कि मैं अपनी सम्पूर्ण शक्तियों से हिन्दी-चीनी मैत्री संघ की सेवा करूँगा, और उस सम्बन्ध में जो-जो आदेश मुझे इस संघ के अधिष्ठाताओं द्वारा दिए जायेंगे, उनका अक्षरशः पालन करूंगा, और भारत तथा चीन की पृथकता मिटा कर दोनों देशों को एक ही देश समझूँगा तथा चीन के लिए भी मैं उसी भाँति अपना जीवन बलिदान करने के लिए तैयार रहूँगा, जिस भाँति भारत के लिए हूँ। आज से चीन भी मेरे लिए उतना ही पूज्य और मान्य है, जितना भारत; और यदि इन दोनों देशों में कोई मन-मुटाव हुआ तो मैं तटस्थ रह कर उसको दूर करने के लिए अपने प्राणों की आहुति दूँगा। ईश्वर मेरी सहायता करे।'

कैप्टेन नायर ने इन शब्दों को दोहरा कर चीन की दासता स्वीकार कर ली। शपथ लेने के पश्चात् मुग्ध दृष्टि से देखते हुए उसने पूछा—'अब?'

सूया उसके समीप आकर उसको अपने बाहु-पाश में बाँधती हुई बोली—'जन्म से नहीं, किन्तु संस्कार से अब तुम चीनी हो गए। हमारी तुम्हारी

मिलन की बाधाएँ समाप्त हो गई। मैं अब मन वचन कर्म से तुम्हारी हूँ।'

कैप्टेन नायर ने हर्षोन्मत्त होकर उसे अपने हृदय से बाँध लिया।

१५

कैनाट सरकस में डॉक्टर चिनमिन्ह की दूकान के ऊपर वाले कमरे में तिनलिन, जो भारत में चीन से हिन्द-चीन मैत्री संघ का कार्य-कलाप देखने आए थे, अपने सामने भारत तथा एशिया के उस भू-भाग का मानचित्र खोले बैठे थे, जिसमें चीन का दक्षिणी भाग, तिब्बत, हिमालय, नैपाल, भूटान, नेफा-क्षेत्र, और लद्दाख बड़े पैमाने पर दिखाए गए थे। उनके समीप डॉक्टर चिनमिन्ह बैठे थे, और सूया चाय तैयार करने में संलग्न थी।

डॉक्टर चिनमिन्ह ने पूछा—'अब आप हमारे कार्यक्रम की रूपरेखा स्पष्ट बता देवें, ताकि हम लोग उसी दृष्टि-बिन्दु से अपना कार्य करें, और कोई गलती न कर बैठें।'

'हाँ, इसीलिए मैंने यह यात्रा की है।'

सूया ने चाय की ट्रे उनके आगे बढ़ाते हुए कहा—'पहले चाय पी ली जाय, तब बातें करने और समझने में सुविधा होगी।'

डॉक्टर ने अपना प्याला उठाते हुए कहा—'हाँ सूया का यह प्रस्ताव उत्तम है, और मेरा तो यह हाल है कि जब तक दो कप चाय नहीं पी लेता तब तक विचारने की शक्ति नहीं जागती।'

तिनलिन भी चाय पीने लगे।

चाय पीने के पश्चात् तिनलिन ने कहना आरम्भ किया—'सबसे पहले अपने देश चीन का मानचित्र देखो, तो तुम्हें मालूम होगा कि वह उत्तर में मंगोलिया, पश्चिम में रूस, पूर्व में प्रशान्त महासागर और दक्षिण में बर्मा, तिब्बत से घिरा हुआ है, अतएव इसकी पूर्वीय सीमा किसी प्रकार भी नहीं

बढ़ाई जा सकती। इसके उत्तर और पश्चिम में रूस से संरक्षित प्रदेश तथा रूस है, जो हमारा परम मित्र है एवं आज के दिन वह संसार का सबसे सशक्त देश है, इसलिए उधर यह अपनी सीमा का विस्तार नहीं कर सकता। अब इसके लिए केवल दक्षिणी भाग ऐसा है जिधर यह अपने पैर फैला सकता है, वे प्रदेश हैं बर्मा, तिब्बत और भारत। ये तीनों प्रदेश बिल्कुल कमजोर राष्ट्र हैं। तिब्बत लामाओं का देश है, जो बहुत आसानी से चीनी साम्राज्य में मिलाया जा सकता है। बर्मा स्वतन्त्र राष्ट्र है, किन्तु घरेलू झगड़े उसको इतना समय नहीं देते कि वह अपनी उत्तरी सीमा की ओर ध्यान दे सके। वहाँ के कम्यूनिस्ट हमारे साथ हैं, और हम धीरे-धीरे अपनी सीमा का विस्तार उधर करेंगे। जब तक तिब्बत में भारतीय सेना थी, तब तक वह संरक्षित प्रदेश था, और हमको वहाँ अपना आधिपत्य जमाने में कठिनता होती, परन्तु कूट-नीति का सहारा लेकर हमने वह खतरा टाल दिया। सन् १९५४ में चीन ने भारत के पंचशील के सिद्धान्तों को मानकर तिब्बत से भारतीय सरकार का संरक्षण हटवा दिया, और हमारी सेनाओं को उस पर क़ब्ज़ा करने के लिए खुली छूट दे दी। शीघ्र हमारा उधर अभियान होगा। यह तो तुम्हें मालूम होना चाहिए कि आदिकाल से चीनी साम्राज्य का विस्तार भारत तक था और आसाम प्रदेश सदैव चीनियों के आधीन रहा। जो प्रदेश आजकल 'नेफा-क्षेत्र' तथा असम के नाम से विख्यात है, वह चीनी साम्राज्य के अन्तर्गत 'अहॉम' नाम का भूखण्ड है, तथा नैपाल और भूटान चीनी सम्राटों के कर-दाता रहे हैं। अतएव हमारे देश की वास्तविक सीमा के अन्तर्गत भारत का यह उत्तरीय भाग आता है। उन्नीसवीं शताब्दी में चीन के निर्बल हो जाने से ब्रिटेन ने इस भू-भाग को भारतीय साम्राज्य में शामिल कर लिया, और मैकमोहन पंक्ति के नाम से एक मनमानी रेखा कायम की और तिब्बत में अपनी सेना रखकर उसको भारत तथा चीन का मध्यवर्ती भाग बनाकर अपनी स्थिति सुदृढ़ बनाई।'

'चीन ने उस समय मैकमोहन रेखा को मान लिया था क्या ?' सुधा ने पूछा।

'नहीं, चीन ने उसे कभी स्वीकार नहीं किया। अपनी निर्बलता से उसने ब्रिटेन से कोई युद्ध नहीं छेड़ा, क्योंकि उस समय वह संसार का सबसे शक्तिशाली साम्राज्य था, और चीन अफीम की पीनक में मदमस्त था।'

'किन्तु उसको मौखिक आपत्ति तो करनी थी।'

'उसने अपनी अस्वीकृति स्पष्ट कर दी थी, और उसका कोई प्रतिनिधि उस सीमा वार्ता में सम्मिलित नहीं हुआ। ब्रिटेन ने जैसा चाहा वैसा कर डाला, और आन्तरिक गृह-युद्ध में फँसे होने के कारण इधर अधिक ध्यान नहीं दिया।'

'आन्तरिक गृह-युद्ध कैसा?'

'भारत से चीन को अफीम जाती थी, जिसकी वहाँ बड़ी खपत थी। ब्रिटेन ने उस व्यापार को बहुत अंशों में बढ़ाया, और जब चीन ने अफीम के व्यापार को बन्द करना चाहा, तो उससे युद्ध ठन गया तथा हमारा 'हांग-कांग' उनके अधिकार में चला गया। सन्धि हुई और चीन को बाध्य होकर अफीम खरीदनी पड़ी, यद्यपि मात्रा में बहुत कमी हो गई थी। इसके बाद चीन की निर्बलता जानकर मैकमोहन रेखा बनाई गई, और उस समय मौन रहने के अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता न था, क्योंकि युद्ध करने की शक्ति उसमें नहीं थी।'

'सन यातसेन ने भी तो आन्दोलन चलाया था?'

'हाँ इस महापुरुष ने चीन में जागृति उत्पन्न की जिससे जनता ने राजवंश को समाप्त कर जन-चीन की स्थापना की। अफीम जैसे घातक विष का बहिष्कार कराया, और स्त्रियों की दासता का अन्त किया। उसी का लगाया हुआ वृक्ष आज-दिन फूलने-फलने लगा है। आज चीन एक सशक्त राज्य है; उसकी साठ करोड़ जनता अपने रहने के लिए स्थान चाहती है।'

'हाँ, किन्तु ये प्रदेश तो ऊजड़-बंजर हैं जहाँ रहना और खेती करना असम्भव है।'

'हिमालय को छोड़कर सब जगह खेती हो सकती है। आसाम में क्या खेती नहीं हो सकती या तिब्बत में नहीं हो सकती? आधुनिक विज्ञान ऐसे साधन

प्रदान करेगा, जहाँ अनेकों प्रकार के उद्योग चलाए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त इस प्रदेश के खनिज पदार्थ सर्वथा सुरक्षित हैं, क्योंकि अभी तक किसी ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। न मालूम कितना लोहा, सोना, कोयला और अनेक प्रकार की धातुओं का भंडार इस पहाड़ी क्षेत्र में भरा हुआ है। यह औद्योगिक युग है। उद्योग-धंधों की उन्नति से देश का कल्याण हो सकता है, उसकी गरीबी दूर की जा सकती है। जिस प्रकार यूराल पर्वत का क्षेत्र रूस का औद्योगिक क्षेत्र बन गया है, उसी प्रकार तिब्बत और उसके दक्षिण का प्रदेश औद्योगिक केन्द्र बनाया जा सकता है।'

यह कहकर तिनलिन दोनों की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखने लगा। थोड़ी देर तक मौन रहने के पश्चात् वह बोला--'अब मैं आप लोगों का ध्यान एक दूसरे महत्वशाली विषय की ओर खींचना चाहता हूँ। जब से शक्ति जन-चीन के नेताओं के हाथ में आई और देश-विक्रेता च्यांगकाई शेख के पतन के साथ अमरीकन प्रभाव नष्ट हुआ, तब से पश्चिमीय राष्ट्रों के दिलों पर साँप लोट गया है। उन्हें भय है कि पीले दैत्य के उठ खड़े होने से एशिया में उनके प्रभाव की इति-श्री हो जायगी, और यदि रूस के साथ चीन की सैनिक शक्ति मिल गई, तो वे स्वयं समाप्त हो जाएंगे। पश्चिमी राष्ट्र पूँजीवादी हैं, और रूस तथा चीन जनवादी। एक ही तीर में वे हम दोनों का शिकार करना चाहते हैं। चीन की भाँति रूस का भी प्रभाव बढ़ते हुए वे देख नहीं सकते हैं। यदि उनका दाँव लगे तो वे हम दोनों को समाप्त करने में तनिक भी देर न लगाएँ, किंतु रूस अपनी वैज्ञानिक उन्नति के कारण और चीन अपनी जन-संख्या के कारण अजेय ही रहे हैं। सहसा युद्ध छेड़ने में उनके स्वयं नष्ट हो जाने का भय है, इसलिए वे अपना सैनिक बल बढ़ाने में तत्पर हैं। जब से अमरीका ने कोरिया युद्ध में चीनियों की शक्ति अजमा ली है, तबसे पूरी तैयारी के बिना युद्ध छेड़ने में वह अपना हित नहीं देखता। अमरीका के पास भयानक अस्त्र हैं, परन्तु जन नहीं हैं; अर्थात् बलि के लिए बकरे नहीं हैं। पहले वह भारत को अपना अनुयायी बनाना चाहता था, परन्तु जब उसने दूसरा स्वर आलापना शुरू किया तो उसने पाकिस्तान तथा दक्षिण

एशिया के छोटे-छोटे राष्ट्रों को पकड़कर 'सीटो' अर्थात् दक्षिणी-पूर्व एशियाई संधि संघ की स्थापना की और उधर रूस का प्रभाव-प्रसार रोकने के लिए बगदाद पैक्ट बनाया। दक्षिणी उत्तरीय वीयतनाम में पहले संघर्ष कराया फिर जब उसकी वहाँ भी पराजय हुई तो चीन के चारों ओर अपने सैनिक अड्डे कायम करने आरम्भ किए। फारमूसा अथवा ताईवान में वे जमे बैठे हैं, और इधर पाकिस्तान में गिलगिट स्थान पर अपना हवाई अड्डा स्थापित करने जा रहे हैं। इन दोनों स्थानों से वे कैंची के दोनों फलों की भाँति अपनी सेनाओं से आक्रमण कर हमें दबा सकते हैं। जापान में भी उनका अड्डा है। वहाँ से पीकिंग और उसके मध्य भाग पर वे आक्रमण कर सकते हैं। अब तक उन्होंने आक्रमण कर दिया होता, यदि रूस हमारी सहायता के लिए दृढ़-संकल्प न होता। योरोप से लेकर जापान तक उसके सैनिक अड्डे बन गए हैं, या बन रहे हैं।' इतना कहने के पश्चात् वह अपने कथन का प्रभाव आँकने लगे। डाक्टर चिनमिङ्ग और सूया चुपचाप तिनलिन का वक्तव्य सुनकर आश्चर्य से उसका मुख देख रहे थे।

तिनलिन सुँघनी सूँघते हुए बोले—'समझ गए? हमारे देश को पश्चिमीय राष्ट्रों ने इस प्रकार घेर रखा है, जैसे बनैले शेर को हाके वाले घेर लेते हैं। किन्तु चीन सचेत है, जागृत है, शक्तिमान है। पीतांग मनुष्य जाति का प्रतिनिधि है। वह जीवित रहेगा, और अपने जीवन का मार्ग सुरक्षित रखेगा। अपने को जीवित रखने के लिए उसे आवश्यक है कि वह अपने राज्य का विस्तार पुनः उत्तरीय भारत तक करे। लुंज-पुंज तिब्बत पर अधिकार कर अपनी दक्षिणी सीमा को सुदृढ़ बनाए, ताकि हिमालय की आड़ से हमारे शत्रु हम पर आक्रमण न कर सकें।'

'हाँ, ऐसा ही होना चाहिए।' सूया और डाक्टर ने एक साथ कहा।

'यही हमारी योजना है। चूँकि चीन अभी किसी से लड़कर अपनी शक्ति क्षीण नहीं करना चाहता, इसीलिए हमने भारत के पंचशील के सिद्धांतों को तुरन्त स्वीकार कर लिया, ताकि हमारा पड़ोसी भारत हमारे प्रसार को शंकित दृष्टि से न देखे, और न कोई बाधा उपस्थित करे। दूसरों को भुलावे

में डालना ही कूटनीति है। चीन से मैत्री रखने में भारत का भी कल्याण है, क्योंकि उसका पाकिस्तान से विरोध बराबर बढ़ता ही जाता है। चीन इस विरोध को जीवित रखना चाहता है इसीलिए चीन ने अभी तक कश्मीर और लद्दाख पर भारत का आधिपत्य स्वीकर नहीं किया, हालांकि रूस भारत का समर्थन कर रहा है, और करेगा। वह अपने 'वीटो' शक्ति से अमरीकन गुट्ट वालों की साजिश, जो संयुक्त राष्ट्रसंघ में पाकिस्तान के हित में सदैव चलती रहती है, विफल करता है। अमरीका अपनी खिसयाहट जन-चीन को राष्ट्र का सदस्य न बनने देकर निकालता है। हमें उसकी कोई चिन्ता नहीं। राष्ट्र-संघ का सदस्य हो जाने से चीन कई प्रकार के नैतिक नियमों में बँध जाएगा और उस समय वह उतनी सुगमता से तिब्बत पर अपना अधिकार नहीं जमा सकेगा। अमरीका की इस कमजोरी को चीन जानता है, इसलिए राष्ट्रसंघ का सदस्य होने से पहले वह अपने राज्य का विस्तार वहाँ तक बढ़ा लेना चाहता है जहाँ तक आदिकाल से था तथा जो पीतांगों के रहने की भूमि है।'

'बिल्कुल सीधी बात है। ऐसा होने से चीन का अस्तित्व कायम रह सकता है।' सूया और डाक्टर ने अपना समर्थन प्रकट किया।

तिनलिन फिर कहने लगा—'बेशक! किसी को भाई बनाने से यदि कार्य की सिद्ध होती हो तो उसमें क्या आपत्ति? भारत को मुगालते में रखने के लिए हमने पंचशील के सिद्धान्त स्वीकार किए। दरअसल कमजोर राष्ट्र ही ऐसे ऐसे सिद्धान्तों को गढ़कर अपने को सुरक्षित रखने का प्रयत्न करते हैं। भारत इतना बड़ा होते हुए भी सैनिक दृष्टि से अत्यन्त कमजोर है, और पूँजीवादियों के प्रजातांत्रिक सिद्धान्तों को स्वीकार कर उसने अपनी स्थिति और भी कमजोर बना ली है, क्योंकि इस प्रणाली में पूँजीपतियों के हाथ में ही सत्ता आती है, और वे अपने निहित-स्वार्थों की रक्षा के लिए उसका प्रयोग करते हैं। छोटे-छोटे वर्गों के समूह बन जाते हैं और उनके नेता आपस में लड़ा करते हैं, देश की समूची तस्वीर उनकी आँखों से ओट हो जाती है और रहती हैं उनके सामने उनके स्वार्थों की तस्वीरें जो त्याग

नहीं, वरन् सौदेबाजी करवाती हैं, जो देश पर मर-मिटने के लिए प्रोत्साहन नहीं देतीं, वरन् अपने स्वार्थों की रक्षा के लिए उसके साथ गद्दारी करने की प्रेरणा देती हैं।'

'आपका विचार ठीक है, भारत में हम यही देख रहे हैं।' डाक्टर ने बड़ी दिलचस्पी के साथ कहा।

'यही पाकिस्तान में हो रहा है, और यही भारत में। पाकिस्तान पर अमेरिका का नियंत्रण है, इसलिए वहाँ नेताओं की धींगा-धींगी अधिक दिन नहीं चलने पाएगी, वह शीघ्र ही कोई मजबूत कदम उठावेगा। संभव है कि वहाँ फौजी शासन कायम करने के लिए अमरीका आदेश दे, और अगर आज नहीं तो कल वह कार्यान्वित होगा। परन्तु भारत में ऐसा कोई खतरा नहीं है। यहाँ इतनी राजनीतिक पार्टियाँ हैं, जहाँ सत्ता का उपयोग एक दूसरे को नष्ट करने के लिए होता है। यहाँ की जनता विभिन्न राजनीतिक पार्टियों में विभाजित है—उसी भाँति जैसा उसका सनातन काल से रवैया रहा है। जो राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता खून की नदियाँ बहा कर प्राप्त नहीं करता, उसे उसका मूल्य मालूम नहीं होता, और वह सजग न रहकर गाफिल रहता है। भारत ने स्वतंत्रता अपने सपूतों का रक्त बहा कर नहीं पाई, इसीलिए उसमें जागरूकता का अभाव है, और वह नए-नए सिद्धान्तों की रचना कर मानवों के परम्परागत स्वभाव में परिवर्तन लाने के लिए उद्योगशील है। शक्ति को ही इस विश्व में जीवित रहने का अधिकार है, यह पाठ हमें प्रकृति पढ़ाती है, परन्तु भारत की विचारधारा इसके विपरीत है। मानव अपने को जीवित रखने के लिए दूसरों की शक्ति अपने पक्ष में करता है—अर्थात् व्यक्ति अपना समूह बनाते हैं और राष्ट्र अपना एक संघ; परन्तु भारत संसार का गुरु बनने की अभिलाषा में प्रकृति की इस सिखावट को भूल गया है। अहिंसा का प्रयोग मनुष्य आपसी व्यवहार के लिए, अथवा देश अपने आन्तरिक झगड़ों के लिए कर सकता है, परन्तु राष्ट्रों के व्यवहार में उसका उपयोग नहीं हो सकता। राष्ट्र भिन्न-भिन्न विचारधाराओं के व्यक्तियों का समूह है। उसका जीवन तभी तक सुर-

क्षित है जब तक वह स्वयं सशक्त है। इसके अतिरिक्त अनेकों महा-विध्वंसक अस्त्रों के निर्माण से राष्ट्रों के बलाबल में अन्तर आ गया है, और जब तक उनका मुकाबला करने के लिए वैसे ही अस्त्र किसी राष्ट्र के पास नहीं होंगे, वह हमेशा कमजोर बना रहेगा, और कमज़ोर राष्ट्र किसी न किसी सबल राष्ट्र का ग्रास बनता है, यही प्राकृतिक नियम है। भारत की यही स्थिति है। हमें कूटनीतिक छल से लाभ उठाना है। 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' कहकर हम छल का प्रयोग कर रहे हैं, इस कौशल से तिब्बत को हम हड़प जायंगे, और भारतीय सीमा तक अपना विस्तार कर लेंगे। तब उसके पश्चात् हम अपने बल से वहाँ जमे रहेंगे।'

'हमारे नेता कैसे दूरदर्शी हैं!' डाक्टर भिनभिनाया।

'इसी उद्देश्य से हमने आपको यहाँ भेजा है। प्रत्येक पार्टी से मिलकर उन्हें 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' का पाठ पढ़ाइए, यहाँ के सैनिकों को अपने संघ का सदस्य बनाकर भुलावे में रखिए। चीनी नवयुवतियों द्वारा सैनिकों को वशीभूत कर सेना सम्बन्धी गुप्त कार्रवाइयां जानकर हमें सचेत करते रहिए। बड़े-बड़े जल्से कीजिए और नृत्य-संगीत आदि से उनको मनोरंजन में लगाए रखिए। यह सब तब तक करते रहिए जब तक चीन का अधिकार इस दक्षिणी क्षेत्र पर नहीं हो जाता। यहाँ की कोई-न-कोई राजनीतिक पार्टी तुम्हारे साथ हो जायगी और उन्हें पंचमांग बनाइए। जो कुछ मैंने इतने थोड़े दिनों में देखा है उससे मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि भारत विलासी होता जा रहा है। अहिंसा ने उसकी वीरता को कुंठित कर दिया है। उसे किसी राष्ट्र से आक्रमण का भय नहीं है—यहाँ तक कि उसे शंका भी नहीं है। यहाँ के नवयुवक विषय-वासनाओं के शिकार, और प्रौढ़ किंकर्तव्यविमूढ़ हो रहे हैं। सर्वत्र फूट फैली हुई है। प्रान्तीयता और जाति-वाद की जड़ें बहुत गहरी ही नहीं, वरन् यहाँ के खून और जलवायु में समाई हुई हैं। नृत्य और संगीत मनुष्य को विलासी बनाते हैं। जब तक वे गौण रूप में रहते हैं, तब तक मनोरंजन के साधन हैं, परन्तु जब वे राष्ट्र के मुख्य अंग बन जाते हैं, तब विनाश के साधन बनते हैं। इस समय भारत अपने

सांस्कृतिक उत्थान में लगा हुआ है, अतएव उसका ध्यान उसी दिशा में लगाए रखिए। सांस्कृतिक उत्थानों की मुख्य सहायक नारियां होती हैं। चीनी नवयुवतियों को उस उत्थान की सहायक बनाइए। मैं वापस जाकर अनेकों हिन्दी पढ़ी-लिखी चीनी नवयुवतियों को भेजूंगा। उनको एक-एक चीनी परिवार से सम्बद्ध कर दीजिए, ठीक इसी प्रकार जैसे तुमने सबको किया है। वे शिक्षित होकर आयेंगी—इसलिए उन्हें अपने कर्तव्य का ज्ञान रहेगा, किन्तु उन पर तुम दोनों को दृष्टि रखनी होगी। जनता और सैनिकों से उनके सम्बन्ध स्थापित करवाना तुम्हारा काम होगा। रह गया व्यय का प्रश्न, उसमें कोई कमी नहीं होने पाएगी। युद्ध के लिए द्रव्य खर्च करना पड़ता है। यह भी एक प्रकार का युद्ध है, किन्तु यह अशान्त न होकर शान्त है—भारत की नीति के अनुसार सम्पूर्ण अहिंसक है।' यह कहते-कहते वह जोर से हंस पड़ा।

हँसते-हँसते डाक्टर भी बोला—'वास्तव में यह युद्ध पूर्ण अहिंसक है, किसी प्रकार की हिंसा नहीं होगी। सब काम शान्ति से किए जाएंगे।'

'सत्य ही यह कलात्मक युद्ध होगा।' सूया ने मधुर मुस्कान से योग दिया।

'संसार के सामने चीन भी एक नए, किन्तु अद्भुत अहिंसक युद्ध का उदाहरण रखेगा, ठीक उसी भाँति जैसे भारत ने अहिंसा द्वारा स्वाधीनता प्राप्त करके रखा है।' तिनलिन के व्यंग्यपूर्ण अट्टहास का समर्थन सूया और डाक्टर की उन्मुक्त हंसी ने किया।

१६

सूया और मंजुला दामिनी के घर आईं तो देखा कि लॉन पर लाला मनोहरलाल, करुणा सुन्दरी, दामिनी और प्रमोद बैठे हैं। दामिनी ने उनको

वहीं आने का संकेत किया और उनके आने पर उसने सूया का परिचय अपने माता-पिता से करवाया।

सूया ने बैठते हुए करुणा सुन्दरी से कहा—'दिल्ली के नागरिकों से आपकी प्रशंसा सुनकर आपके दर्शनों के लिए बहुत दिनों से लालायित थी।'

'जैसी दम्मो है, वैसी ही तुम हो। यहाँ आने में क्या झिझक थी?'

'झिझक तो हम सेविकाओं को कभी नहीं आती, किन्तु अवसर नहीं मिलता था। आपने जो व्याख्यान परसों संसद में दिया था, उसे पढ़कर आपके प्रति मेरे हृदय में बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हुई, और आज सब काम छोड़-कर आपकी सेवा में उपस्थित हो गई। वाह, आपके कितने उदात्त भाव हैं। चीन के प्रति आपकी भावनाएँ और आपका प्रेम देखकर मन पुलकित हो गया।'

करुणा सुन्दरी अपनी प्रशंसा सुनकर कुछ सकुचाती हुई बोली—'चीन और भारत एशिया के दो महान् देश हैं, जिनकी मित्रता दो हज़ार वर्षों से चली आ रही है। भारत और चीन सदैव एक दूसरे के ऋणी हैं। ज्ञान, धर्म और संस्कृति का आदान-प्रदान बराबर होता रहा है।'

'आज दिन भी हो रहा है, और सदैव होता रहेगा, चाहे जितना हमारे शत्रु पश्चिमीय राष्ट्र इसमें रोड़े अटकावें।'

'भारत की वैदेशिक नीति स्वतन्त्र है। वह किसी गुट में शामिल नहीं हो सकता, इसीलिए हमारे ऊपर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता।'

'इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है, परन्तु मेरा अनुमान है कि अमरीका कभी चीन को राष्ट्रसंघ का सदस्य नहीं होने देगा, क्योंकि अभी अकेले रूस से ही उसकी दम फ़ना हो रही है, और यदि जन-चीन भी उसका सदस्य हो गया, तो राष्ट्र-संघ में उसका बोलबाला न रहेगा।'

'राष्ट्र-संघ अभी तक पश्चिमीय राष्ट्रों की कठपुतली बना है, परन्तु चीन की सदस्यता से उनकी शक्ति सीमित हो जायगी, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।'

'इसी भय से वह चीन का अधिकार उसको नहीं दे रहा है, किन्तु इससे

चीन की कोई हानि नहीं है, बल्कि उसको अपनी नीति-परिचालन के लिए छूट है। बांडुंग सम्मेलन से चीन की शक्ति बढ़ गई है।'

'हाँ, वह एशियाई-अफ्रीकी संघ का सम्मानित सदस्य है। उसके साथ इन दोनों महाद्वीपों की सद्भावनाएँ हैं।'

'चीन इसके लिए भारत का सदैव ऋणी रहेगा, किन्तु मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि किस प्रकार राष्ट्रसंघ का छोटा-सा-छोटा सदस्य वही अधिकार रखता है, जो साठ और चालीस करोड़ की जनसंख्या के देश रखते हैं ? यह तो सर्वथा अन्याय है। मताधिकार तो आबादी के लिहाज से होना चाहिए, देशों के अनुसार नहीं। दक्षिणी अमेरिका के राष्ट्र कितने निर्बल और कम आबादी वाले देश हैं, उन पर जो आधिपत्य जमा लेगा, वही बलवान हो जायगा। अमेरिका का राष्ट्रसंघ में इसलिए बोलबाला है, क्योंकि उसकी जेब में इन राष्ट्रों के मताधिकार पड़े हैं।'

'मिस चिनमिन्ह, यह नियम आपको ऊटपटाँग चाहे भले ही लगता हो, क्योंकि चीन आजकल उसका सदस्य नहीं है, किन्तु यदि आबादी के अनुसार मताधिकार दिया जाय तो बड़ी गड़बड़ी पैदा होगी। प्रत्येक राष्ट्र अधिक मताधिकार प्राप्त करने के लिए अपनी-अपनी जनसंख्या को बढ़ा-चढ़ाकर बतावेंगे, और कोई निर्णय कभी हो सकेगा, इसमें भी सन्देह है।' प्रमोद ने कहा।

'परन्तु भारत और चीन की जनसंख्या विश्व की जनसंख्या की आधी है। उनको भी एक-एक मताधिकार ! यह तो एक हास्यास्पद बात है।'

मंजुला को उनके वाद-विवाद में कोई रस नहीं आ रहा था। उसने ऊबकर कहा—'दम्मो, क्या चीन चलने का इरादा है ?'

'क्या तुम जा रही हो ?'

'तुम्हारे जैसा साथी मिल जाय तो जा भी सकती हूँ। मिस चिनमिन्ह यही पूछने के लिए आई है, किन्तु यहाँ दूसरी बातों में उलझ गई।' यह कहकर उसने सूया की ओर उपालम्भ के साथ देखा।

सूया ने मुस्कराते हुए कहा—'हाँ, बेशक, मैं बातों ही बातों में बहक

गई। क्या करूँ ? अपने देश के साथ जो अन्याय हो रहा है, उसको चुपचाप सहा भी नहीं जाता। लोग अपने दुःख की गाथा अपने मित्रों से कहा करते हैं। परसों माँजी के भाषण से यह स्पष्ट हो गया कि भारत सदैव चीन का मित्र रहेगा और उसकी सहायता करेगा।'

'अरे भई, भारत और चीन दो राष्ट्र नहीं, एक राष्ट्र है।' करुणा सुन्दरी ने समर्थन किया।

'इस आश्वासन के लिए मैं चीन की ओर से आपको हार्दिक धन्यवाद देती हूँ। हाँ, मंजू रानी से आज बात हुई थी कि शीघ्र ही एक भारतीय शिष्ट-मण्डल चीन जा रहा है, ताकि दोनों देशों की जनता में मैत्री भाव बढ़े।'

'किन्तु उसमें जाने वाले सदस्यों का चुनाव सरकार करेगी, उसमें ये लड़कियाँ कैसे जायेंगी ?'

'सरकारी स्तर पर जो शिष्ट-मण्डल जायगा, उसकी चर्चा मैं नहीं कर रही। गत शनिवार को 'हिन्दी-चीनी मैत्री संघ' की बैठक में यह तय हुआ है कि संघ की ओर से एक शिष्ट-मण्डल चीन भेजा जावे, जिसका व्यय-भार संघ वहन करेगा। उसमें हम सब लोग चल सकती हैं, क्योंकि संघ ही जाने वालों को मनोनीत करेगा।'

'तब यह दूसरा आयोजन है।'

'जी हाँ, इसका सरकारी शिष्ट-मण्डल से कोई सरोकार नहीं है। यह मैत्री संघ का होगा।'

'तब तो ये लोग आसानी से जा सकती हैं।"

'जी हाँ, यह हमीं लोगों का आयोजन है।' फिर उसने प्रमोद की ओर देखते हुए कहा—'आपके लिए भी एक प्रस्ताव लेकर आई हूँ।'

सबके नेत्र उसकी ओर उठ गये। करुणा सुन्दरी ने संदेहात्मक स्वर में पूछा—'इनके लिए क्या प्रस्ताव लेकर आई हो ?'

'हमारे मैत्री संघ के एक संरक्षक श्री तिनलिन पीकिंग से आये हैं। वह अपने साथ कुछ भारतीय युवकों को चीन ले जाना चाहते हैं, जो चीनियों को भारतीय भाषाओं का ज्ञान करायें। यह अवैतनिक आयोजन नहीं

होगा। चीन सरकार उन्हें वेतन के अतिरिक्त उनके खाने-पीने-रहने का प्रबन्ध भी करेगी।'

'किन्तु इसमें वही युवक काम कर सकेंगे, जिनको चीनी भाषा का ज्ञान हो।'

'वे अभी अंग्रेजी भाषा के माध्यम से पढ़ायेंगे, और इसी दरम्यान वे स्वयं चीनी भाषा का ज्ञान प्राप्त करेंगे। चीन में ऐसे कितने ही युवक तथा युवतियाँ हैं जिन्हें अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान है।'

'हाँ, तब तो यह सम्भव है कि यहाँ के युवक वहाँ कुछ काम कर सकेंगे। प्रमोद, क्या तुम्हारा विचार जाने का है?' करुणा सुन्दरी ने पूछा।

दामिनी ने उसके उत्तर देने से पहले कहा—'हाँ, भैया चलिये, हम लोग चीन घूमेंगे और कुछ सेवा-कार्य भी करेंगे।'

'दम्मो, तुम जाओ। अब मैं कुछ दिनों तक अपने देश में रहना चाहता हूँ।' प्रमोद ने उत्तर दिया।

'जब आपने अपने जीवन के सात-आठ साल पश्चिमीय देशों में व्यतीत कर वहाँ की संस्कृति तथा सभ्यता का ज्ञान प्राप्त किया है, तब यदि पूर्वीय देशों में भ्रमण नहीं करोगे तो वह एक पक्षीय और अधूरा रहेगा।'

मंजुला ने उसका समर्थन किया—'हाँ, मिस चिनमिन्ह का कहना ठीक है।'

'बेटी, क्या तुमने जाने का निश्चय कर लिया है?' करुणा सुन्दरी ने पूछा।

'यदि दम्मो और भाई साहब चलें तो मैं अवश्य जाऊँगी।'

'और यदि भैया चलें तो मैं जाऊँगी।' दम्मो ने कहा।

लाला मनोहरलाल अभी तक चुपचाप सुन रहे थे। बोले—'ठीक तो है, प्रमोद को अवश्य जाना चाहिए, यह हमारी पारिवारिक परम्परा के अनुकूल होगा। देश-सेवा हमारे परिवार का मूल सिद्धान्त रहा है, हमें उससे पीछे नहीं हटना चाहिए। मैं तो प्रमोद को यही परामर्श दूँगा कि वह अवैतनिक रूप से चीन जाकर वहाँ सेवा-कार्य करे। वेतन लेकर काम करने के

पक्ष में मैं नहीं हूँ।'

'अभी-अभी बेचारा आठ साल बाहर रहकर घर आया है, और तुम फिर बाहर खदेड़ने लगे। तुमने अपना सारा जीवन जेल में काटा, अपने साथ मुझको और बच्चों को भी घसीटा, और जब खाने-पीने के दिन हमारे बच्चों के आये तब तुम्हें वह नहीं सुहाता। तुम चाहते हो कि वे तुम्हारी तरह जीवन-भर मरा-खपा करें।' करुणा सुन्दरी ने सरोष कहा।

'जीवन का सत्व सेवा है। चीन और भारत की मैत्री ऐसी क्रान्ति का सूत्रपात कर रही है जिससे संसार स्तम्भित रह जायगा। उस क्रान्ति में यदि हमारा भी कुछ योगदान हो तो वह एक विशिष्ट बात होगी। यदि प्रमोद नहीं जायगा, तो फिर मैं जाऊँगा।'

'तुम तो बहुत जाओगे! जेल के जीवन ने तुम्हारी रीढ़ तो तोड़ दी है—सांघातिक रोगों से मैत्री मोल ले ली है, दो-चार कदम चलने की सामर्थ्य नहीं है, और जाओगे चीन!'

'अभी इतना गया-बीता नहीं हूँ, जितना तुम समझती हो।'

'नहीं अभी तक भीम बने हुए हो।' कहकर करुणा सुन्दरी उठकर जाने लगी। मंजुला और दामिनी भी उठ खड़ी हुईं।

प्रमोद की ओर एक मोहक कटाक्ष करती हुई सूया बोली—'तब फिर आप चीन का निमन्त्रण ठुकरा देंगे? आपके जाने से मिस मंजुला और दामिनी जायेंगी, नहीं तो कोई नहीं जायगा, और मुझसे बड़ी भूल यह हुई कि आप तीनों को भेजने की जिम्मेवारी मैंने ले ली है। मिस्टर तिनलिन के आगे मुझे शर्मिन्दा होना पड़ेगा।'

लाला मनोहरलाल ने करुणा सुन्दरी से कहा—'श्रीमती जी, इस तरह रण-भूमि में पीठ न दिखाइये। प्रमोद को जाने क्यों नहीं देती?'

उसने लौटकर कहा—'मैं क्या रोक सकती हूँ। जब तुम्हारा निश्चय हो गया तो उसको तोड़ने की शक्ति किसमें है? इसके अतिरिक्त मेरा अस्तित्व ही क्या है, आपके सामने!'

'ऐसा न कहो वरानने! यह युग स्त्रियों की सत्ता का है, और...।'

'बस, तुम्हारी इन चिकनी-चुपड़ी बातों से यदि क्रोध न आता हो, तो आ जाता है। हाथी के दाँत दिखाने के और तथा खाने के और होते हैं। जगत् में डंका पीटते हो नारी-स्वाधीनता का और घर में गुलामी की जंजीरों में बाँध रखते हो। तुम्हारी यह दो-मुँही नीति मुझे अच्छी नहीं लगती।'

'अरे, तुम तो ज्वालामुखी होने लगीं।'

'जब सत्य कहती हूँ, तो मुझे ज्वालामुखी बताया जाता है। पुरुष सदा स्त्री पर शासन करता आया है, और करेगा। पहले जोर-जबरदस्ती से करता था, और अब कूटनीति से। बहरहाल वस्तुस्थिति में कोई अन्तर नहीं पड़ा है, और न पड़ेगा।'

'कहाँ की बात, कहाँ लाकर छोड़ी।'

'तुम पुरुष लोग नारी का हृदय नहीं जानते। उसके मन में इच्छा होती है कि वह अपने परिवार के सब सदस्यों के साथ रहकर गार्हस्थ धर्म का पालन करे, अपने बाल-बच्चों को खिलावे-पिलावे, उनका विवाह कर घर बसावे, और अपने पति-पुत्रों के साथ जीवन को सार्थक बनावे। बहुत दिनों तक देश-सेवा, समाज-सेवा कर ली, अब कुछ दिनों परिवार की सेवा करना चाहती हूँ, किन्तु तुम्हारे ऊपर तो वही भूत सवार है जो देश की गुलामी के समय था। उस समय देश को आज़ाद करने के लिए जीवन के सब सुख त्यागने पड़े—यह ठीक था, परन्तु अब जब भारत स्वतन्त्र होगया है तब यह तपस्या और बलिदान कहाँ तक ठीक हैं?'

'श्रीमती जी! देश को आजाद करना हमारा धर्म था, और उसके पश्चात् अब हमारे निर्माण का काल आरम्भ होता है। त्याग, तपस्या और बलिदान की गति उसी प्रकार रहनी चाहिए जैसी पहले थी। इन्हीं शक्तियों ने गुलामी को पराजित किया है, और यदि इनमें तनिक भी अन्तर पड़ा तो देश निर्बल बना रहेगा।'

'कार्य का स्रोत कभी बन्द नहीं होता, अभी तक हमने काम किया, अब दूसरों को हमारा स्थान लेना चाहिए।'

'यही तो मैं कर रहा हूँ। अपने और तुम्हारे स्थान पर प्रमोद तथा दम्मो

को नियुक्त कर रहा हूँ।'

'देश-सेवा का क्या हमने ठेका ले रखा है ?'

'ठेका कहाँ, यह तो हमारा तुच्छ योगदान है। थोड़ी देर के लिए सोचो, यदि इसी भाँति सब सोचने लग जायँ कि अब हम नहीं, दूसरे कार्य करें तो कार्य कभी पूरा नहीं होगा। आजकल आज़ादी मिलने के पश्चात् जो देश में शिथिलता आई है, उसके मूल में यही कारण है। कुछ देश-सेवकों को छोड़कर शेष सब में भोग की वासना प्रबल होगई है। कांग्रेस-जन अपनी त्याग-तपस्या से मुँह मोड़कर आनन्द भोग करने के लिए लालायित हो रहे हैं।'

'तो क्या वे जन्म भर यों ही सड़ा करें ?'

'अरे तुम यह क्या कह रही हो ! जीवन तो संघर्ष शक्ति का दूसरा नाम है। निर्जीव और जड़-पदार्थ इस शक्ति से हीन होते हैं, इसलिए वे ठुकरा दिए जाते हैं। अभी तो देश को भ्रष्टाचार, अनैतिकता भुखमरी, दरिद्रता, छुआछूत, जाति-भेद आदि-आदि पिशाचों से संघर्ष करना है।'

'तुमसे कौन बहस करे ? तुम्हें तो इसका रोग है, और मैं तुमसे कभी जीत नहीं सकती, इसलिए हार मान लेना ठीक है। दामिनी को भेजो, प्रमोद को भगाओ, चाहे जो करो, मैं कुछ न बोलूँगी। समझूँगी कि मेरे भाग्य में भरे-पूरे घर को देखना बदा नहीं है।'

'अच्छा भई, यदि तुम्हारी इच्छा नहीं है तो ये लोग नहीं जायँगे। तुम इनके साथ गृहस्थी का आनन्द लो।'

'और तुम ?'

'जैसा तुम कहोगी, वह करूँगा। इस उम्र में घर की शान्ति नष्ट करने की जिम्मेदारी नहीं उठा सकता।'

'अभी तक जैसा तुमने चाहा वही हुआ, अब आखिरी वक्त में क्यों जोर-जबरदस्ती कर तुम्हारे मन को कष्ट पहुँचाऊँ।' यह कहकर वह शीघ्रता से चली गई। दामिनी और मंजुला ने भी उसका अनुसरण किया। वातावरण गंभीर होकर उनका दम घोटने लगा।

सूया ने उससे मुक्ति पाने के लिए कहा—'अब दूसरों को तैयार करना होगा। मैं भी विदा लिए लेती हूँ।'

प्रमोद ने कहा—'आपने जब मेरा नाम दे दिया है, तब मैं जाऊँगा।' यह कहकर उसने अपने पिता की ओर देखा।

लाला मनोहरलाल कुछ नहीं बोले, किन्तु उनके नेत्र चमकने लगे।

सूया ने उठते हुए कहा—'मैं परिवार में कलह का बीज नहीं बोना चाहती। चीन जाने में आपकी रुचि होगी, इसलिए आपका नाम दे दिया था। कोई हर्ज नहीं, अब कटवा दूँगी।' कहते-कहते उसका मुख म्लान हो गया। वह उठकर उन्हें नमस्कार कर जाने लगी।

प्रमोद भी उठकर उसके साथ हो लिए। चलते-चलते कहा—'अभी आप मेरा नाम कटवाइएगा नहीं। एक-दो दिन में परिस्थिति सुलझ जायेगी।'

सूया उनको देखकर मुस्कराई, और विदा माँगने के उद्देश्य से, हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। हाथ मिलाते हुए उसने उसका हाथ कुछ जोर से दबाया। प्रमोद ने उसकी ओर देखा, दोनों के नेत्र मिल गए, और एक तड़ित कम्पन उसके शरीर में दौड़ने लगा।

सूया ने पुनः हाथ दबाते हुए कहा—'आज शाम को कहाँ मिलेंगे?'

'क्यों? जहाँ कहिए वहाँ आ जाऊँ। कोई विशेष काम है?'

'हाँ।' फिर तुरन्त कहा—'नहीं, यों ही कहा। शाम को आप शायद खाली नहीं रहेंगे।'

'नहीं, मैं बिल्कुल खाली हूँ, जहाँ कहिए वहाँ मिलूँ।'

'तो फिर मैत्री-संघ के कार्यालय में आ जाइये, संध्या छह बजे।'

'अच्छा, आ जाऊँगा।'

सूया अभी तक उसका हाथ पकड़े हुए थी। उसने फिर उसे कसकर दबाया। इस बार उसके साथ वह भी मुस्कराया। दोनों की मुस्कानों ने वायदे को पक्का कर दिया। सूया हाथ छुड़ा कर शीघ्रता से चली गई।

१७

हिन्द-चीन मैत्री संघ के कार्यालय में डाक्टर चिनमिन्ह और तिनलिन आगामी कार्यक्रम के मन्सूबे बाँध रहे थे कि सूया ने शीघ्रता से प्रवेश किया। उसको देखकर डाक्टर ने पूछा—'क्यों, उनको फाँस लिया ?'

उसने बैठते हुए कहा—'लगभग, परन्तु अब भी कुछ अधूरा है।'

'तुम्हारे लिए कठिन कुछ नहीं है। तुम्हारी चितवन में जादू है, वाणी में जादू है, हाव-भाव-कटाक्ष में जादू है। संक्षेप में यह कि तुम जादू मुजस्सिम हो।' यह कहकर वह हँसने लगा।

तिनलिन—'आपकी रिपोर्ट से और जो कुछ मैंने यहाँ आकर देखा, उससे यही प्रमाणित होता है कि सूया ने अद्भुत कुशलता से अपना कर्तव्य पालन किया है। मैं अपने देश के सर्वोच्च अधिकारियों को इसके कार्य-कलाप की सूचना दूँगा।'

सूया ने प्रसन्नता से उसका अभिवादन किया।

चिनमिन्ह—'नतीजा क्या निकला, यह तो बताओ ? लाला मनोहर-लाल तथा करुणा सुन्दरी का जितना प्रभाव इस देश की जनता पर है, यदि उसका शतांश भी हम अपने उपयोग में ला सकें, तो समझ लो कि बेड़ा पार है।'

'आज मियाँ-बीवी में मेरे सामने ही एक झड़प होगई। इसमें तनिक सन्देह नहीं कि लाला मनोहरलाल का समस्त जीवन केन्द्रित है देश-सेवा पर। उनके सामने संसार के दूसरे सुख-वैभवों का कोई मूल्य नहीं है।'

'हाँ, उनके जीवन का इतिहास इसका साक्षी है। हम लोग उनकी प्रशंसा बहुत दिनों से सुन रहे हैं। त्याग, तपस्या, ईमानदारी, बुद्धि-विलक्षणता, संचालन-क्षमता आदि सभी गुण तो हैं। उन्होंने देश-सेवा के लिए, घर छोड़ दिया, पिता की सम्पत्ति पर ठोकर मार दी, और समस्त जीवन

ब्रिटिश सरकार से संघर्ष करते रहे।'

'उनकी पत्नी करुणा सुन्दरी भी उनसे उन्नीस नहीं बैठती।'

'करुणा सुन्दरी को इस रूप में गढ़ने वाले तो वही हैं। सुना है कि जब वह विवाहित होकर आई थीं, तब नितान्त बालिका थी, न पढ़ी-लिखी थी और न कुछ समझती-बूझती थी।'

'किन्तु आज दिन जो उत्कृष्टता है, उसके बीज तो उनमें थे ही।'

'हाँ, अवश्य, किन्तु बीज उगाकर उसको हरे-भरे वृक्ष में परिणत करने का श्रेय तो माली को मिलना चाहिए। जैसे तुम्हारे स्वाभाविक गुणों का विकास एक विशेष प्रकार की शिक्षा से हुआ है, उसी प्रकार करुणा सुन्दरी का भी विकास लाला मनोहरलाल के परिश्रम, अध्यवसाय, धैर्य, और मानापमान की भावनाओं के दमन से हुआ है।'

तिनलिन—'उनकी प्रशंसा में क्या समय बिता देंगे, आप दोनों ?'

चिनमिन्ह—'क्षमा कीजिएगा। हाँ सूया, आगे बताओ।'

सूया—'इस परिवार पर हमारा रंग बखूब चढ़ गया है। लाला मनोहरलाल दामिनी और प्रमोद को चीन भेजने के लिए तैयार हैं, किन्तु करुणा सुन्दरी कुछ विरोध कर रही है।'

'और उन दोनों का क्या विचार है ?'

'वे दोनों तैयार हैं। मैं अपने रास्ते से मंजुला को भी दूर हटाना चाहती हूँ, जिससे कैप्टेन अर्जुनसिंह पर मेरा प्रभाव कभी नष्ट न हो। सुना है कि दोनों में सगाई की बात चल रही है। खैरियत इतनी है कि अभी रस्म अदा नहीं हुई।'

'और तुम चाहती हो कि वह रस्म अदा न होने पावे ?'

'हाँ, इसीलिए सबसे पहले मैं मंजुला से मिली, और उसको चीन जाने का निमंत्रण दिया। कच्ची बुद्धि की लड़की की समझ में बात आ गई, किन्तु उसने कहा कि शायद उसके माता-पिता उसको अकेले जाने की अनुमति नहीं देंगे, इसलिए दामिनी को भी वहाँ जाने का निमंत्रण देना चाहिए। मुझे तुरन्त सूझा कि यदि दामिनी के साथ प्रमोदकान्त भी चला जावे, तो

मंजुला का काँटा सदा के लिए नष्ट हो जावेगा। प्रवास में साथ रहने से मंजुला और प्रमोद में प्रेम उत्पन्न हो जाने की विशेष संभावना है, क्योंकि दोनों जवान हैं, और मैंने यह भी अनुभव किया कि मंजुला उसकी ओर झुक रही है।'

'वाह! तब तो तुम एक तीर में दो शिकार कर रही हो।'

'हाँ, इसी विचार से मैं उसको लेकर दामिनी के घर गई, और करुणा सुन्दरी की प्रशंसा कर उसको अपने अनुकूल बनाया, क्योंकि निस्वार्थ सेवा करने वालों को यदि कोई वस्तु प्यारी होती है, तो वह आत्म-प्रशंसा!'

'वाह, खूब तीर मारा!'

'जी हाँ, जब मैंने प्रमोद को चीन जाने के लिए उत्साहित किया, तो वह पहले इनकार कर गया। करुणा सुन्दरी ने भी उसका पक्ष लिया, परन्तु लाला मनोहरलाल ने जाने के लिए ज़ोर दिया। बस इसी रस्सा-कशी में दोनों की झड़प हो गई, और मनोहरलाल ने कन्धा छोड़ दिया। मैंने फिर बाण छोड़ा, और इस बार प्रमोद घायल हो गया। वह अपने पिता की भावना से परिचित है, इसलिए उसने चलते समय कहा कि अभी कोई निश्चित निर्णय नहीं समझना चाहिए, दो-तीन दिन में यह गुत्थी सुलझ जायगी। मैं उसको यहाँ आने का निमंत्रण दे आई हूँ, अब वह आता ही होगा।' कहते हुए उसने अपनी घड़ी में समय देखा।

'यहाँ उसको क्या सब्ज़ बाग दिखाया जायगा?'

'यह भेद मेरा अपना है, सफलता मिलने पर बता दूँगी, किन्तु अभी अपनी योजना नहीं बताऊँगी।'

तिनलिन—'हमें तुम्हारी योजनाओं से कोई सरोकार नहीं है, हमें तो परिणाम चाहिए।'

'परिणाम तो निश्चय मिलेंगे। बस आप मेरी हाँ-में-हाँ मिलाते जाइयेगा। छह बजे उसे बुला आई थी, अब समय हो गया है, वह किसी क्षण आने वाला है।'

इसी समय दूकान के सामने एक मोटर आकर खड़ी हुई, और उससे

प्रमोद उतर कर दूकान में प्रविष्ट हुए। उनको देखकर तीनों उठ खड़े हुए, और सूया ने आगे बढ़कर कहा—'हिन्दी-चीनी भाई-भाई।'

संघ के सदस्यों का यही नारा उनका नमस्कार, अभिवादन और स्वागत था। प्रमोद, तिनलिन और चिनमिन्ह ने वही दोहराया।

तिनलिन से उसका परिचय कराने के बाद सूया ने कहा—'आप बिल्कुल ठीक समय पर आए। समय की ऐसी पाबन्दी प्रायः यहाँ के निवासियों में कम है।'

'हाँ, किसी जगह भी देर से पहुँचना हमारा एक प्रकार से स्वभाव हो गया है। पश्चिमीय देशों में यह बात नहीं है। वे समय का मूल्य जानते हैं, और उसी भाँति उसकी रक्षा करते हैं।'

तिनलिन ने हँसते हुए कहा—'विदेश में रहकर आप इस दोष से मुक्त हो गए हैं।'

'सत्य यह है कि मनुष्य का जितना विकास विदेश में होता है, उतना स्वदेश में नहीं। वहाँ उनके अनुकूल अपने को बनाना पड़ता है। भारत को अभी बहुत कुछ पश्चिम से सीखना है।'

'ज्ञान प्राप्त करने के तीन साधन हैं—पठन, मनन, और भ्रमण। आज मुझे बड़ी निराशा हुई जब यह मालूम हुआ कि आपकी माँ आपके चीन जाने का विरोध कर रही हैं।'

'नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है; पिताजी और उनमें प्रायः झड़प होती रहती है। पहले तो वह विरोध करती हैं, परन्तु अंत में उनका अनुमोदन करने लगती हैं।'

'दोनों का जीवन कितना सुखी है।'

'मेरी यह माता यद्यपि सौतेली हैं, किन्तु आज तक मैंने यह कभी महसूस नहीं किया कि अपनी और सौतेली माँ में क्या अन्तर होता है।'

'उनके शील-स्वभाव की सर्वत्र चर्चा है, उनकी सूझ-बूझ की सब तारीफ़ करते हैं। वह आदर्श रमणी हैं।'

'इसमें कोई सन्देह नहीं।' यह कहकर वह सूया की ओर देखने लगे।

सूया ने मोहक मुस्कान से कहा—'मैं तो एक प्रकार से निराश हो गई थी, किन्तु आपके आश्वासन से कुछ आशा बंधी है। मंजुला जी की बड़ी इच्छा है चीन जाने की, परन्तु आप लोगों के बिना वह नहीं जाने पाएगी।'

'हाँ, कर्नल साहब उसको अकेले भेजने के लिए तैयार नहीं होंगे, क्योंकि उसकी सगाई शीघ्र होने वाली है।

'सगाई होने वाली है ?'

'हाँ, क्या आपको नहीं मालूम ? कैप्टेन अर्जुनसिंह से उसके विवाह की बात चल रही है।'

'नहीं, मुझे सगाई की बात नहीं मालूम। किसी के वैयक्तिक मामलों में दखल नहीं दिया करती। न कभी कैप्टेन ने कहा, और न दामिनी या मंजुला ने इस दिशा में संकेत किया, और न उनके आपसी व्यवहार से इसका आभास मिला।'

'मैं समझता था कि आप जानती होंगी।'

'उनके अभिभावकों ने सगाई चाहे तय कर दी हो, परन्तु जहाँ तक मैं परख पाई हूँ, वहाँ तक यही मालूम होता है कि मंजुला इस सम्बन्ध के विरुद्ध है। वह स्वयं अभी तय नहीं कर पाई है। उसके मन में कैप्टेन का एक प्रतिद्वन्द्वी पैदा हो गया है, ऐसा मुझे विदित होता है।'

'यह किस आधार पर आप कह रही हैं ?'

'उसकी बातों से। उसने मुझसे स्वीकार किया है कि वह कैप्टेन से कभी विवाह नहीं कर सकती, क्योंकि वह जाहिल और बदतमीज़ है। अधिक शिक्षित भी नहीं है, और न उसने विदेशों में भ्रमण किया है, जिससे उसकी रुचि और बुद्धि परिमार्जित होती।' कहती हुई उसने इस प्रकार देखा मानो वह कह रही हो कि मंजुला उसपर अनुरक्त है। प्रमोद के मन में आशा की एक क्षीण रेखा उत्पन्न हुई।

डाक्टर चिनमिन्ह ने कहा—'सूया! क्या अपने अतिथि का सत्कार नहीं करोगी ? सिर्फ बातों ही में टालोगी ? यह चीनी सभ्यता तो नहीं है।'

'आप यह न समझें कि मैं अपना कर्तव्य भूल गई हूँ। ठीक साढ़े छ बजे

पड़ौस के रेस्तराँ से चाय आ जायगी। यह देखिए ब्वाय चाय ले आया।'

'तुम एक चमत्कार हो।' कहते हुए उसके नेत्र चमकने लगे।

रेस्तराँ के नौकर ने चाय की बड़ी ट्रे उसके सामने रख दी, और अन्य आदेश पाने की उत्कंठा में एक ओर खड़ा होकर प्रतीक्षा करने लगा।

तिनलिन ने सूया को चाय पिलाने का संकेत किया, और वे सब चाय पीने लगे। चाय-पान समाप्त होने के पश्चात् डाक्टर और तिनलिन किसी काम के बहाने उठकर चले गए, और सूया के लिए मैदान खाली छोड़ दिया गया। एकान्त पाकर सूया जो सोफे के एक किनारे से बैठी थी, खिसक कर प्रमोद के पास इतना सटकर बैठ गई कि उनके स्कन्ध आपस में टकराने लगे। प्रमोद इससे कुछ असन्तुष्ट हुए और कुञ्चित दृष्टि से उसकी ओर देखा, किन्तु उसने कुछ ध्यान न देकर कहा—'मैं जानती हूँ कि मंजुला तुमसे प्रेम करती है।'

'यही सन्देश देने के लिए क्या आपने मुझे यहाँ बुलाया था ?'

सूया कुछ अप्रतिभ-सी हो गई, परन्तु उसने हार नहीं मानी, और कहा—'प्रमोद बाबू, नारी का हृदय भगवान ने बड़ा विचित्र बनाया है। वह जो कुछ कहना चाहती है, वचनों से प्रकट नहीं कर सकती।'

'इसका क्या अर्थ लगाऊँ, मेरी समझ में नहीं आता।'

'पुरुष तो अपने को बहुत चतुर बताता है। परन्तु शायद वह इतना चतुर नहीं होता।'

'मिस चिनमिन्ह, इन पहेलियों को बूझने में मैं बिल्कुल असमर्थ हूँ, आप अपना मतलब साफ़-साफ़ कहिए।'

'बात यह है कि मंजुला की इच्छा है कि आप उसे चीन घुमा लावें, और वह बिना आपके जायेगी नहीं।''

'किन्तु मैं कोई गाइड या प्रदर्शक तो नहीं हूँ।'

'पुरुष तो सदैव नारी का पथ-प्रदर्शक रहा है।'

'मालूम होता है कि जमाने से आप बहुत पिछड़ी हुई हैं। आजकल के समय में सत्य इसके विपरीत है।'

जब सूया ने देखा कि दूसरा तीर भी खाली गया, तब उठकर पास की अलमारी से उसने एक शीशी से चूर्ण निकाला और धूपदान में उसे चुटकियों से डालने लगी। धूपदान की लुँठित अग्नि पुनर्जीवित होकर धूम उगलने लगी। एक प्रकार की मनमोहक सुगन्ध से कमरा भरने लगा।

प्रमोद ने उसके पास आकर पूछा—'यह धूप बड़ी अच्छी है, इसको आप कहाँ से खरीदती हैं ?'

सूया इस प्रकार हटी कि वह उससे टकरा गई। फिर संभलने की चेष्टा करते हुए कहा—'क्षमा कीजिएगा। मेरे पैर की नस में एक प्रकार की अकड़न हो जाया करती है, उससे कदम बराबर नहीं पड़ते।'

प्रमोद ने उसके स्कन्ध को पकड़ कर गिरने से बचा तो लिया, परन्तु उसने अपनी देह इस प्रकार ढीली कर दी, जिससे उसको पकड़े रहना अनिवार्य हो गया। धूपदान से निकलता हुआ धूम सीधा प्रमोद की नासिका में प्रवेश कर उसके मस्तिष्क में एक प्रकार की मोहकता पैदा करने लगा। सूया की पीठ उसके हृदय-प्रदेश से टकराती हुई उसे रोमांचित तथा पुलकित करने लगी। उसके स्कन्धों को पकड़े हुए ज्यों-ज्यों उसे अपने पैरों पर खड़ा करने का वह प्रयत्न करता, त्यों-त्यों वह उसकी ओर गिरती जा रही थी। यहाँ तक कि उसकी पीठ उसके हृदय-प्रदेश से बिल्कुल सट गई।

सूया अपना सिर उसके स्कन्ध पर रख अर्ध निमीलित नेत्रों से उसकी ओर देखने लगी। उसने धीमे स्वर में कहा—'प्रमोद बाबू, मुझे इसी प्रकार घसीट कर सोफे पर बैठा दीजिए। खड़े होने की शक्ति मुझमें नहीं है।'

प्रमोद के कपोलों को उसकी चीनी फैशन में गुथी हुई वेणी स्पर्श कर उसकी नाड़ियों में उष्णता प्रवाहित करने लगी। धूपदान से निकलता हुआ धूम उसे अधिकाधिक अस्थिर तथा भ्रमित-सा कर रहा था। सूया का कथन वह नहीं समझा।

सूया ने अपना सिर उसकी छाती पर डाल दिया, और फिर दीर्घ निश्वासें छोड़ने लगी। उसने फिर अत्यन्त धीमे स्वर में कहा—'प्रमोद बाबू, आप मुझे घसीटकर सोफे पर बैठा दीजिए। अब कुछ देर तक इसी

भाँति मेरे पैर अकड़े रहेंगे।' कहते-कहते उसने दोनों हाथों का गुंफा बनाकर उसकी गर्दन में डाल दिया और उसके कान को स्पर्श करते हुए उसने अर्ध निमीलित नेत्रों के साथ कहा—'प्रमोद बाबू ! प्रमोद बाबू पैर की नस में बड़ा दर्द हो रहा है। मुझे सोफे के पास ले चलिए।'

प्रमोद के मस्तिष्क के ज्ञान-तन्तु बड़े वेग से उद्वेलित हो रहे थे। अब उसकी समझ में उसका कथन आया, और वह उसे पकड़े हुए पीछे धीरे-धीरे सरकने लगे। ज्योंही सोफे के समीप वह आए, त्योंही सूया ने एक ऐसा धक्का अपनी पीठ से दिया कि वह सोफा पर गिर पड़े, और सूया उसकी गोद में बैठकर हाँफने लगी। प्रमोद ने उसे एक ओर धकेलना चाहा, परन्तु उसने अपने पैर आगे फैला दिए, और अपने शरीर का भार शक्ति के साथ डालकर उसे अवश बना दिया।

प्रमोद का विवेक-तन्तु अभी पूर्णतः मूच्छित नहीं हुआ था। बुझने वाले दीपक की लौ की भाँति वह सजग हुआ, और अपनी स्थिति की भयानकता अनुभव करते हुए वे बोले—'मिस चिनमिन्ह, अब आप मेरी गर्दन छोड़कर इधर बैठने का प्रयत्न कीजिए। यदि डाक्टर अथवा और कोई आ गया तो हम लोग कोई सफाई न दे सकेंगे, और हमारा जीवन कलंकित हो जायगा।'

'ज़रा ठहर जाइए, मेरी नस में असह्य वेदना हो रही है। यहाँ कोई नहीं आयेगा। आह ! कितना दर्द हो रहा है।' कहते-कहते उसने उसकी गर्दन को झुकाकर अपने मुख के समीप लाने का प्रयत्न किया।

इसी समय कमरे में लगी हुई बिजली की घंटी बजकर किसी के आने तथा साक्षात् करने की सूचना देने लगी।

सूया की मुखाकृति तत्क्षण क्रोध से विकृत हो गई, और वह सर्पिणी की भाँति फुफकारती बोली—'यह धृष्टता किसने की ?' फिर सचेत होकर कहा—'मेरे पैर में दर्द इतना अधिक हो रहा है कि मैं हिल-डुल नहीं सकती, और यह न मालूम कौन आ गया ?'

प्रमोद भी उस घंटी की आवाज से सचेत हो गए, और अपनी पूरी शक्ति से उसे सोफे पर डालकर उठ खड़े हुए, और द्वार के पास जाकर बाहर

बरामदे में देखने लगे।

सीढ़ी पर चढ़ते हुए डाक्टर चिनमिन्ह अपने साधारण स्वर की अपेक्षा कुछ तीव्र आवाज में कह रहे थे—'कैप्टेन, आपके आगमन से हम लोगों को बहुत प्रेरणा मिलती है। आपका हम लोगों के प्रति इतना स्नेह इस बात की गारन्टी है कि हिन्दी-चीनी संघ का भविष्य बड़ा उज्ज्वल तथा आशापूर्ण है।' फिर बरामदे में खड़े हुए प्रमोद को सम्बोधित करते हुए बोले—'प्रमोद बाबू भी आपकी ही भाँति हम पर सदैव कृपा करते हैं। कहिए प्रमोद बाबू, 'सू' क्या कर रही है ?'

कैप्टेन अर्जुनसिंह ने विषभरी दृष्टि से प्रमोद की ओर देखा। प्रमोद ने कहा—'उनके किसी पैर की नस में दर्द पैदा हो जाने से वह सोफा पर बैठी कराह रही हैं। मैं आपको सूचना देने जा रहा था कि किसी डाक्टर को बुलाइए।'

'हाँ-हाँ, उसको अक्सर यह बीमारी हो जाया करती है, किन्तु थोड़ी देर में अपने आप दुरुस्त हो जाती है। डाक्टर बुलाने की कोई आवश्यकता नहीं है।'

तीनों ने देखा कि सूया लँगड़ाती हुई कमरे के बाहर बरामदे में आ रही थी। उसने मुसकराते हुए कैप्टेन से कहा—'प्रमोद बाबू तो मेरी हालत देखकर घबड़ा गए थे। यह दर्द अब ठीक हो रहा है, आइए।'

कैप्टेन तो उसके पीछे कमरे में चले गए, किन्तु प्रमोद ने कहा—'अब मुझे आज्ञा दीजिए, एक मित्र से आठ बजे मिलने की बात तय हुई थी, वह मेरी प्रतीक्षा करेंगे।'

'अच्छा, तब फिर आप जाइए। इस मैत्री संघ का ध्यान रखियेगा।' कहकर सूया ने उसको विदा कर दिया। प्रमोद भी अपनी जान बचाकर द्रुत पदों से चले गए।

१८

प्रकाश कुँवर ने झल्लाकर कहा—'हम लोग तुम्हारी यह बात नहीं मान सकते।'

कर्नल वेदप्रकाश मंजुला की पीठ और सिर पर हाथ फेरकर मंजुला की रुलाई रोकने का प्रयत्न कर रहे थे। मंजुला मेज के ऊपर अपने दोनों हाथों पर सिर रखे हुए सिसक रही थी। जब उसका रुदन उनके तमाम प्रयत्नों के बावजूद भी नहीं थमा, तब उन्होंने हताश होकर अपनी पत्नी की ओर देखते हुए कहा—'जब वह नहीं मानती, तब उसे जाने दो।'

'वाह, इतने दूर देश में कैसे कुँआरी लड़की को जाने दूँ! ज्यों-ज्यों तुम बूढ़े हो रहे हो, त्यों-त्यों तुम्हारी बुद्धि भी क्या बूढ़ी हो रही है?'

'अरे भई, वह अब पुराना ज़माना नहीं रहा, जब लड़कियों को घर के अन्दर बाँधकर रखा जाता था। आजादी की हवा का सब आनन्द उठा रहे हैं, फिर लड़कियाँ ही क्यों उस सुख से वंचित रहें।'

'आज़ादी-आज़ादी!, अरे उसकी कोई सीमा भी है? क्या सब कानून-कायदों को उठाकर ताक पर रख देने का ही नाम आज़ादी है? देश की आज़ादी के साथ सबको मनमानी करने की छूट मिल गई है!'

'अरे वह अकेली नहीं जा रही है। हिन्दी-चीनी मैत्री संघ के कई सदस्य जा रहे हैं। मंजुला की सखी दामिनी भी तो अपने भाई के साथ जा रही है।'

'इससे क्या हुआ कि कौन जा रहा है? दामिनी जा रही है तो अपने भाई के साथ जा रही है, अकेले वह भी नहीं जा रही।'

'दामिनी और यह दोनों मुंहबोली बहनें हैं, तब दामिनी का भाई मंजू की देख-रेख भाई की भाँति करेगा। इसके अतिरिक्त हमारी मंजू शिक्षित, समझदार, विवेकबुद्धि से पूर्ण तथा वयस्क है। आजकल के समय में सबको अपने पैरों पर खड़ा होना है। विदेश-भ्रमण से बुद्धि का विकास होता है,

अनुभव बढ़ता है, तथा ज़माने के माफिक दूसरे देश वालों से सम्पर्क स्थापित होता है। हमारे देश की राजनीति का भी यही लक्ष्य है।'

'होगी तुम्हारे देश की यह राजनीति तथा उसका उद्देश्य। हमें अपने घर में राजनीति का पचड़ा नहीं घुसेड़ना। हम लोग इसके विवाह की तैयारी में हैं, और लाड़ो विदेश यात्रा पर जा रही है। घर वालों की मैत्री, उनके स्नेह की परवाह नहीं और जायेगी हिन्द-चीन की मैत्री बढ़ाने।'

'कल क्लब में कैप्टेन से मुलाकात हुई थी, उन्होंने बातों-ही-बातों में यह संकेत किया था कि इस वर्ष विवाह सम्पन्न नहीं हो सकता।'

'क्यों ? ऐसी कौन-सी अड़चन आ गई है ?'

'अड़चन तो नहीं बताई और न मैंने पूछा ही।'

'तुम बाबा भोलेनाथ हो, तुम भला क्यों पूछोगे।'

'अरे इसमें कौन-सी बात है, विवाह इस साल न हुआ, परसाल हो जायेगा। जब सब बातें तय हो चुकी हैं, तब देर-अबेर में क्या बिगड़ता है ?'

'मुँह से झट निकाल दिया, क्या बिगड़ता है ? आजकल क्षण-क्षण में लड़कों का दिमाग़ बदला करता है। मुझे तो दाल में कुछ काला-काला दिखाई पड़ता है।'

'तुम्हारे भी सन्देह की कोई हद नहीं है। तिल का ताड़ बनाना तुम बहुत जानती हो।'

'तिल का ताड़ नहीं बनाती हूँ, बल्कि अपनी सूक्ष्म दृष्टि से तह की बात देखती-समझती हूँ। मुझे कैप्टेन की माँ से मिलकर इस टाल-मटोल का कारण जानना पड़ेगा।'

'हाँ, यह ठीक है, उनसे मिलने पर तुम्हें सब बातों का पता चल जायगा।'

'यदि वे लोग विवाह का समय टालना चाहते हैं तो सगाई की रस्म तो पूरी कर लेवें, जिससे मैं उस ओर से निश्चिन्त हो जाऊँ।'

'बिल्कुल सोलह आना ठीक। सगाई की रस्म अदा करने में अड़चन नहीं होनी चाहिए। मैं भी ज्वालासिंह से मिलकर इसी के लिए ज़ोर दूँगा।

मेरा ऐसा अनुमान है कि वे लोग पहले अपनी लड़की अमृत कुँवर का विवाह करने के बाद अपने लड़के का विवाह करेंगे।'

'अमृत कुँवर का विवाह हुआ करेगा। लड़के की शादी पहले करने से उसमें कोई रुकावट या अड़चन पैदा नहीं होती।'

'मुझे ठीक से कुछ मालूम नहीं, मैं यह बात अन्दाज़न कहता हूँ।'

'ख़ैर, उनसे मिलने पर सब बातें साफ हो जायेंगी।'

इसी समय मंजुला ने उसी भाँति अपना मुख छिपाए हुए कहा—'अमृता भी जा रही है चीन।'

'कौन जा रहा है, और कौन नहीं जा रहा है, इससे मुझे कोई मतलब नहीं। तुमको मैं जाने नहीं दूंगी।'

'मंजू, क्या सत्य ही अमृत कुँवर जा रही है ?'

'हाँ डैडी, मिस चिनमिन्ह से मालूम हुआ है। जाने वालों की सूची में उसका नाम भी मैंने लिखा देखा है।'

'लाला ज्वालासिंह से मिलकर इसकी भी तसदीक कर लूँगा।'

'तुम्हारे तसदीक करने से क्या होगा ? मंजू हरगिज़—हरगिज़ नहीं जायेगी।'

'तुम तो हरएक बात की ज़िद पकड़ लेती हो। अगर कैप्टेन की बहिन जा रही है तो मंजू के जाने से कोई हानि नहीं हो सकती, और न विवाह में कोई अड़चन पैदा हो सकती है।'

'मैं ज़िद नहीं करती, हठ कर रही है तुम्हारी लाड़ो।'

'बच्चों का तो यह स्वभाव होता है। यदि वे किसी अनुचित बात का हठ नहीं करते, तब हमें उनका हठ पूरा करना चाहिए।'

'हम लोगों को अकेला छोड़कर बाहर विदेश में मारे-मारे फिरना क्या उचित बात है ?'

'इतने व्यक्ति साथ जा रहे हैं, फिर अकेले क्यों हैं ?'

'अरे हम लोग तो अकेले हो जायँगे। ममी अपने घर में चली गई हैं, मंजू चीन चली जायगी, फिर हम लोग इतने बड़े घर में अकेले ही तो रहेंगे।'

'मैंने कहा था कि बिरजू को मत जाने दो, परन्तु तुम नहीं मानी। उस बेचारे अनाथ को निकालकर ही दम लिया।'

'उस बेचारे अनाथ से क्या मंजू की पूर्ति होती ? न मालूम क्यों उस पर इतना मोह है तुम्हारा ? जरूर इसमें भी कोई भेद है ?'

'लीजिए, अब मेरे ऊपर आक्रमण आरम्भ हो गया। तुमसे पार पाना मुश्किल है।'

'शुरू से तुम्हारी ममता उस पर है, और उसमें कभी कमी नहीं हुई। मेरा मन कहता है कि इसमें अवश्य कोई रहस्य है। बताओ या न बताओ।'

'मैंने कहा नहीं कि तुमसे कोई नहीं जीत सकता। अनाथों के प्रति सहज दया-भाव में तुम कोई रहस्य देखने लगी।'

'अनाथालय में तो अनेकों अनाथ भरे हैं। उनपर तुम्हें दया क्यों नहीं आती। अपनी आमदनी का एक पैसा भी तो किसी अनाथालय को नहीं देते।'

'भई, जैसी मेरी हैसियत है उसके मुताबिक एक अनाथ का पालन-पोषण कर रहा हूँ। सबको तो मैं पाल-पोस नहीं सकता।'

'अच्छा, जब बिरजू को मर्मी ले गई, तब कोई दूसरा अनाथ क्यों नहीं लाए ?'

'तुम तो हर बात में पंख लगाती हो। वह मुझे कुछ होनहार जान पड़ा, इसलिए ले आया था। फिर उसका भी भाग्य था, जिसने मेरे मन में उसके प्रति आकर्षण पैदा किया।'

'तुम्हारी दलीलें मैं खूब समझती हूँ। उसका नाक-नक्शा तुमसे हू-ब-हू मिलता है। इस पर भी कभी ध्यान दिया है ?'

'यह देखो, अब कितनी दूर की कौड़ी ले आई ! आज तुम्हें अच्छा मजाक सूझा है।'

'मज़ाक नहीं, आज ही मैंने सत्य कहा है। शीशे के सामने उसके साथ खड़े होकर ज़रा उसकी और अपनी सूरतें मिलाओ, तो मेरी बात का सच-झूठ प्रकट हो जायगा।'

'जिस रंग की ऐनक लगाओ, तमाम दुनिया उसी रंग की दिखाई देगी। वही हाल तुम्हारा है। तुम्हारे मन में सन्देह का भूत समा गया है, इसलिए तुम सब बातें वैसी ही देखती हो।'

'मैं सत्य देखती हूँ। इस समय तुम्हारा चेहरा ही बता रहा है कि तुम झूठ बोल रहे हो।'

कर्नल साहब हँसे, किन्तु हँसी की खनखनाहट से वह स्वयं चौंक उठा।

'हँसते क्यों हो? यह बात हँसी से नहीं टल जायगी। फिर तुम्हारी हँसी खुद बता रही है कि तुम सफेद झूठ बोल रहे हो।'

'अच्छा, मैं झूठ बोल रहा हूँ, हमेशा झूठ बोला करता हूँ। तुम बैठी-बैठी अर्थ का अनर्थ लगाया करो। मैं तुमसे न कभी जीता हूँ, और न जीत सकता हूँ। तोहमतें लगाने में तुम यकता हो।'

यह कहकर कर्नल वेदप्रकाश कमरे के बाहर निकल गए। प्रकाश कुँवर चिल्लाई—'इस तरह तुम दबाकर न भागो। सुनो जी, इसका निर्णय करते जाओ।'

किन्तु कर्नल ने कोई ध्यान नहीं दिया। वह मोटर पर बैठकर चले गए।

उनके जाने के पश्चात् कमरे में सन्नाटा छा गया। प्रकाश कुँवर ने मंजुला के पास आकर कहा—'मंजू, तुमको मुझसे कोई प्रेम नहीं है। सोचो तो ज़रा, मैं किसके सहारे रहूँगी? अकेले क्या मन लगेगा?' कहते-कहते उसके आँसू निकलने लगे, किन्तु मंजुला वैसी ही बैठी रही।

थोड़ी देर रो लेने के बाद वह फिर बोली—'आज तक जो बात अप्रकट थी, वह भी मैंने क्रोध में कह डाली। बिरजू के सम्बन्ध में मेरी धारणा ग़लत साबित नहीं होगी, उसको अब इस घर में प्रवेश नहीं करने दूँगी। मेरे प्रति तुम्हारे मन में ज़रा भी ममता नहीं जागती।'

यह कहकर उसकी पीठ पर वह स्नेह-वर्षा करने लगी। मंजुला भी पसीजने लगी। उसने सिर उठाकर कहा—'ममी, सोचो थोड़ी देर के लिए, यदि तुम भी हमारे साथ चलो तो फिर अकेले जाने का प्रश्न हल हो जाता है। डैडी को अकेले रहने में कोई असुविधा नहीं होगी। ममी, विदेश घूमने

का इससे अच्छा अवसर हाथ नहीं आयेगा। ममी, मेरी अच्छी ममी, तुम भी साथ चलो।'

'अरे, मैं कहाँ चल सकती हूँ।'

'ग्रैनी तो तमाम योरोप घूम आई है, फिर तुम्हारे चलने में क्या रुकावट है।'

'रुकावट तो कुछ नहीं है, किन्तु सफर से मेरी तबियत घबड़ाती है।'

'हम कई लोग आपस के रहेंगे, इसलिए घबड़ाहट न होगी। मेरी अच्छी ममी, हमारे साथ जरूर चलो। देखो, जाकर मैं ग्रैनी को तैयार करती हूँ। अच्छा बताओ, अगर ग्रैनी चले तो तुम भी चलोगी?'

'वह नहीं जायगी।'

'यदि वह चलने को राजी हो जाय, तो बोलो तुम चलोगी?'

'अच्छा, विचार करूँगी।'

'अरे, मैं बात की बात में ग्रैनी को तैयार कर लूंगी। अभी जाती हूँ।' यह कहकर वह शीघ्रता से उठकर कमरे से चली गई।

प्रकाश कुँवर सोचती हुई कुर्सी पर बैठ गई।

१९

कर्नेल वेदप्रकाश की अनेक आपत्तियों के बावजूद, केसर कुँवर अपनी कोठी 'केसर भवन' में आकर रहने लगी और बिरजू को भी अपने साथ ले आई। जिस प्रकार उसने अपनी पुत्री प्रकाश कुँवर को समझाया था, उस पर विश्वास कर उसने भी बिरजू को ले जाने में कोई रुकावट नहीं डाली, वरन् एक प्रकार से वह सन्तुष्ट हुई। यद्यपि बिरजू को कर्नेल के साथ रहने में कोई विशेष सुख नहीं था, तथापि उसको छोड़ते हुए वह कातर होकर रोने लगा। प्रकाश कुँवर के मन को उन आँसुओं ने भी द्रवित न किया और

न उसने उससे सान्त्वना का एक शब्द ही कहा, बल्कि यह भर्त्सना की कि वह फिर कभी उनके यहाँ आने का विचार तक न करे। मंजुला तो उन आँसुओं का मज़ाक उड़ाने में भी न चूकी थी।

इस नई जगह में उसका मन नहीं लगता था। पहले ही दिन जो कटु अनुभव वहाँ जाकर हुआ था, उससे वह सदैव सशंकित तथा पीड़ित रहता था। उसे कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता कि जैसे कोई उसके मन और शरीर पर भार होकर सवार है और उसका दम घोट रहा है। यद्यपि उसकी यह मानसिक विकलता कुछ क्षणों के लिए होती थी, तथापि उसका प्रभाव वह दिनभर अनुभव करता था। इस विकलता का आरंभ उसी दिन से हुआ था, जब वह केसर कुँवर के साथ प्रथम बार उसकी कोठी में आकर बेहोश हुआ था। उसका कोई अपना साथी न था जिससे अपने मन का दुख कहकर कुछ शान्ति अनुभव करता। केसर कुँवर का आशातीत प्यार पाकर भी वह प्रसन्न न हुआ, बल्कि उसके प्यार भरे शब्दों से उसके मन में एक प्रकार का कटु विराग उत्पन्न होता था। वह उससे दूर भाग जाना चाहता था, और ऐसी प्रेरणा उसको बारम्बार होती थी, परन्तु वह कुछ भी करने में अशक्त था। केसर कुँवर बड़ी तीक्ष्णता से उसके मानसिक परिवर्तनों का निरीक्षण कर रही थी, और जिस प्रकार मक्खी को अधिकाधिक जकड़ने के लिए मकड़ी अपने जाल का विस्तार करती है, उसी प्रकार अपने प्यार तथा दुलार भरे आचरण से उसको अपने वश में करने के लिए डोरे डाल रही थी। कोठी के अन्य नौकर उसको आदर तथा सम्मान की दृष्टि से देखने लगे थे, क्योंकि उनकी स्वामिनी केसर कुवँर का व्यवहार उसके साथ नौकर के सदृश न होकर परिवार के सदस्य की भाँति था। वह उसे क्षण भर के लिए आँखों से ओट न होने देती, और उसके खान-पान की सारी व्यवस्था वह बड़ी रुचि के साथ करती थी। वह केवल उससे मोटर ड्राइवर का काम लेती, जब उसे बाहर जाने की आवश्यकता प्रतीत होती; और वह आवश्यकता तभी होती, जब वह उसके अथवा अपने लिए बाजार से सामान खरीदने जाती थी।

वह उसकी शिक्षा प्राप्त करने की लगन से भली भाँति परिचित थी, इसलिए कोठी में आने के दूसरे दिन उसने दो शिक्षकों को उसके पढ़ाने के लिए नौकर रख दिया, जो प्रातः-सायं आकर उसको हाई स्कूल की परीक्षा के लिए तैयार करने लगे। उनका भोजन साथ-साथ होता था, किन्तु शयन की व्यवस्था पृथक् थी। उसके लिए नित्य नवीन परिधान सिलाए जाते थे, तथा अब उसको देखकर चिर-परिचितों को भी प्रथम बार में उसे पहचानना कठिन था। अपने इस भाग्य-परिवर्तन से भी बिरजू को न शान्ति थी और न वह आनन्द मिलता था, जो उसे कर्नेल साहब की कोठी में उस घोर अशान्ति के वातावरण में प्राप्त होता था। वह सदैव कुछ खोया-खोया-सा दृष्टिगोचर होता, और प्रत्येक समय वहाँ से भागने के मन्सूबे बाँधा करता था। अपने मानसिक विचारों को छिपाने का वह अभ्यस्त था, इसलिए केसर कुँवर को, बावजूद चौकसी के, उसकी मानसिक विषण्णता का कोई आभास नहीं मिला।

बड़ी कठिनता से केसर कुँवर अपनी अतृप्त वासनाओं को दमन कर रही थी, और उनको पूर्ण करने के लिए किसी उपयुक्त अवसर की खोज में थी। जब कभी उनका प्रवेग हो जाता, और वह उनके साथ बहती हुई बिरजू के समीप जाती, तब उसके मन में एक अद्भुत प्रकार का भय उत्पन्न होता, जिससे अपनी मनोकामना चरितार्थ करना कठिन हो जाता। उसे ऐसा प्रतीत होता कि बिरजू मानो किसी अदृश्य लौह प्राचीर से घिरा हुआ है जिसको उल्लंघन करने में वह असमर्थ है। इसके अतिरिक्त उसकी चकित दृष्टि जिससे क्रोध के स्फुलिंग-से निकलते प्रतीत होते, उसकी कामना के उद्दाम वेग को तुरन्त रोक देते, और वह सिहर कर पीछे हट जाती। जब कभी किसी अन्य समय पूछती कि वह इस प्रकार क्रुद्ध दृष्टि से अमुक अवसर पर क्यों देख रहा था, तब बिरजू स्वयं चकित होकर रह जाता, और उस प्रकार देखने से इनकार करता। उस समय उसकी दृष्टि यह प्रमाणित करती कि उसका कथन सत्य है। केसर कुँवर उसे अपनी दृष्टि-दोष समझने के लिए बाध्य होती तथा अपनी मानसिक दुर्बलता जानकर सन्तोष कर लेती थी।

अपनी कोठी में आने के एक सप्ताह पश्चात्, एक दिन संध्या समय उसका मन अत्यधिक चंचल हो उठा। उस भावना को दूसरी दिशा में मोड़ने के लिए वह एक रोचक उपन्यास लेकर पढ़ने लगी, किन्तु दो-तीन पृष्ठ पढ़ने के पश्चात् उसका मन उसकी वासनाओं के साथ खेलने लगा, और उस रात्रि में उन्हें पूर्ण करने का उसने दृढ़ निश्चय किया। इस संकल्प से उसका अस्थिर चित्त आश्वस्त होकर योजनाएँ बनाने लगा। उसने सोचा कि बिना मदिरा की सहायता के वह न अपनी उस दुर्बलता को, जो सदैव बिरजू के सन्निकट जाकर उत्पन्न होती है, जीतने में समर्थ होगी, और न बिरजू अपनी सुध-बुध खो सकेगा। भोजन के समय उसको व्यवहार में लाने के निश्चय से उसने अपने कमरे की अलमारी से विदेशी मदिरा की एक बोतल निकाली, और उसकी काग खोलकर उससे निकलती हुई मधुर सुरभि का पान करने लगी। वह उसके दो-चार घूंट पीने का लोभ संवरण न कर सकी। एक पेग पीते ही उसकी धमनियों में रक्त सवेग सञ्चरित होकर उसके संकल्प को दृढ़तर बनाने लगा। उसकी विकलता, निरन्तर उसी लालसा में लीन रहने के कारण, उत्तरोत्तर बढ़ती गई, तथा भोजन करने के निश्चित समय तक रुके रहना उसके लिए असह्य हो गया। उसने चंचल होकर नौकर को बुलाने के उद्देश्य से बिजली की घंटी बजाई।

माधवसिंह आकर आदेश की प्रतीक्षा करने लगा। वह अपने विचारों में इतनी खो गई थी कि कमरे के बाहर खड़े हुए माधवसिंह को न देख सकी। कुछ देर प्रतीक्षा करने के पश्चात्, उसने उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए पूछा—'क्या हुजूर ने याद फरमाया था ?'

उसकी तन्द्रिल-सी अवस्था भंग हुई, और यह याद न आया कि उसने क्यों उसे बुलाया था ? बिरजू के सम्बन्ध में ही वह सोच रही थी, अतएव उसने पूछा—'बिरजू का मास्टर पढ़ाकर चला गया ?'

'जी नहीं हुजूर, वह अभी पढ़ा रहे हैं। वह तो नौ बजे तक पढ़ाते हैं, और अभी आठ बजे हैं।'

'उसे आज छुट्टी दे दो, और बिरजू को भेज दो।'

'जो हुक्म' कहकर वह जाने लगा। अभी दो-चार पग गया होगा कि उसने उसे पीछे बुलाकर कहा—'सिर्फ एक घंटा पढ़ाने का बाकी है, अच्छा उसे पढ़ा लेने दो, और रसोइए से जाकर कहो कि वह अधिक मिर्च-मसालेदार पकौड़ियाँ बना लेवे।'

'जो हुक्म हुजूर।' कहकर वह जाने लगा।

उसने उसे फिर वापस बुलाकर कहा—'तुम तो बहुत पुराने नौकर हो, और इस कोठी में रहते हुए तुम्हें वर्षों बीत गए। कई महीने तक इसमें अकेले रहे हो। सच बताना, क्या कभी तुमको यहाँ कोई डर मालूम हुआ है?'

'नहीं हुजूर, मुझे तो कभी डर मालूम नहीं हुआ। मैं तो रोज़ाना रात में दो-तीन बार कोठी का चक्कर लगाया करता हूँ। कभी मेरे मन में शंका उत्पन्न नहीं हुई। हुजूर, यह क्यों पूछ रही हैं? क्या हुजूर ने···।'

'नहीं, नहीं, मैंने कुछ नहीं देखा, ऐसे ही पूछा।'

माधवसिंह चकित-दृष्टि से देख रहा था। उसकी उस दृष्टि से लज्जित होकर उसने कहा—'अक्सर लोग कहा करते हैं कि सूने घरों में···।' कहते-कहते वह रुक गई।

माधवसिंह उसका संकेत समझ कर बोला—'क्या हुजूर को कुछ वहम होगया?'

'अपने घर में वहम क्यों होगा? ऐसी कोई बात नहीं है। अच्छा तुम जाओ।'

माधवसिंह नहीं गया। उसकी चेष्टा से मालूम हुआ कि वह कुछ कहना चाहता है। केसर कँवर को मदिरा का छोटा पेग, जो उसने कुछ देर पहले पिया था, अस्थिर-सा कर रहा था। गुलाबी नशा उसकी आंखों से झाँकने लगा था। उसने उसको खड़ा देखकर पूछा—'क्या कुछ कहना चाहते हो?'

'हुजूर, जब आप उस दिन बिरजू बाबू को लेकर इस कोठी को देखने के लिए आई थीं, और बेहोश होने के पहले उन्होंने कुछ पुरानी भूली हुई बातें पूछी थी···।'

'हाँ, हाँ, उसे कुछ वहम हो गया होगा।'

'किन्तु हुजूर, उन्हें मेरा नाम कैसे मालूम हुआ, और उन मूर्तियों के हटाने की बातें कैसे मालूम हुई, यह मेरी समझ में नहीं आया।'

'संभव है कि उसने प्रकाशी के यहाँ हम लोगों की बातचीत सुनी हो?

माधवसिंह को विश्वास नहीं हुआ। उसने कोई उत्तर नहीं दिया, किन्तु उसके चेहरे का भाव स्पष्ट बता रहा था कि उसकी शंका निवृत्त नहीं हुई है। वह थोड़ी देर मौन रहने के पश्चात् बोला—'पहले मेरा ख्याल था कि उसे मिरगी आती है, लेकिन डाक्टरों ने ऐसा कोई रोग नहीं बताया। वह न मालूम क्यों यकायक बेहोश हो गए थे? उस समय से जरूर मुझे कुछ शंका हो गई है। उसके निवारण के लिए मैं अक्सर आधी रात के बाद कोठी के चक्कर लगाया करता हूँ।'

'यह ठीक करते हो, इससे पहरेदार होशियार रहेंगे, और गाफिल होकर सो नहीं जावेंगे। तुम देखते हो कि विरजू बहुत कमजोर है, और कल्पनाशील है। संभव है कि कोठी की सुन्दरता से वह प्रभावित हो गया हो, और प्रकाशी के यहाँ उसे सभी बातों का कष्ट था—ठीक से खाने-पीने को भी नहीं मिलता था। वह इससे बहुत चिढ़ी-चिढ़ी रहती थी। यह अनाथ है—इसके माँ-बाप का कोई पता नहीं। मेरे दामाद कर्नेल साहब इसको अनाथालय से ले आए थे। इसकी दीन दशा देखकर मेरे मन में बड़ी दया आई, और उसे अपने साथ ले आई। पढ़ने-लिखने का उसे बहुत शौक है, सोचा कि अगर किसी अनाथ का भला हो जाय तो यह एक शुभ काम है।'

'हाँ हुजूर, अनाथ की रक्षा करना बड़ा पुण्य कार्य है। आपका मन तो सदैव बड़ा दयालु रहा है। हम लोगों पर आपकी माँ-बाप जैसी मुहब्बत सदा रहती आई है। भगवान ने आपको अथाह धन-सम्पत्ति दी है। ऐसे ही पुण्य कार्यों में उसका उपयोग होना चाहिए। विरजू पढ़-लिखकर आदमी बनेंगे, जन्म-भर आपका अहसान मानेंगे और आपका गुण गायेंगे, जैसे हम लोग गाते हैं। बड़े लाला जी के स्वर्गवास के बाद आप कुछ दिन यहाँ रही थीं, फिर लाहौरी दरवाजे वाली कोठी में जाकर रहने लगी, किन्तु वहाँ

रहते हुए भी आपकी दया-ममता हम लोगों के ऊपर बराबर बनी रही। लालाजी जैसा पुण्यात्मा आज दिन इस समूची दिल्ली में देखने को नहीं मिलता। अब भी लोग उन्हें याद करते हैं, वर्षों उनको देवलोक गए हो गए हैं।'

माधव सिंह स्वभाव से कुछ प्रगल्भ था—जैसे प्राय: अकेले रहने वाले व्यक्ति अपने चतुर्दिक व्याप्त सूनेपन को अपनी प्रगल्भता से भुलाने का प्रयत्न करने के आदी हो जाते हैं।

केसर कुँवर उसके इस स्वभाव से परिचित थी। उसको रोकने के उद्देश्य से उसने कहा—'हाँ, ठीक है। अच्छा अब तुम जाओ। बिरजू के मास्टर के जाने के पश्चात् हम दोनों इसी कमरे में भोजन करेंगे। खान-सामह को यहीं पर मेज लगाने को बोलो।'

'जो हुक्म हुजूर।' कह कर वह जाने के लिए मजबूर होगया, यद्यपि उसकी इच्छा बात करने की अब भी अवशेष थी।

उसके कुछ दूर जाने के बाद उसने उसे पुन: बुलाकर कहा—'हाँ, देखो माधवसिंह, तुम दूसरे नए नौकरों से कोई बात न कहना, नहीं तो उन्हें व्यर्थ सन्देह हो जायगा।'

'नहीं हुजूर, माधव सिंह ऐसा बेवकूफ नहीं है। मैं सब बातें अपने ही तक रखता हूँ।'

'मैंने योंही तुम्हें सचेत कर दिया। वैसे तो मैं जानती हूँ कि तुम नमक हलाल हो।'

माधवसिंह को फिर प्रगल्भता का अवसर मिला। उसने विश्वास दिलाने वाले स्वर में कहा—'हुजूर के नमक से इस शरीर का रोम-रोम भिदा हुआ है। ठाकुर नमक को हराम नहीं करता। वह अपने मालिक अन्नदाता के लिए अपना जीवन तक निछावर करने में पीछे नहीं हटता।'

'इसका मुझे विश्वास है।' कहकर उसने उससे अपना पिंड छुड़ाना चाहा। किन्तु माधवसिंह अवसर पाकर उससे लाभ उठाना जानता था। वह कहने लगा—'कई बार पास-पड़ोसियों ने मुझसे हुजूर की पारिवारिक

बातों को जानना चाहा, परन्तु क्या मजाल जो एक लफ़्ज़ मुँह से निकला हो।'

'मैं जानती हूँ कि तुम बहुत स्वामिभक्त नौकर हो। अच्छा, अब तुम जाकर सब इन्तजाम करो।'

'अच्छा हुजूर, अभी मिनटों में करता हूँ।' यह कहकर वह द्रुत पदों से चला गया। उसके जाने के पश्चात् एकान्त होने पर उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि सामने दालान से कोई सरसराती हुई वस्तु निकल गई है। सरसराहट सुनकर उसने आलोकित दालान को शंकित दृष्टि से देखा, किन्तु बाहर का वातावरण सर्वथा शान्त था—पवन भी निस्तब्ध था, किन्तु फिर भी उसका शरीर रोमाञ्चित हो रहा था। अपनी उस मानसिक दुर्बलता को दूर करने के प्रयत्न में उसने पुनः एक पेग भरा, और उसे एक घूंट में पी गई। मदिरा की ऊष्मा उसके भय को दूर करने लगी।

२०

केसर कुँवर यह जानती थी कि मदिरा का पहला घूंट कितना कटु होता है जिससे पहले-पहल पीने वाले का मन घोर विरक्ति से भर जाता है, किन्तु ज्यों-ज्यों नशा चढ़ने लगता है, त्यों-त्यों वह विरक्ति आसक्ति में बदलने लगती है। चिरजू को दीक्षित करने का वह पहला दिन था, इसलिए उसने मदिरा की कड़ुवाहट को कमकर सुपेय बनाने के लिए, उसमें मीठे फलों का रस मिलाया और उसके आगमन की प्रतीक्षा करने लगी। इसी बीच खानसामह मेजपर भोजन की तश्तरियाँ चुन गया था, तथा उसको विदा करते समय दस रुपये का एक नोट देते हुए उसने अपनी सहज मीठी मुस्कान से कहा था कि आज रात्रि को सब नौकरों की छुट्टी है और माधवसिंह के साथ सब लोग सिनेमा जा सकते हैं, केवल पहरेदार नहीं जायगें,

उनको किसी अन्य दिन जाने की अनुमति दी जायगी। खानसामह फर्शी सलाम करने के बाद मगन होता हुआ चला गया। थोड़ी देर बाद लौटकर जब उसने मेज़ की सफाई करने की बात की, तो उसने उसे उस काम से भी मुक्त कर दिया और कहा कि सफाई दूसरे दिन हो जायगी। जब माधव-सिंह उसके आदेश की पुष्टि करने के लिए आया, तो उसे भी दस रुपये का नोट देकर विदा कर दिया। वह भी उसकी उदारता का गुणगान करता चला गया।

वह अब अकेली कमरे में चहलकदमी करती हुई आगामी कार्यक्रम के मन्सूबे बाँधने लगी। जब घड़ी ने नौ बजने की सूचना दी, तब उसका ध्यान भंग हुआ और यह समझ कर कि बिरजू के मास्टर के जाने का समय हो गया, वह उसकी पढ़ाई के कमरे की ओर, जो कोठी के भूखंड में स्थित था, जाने के लिए सीढ़ी के समीप गई। वहाँ पहुँचते-पहुँचते उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे किसी हवा के तेज़ झोंके ने उसके पैरों को डगमगा दिया हो। उसने सीढ़ी के समीप लगे हुए लकड़ी के खंभे को पकड़ कर अपने को गिरते-गिरते बचाया। वह कुछ डरकर अपने आगे-पीछे देखने लगी, किन्तु शत-शक्ति वाले बिजली के लट्टू से प्रकाशित उस स्थान पर उसे कुछ न दिखाई दिया। बरामदे की सभी खिड़कियाँ बन्द थीं—उधर से भी हवा का प्रवेश अवरुद्ध था। मदिरा का उत्ताप होते हुए भी उसका शरीर रोमाञ्चित होने लगा। जब उसे कुछ न दिखाई दिया तो वह कुछ आश्वस्त हुई, परन्तु उसका मानसिक भय कम न हुआ। उसने वहीं से बिरजू को पुकारा। मास्टर के चले जाने के पश्चात् वह अपनी पुस्तकें यथास्थान रख रहा था। उसने उसका भयजड़ित कंठस्वर सुना और सीढ़ी के समीप आकर देखा कि केसर कुँवर जीने के पास खड़ी कुछ काँप रही है।

उसने घबड़ाए स्वर में पूछा—'क्या बात है, हुजूर काँप क्यों रही हैं?'

त्रस्त मानव अपना ही जैसा दूसरा मानव देखकर आश्वस्त होता है। उसने अपने मन के भय को दबाते हुए कहा—'पढ़ चुके! आओ, मैं खाने के लिए तुम्हारा इन्तज़ार कर रही हूँ।'

'किताबें ठीक से रखकर अभी आता हूँ।'

'उन्हें वैसे ही पड़े रहने दो, कल सुबह ठीक कर लेना।'

बिना कोई प्रतिवाद किए, उसने अभी तक आदेश पालन करना ही सीखा था। वह सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ उसके समीप आया। समीप पाकर उसने इस भाँति उसे पकड़ा जैसे डूबता हुआ मनुष्य किसी बचाने वाले को पकड़ता है।

उसने कम्पित स्वर में कहा—'बिरजू, मैं डर गई थी!'

'किससे डर गई थी हुज़ूर, यहाँ तो कोई नहीं है। माधवसिंह को बुलाऊँ क्या?'

'नहीं-नहीं, किसी को मत बुलाओ, तुम्हारे आ जाने से मेरा भय दूर हो गया। नीचे के दरवाज़े तो बन्द न किए होंगे?'

'हमेशा की तरह माधवसिंह उन्हें बंद करेगा।'

'सब नौकरों को मैंने सिनेमा जाने की छुट्टी दे दी है। चलो हम दोनों बंद कर आवें।'

'हुज़ूर क्यों तकलीफ करें, मैं जाकर बंद किए देता हूँ।'

'मैं अकेले यहाँ नहीं रहूँगी, तुम्हारे साथ मैं भी चलूँगी।'

'हुज़ूर न मालूम क्यों डरती हैं, यहाँ कुछ नहीं है। आपको वहम हो गया है?'

'नहीं, किन्तु मैं अपने सामने उनको बंद करवाऊँगी तभी मेरी दिलजमई होगी।'

'तब फिर आइए, किन्तु आपके पैर डगमगा रहे हैं, कहीं गिर न पड़ें?'

'अच्छा, तो मुझे मेरे कमरे तक पहुँचा दो और फिर तुम दरवाज़े बन्द करने के लिए चले जाना।'

बिरजू उसको पकड़े हुए उसके कमरे में ले आया। कमरे की मेज़ पर भोजन की तश्तरियाँ चुनी देखकर पूछा—'क्या हुज़ूर, यहीं भोजन करेंगी!'

'हाँ, आज शाम से मेरी तबियत ठीक नहीं है, इसलिए भोजन यहीं मँगवा लिया है। जाओ, झपट कर सब दरवाज़े होशियारी से बंद कर

आओ। मैं तब तक दवा पीती हूँ।'

विरजू के जाने के पश्चात् उसने अलमारी से उत्कृष्ट मदिरा निकाल कर एक साथ आधा गिलास पी लिया। विरजू के आते-आते मदिरा के उत्ताप से उसका मस्तिष्क यथावस्थित हो गया। विरजू ने देखा कि वह इतने समय में स्वस्थ हो गई हैं, उसके मन का बोझ उतर गया।

विरजू को देखते ही उसने कहा—'आज सर्दी बहुत ज्यादा है, उसीसे मैं काँप रही थी, ऐसा अब मालूम होता है।'

'जी हाँ, अन्य दिनों की अपेक्षा आज ठंडक ज्यादा है। क्या दूसरा 'हीटर' भी लगा दूँ?'

हाँ, लगा दो, किन्तु पहले गिलास में रखा हुआ रस पी लो। इसी के पीने से मेरी सर्दी दूर हुई है। तुम भी पी कर देखो, कैसा जायकेदार है।'

'मुझे सर्दी नहीं लगती।'

'नहीं, नहीं, तुम्हें इसे पीना पड़ेगा।' यह कहकर उसने गिलास उसके होटों से लगा दिया। विवश होकर उसे पीना ही पड़ा। मदिरा की कड़ुवाहट फिर भी उसके लिए यथेष्ट थी। उसने गिलास मेज पर रखते हुए कहा—'इसमें मिठास के साथ अजीब तरह की कड़ुवाहट भी है।'

'हाँ, कुछ कड़ुवाहट जरूर है। अच्छी दवाएँ अक्सर थोड़ी-बहुत कड़ुवी होती हैं। एक गिलास और पिओगे?'

'नहीं हुजूर, इतना बहुत है।'

'अच्छा, अब दूसरा 'हीटर' लगाकर इस कमरे का दरवाजा भी बन्द कर दो।'

'दरवाजा बन्द करने की क्या जरूरत है। बाहर बरामदे की खिड़कियाँ बन्द हैं, बाहर से ठंडक नहीं आ सकती।'

'नहीं, मैं कहती हूँ कि दरवाजा बन्द कर दो। जब तक कमरा बन्द न होगा, तब तक वह ठीक से गर्म नहीं होगा।'

बिरजू को अनिच्छा पूर्वक उसके आदेश का पालन करना पड़ा। जब वह द्वार बंद कर 'हीटर' लगाने में व्यस्त था, तब उस मध्य उसने अलमारी

के सामने खड़े-खड़े पहले की भाँति मदिरा का एक पेग गिलास में उँडेलकर उसमें फलों का रस मिलाया और उस मिश्रण को लिए वह भोजन करने की मेज़ के पास बैठ उसके लिए प्रतीक्षा करने लगी। मदिरा अज्ञान बिरजू के पेट में पहुँचकर उस के मस्तिष्क को उत्तप्त करने लगी थी।

बिरजू ने एक विचित्रता का अनुभव करते हुए कहा—'हुज़ूर, आपकी दवा निहायत गर्म मालूम होती है। मेरा सिर चकरा रहा है।'

'हीटर के सामने तुम थोड़ी देर खड़े रहे, इससे कुछ गरमा गए हो। आओ, खाना खाएँ।'

बिरजू डगमगाते पगों से उसके सामने सदा की भाँति बैठने लगा।

केसर कुँवर ने अपनी बगल की कुर्सी की ओर संकेत करते हुए कहा—'वहाँ नहीं, यहाँ मेरे पास बैठो।'

उसने प्रतिवाद करते हुए कहा—'नहीं हुज़ूर, यहीं ठीक है।'

केसर कुँवर ने यह अनुभव कर कि सरूर चढ़ाव पर है, उसके पास जाकर उसको उठाते हुए कहा—'यहाँ नहीं, उठकर मेरी बगल वाली कुर्सी पर बैठो।'

बिरजू का सन्तुलन लगभग नष्ट हो गया था। वह उठकर उसके पास की कुर्सी पर बैठ गया। केसर कुँवर ने एक पकौड़ी दिखाते हुए कहा—'दो-चार ग्रास खा लेने पर तुम्हारे सिर का चकराना बन्द हो जायगा। खाली पेट ऐसा ही मालूम होता है।' यह कहती हुई वह कड़ुवे भोजन के ग्रास पर ग्रास उसे खिलाने लगी। कुछ खा लेने पर वह एक प्रकार की स्फूर्ति अनुभव करने लगा। उसका विषाद मिश्रित भय उत्तरोत्तर घटने लगा। उसके नेत्रों में एक प्रकार की चमक आ गई।

उसने उसके सजे हुए रूप को निहारते हुए कहा—'हुज़ूर, आप तो कुछ खाती नहीं, केवल मुझे खिला रही हैं।'

'जैसे मैं तुमको खिला रही हूँ, वैसे तुम भी तो मुझे खिला सकते हो।'

बिरजू भी उसे खिलाने लगा। सुस्वाद भोजन उसके मस्तिष्क को शनैः-शनैः अद्भुत आनन्द से पुलकित करने लगा। केसर कुँवर ने अवसर देख-

कर मदिरा का दूसरा गिलास भी उसे पिला दिया। इस बार उसने किसी प्रकार की कड़ुवाहट अनुभव नहीं की। केसर कुँवर उसकी ओर उस लुब्ध दृष्टि से देखने लगी, जैसे शिकारी अपने शिकार को देखता है।

उसने बिरजू के कपोलों पर हाथ फेरते हुए कहा—'ज़रा मेरी ओर देखो, मैं आज कैसी लगती हूँ ?'

बिरजू उसके रूप को निहारने लगा। आज वह खुलकर उसकी ओर देख रहा था। उसके मन में न झिझक थी औ न भय था।

केसर कुँवर ने झुककर उसके कपोल पर अपनी विलासी भावना का चिह्न अंकित करते हुए कहा—'बिरजू तुम बड़े सुन्दर हो, मैं तुमको अपने से अधिक प्यार करती हूँ। आज तुम मेरे बनो, और हमेशा मेरे ही बनकर रहो। अपनी समस्त धन-सम्पत्ति तुम पर निछावर कर दूँगी, और उसका एक मात्र स्वामी तुम्हें बनाऊँगी।'

बिरजू पहले भी ऐसे आश्वासनों को सुन चुका था, किन्तु आज उसने उन शब्दों में कुछ नया आकर्षण अनुभव किया। वह कुछ लुब्ध दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा।

केसर कुँवर ने अनुभव किया कि अब खुलकर खेलने का समय आ रहा है। उसने समस्त बाधाओं पर विजय प्राप्त कर ली है। उसके मन की चंचलता बढ़ने लगी और उसको अधिक दृढ़ बनाने के लिए वह उठकर अलमारी से मदिरा की बोतल निकाल लाई, और आधे गिलास के लगभग भर उसमें फलों का रस मिलाते हुए कहा—'इस गिलास को तुम जल्दी से खाली कर डालो।'

बिरजू मुग्ध नयनों से उसके कार्य को देखता रहा था। उसने उत्फुल्ल होते हुए कहा—'नहीं, पहले तुम पियो।'

बिरजू के मुख से 'तुम' सुनकर वह समझ गई कि वह अब पूरी तरह नशे में है। उसने उस गिलास से एक घूँट पीकर कहा—'अब दूसरा घूँट तुम पियो।'

बिरजू ने बिना प्रतिवाद किए गिलास अपने मुख से लगा लिया। कई

घूँट पीने के पश्चात् उसने लड़खड़ाते स्वरों में कहा—'यह तो बड़ा जायके-दार है। लो, अब तुम पियो।'

'मुझे अपने हाथ से क्यों नहीं पिलाते ?' कह कर केसर कुँवर विह्वल हो गई और बारम्बार अपनी वासना के प्रतीक उसके कपोलों पर अंकित करने लगी।

विरजू भी उस तृप्त वातावरण में उसके उष्ण स्पर्श से विह्वल हो गया। उसने मान भरे शब्दों में कहा—'लो, तुम तो पीती ही नहीं।'

'क्यों न पिऊँगी ! अपने प्रियतम का प्रसाद मैं अवश्य पान करूँगी। पिलाओ, मुझे कितनी पिलाते हो।' कहती हुई उसने उसको अपनी गोद में बैठा लिया। फिर एक ही घूँट में गिलास खाली करते हुए कहा—'अब तुम बोतल से दवा गिलास में उंडेलो, और खुद पियो तथा मुझे भी पिलाओ।'

विरजू ने केवल मदिरा से गिलास भरते हुए कहा—'आओ, विना रस मिलाए ही इसको पिया जाय।'

केसर कुँवर ने अनुभव किया कि अधिक मदिरा पीने से वह कहीं बेसुध न हो जाए, इसलिए भोजन की ओर संकेत किया—'एक-आध मटन चाप पहले खा लेवें, तब पियेंगे।'

'नहीं, मैं तो पिऊँगा पहले, फिर खाऊँगा।'

केसर कुँवर ने एक चाप उसको जबरन खिलाते हुए कहा—'दवा पीने के साथ-साथ कुछ खाते रहना चाहिए।'

विरजू ने उसे खाकर गिलास अपने मुँह से लगाना चाहा, किन्तु केसर कुँवर ने उसके गिलास वाले हाथ को पकड़ कर अपनी ओर घसीटा, तथा स्वयं पीने लगी। पीने के पश्चात् उसने कहा—'तुम तो मुझे प्यार ही नहीं करते।'

विरजू इस समय केवल मदिरा पीने में अनुरक्त था, उसने ज़बरदस्ती गिलास अपने मुँह से लगाते हुए कहा—'अच्छा, एक घूँट पी लेने दो।'

केसर कुँवर मन ही मन आह्लादित होते हुए बोली—'तुम्हें मेरी क़सम है, सिर्फ एक घूँट पीना। पहले थोड़ा खा पीलो, फिर पलंग पर बैठकर खूब

मन भर कर पीना। अब तो इसी प्रकार खाना-पीना, हमारा दैनिक कार्य-क्रम होगा।' कहती हुई वह उसे खिलाने लगी, और उसका अनुकरण बिरजू ने भी किया।

केसर कुँवर ने देखा कि बिरजू की आँखें कुछ-कुछ झपने लगी हैं। वह सचेत हो गई, तथा उसको अधिक मदिरा पिलाना उसे असंगत प्रतीत हुआ, परन्तु बिरजू ने इस बार बोतल उठाकर अपने मुख से लगा ली, और उसके मना करते हुए भी उसने उसे लगभग खाली कर दिया। केसर कुँवर ने बोतल उसके हाथ से छीनते हुए कहा—'तू तो एक ही दिन में पियक्कड़ हो गया। आओ चलें पलंग पर बैठकर पियें।' यह कह कर वह उठ खड़ी हुई, और उठते हुए उसने पुनः अपने अतृप्त अधरों को उसके कपोल पर लगाया, तथा अनेकानेक उमंगों की कल्पना में विह्वल होती हुई वह उसे अपनी शय्या की ओर ले जाने लगी।

२१

वर्षों की अतृप्त वासना की प्यास बुझाने के लिए केसर कुँवर ने ज्योंही बिरजू को अपने आलिंगन-पाश में बद्ध करने की चेष्टा की, त्योंही वह छिटक कर भूमि पर खड़ा हो गया और विद्रूप भरे अट्टहास से कमरे को प्रतिध्वनित करने लगा। केसर कुँवर क्रुद्ध नागिन की भाँति दीर्घ निश्वासें छोड़ती हुई उसको पकड़ने के लिए लपकी, किन्तु बिरजू ने पीछे हटते हुए कहा—'केसरी, तेरी इच्छा पूर्ण नहीं हो सकती। सावधान, केसरी, सावधान।'

'केसरी' नाम सुनकर अनेक वर्षों पूर्व मृत अपने पति वंशीधर का सहसा उसे स्मरण हो आया। वह उसे इसी नाम से सम्बोधित करते थे, कोई अन्य उसे इस भाँति नहीं पुकारता था। वह चकित दृष्टि से बिरजू को

देखती हुई बोली—'मेरा यह नाम तुमने कैसे जाना। मैं मना करती थी कि इतनी मत पिओ, किन्तु तुम माने नहीं। आओ चुपचाप लेट जाओ। थोड़ी देर में नशा उतर जायगा।'

बिरजू अट्टहास करता हुआ बोला—'तूने मुझे अब भी नहीं पहचाना, केसरी?'

'पहचानने की कौन बात है? तुम बिरजू के अतिरिक्त क्या अन्य हो सकते हो? बको नहीं, चुपचाप चलकर लेटो। बहकी-बहकी बातें मत करो।'

यह कहकर वह उसका हाथ पकड़कर घसीटने लगी, किन्तु वह अपनी जगह पर अटल खड़ा रहा। फिर एक झटके से अपना हाथ छुड़ाते हुए कहा—'केसरी, मैं बिरजू नहीं हूँ?'

'फिर तुम कौन हो?'

'अच्छा बता, तेरे इस नाम से तुझे कौन पुकारता था? क्या तू मुझको बिल्कुल ही भूल गई है?'

'जो मुझे इस नाम से पुकारता था, वह अनेकों वर्ष पूर्व मर चुका है।'

'यह क्यों नहीं कहती कि अनेकों वर्ष पूर्व मैं उसकी हत्या कर चुकी हूँ?'

केसर कुँवर थरथराने लगी। वह लड़खड़ाते स्वर में बोली—'नहीं, मैंने उसकी हत्या नहीं की थी, वह अपनी मौत मरा था।'

वह फिर हँसने लगा, और स्थिर दृष्टि से उसको घूरता हुआ बोला—'क्यों झूठ बोल कर अपने पाप बढ़ाती जाती है? मेरे स्थूल शरीर को तूने विष-पान कराकर उसे मेरे रहने के अयोग्य बनाया था, और अब तू मुझसे ही झूठ बोलती है?'

'तब फिर तुम क्या वही हो? नहीं, नहीं, मैं यह विश्वास नहीं कर सकती। मरकर कोई जिन्दा नहीं होता।'

'शरीर मरता है, आत्मा नहीं मरती। वह तो अमर है।'

'मरने के पश्चात्, आत्मा दूसरा निवास ढूँढ़ती है।'

'साधारण नियम यही है, किन्तु सब नियमों की भाँति इस नियम के भी अपवाद घटनावश उत्पन्न हो जाते हैं।'

'प्राकृतिक नियमों में कभी अपवाद नहीं हो सकते। उनका पालन सदा सर्वत्र एक रूप से होता है।'

'प्रकृति जड़ है, आत्मन् तत्व चेतन्। अतएव चेतन् जड़ वस्तुओं के साधारण नियमों में कुछ परिवर्तन कराने की क्षमता रखता है। यद्यपि वह स्थायी नहीं होता, और न हो सकता है।'

'यह बातें मेरी समझ में नहीं आती। मैं तो तुम्हें अनाथ बालक समझ कर तुम्हें प्यार करने लगी थी, और तुम मुझे रोआब में लेना चाहते हो।'

वह पुनः अट्टहास करने के पश्चात् बोला—'अब भी मुझे बिरजू ही समझ रही है! बिरजू के शरीर में प्रविष्ट हुआ मैं वंशीधर का आत्मन् हूं।'

'झूठ, बिल्कुल झूठ। मैं भूत-प्रेतों पर विश्वास नहीं करती। वे मेरी कोई हानि नहीं कर सकते हैं अतएव उनसे मैं डरती भी नहीं।'

'यह सत्य है, मेरा स्थूल रूप न होने से मैं तेरे स्थूल शरीर को कोई हानि नहीं पहुँचा सकता, क्योंकि स्थूल ही स्थूल की हानि कर सकता है। यदि इतनी ही शक्ति होती, तो मैं कभी का अपना प्रतिशोध चुका लेता।'

'तुम स्वयं कितना झूठ बोल रहे हो—यदि वास्तव में तुम वही हो, जो अपने को बता रहे हो? अच्छा, थोड़ी देर के लिए मैं माने लेती हूँ कि तुम उसके आत्मन् हो—भूत हो, प्रेत हो, तो अब तक क्यों प्रकट नहीं हुए? इतने वर्षों तक कहाँ छिपे रहे?'

'मैं इसी कोठी में शरीर वियुक्त होने के पश्चात् रहता आ रहा हूँ। जब तूने मदिरा में मिलाकर मुझे ज़हर दिया था, और मेरा स्थूल शरीर तड़प रहा था, उस समय मेरे मन में दो बड़ी उत्कट अभिलाषाएँ थीं—एक तो इस कोठी में रहने की ममता और, दूसरे तुझसे प्रतिशोध लेने की ज्वाला, इसलिए मेरा आत्मन् मेरे उस स्थूल शरीर से वियुक्त होने पर साधारण नियम के अनुसार दूसरी योनि में प्रवेश नहीं कर सका। वह इन दोनों मोहों से इतना जकड़ा हुआ था कि उसकी साधारण गति में बाधा पड़ गई, और वह अपने उसी सूक्ष्म वायु रूप से यहीं रहने लगा।'

'ठीक, यह भी माना, किन्तु अभी तक क्यों प्रकट नहीं हुए, तुमने अभी तक अपनी उपस्थिति क्यों नहीं ज़ाहिर की ?'

'इसलिए, क्योंकि मुझे कोई उचित माध्यम नहीं मिला था।'

'बिरजू को माध्यम बनाने में तुम्हें क्या औचित्य जान पड़ा।'

'ऐसे अधर में लटके हुए आत्म तत्व केवल उसी को अपना माध्यम बना सकते हैं, जिसका आत्मन् तत्व अविकसित हो, अथवा अपरिपक्व हो, अथवा पाप पूर्ण कार्यों से अधःपतित हो। बिरजू अभी किशोर है, उसका आत्मन् अविकसित है। जब प्रथम दिन वह तेरे साथ इस कोठी में आया था, तब मैंने इसके शरीर में प्रवेश कर तेरे सामने कुछ पुराने तथ्य बताए थे।'

'अच्छा ! तुम ही उसके माध्यम से बोल रहे थे ?'

'हाँ, मैंने ही तुझे सावधान किया था, और प्रकारान्तर से तुझे इस कोठी में न आने की सूचना दे रहा था।'

'क्यों ? क्या मुझे इस कोठी में रहने का हक नहीं है ?'

'नहीं, क्योंकि यह मेरा स्थान है।'

'क्या अभी भी इस योनि में रहते हुए, मेरे प्रति तुम्हारी घृणा और तुम्हारा क्रोध बाकी है ?'

'मृत्यु के समय थी, परन्तु उसके बाद वे कटुताएँ नहीं रहीं।'

'मृत्यु के पश्चात् क्या सब मनुष्य इस योनि को प्राप्त होते हैं ?'

'नहीं, सब इस योनि में नहीं आते। इनमें वे ही आते हैं जिनकी मृत्यु घोर अशान्त वातावरण में होती है, अथवा जिनकी स्थिति प्रधान रूप से तमोगुण में जकड़ी रहती है। मोह-ममता, क्रोध, प्रतिशोध आदि भावनाओं से जब आत्मन् अभिभूत रहता है, तब वह उस मार्ग को ग्रहण करने में अक्षम हो जाता है, जो इसके जन्म भर की क्रिया-कलाप की प्रतिक्रियाओं ने उसके लिए बना रखा है।'

'तुम्हारी यह बातें मेरी समझ में नहीं आती ?'

'तुम कैसे समझोगी, इस ओर तुम्हारी कभी प्रवृत्ति ही नहीं हुई, किन्तु फिर भी स्पष्ट करने का प्रयत्न करता हूँ। मनुष्य यावज्जीवन कर्म करता

है, क्योंकि इस लोक में कर्म ही प्रधान है। उसका समस्त भविष्य कर्म पर आधारित है। कुछ कर्म ऐसे होते हैं, जिनकी प्रतिक्रिया तुरन्त होती है, कुछ की देर में, और कुछ जीवनोपरान्त फल देते हैं। यह ब्रह्माण्ड स्वचालित है, किन्तु इसकी समस्त वस्तुएँ पारस्परिक सम्बन्धों पर आधारित होने से एक दूसरे से निर्भर होती हुई शक्ति तथा गति प्राप्त करती हैं। प्रत्येक क्रिया तुरन्त ही तदनुरूप प्रतिक्रिया को जन्म देती है, स्थूल कर्मों की प्रतिक्रिया स्थूल होती है, और सूक्ष्म क्रियाओं की सूक्ष्म। सूक्ष्म तत्व वह हैं जिनका जन्म भावनाओं से होता है, और वे स्थूल से अधिक शक्तिशाली तथा ब्रह्माण्ड व्यापी हैं। भावजनित क्रियाओं की प्रक्रियाएँ अपने सूक्ष्म रूपों में ब्रह्माण्ड में विचरण करती हुई, मनुष्य का आगामी जीवन नियोजन करने में संलग्न रहती हैं। जब आत्मन् पार्थिव शरीर से वियुक्त होता है तब उसके कर्मों की प्रतिक्रियाओं की रूपरेखा में जो उसके कर्म के साथ-साथ तैयार होती रही हैं, प्रवेश कर नवपार्थिव शरीर प्राप्त करता है। इसी प्रकार आत्मन् भावनाओं के वशीभूत होकर नित्य नवीन योनियों की प्राप्ति और त्याग करता रहता है।'

'इसका अर्थ यह है कि तुम्हारा आत्मन् सदैव इसी चक्कर में उलझा रहेगा!' कहती हुई केसर कुँवर हँस पड़ी। फिर बोली—"मुक्ति कभी नहीं मिलेगी।'

'मुक्ति से यदि अर्थ लगाती हो विश्राम, तो वह सत्य ही कभी प्राप्त नहीं हो सकता। ब्रह्माण्ड का कोई अणु-कण विश्राम नहीं ले सकता—वह सर्वदा गतिमान है, क्योंकि गति ही उसको शक्ति प्रदान करती है। जिन वस्तुओं को हम अचल-स्थिर देखते हैं, वस्तुतः वे भी गतिमान हैं—यद्यपि उनकी गति अधिक स्थूलता से इतनी तीव्र नहीं होती जितना सूक्ष्म तत्वों की होती है। तुमने देखा होगा कि मनुष्य अपनी साधारण ध्वनि को बहुत दूर नहीं पहुँचा सकता, किन्तु जब वही सूक्ष्म रेडियो तरंगों के द्वारा भेजी जाती है, तब दूरी का व्यवधान मिट जाता है। मुक्ति का शुद्ध अर्थ है कलुषित भावनाओं से, जो तमोगुण से ओतप्रोत हैं, छुटकारा होना और सात्विक

भावनाओं के विस्तार में संलग्न होना।'

'तुम्हारी भी अजीब व्याख्याएँ हैं। मालूम होता है कि अपनी इस योनि के जीवन में तुमने ये निष्कर्ष निकाले हैं।' कहती हुई वह पुनः हँसने लगी। हँस लेने के बाद उसने पुनः पूछा—'अच्छा यह तो बताओ, कि तुम्हारा कोई रूप क्यों नहीं है ? अपनी इस योनि को तुम स्वीकार करते हो, किन्तु अरूप-धारी कैसे बने हो ? क्यों नहीं अपने शरीर से प्रकट होते ?'

'मैं अपने शरीर में ही रहता हूँ, किन्तु तुम यदि वायु को देख सको तो मुझे भी देख सकोगी। यह तो शायद तुम जानती होगी कि पार्थिव शरीर का निर्माण पाँच तत्वों जल, थल अग्नि, वायु तथा आकाश से होता है।'

'हाँ ! हिन्दुओं के अनुसार पाँच तथा अन्य मतानुयायियों के अनुसार चार तत्वों से शरीर बना होता है। आकाश तत्व को कुछ लोग नहीं मानते।'

'ठीक है, आकाश तत्व सभी चार तत्वों में मिला है इसलिए उसकी पृथक् गणना वे नहीं करते। इस भू-लोक के समस्त प्राणियों-जड़ तथा चेतन के उद्भव का प्रधान तथा मुख्य आधार पृथ्वी और जल है, तथा अग्नि और वायु उनमें सम्मिलित होकर चेतना स्पष्ट करते हैं। अग्नि और वायु प्राणशक्ति के सारथी हैं। पार्थिव शरीर से जब प्राण-शक्ति वियुक्त होती है, तब उस क्रिया को मृत्यु का नाम दिया है तथा उसके घटित होने पर आत्म तत्व पृथ्वी और जल तत्व से विलग हो जाता है, किन्तु अग्नि तथा वायु तत्वों से वेष्ठित रहता है। अग्नि तत्व ही प्राण शक्ति को प्रस्फुटित करता है, तथा वायु के संसर्ग से वह वायुरूप धारण करता है, किन्तु ये सब भावनाओं के अधीन रहते हैं। जब कलुषित भावनाओं से वेष्ठित आत्मन् अपने पार्थिव जीवन में की गई क्रियाओं की प्रतिक्रियाओं द्वारा बनाई गई रूपरेखा में प्रवेश करने में असमर्थ हो जाता है तब वह अधर में अपने इन दो तत्वों-अग्नि तथा वायुरूपों में लटका रहता है। इस समय यही मेरा रूप है। मेरा आकार वायु रूप है, और उसके मध्य में मेरी प्राण शक्ति स्थित है और इन दोनों के साथ मेरा आत्म तत्व मोह तथा क्रोध का भार वहन किए विकल हो रहा है।'

'तब तुम सुखी नहीं हो ?'

'अधर की अवस्था कभी सुखजनक नहीं होती।'

'क्या इससे छुटकारा पाना चाहते हो ?'

'हाँ, इसी प्रयत्न में तो मैंने बिरजू के शरीर में आश्रय लिया है, और तुमसे एक दूसरे जघन्य पाप से रक्षा करने के बदले में अपने आत्मन् को मुक्त कराना चाहता हूँ।'

'बिरजू के शरीर में क्यों प्रवेश किया है ?'

'क्योंकि इससे उत्तम दूसरा कोई माध्यम नहीं था। प्रेतात्माएँ अर्थात् अधर में लटकी आत्माएँ इसी प्रकार उचित माध्यमों में प्रवेश कर अपना उपचार कराया करती हैं।'

'किन्तु उपचार तो ओझा करते हैं।'

'हाँ, और उनकी क्रियाओं तथा प्रार्थनाओं से जो मुक्ति दिलाने वाली भावनाएँ उत्पन्न होती हैं, उनके प्रभाव से यह अपूर्ण तथा अर्ध भाग पूर्णता को प्राप्त होता है, और आत्मन् तत्व अपने पूर्व नियोजित मार्ग पर अग्रसर हो जाता है। वे अपनी क्रियाओं में उन वस्तुओं को व्यवहार में लाते हैं, जिनमें पृथ्वी और जल तत्व प्रधान रूप से होते हैं तथा जिन मन्त्रों को वे उच्चारण करते हैं, उनसे मुक्ति दिलाने की भावनाएँ उत्पन्न होती हैं। इस प्रकार हमारी अपूर्णता निःशेष हो जाती है। मन्त्र मनोबल प्रदान करते हैं, उस मनोबल से उत्पन्न भावनाएँ सूक्ष्म रूप में होती है तथा सूक्ष्म होने के कारण अतीव शक्ति सम्पन्न होती हैं। इसके अतिरिक्त प्रेतात्माएँ ऐसे माध्यमों का तभी आश्रय ग्रहण करती हैं जब उनके पार्थिवलोक के सम्बन्धी उनकी सद्गति के लिए तर्पण आदि श्राद्ध कर्म नहीं करते। यही कारण है कि हिन्दू विधान में मृत व्यक्ति की सम्पत्ति के उत्तराधिकारी पर यह दायित्व रखा गया है कि वह प्रतिवर्ष अपने मृत-व्यक्ति की आत्मा की सद्गति के लिए तर्पण श्राद्ध आदि कर्म करे। उन कर्मों से उद्भावित भावनाएँ अपनी सूक्ष्म शक्ति से उन अधर में लटकी हुई आत्माओं को मुक्ति दिलाने में समर्थ होती हैं।'

'किंतु तर्पण आदि सात पुश्तों के लिए किया जाता है, तब क्या सात पुश्तों की आत्माएँ इसी प्रकार अधर में लटकी प्रेत रूप में रहती हैं ?'

'नहीं, यह पहले ही बता चुका हूँ कि सब आत्माएँ प्रेत रूप प्राप्त नहीं करती। कोई-कोई तमोगुण से आवृत आत्माएँ इस योनि में रहती हैं। सात पुश्तों का विधान इसलिए बनाया गया है, जिसमें दूसरों की भूलें सुधर जाएं।'

'हिंदुओं में ही तर्पण आदि की व्यवस्था है, किंतु संसार के अन्य देशों में अथवा अन्य मतावलम्बियों में ऐसी व्यवस्था न होने से उनकी आत्माएँ तो सदैव अधर में लटकी रहती होंगी।'

'नहीं, तर्पण श्राद्ध आदि जैसी व्यवस्थाएँ सभी देशों में भिन्न-भिन्न रूपों में प्रचलित है। मृत पुरुषों की आत्माओं की सद्गति के लिए प्रार्थना करने का विधान प्रत्येक धर्म तथा देश में है। ईसाई अपने मृत व्यक्ति के कब्रों पर तथा गिरिजाघरों में प्रार्थनाएँ करते हैं, मुस्लिम अपने सम्बन्धियों की मजार पर सामूहिक रूप में फातिहा पढ़ते हैं। यहाँ तक कि जंगली जातियों में भी मृत व्यक्तियों की आत्माओं की सद्गति के लिए प्रार्थनाएँ की जाती हैं।'

'प्रार्थना इतनी शक्तिसम्पन्न होती है ?'

'मनोबल को एक रूप में संचय तथा संचालित करने की चेष्टा का नाम प्रार्थना है। मन की शक्ति असीम है, क्योंकि वह आत्मा का प्रकाशित रूप है। जितनी बड़ी संख्या प्रार्थना करने वालों की होगी, उतना ही उनका मनोबल उसको मिलेगा, और उतनी ही वह शक्ति सम्पन्न होगी। इसीलिए हिंदुओं में किसी व्यक्ति के मरने पर दान और सामूहिक भोज की व्यवस्था है।'

'तुम्हारा जीवन तो बड़े आनन्द का जीवन है, न भोजन जुटाने की चिंता है, न परिधान की आवश्यकता है। यथार्थ में तुमको उन सभी वस्तुओं की प्राप्ति के लिए कोई उद्योग या परिश्रम नहीं करना पड़ता, जितना हम लोग करते करते मरे-खपे जाते हैं। तुम सभी चिन्ताओं से मुक्त हो।'

'अपूर्ण रूप से अधर में लटके हुए जीवन यदि सुखी कहा जा सकता है, तो तुम मुझे भी कह सकती हो। मैं इस जीवन से निष्कृति चाहता हूँ। यदि मेरे कोई पुत्र सन्तान होती, तो शायद मृतक संस्कार तथा श्राद्ध कर्मों के द्वारा मेरा उद्धार करता। तूने तो मेरी आत्मा के कल्याण के लिए कुछ नहीं किया। प्रकाशी को भी ऐसा बनाया कि वह मेरी कल्याण-कामना कभी नहीं करती।'

केसर कुँवर सवेग हँसने लगी।

'तुमने भी तो मुझे त्रास देने में कुछ उठा नहीं रखा था। ज़रा उन जुल्मों को याद करो जो तुमने मेरे ऊपर किए थे। कटुता से भरे व्यंग्य, रात दिन की मार-पीट, तनिक-तनिक बात पर अकारण सन्देह और त्रासदायक बंदी जीवन आदि कितनी-कितनी यन्त्रणाएँ मैंने तुम्हारे हाथ से उठाई हैं। तुम्हारे उत्पीड़न, तथा अत्याचारों से त्राण पाने के लिए ही तो मुझे वह अन्तिम उपाय का सहारा लेना पड़ा। मानुषी से शैतान होना पड़ा था।'

'किन्तु अब तो इस योनि से छुटकारा दिलाने का प्रयत्न करना पड़ेगा। मैं इसके बदले में तेरा एक बड़ा उपकार करूँगा।'

'तुम मेरा क्या उपकार करोगे?'

'मैं तुझे एक ऐसा रहस्य बताऊँगा, जिससे तू अवगत नहीं है।'

'वह क्या?'

'अभी नहीं। मैं उस दिन बताऊँगा, जिस दिन इस योनि से मुक्ति प्राप्त करूँगा।'

'मैं किस प्रकार विश्वास करूँ कि तुम मुझे धोखा नहीं दे रहे हो?'

'उपाय मेरे पास कुछ नहीं है, किन्तु पार्थिव प्राणियों की भाँति मैं झूठ बोलने में असमर्थ हूँ।'

'अच्छा उस भेद की ओर कुछ थोड़ा संकेत तो करो, जिससे मैं देखूँ कि तुम्हें मुक्ति दिलाने के प्रयत्न के मुकाबले में वह नगण्य या तुच्छ तो नहीं है।'

'मैं इतना ही बता सकता हूँ कि उससे तेरी चिरवाञ्छित आशा पूर्ण हो जाएगी, किन्तु मैं सावधान करता हूँ कि तू अपनी विषय-वासना को

दमन कर नहीं तो तुझे पश्चात्ताप की अग्नि में जीवन पर्यन्त जलना पड़ेगा। अब मेरे जाने का समय हो गया है। बिरजू को मुक्त करके मैं अपने स्थान पर जाता हूँ, किन्तु तेरे ऊपर मेरी दृष्टि सतत रहेगी।'

'तुम प्रेतों के जाने का भी कोई समय होता है ?'

'हाँ, इस योनि के लिए भी नियमों का बन्धन है। अर्ध रात्रि तक हम प्रखर रूप से बलवान रहते हैं, और उसके पश्चात् हमारी शक्ति क्षीण हो जाती है। दिन में हम सर्वथा ओजहीन होते हैं। यही कारण था कि जब मैंने पहले दिन बिरजू के शरीर में प्रवेश किया था तो अधिक देर तक ठहर नहीं सका। उसकी मानसिक शक्ति की परीक्षा कर ली और तुझे सावधान कर दिया। लगभग तीन घंटों से मैं बिरजू के शरीर में वर्तमान हूँ, इससे इसका मस्तिष्क और स्वाभाविक चेतना क्लान्त हो गई है। वह प्रातःकाल तक अचेत रहेगा, क्योंकि अचेतावस्था में ही वह अपनी स्वाभाविक शक्ति का संचय करने में समर्थ होगा।'

'मैं तुम्हारी मुक्ति के लिए शीघ्र आयोजन करूँगी, किन्तु तुम्हें कैसे बताऊँगी ?'

'मैं स्वयं जान लूँगा। तेरे साथ मैं सदैव रहूँगा।'

इसी समय घड़ी ने अर्ध रात्रि की सूचना देते हुए बारह घंटे बजाए।

'यह देखो, बारह बज गए। अच्छा केसरी मैं जाता हूँ। बिरजू को पलंग पर सुला दे।'

केसर कुँवर ने लगभग गिरते हुए बिरजू को पकड़कर अपनी शय्या पर सुला दिया। वह सर्वथा अचेत था।

२२

मंजुला ने केसर भवन में पहुँच कर देखा कि वहाँ एक अद्भुत सन्नाटा छाया हुआ है। कहीं भी तनिक चहल-पहल नहीं है, और कोठी का सदर दरवाज़ा बन्द है। वह सीधे नौकरों के घरों की तरफ गई, वहाँ भी किसी प्रकार की हलचल न देखकर, रसोई घर में जाकर झांकने लगी। वहाँ उसने माधवसिंह और खानसामह को देखकर पूछा—'क्या ग्रैनी अभी तक सोकर उठी नहीं है? कोठी में सन्नाटा क्यों है?'

माधवसिंह ने सलाम करते हुए कहा—'बिरजू बाबू की तबियत कल रात को फिर खराब हो गई थी, इससे मालकिन हुजूर रात भर जागती रहीं। सुबह होश आया था, किन्तु फिर वह सो गए। मालकिन हुजूर भी थककर चकना चूर हो गईं थीं, इससे शायद वह अभी तक सो रही हैं।'

'बिरजू को क्या हो गया था?'

'पहले की तरह बेहोशी का दौरा हुआ था।'

'यह कैसी बेहोशी है। मेरे यहाँ रहते उसे ऐसी बेहोशी के दौरे नहीं आते थे। वहाँ कभी इसका सिर तक न दुखा था।'

'हुजूर क्या बताऊँ? अब वह मालकिन हुजूर के बहुत सिर चढ़ गया है, इससे नए-नए चोचले होने लगे हैं।'

'सिर चढ़ गया है! क्या मतलब?'

'मालकिन हुजूर उसकी बहुत खातिर करती हैं। अब तो वह मोटर ड्राइवर नहीं, बल्कि राजा-बाबू के ठाठ से रहता है। अपने साथ बैठाकर मालकिन हुजूर खाना खिलाती हैं, रोज़ नए-नए सूट सिलाए जाते हैं, पढ़ाने के लिए दोनों वक्त मास्टर आते हैं। अब तो उसकी हुलिया ही बदल गई है। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि वह एक दिन हमारा मालिक होगा, और सच पूछिए तो अभी मालिक नंबर दो तो है ही।'

'अच्छा ! तुम तो बड़ी-बड़ी अद्भुत बातें बता रहे हो, माधवसिंह !'

'हुजूर, अगर मेरी बात का यकीन न हो खानसामह से पूछिए। क्यों भाई चन्दर, क्या मैंने झूठ कहा है ?'

'नहीं, तुम झूठ क्यों कहोगे, तभी ग्रैनी के दर्शन नहीं होते।'

'जी हाँ, वह सब दिन उसी की नाज़बरदारी में लगी रहती हैं। अगर किसी दिन गईं भी तो बाज़ार तक और वह भी उसीके लिए कोई खरी-दारी करने। जब लौटती हैं तो मोटर की पिछली सीट अनेकानेक वस्तुओं से खचाखच भरी होती है। हमारा ऐसा ख्याल है कि मालकिन हुजूर उसे गोद लेने वाली हैं।'

'हाँ, ग्रैनी को बुढ़ापे में क्या सूझा है ! मेरी हक़तल्फी करने जा रही है।'

'हाँ, हुजूर मालूम तो ऐसा ही होता है। अगर उसको गोद ले लेंगी तो फिर वही इस जायदाद का मालिक होगा।'

'मैं हरगिज़ यह न होने दूँगी, सड़क के भिखारी को राजा नहीं बनने दूँगी। न उसके माँ-बाप का पता है, न कुल जाति का ! भला ऐसे अज्ञात कुल-शील वाले को कैसे गोद लिया जा सकता है। अच्छा, पता लगाओ कि ग्रैनी सोकर उठी हैं या नहीं ?'

'पिछले रास्ते से चलिए, मैं भी साथ चलता हूँ। आपको साथ में देख कर वह कुछ नहीं कहेंगी, नहीं तो मुझपर बरस पड़ेंगी।'

मंजुला ने उसका अनुसरण करते हुए कहा—'अच्छा, ग्रैनी के मिजाज में इतना परिवर्तन आ गया है ?'

'जी हाँ हुजूर ! आप चलकर देखेंगी कि वह उनके कमरे में उनके पलंग पर सो रहा है, और खुद सोफा पर लेटी हैं।'

मन ही मन कुढ़ती हुई मंजुला ने जाकर देखा कि कमरे का द्वार बन्द है, और कहीं कोई आहट नहीं मिलती है। उसने सक्रोध द्वार को भड़भड़ाते हुए पुकारा—'ग्रैनी, ग्रैनी !'

केसर कुँवर क्लान्त होकर सो रही थी। द्वार की भड़भड़ाहट से वह

जाग पड़ी और सक्रोध बोली—'कौन, माधवसिंह! मैंने तुमसे कहा था कि मुझे जगाना नहीं, फिर कैसे बेहूदा तरीके से दरवाजा भड़भड़ा रहा है?'

माधवसिंह ने आँख बिचका कर मंजुला को सुनने का संकेत करते हुए उत्तर दिया—'हुजूर मैं नहीं भड़भड़ा रहा। यह रानी-बिटिया आई हैं।'

'कौन रानी-बिटिया? क्या मंजुला है?'

मंजुला ने होंठ चबाते हुए कहा—'हाँ, ग्रैनी, मैं मंजुला हूँ। आपकी सुबह तो बारह बजे दिन को होने लगी है, हालांकि आप पहले कहा करतीं थीं कि दस बजे होती है।'

केसर कुँवर को उसका आना अच्छा नहीं लगा। अपने मनोभाव को दबाती हुई, वह उठी, और पलंग पर सोते हुए बिरजू को देखा। फिर द्वार खोलती हुई बोली—'लाड़ो, कल रात को बिरजू फिर बीमार हो गया। पहले जैसी बेहोशी का दौरा फिर आया। इस बार की बेहोशी पहले से कठिन थी, और इत्तिफाक की बात थी कि मैंने सब नौकरों को सिनेमा देखने की छुट्टी दे दी थी, इसलिए कोठी में हम दोनों और सन्तरियों के अलावा कोई था नहीं कि किसी डाक्टर को बुलाने के लिए भेजती। बड़ी मुश्किल से उसको सुबह ६ बजे के लगभग होश आया। मुझे कुछ सूझा नहीं, थोड़ी-सी ब्रांडी पिलाकर सुला दिया। आओ, सब कुशल तो है। आज सवेरे-सवेरे कैसे आईं?' फिर माधवसिंह से कहा—'टुकुर-टुकुर क्या देख रहा है। लाडो के लिए चाय बनाकर ला।'

माधवसिंह चला गया, और मंजुला ने केसर कुँवर के साथ कमरे में प्रवेश किया। कमरा अब भी मदिरा की भीनी-भीनी गन्ध से भरा हुआ था। एक कोने में खाने की मेज पर व्यञ्जनों की तश्तरियाँ बिखरी पड़ी थीं, और मदिरा की खाली बोतल अपनी कहानी मूक भाषा में कह रही थी।

मंजुला विद्रूप भरे स्वर में बोली—'मालूम होता है कि आप दोनों के खाते-खाते बिरजू को बेहोशी का दौरा आया था?'

'हाँ लाड़ो, वह तो शाम को ही खा चुका था, किन्तु मैं खा रही थी,

और वह खाना गरम करके दे रहा था। इसी बीच अचानक दौरा आ गया। मेरा खाना भी हराम हो गया, और मैं बड़ी मुसीबत में पड़ी। घर में कोई सहायता करने वाला था नहीं। किसी तरह खींच-घसीटकर अपने पलंग पर लिटाया। ऐसी सख्त बेहोशी थी कि किसी तरह दूर ही न होती थी। कितने प्रकार के 'स्मेलिंग साल्ट' सुँघाए, कितनी बार मुँह पर पानी छिड़का, लेकिन कोई उपचार कारगर न हुआ। अन्त में ऊबकर मैंने उसके हाल पर छोड़ दिया, और इस सोफे पर लेट गई। सुबह छः बजते-बजते उसे अपने आप होश आया, तब ब्रान्डी पिलाकर उसे सुला दिया।'

मंजुला ने बिरजू को उढ़ाए हुए लिहाफ को उघाड़कर उसकी वेष-भूषा को देखते हुए कहा—'यहाँ पर बिरजू का भाग्योदय हुआ है। आप इसे बड़े ठाठ-बाट से रखती हैं, ग्रैनी! सुनने में आया है कि दोनों वक्त पढ़ाने के लिए मास्टर आता है।'

'अभी बच्चा है, और यतीम है। पढ़ने-लिखने की बड़ी हविस थी बेचारे को। मैं भी यहाँ अकेली रहती हूँ, इसी बहाने मेरा भी दिल बहल जाता है।'

'आप ही तो ज़िद करके यहाँ रहने आई हैं। अब मालूम हुआ, बिरजू का मोह आपको यहाँ घसीट लाया है। वहाँ आप हम लोगों की वजह से कुछ करने-धरने नहीं पाती थीं इसलिए हम लोगों को छोड़कर चली आईं, गोया ममी और मैं आपकी नजरों में कुछ नहीं रहे। हम लोगों के मुकाबले में बिरजू का दर्जा बहुत ऊँचा है।'

'नहीं, नहीं, लाड़ो, ऐसा न सोचो। तुम दोनों मेरे खून-माँस हो, और यह बिल्कुल बेगाना। कहाँ राजा भोज और गँगुआ तेली!'

'ग्रैनी, इतने थोड़े दिनों में तुम तो अच्छी खासी 'डिप्लोमैट' हो गई। माखन लगाने की क्रिया में तुम तो दक्ष हो गई हो।'

'नहीं लाड़ो, ऐसी कोई बात नहीं है। हाँ बिरजू की गरीबी देखकर कुछ दयाभाव जरूर उत्पन्न हुआ है, इससे इन्कार नहीं करती। किसी अनाथ का कुछ भला हो जाय तो अच्छा है। अनाथ का भला करने से भगवान

प्रसन्न होते हैं।'

'यह दूसरा या तीसरा अथवा चौथा परिवर्तन तुम्हारे स्वभाव में हुआ ग्रैनी ! अब तुम भगवान पर भी विश्वास करने लगीं। मेरे यहाँ रहते हुए भगवान को ढकोसला मानती थीं।'

'मेरे विचार तो वही अब भी हैं, सांसारिक रीति से मैंने ऐसा कह दिया।'

'शायद बिरजू को तुम गोद लेने वाली हो ?'

'यह अनहोनी बात तुमसे किसने कही लाड़ो ! मैं तुम्हारा अधिकार नहीं छीन सकती। मेरी सम्पत्ति की तुम एकमात्र उत्तराधिकारिणी हो, उसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता।'

'हाँ ग्रैनी, मैं कभी यह नहीं होने दूँगी, रो-रोकर प्राण दे दूँगी।'

केसर कुँवर ने सस्नेह उसकी पीठ को सहलाते हुए कहा—'ऐसी आशंका न करो लाड़ो। कहो तो कल ही तुम्हारे हक में सब लिखा-पढ़ी कर दूँ।'

'दूसरी लिखा-पढ़ी न करना, कानूनन मैं तुम्हारी दौहित्री होने के कारण उत्तराधिकारिणी हूं। मेरे अधिकार पर कोई आँच न आनी चाहिए।'

'नहीं, मैं बचन देती हूँ, ऐसी कोई बात नहीं होगी। हाँ यह तो बताओ, आज कैसे आई ?'

इतने में खानसामह चाय की ट्रे लिए हुए आया, और एक छोटी मेज पर रखकर खाने की मेज की सफाई करने लगा। मंजुला चाय मिलाती हुई बोली—'हिन्दी-चीनी मैत्री संघ के द्वारा कुछ लोग चीन जा रहे हैं, मैं भी उनके साथ चीन जाना चाहती हूँ, किन्तु ममी भेजने के लिए तैयार नहीं होती। डैडी की स्वीकृति तो है, ममी केवल रोड़े अटकाती हैं। तुम किसी तरह उनसे अनुमति दिला दो। तुम्हारे सिवाय वह किसी की बात नहीं मानेगी।'

'अच्छा, तो चीन घूमने जाना चाहती हो। तुम्हारी ममी केवल कैप्टेन के डर से राज़ी न होती होगी, मेरा ऐसा ख्याल है।'

'हाँ, तुम्हारा ख्याल ठीक है। लेकिन एक बात मैं तुम्हें बता देना

चाहती हूँ, हालांकि ममी से अभी तक नहीं कहा है।'

'वह क्या?'

'मैं कैप्टेन से कभी विवाह नहीं करूँगी, चाहे कुछ हो जाय।'

'यह क्यों? कैप्टेन तो सब भाँति तेरे लायक वर हैं।'

'होगा, किन्तु मैं उस जंगली से कभी विवाह नहीं कर सकती। आप लोगों की आँखें बन्द हैं और कानों से बहरी हैं। उसका धन-वैभव देखकर आप लोगों को चकाचौंध हो रही है, किन्तु उस सुनहले आवरण के पीछे क्या छिपा है, इसे देखने में असमर्थ हैं।'

'कुछ कहो भी तो, तुमने क्या देखा-सुना है?'

'आप लोग कभी विश्वास नहीं करेंगी, किन्तु मेरी आँखें खुली हैं, और कान भी बहरे नहीं हुए।'

'कुछ मुझे भी बता लाड़ो। बिना जाने-बूझे कैसे तुम्हारा समर्थन कर सकती हूँ?'

चाय की एक घूँट पीकर मंजुला बोली—'बात यह है कि कैप्टेन आज-कल हिन्दी-चीनी मैत्री संघ की प्रमुख कार्यकर्त्री मिस सूया चिनमिन्ह के फेर में पड़ा हुआ है, और वह उससे विवाह करने की सोच रहा है।'

'वह तो चीनी बालिका है। कहीं चीनियों और हिन्दुओं के विवाह होते हैं?'

'पहले नहीं हुए, किन्तु अब हो सकते हैं। दूसरों की तो नहीं जानती, किन्तु कैप्टेन उससे विवाह करेगा ही।'

'तुमसे यह कहा किसने? आना-जाना, मिलना-मिलाना तो इस ज़माने में होता है, और फिर फौजियों को तो इस विषय में पूरी छूट सरकार तथा समाज से मिली है। फौजी किसी एक से बँधकर नहीं रह सकता और हम को इन बातों पर ध्यान भी न देना चाहिए। दरअसल हम फौजी परिवारों की स्त्रियाँ देखती हैं, उनका धन-वैभव, ऐश्वर्य और ओहदा-इज्जत।'

'किन्तु मेरे ऐसे विचार नहीं हैं।'

'तो लाड़ो तुम अपने वर को अपने में बाँधकर रखना चाहती हो?'

'यह तो अपनी-अपनी विचारधारा है, परन्तु मैं अपना अपमान भी तो कराना नहीं चाहती।'

'यह तुच्छ बातें हैं, इनपर ध्यान नहीं देना चाहिए। जवानी में यदि ऊँचे-नीचे पैर पड़ते हैं, तो उम्र बढ़ने के साथ वे उसी खूँटे में अपने-आप बँध जाते हैं। इसके अतिरिक्त पुरुष की इन कमजोरियों से ही नारी उसपर शासन करती है।'

'आपकी सब बातें मानीं, किन्तु यदि कैप्टेन ने रिश्ता करने से इन्कार कर दिया तो क्या इससे मेरा अपमान नहीं होगा ?'

'कैप्टेन इन्कार नहीं कर सकता, और न ज्वालासिंह ही मुकर सकते हैं।'

'मैनी, आप सब बातें जानती नहीं, इससे ऐसा कहती हैं। अमृता-कैप्टेन की बहिन ने स्वयं मुझसे कहा है कि वह चीनी लड़की से विवाह करेगा, और इसकी सूचना उसने अपने माता-पिता को भी दे दी है।'

'अमृता ने यदि कहा है, तो बात झूठ नहीं हो सकती। कोई परवा नहीं, हम लोग तुम्हारा रिश्ता किसी अन्य सुयोग्य वर के साथ कर देंगे, किन्तु यह हिन्दी-चीनी गठबन्धन कैसा ?'

'चीन और भारत की मित्रता में उत्तरोत्तर वृद्धि करने के लिए हिन्दी-चीनी मैत्री संघ की यह सूझ है। उनका कहना है कि रोटी-बेटी के व्यवहार से दोनों देशों की मैत्री बढ़ेगी, प्रगाढ़ होगी।'

'यह तो वर्ण-संकरी विवाह होगा, दोनों जातियों की निर्मलता नष्ट होगी।'

'अन्तर्राष्ट्रीय ज़माने में इन संकीर्णताओं के लिए स्थान नहीं है। मैं चाहती हूँ कि कैप्टेन की ओर से इनकारी होने के पहले ही हम लोग इन्कार कर दें। मेरे चीन जाने से मँगनी की रस्म नहीं हो सकेगी, और आप लोगों के इन्कार करने का अच्छा बहाना मिल जायगा।'

'हमें इन्कार करने की ज़रूरत क्या है। कैप्टेन की शादी चीनी युवती से हो जाने पर सब बातें अपने आप खत्म हो जायेंगी।'

'यही तो मेरा सुझाव है। ग्रैनी चलकर ममी से अनुमति दिला दो। मैं यह भी कहे देती हूँ कि यदि ममी हठ करती रहीं, तो फिर मैं उनकी परवा नहीं करूँगी, और चली जाऊँगी। मैं यहाँ रहते उन दोनों का विवाह होते नहीं देख सकती। मृथा मेरा मजाक उड़ाए, यह मेरी बरदाश्त के बाहर है।'

'नहीं, मैं तुम्हारे मनोभावों को समझ गई। तुम्हारा सुझाव ही उत्तम है। तुम सहर्ष चीन चली जाओ। देश-विदेश भ्रमण से अनुभव तथा ज्ञान की वृद्धि होती है।'

मंजुला यह आश्वासन सुनकर प्रफुल्लित हो गई, और उससे चिपटकर अपनी पुरानी आदत के अनुसार बार-बार उसका मुख चूमने लगी।

२३

दिल्ली के रामलीला मैदान में हिन्दी-चीनी मैत्री संघ द्वारा एक सार्वजनिक सभा का आयोजन हुआ था, जिसके प्रमुख वक्ता थे चीनकी ओर से श्री तिनलिन और भारत की ओर से थी श्रीमती करुणा सुन्दरी। कैप्टेन अर्जुन सिंह यद्यपि वक्ता नहीं थे तथापि प्रबन्धकों में प्रमुख थे। भारत और चीन की मित्रता दृढ़ करने के लिए, सरकार भी प्रोत्साहित करती थी, इसलिए फौजी नियमों का पालन कठोरता के साथ नहीं होता था, और उनकी बहुत-सी बातें देखी-अनदेखी कह दी जाती थी। तिनलिन ने चीन की ओर से, तथा करुणा सुन्दरी ने भारतीय जनता की ओर से मित्रता को दृढ़ बनाने के लिए वचन दिए, और जब तिनलिन ने मैत्री संघ के व्यय से एक भारतीय शिष्ट मंडल ले जाने की घोषणा की, तो जनता ने करतल ध्वनि की, और बहुत से उत्साही नवयुवकों के मन में चीन देखने की इच्छा जाग्रत हो गई। तिनलिन ने उन व्यक्तियों के नाम भी गिनाए जो उस गैर-सरकारी शिष्ट मंडल में जा रहे थे, जिनमें प्रमोद, अमृता, दामिनी और

मंजुला के भी नाम थे।

सभा विसर्जित होने के पश्चात् तिनलिन ने करुणा सुन्दरी को धन्यवाद दिया, और कहा कि यदि वह उस शिष्टमंडल का नेतृत्व करना स्वीकार करें तो उसे बड़ी प्रसन्नता होगी, तथा उसका दायित्व भार किसी अंश तक हल्का हो जायगा। करुणा सुन्दरी ने चीन जाने में अपनी असमर्थता प्रकट की, और कहा कि वह अपने स्थान पर अपनी दो सन्तानों को भेज रही है। तिनलिन ने मीठी मुस्कान से उसको पुनः धन्यवाद दिया, तथा अपने साथ चाय पीने के लिए आमन्त्रित किया, किन्तु करुणा सुन्दरी ने मीठे शब्दों में काम का बहाना कर उसे टाल दिया। तिनलिन डाक्टर चिनमिन्ह के साथ कैनाट सरकस वाली दूकान में आ गया और उस शिष्ट मंडल के भावी कार्य-क्रम की योजना बनाने लगा।

डाक्टर चिनमिन्ह ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा—'आज की सभा बड़ी सफल रही। प्रायः आजकल की सभाओं में इतनी भीड़ इकट्ठी नहीं हुआ करती, क्योंकि नित्य कोई-न-कोई सभा बुलाई जाती है, जिससे जनता में उनके प्रति कुछ अरुचि-सी उत्पन्न होने लगी है। परन्तु आपने भी खूब शान जमाई कि भारत से दस शिष्टमंडल चीन के खर्चे से भेजे जायेंगे, और उन्हीं का प्रबन्ध करने के लिए आप यहाँ आए हैं।'

'हाँ, तीर तो मैंने अचूक मारा है, इसका प्रभाव जनता पर बहुत पड़ेगा, और बहुत व्यक्ति इससे लाभ उठाने का प्रयत्न करेंगे।'

'अब कल से यहाँ मनुष्यों का जमघट लगेगा। न-मालूम कितने लोगों की सिफारिशें आयेंगी, और कितने खुशामद करेंगे। आप तो चले जायेंगे, किन्तु मुसीबत आयेगी हमारी।'

'तुम्हारा मान-सम्मान बढ़ेगा।'

'हाँ, और हमारा ध्येय सहज ही पूर्ण होगा।'

'यदि बुद्धिमानी से अपने शतरंज के मोहरे आगे बढ़ाओगे तो। हाँ, सूया अभी तक नहीं आई?'

'वह कैप्टेन के साथ गुलछर्रे उड़ाती होगी। उसने कैप्टेन को खूब जकड़

कर बाँध लिया है।'

'इसमें क्या सन्देह है। आज की सभा में फौजी जवान अधिक थे।'

'कैप्टेन के प्रयत्न से बहुत फौजी हिन्दी-चीनी मैत्री के समर्थक हो गए हैं।'

'उन पर और भी गहरा प्रभाव पड़े, यदि सूया उनकी पत्नी बन जाय।'

'वाह! तरकश से कैसा चुनकर तीर निकाला है। यदि यह योजना सफल हो जाय तो प्रचार के लिए बहुत मसाला मिल जायगा। वह अधिक स्वच्छन्दता से अपना कार्य कर सकेगी।'

'हाँ, भारतीय नागरिक तो वह बन ही जायगी।'

'तब तो शत्रु के व्यूह में घुसने का मार्ग सरल हो जायगा। युद्ध छिड़ने पर भी उस पर कोई आँच नहीं आएगी।'

'इस विषय में तुम आज सूया से बात करना। देखो वह क्या कहती है?'

'जहाँ तक मैं समझता हूँ, वह स्वयं इसी फिक्र में है। कैप्टेन तो उसका खिलौना हो रहा है। वह जो कहेगी, उसे आँख मूँदकर मान लेगा। उसने उस पर बहुत मजबूत डोरे डाले हैं।'

'उसकी कारगुजारी की प्रशंसा तो करनी ही पड़ेगी। हमारी समस्त सफलता का श्रेय उसी को है।'

'और मेरे हिस्से में कुछ नहीं आयेगा क्या?'

'यहाँ की रिपोर्ट में तुम्हारी सेवाओं का भी उल्लेख होगा। पीकिंग की अधिकार समिति तुम्हें पुरस्कृत करेगी।'

इसी समय हरिणी के बच्चे की भाँति फुदकती हुई सूया ने प्रवेश किया। हर्षोद्रेक से उसका आनन दमक रहा था।

डाक्टर ने मुस्कराते हुए कहा—'लीजिए यह सू भी आगई। कैप्टेन को कहाँ छोड़ आई?'

नयनों को नचाते हुए उसने उत्तर दिया—'उसके घर।'

'डाइरेक्टर महोदय ने तुम्हारे लिए एक नया काम तजवीज़ किया है।'

उनके सामने की कुर्सी पर बैठती हुई बोली—'ज़रा सुनूं तो!' यह कह कर वह तिनलिन की ओर देखने लगी। तिनलिन मुस्कराने लगा।

सूया ने पूछा—'बताइए। आज आपने मेरी कारगुज़ारी देख ली। इतनी बड़ी सभा आज के पहले कभी नहीं हुई।'

'तुम्हारे आने के पहले मैं तुम्हारी प्रशंसा चिनमिन्ह से कर चुका हूँ।'

'इन्होंने समस्त सफलताओं का सेहरा तुम्हारे सिर पर बाँधा है और अब सचमुच शादी का सेहरा भी बाँधना चाहते हैं।' चिनमिन्ह ने मृदु मुस्कान के साथ कहा।

'शादी का सेहरा कैसा है, मैं इसका मतलब नहीं समझी।'

'शादी जैसी खुशी की बात भी नहीं समझती! दुनिया की समस्त कथाओं का जो सदा से मध्य बिन्दु रहा है, युवकों तथा युवतियों की समस्त कल्पनाओं का जो केन्द्र है, उससे अपरिचित हो!'

'यथार्थ में आप क्या कहना चाहते हैं?'

'डाइरेक्टर महोदय आपका विवाह कैप्टेन से करवाना चाहते हैं।'

'डाइरेक्टर महोदय आज करवाना चाहते हैं, हम लोग दोनों तय भी कर चुके हैं। यह मैंने अनुभव किया कि बिना भारतीय नागरिक बने हमारे मार्ग की बाधाएँ दूर न होंगी, और कैप्टेन से विवाह किए बिना यह संभव नहीं है, इसलिए मैंने उसकी मँगनी की बात, जो लगभग तय हो गई थी, तुड़वाई, और कैप्टेन के घर में प्रवेश करने के लिए रास्ता बना लिया।' उसके स्वर से आत्म-गौरव बरस रहा था।

तिनलिन और चिनमिन्ह प्रसन्न होकर उसका उद्दीप्त आनन देखने लगे।

चिनमिन्ह ने अपने नेत्रों को संकुचित करते हुए कहा—'सुना आपने? सू ने आपको कैसी पटखनी दी। आपका प्रस्ताव झख मारता रह गया, और उसने कैप्टेन की मँगनी तुड़वा कर अपनी शादी भी पक्की कर ली।'

'अपनी हार मानने में मुझे कोई हिचक नहीं है। सूया, तुम्हारी कार-

गुजारी की प्रशंसा के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं। हमारी सारी सफलता की केन्द्र बिन्दु तुम हो। चीन के निर्माणकों में तुम्हारा नाम भी होगा। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करने की कृपा करो।'

यह कह कर वह हाथ मिलाने के लिए उठकर खड़ा होगया। उसका हाथ दबाते हुए वह फिर बोला—'सूया तुम्हारी दूरदर्शिता की मैं जी-जान से तारीफ करता हूँ। अब मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारा ध्येय सफल होकर रहेगा। मेरी हार्दिक बधाई पुनः स्वीकार करो।'

सूया ने प्रशंसा सुनकर अपने उत्फुल्ल नेत्रों को नत कर लिया।

आपके आशीर्वाद से सफलता मुझे सर्वत्र मिली है। अगर असफल हुई हूँ तो केवल एक जगह; उस पर मेरा जादू नहीं चला।'

दोनों ने एक साथ प्रश्न किया—'कहाँ, और किसके साथ ?'

'उस दिन जब करुणा सुन्दरी के सौतेले पुत्र प्रमोद को ऊपर वाले कमरे में पद-दलित करने में असमर्थ रही। यही भी संभव था कि वह मेरे चंगुल में फँस गया होता, यदि कैप्टन ठीक उसी समय न टपका होता।'

'हाँ, उस समय उसका आना मुझे भी खटका था, किन्तु उसको लौटाना भी कुछ असंगत मालूम हुआ, इससे घंटी बजाकर तुम्हें सचेत किया था।'

'बस ठीक उसी समय जब वह नकभरा गिरने वाला था तब आपने घंटी बजाकर सब गुड़गोबर कर दिया। किन्तु इस असफलता का मुझे कोई शोक नहीं है, क्योंकि मैं किसी हद तक अपनी दूसरी योजना में कामयाब रही।'

'वह क्या?'

'एक तो अपनी प्रतिद्वन्द्वनी मंजुला के प्रति उसके मन में आकर्षण उत्पन्न किया और दूसरे उसको यहाँ से हटाने में सफल रही। उसकी बहिन दामिनी को ऐसे ऐसे सब्ज बाग दिखाए कि वह शिष्टमंडल के साथ चीन जाने का हठ पकड़ बैठी। मंजुला को भी उनके साथ जाने के लिए तैयार कर 'कंटकेनेव कंटकं' वाली कहावत चरितार्थ की। यहाँ प्रमोद की उपस्थिति में मुझे खुलकर खेलने का साहस न होता, क्योंकि उसके समक्ष मुझे झेंपना

पड़ता। मैं पराजित थी और वह विजयी! उससे आँख मिला नहीं सकती थी। पराजित नारी को 'रणछोड़' बनना पड़ता है।'

'क्या तुमने उसका विवेक नष्ट करने के लिए उस अपूर्व धूप का इस्तेमाल नहीं किया? उसमें अफीम का पुट तो विवेक नष्ट करता है।'

'उसी के प्रयोग से वह बनैला सिंह कुछ-कुछ काबू में आने लगा था, किन्तु उसके आत्म-दमन की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकती। मेरे अनेकों प्रयत्नों के बावजूद वह संगमरमर की भाँति ठंडा और कठोर बना रहा। मेरी पराजय मेरे लिए अभिशाप बन गई है जो हमेशा खटकती रहेगी।'

'बड़े से बड़े खिलाड़ी को भी कभी हारना पड़ता है, किन्तु चतुर खिलाड़ी वही है जो अपनी पराजय से घबड़ाता नहीं।' तिनलिन ने पराजय-कंटक को निकालने का प्रयत्न किया।

'मेरी यह कामना थी कि मैं करुणा सुन्दरी के परिवार में प्रवेश करूँ, क्योंकि उसके परिवार का राजनीतिक स्तर बहुत ऊँचा है और प्रमोद भी कैप्टेन की भाँति बुद्धू नहीं है। जब अपने समान स्तर के खिलाड़ी से मुकाबला होता है, तब जो विजय प्राप्त होती है तथा उससे जो सन्तोष मिलता है, वह टटपुँजिए खिलाड़ी को हराकर नहीं मिलता। करुणा सुन्दरी की पुत्रवधू बन कर मैं सरकारी अञ्चल में भी अपना प्रभाव जमाने में सफल होती, क्योंकि मुझे बनी बनाई कार्य-भूमि सहज हस्तगत हो जाती। यह भी संभव था कि मैं भारतीय संसद में प्रविष्ट हो जाती, तथा मंत्री पद प्राप्त करना भी सुलभ होता। कैप्टेन से विवाह होने पर मेरा कार्य क्षेत्र सीमित रहेगा।'

'कोई हर्ज नहीं, हमें तो भारतीय जनता को अपने पक्ष में लाना है। सरकारी स्तर पर हमारी चीनी सरकार काम कर रही है।'

'किन्तु कलिम्पोंग और कलकत्ता के कार्यालयों को संसद सदस्य तथा मन्त्री बनकर अधिक सहायता पहुँचा सकती थी।'

'हाँ, अब भी तुम्हारे लिए यह कोई असम्भव कार्य न होगा। कैप्टेन बड़ा धनवान है। उसके घराने की भी प्रतिष्ठा है। तुम सहज ही राजनीतिक

क्षेत्र में उतर सकती हो। इसके अतिरिक्त संघ की ओर से तुमको दहेज के रूप में एक बहुत बड़ी रकम चिनमिन्ह के माध्यम से दी जाएगी, जिसका उपयोग तुम राजनीति में अपना स्थान बनाने में कर सकती हो। इसके अतिरिक्त समय-समय पर तुम जितनी धनराशि चाहोगी, तुम्हें दी जाएगी। प्रजातन्त्र में यही खूबी है कि धन के द्वारा मनुष्य अपनी पार्टी बना सकता है, और जब मजबूत पार्टी बन जाती है तब वह अपने लिए कोई न कोई प्रभावशाली स्थान पाना सरल है। प्रजातन्त्र तो प्रधानतः पूँजीवादियों का क्रीड़ा-क्षेत्र है।'

'हाँ, ये सब मेरी योजना के अंग हैं। मेरी महत्वाकांक्षाएँ भी असीम हैं।'

'ठीक, इनको कभी सीमा में न बाँधना। असीम आकांक्षाओं वाले व्यक्ति ही कुछ करने में समर्थ होते हैं। चंगेजखाँ तथा तैमूर जैसे विजेताओं ने अपनी महत्वाकांक्षाओं की कभी कोई सीमा निर्धारित नहीं की। यह दोनों संसार विजेता पीतांग जाति के थे, और पीतांगों ने भूतकाल में संसार को कई बार पद-दलित किया है, और अब वर्तमान काल में भी करेंगे। हम उसी की योजना बना रहे हैं। तैमूर के पदांकों पर हम चल रहे हैं। उसकी यही नीति थी कि जिस देश को वह जीतना चाहता था वहाँ वह पहले अपने गुप्तचरों को भेजकर उसके निवासियों के पराक्रम का ह्रास करवाता, फिर उस पर आक्रमण कर उसका सर्वनाश करता। मुकाबला करने की ताकत उसके गुप्तचर पहले ही नष्ट कर देते थे, इसलिए विजय सुलभ हो जाती थी।'

'आपकी योजना यहाँ भी सफल होगी। हम मित्र बनकर पीठ में छुरा भोंकेंगे।'

'यही कूटनीतिज्ञों के दाँव-पेंच हैं। शत्रु को साम-दाम और भेद से गाफिल बनाकर अल्पमात्रा में दंड-प्रयोग से सिद्धि प्राप्त होती है।'

'अच्छा यह बताइए कि आप कब जा रहे हैं?' सूया ने पूछा।

'आगामी सप्ताह में हम प्रस्थान करेंगे। कहो तो तुम्हारा विवाह देख कर जाएँ।' मुस्कराते हुए तिनलिन ने कहा।

'नहीं, अभी उसके सम्पन्न होने में कुछ देर है। प्रमोद के जाने के पश्चात् इस विवाह की सूचना प्रकाशित की जायगी। हाँ, एक बात जान रखिए। जब तक हमारा काम यहाँ पूर्णरूपेण सफल नहीं हो जाता, तब तक प्रमोद को वहाँ चीन में अटकाए रखिएगा। उसके आने से मेरी कार्यक्षमता में अंतर आ जाएगा।'

'तुम इस ओर से बिल्कुल बेफिक्र रहो। यदि तुम उसपर विजय प्राप्त नहीं कर सकी हो तो वहाँ अनेकों सुन्दरियाँ एक-एक से अधिक चतुर और सुन्दर हैं, जो उसको पराजित करने में अवश्य सफल होंगी। आखिर वह हाड़-मांस का बना है, कुछ फौलाद का नहीं; फिर फौलाद भी तो अग्नि में पिघलता ही है।'

'इसमें क्या शक, वहाँ उसकी हेकड़ी न चलने पाएगी।' चिनमिन्ह ने भी सकारा।

'अच्छा, मैं अब जाकर विश्राम करूँगी। दिनभर की मेहनत से क्लांत हो गई हूँ। सिर चकरा रहा है।'

आज पहली बार तिनलिन ने उठकर हाथ मिलाते हुए कहा—'सूया आज से तुम हमारे सम्मान की अधिकारिणी हो गई हो। मैं पुनः तुम्हें बधाई देता हूँ।' सूया ने नतमस्तक होकर उत्तर में धन्यवाद देकर विदा ली।

तिनलिन और चिनमिन्ह अपना आगामी कार्यक्रम बनाने लगे।

२४

प्रकाश कुँवर क्रोध से भरी बड़े वेग से वेदप्रकाश के सामने एक निमंत्रण पत्र फेंकती हुई बोली—'अब ढूढ़ो दूसरा घर-वर मंजू के लिए। मैं मना करती थी कि उसको चीन-वीन न भेजो, नहीं तो लड़का हाथ से निकल जाएगा। लेकिन कौन सुनता है नक्कारखाने में तूती की आवाज़!'

कर्नल साहब बड़े इतमीनान के साथ प्रातःकाल का कलेवा कर रहे थे। निमन्त्रण-पत्र की ओर तनिक भी ध्यान न देते हुए बोले—'आखिर कुछ साफ-साफ कहो भी। आजकल तुम्हारे दिमाग का पारा हमेशा चढ़ा रहता है। बात-बात पर लड़ने-झगड़ने को तैयार रहती हो।'

'हाँ, मैं तो झगड़ाखोर हूँ, लेकिन तुम भोले महादेव हो।'

'अच्छा भई, कुछ बताओ भी, हुआ क्या ?'

'होगा क्या ? जिस बात का मुझे डर था, वही हुआ।'

'तुम्हारी मन-चीती हुई, इसमें तो तुमको खुश होना चाहिए।'

'खुश नहीं, रोना चाहिए।'

'अच्छी बात है, तो वैसा ही करो। इसमें भी मुझे क्या आपत्ति हो सकती है ?'

'ज़रा इस निमंत्रण-पत्र को पढ़कर देखो तो, तुम्हारी अक्ल ने क्या गुल खिलाया है ?' कहती हुई उसने लिफाफे से निमंत्रण-पत्र निकालकर उनके सामने पटक दिया। फिर बोली—'पढ़ो, पढ़ो, आँखें खोलकर पढ़ो, दिल-दिमाग से समझो।'

कर्नल साहब कनखियों से उसे पढ़ने की चेष्टा करते हुए बोले—'ऐनक के बिना मैं पढ़ने में असमर्थ हूँ। जब तुम पढ़ चुकी हो तो बता दो यह किसके जल्से का निमंत्रण-पत्र है ?'

'अरे कैप्टेन की शादी का निमंत्रण-पत्र है ?' दाँत किटकिटाती हुई बोली।

'कौन कैप्टेन ! फौज में सैकड़ों कैप्टेन होंगे। किस कैप्टेन की शादी की दावत है ?'

'अरे मैं क्या समझाऊँ। मैं तो तुमसे आजिज़ आ गई हूँ।'

'तो शौक से तलाक दे दो। हमारी कांग्रेसी सरकार ने आजादी हासिल कर उसका एक हिस्सा तुम औरतों के लिए भी दे दिया है।'

'तुम्हें तो हर बात पर मज़ाक सूझता है, और यहाँ दम फना हो रहा है।'

'किसी कैप्टेन की शादी से तुम्हारा दम फना हो, यह तो अजीब बात है।'

'यह कोई दूसरा कैप्टेन नहीं, हमारा कैप्टेन, यानी लाला ज्वालासिंह के सुपुत्र अर्जुनसिंह हैं।'

'कैप्टेन अर्जुनसिंह की शादी का निमंत्रण-पत्र ! तुम कोई ख्वाब तो नहीं देख रही हो ?'

'हाँ, हाँ, कैप्टेन अर्जुनसिंह एक चीनी लड़की से शादी कर रहा है।'

'चीनी लड़की से शादी कर रहा है !'

'हाँ, हाँ चीनी लड़की से ! पढ़ो न।'

'इसका मतलब यह कि उसके साथ मंजू का रिश्ता नहीं होगा।'

'यह भी तुम्हें समझाना होगा ?'

'लेकिन······।'

'लेकिन, लेकिन—बस इतना ही कहना जानते हो। पत्थर पड़ गए हैं तुम्हारी अक्ल पर। मैं रटते-रटते परेशान हो गई कि मंजू की सगाई कर रिश्ता पक्का कर डालो, लेकिन तुम हमेशा टालते रहे और उसको उलटे भेज दिया चीन। उसके चीन जाने की बात उन्हें पसन्द न आई इसलिए दूसरी जगह शादी पक्की कर डाली। भला बताओ, कुँआरी लड़की का घूमना किसको पसन्द आएगा ? अब बैठकर झींखो अपने करम को।'

'अभी जाकर लाला ज्वालासिंह से बातें करता हूँ।'

'अब क्या बातें करोगे खाक ! किस मुँह से बातें करने जाओगे ?'

'पूछूँगा कि रिश्ता क्यों तोड़ा ?'

'वह कहेंगे कि जब तुमने अपनी लाड़ली को चीन भेज दिया, तब हमने समझ लिया कि तुम्हारी मन्शा शादी करने की नहीं है। तुम्हारी घुमक्कड़ लड़की के लिए मैं कहाँ तक अपने लड़के को कुआँरा बैठाए रहूँ। तुम्हारे पास इसका क्या जवाब है ? बोलो।'

'मैं-मैं···।'

'लगे भेड़ की तरह मिमयाने। न मालूम तुम्हारे जैसे बुद्धू को कर्नेल किसने बनाया। शायद वह भी तुमसे ज़्यादा बेवकूफ होगा।'

'वह अपनी जाति के बाहर कैसे विवाह कर सकते हैं? मान लिया कि मँगनी रस्म अदा नहीं हुई, लेकिन सब बातें तो तय हो गई थीं। आदमी की जबान एक होती है—जो बात कह दी, सो कह दी।'

'अजीब बुद्धू से पाला पड़ा है! सब तुम्हारी तरह बेवकूफ नहीं है, जो अपनी बात पर अड़े रहें। हाँ, अगर सगाई की रस्म अदा हो जाती तो कुछ कहने-सुनने का मौक़ा था। अगर जाति-बिरादरी में यह सवाल उठाओ तो तुमको ही चार आदमी क़ायल करेंगे कि जब बात तय कर ली थी तो सगाई क्यों नहीं की। बोलो, क्या जवाब दोगे? वहाँ भी सिवाय मिमयाने के और क्या कर सकते हो?'

कर्नेल साहब ने कलेवा करना छोड़ दिया और कोट पहनने लगे। उनको कोट पहनते देखकर उसने पूछा—'कहाँ जा रहे हो?'

'ज़रा ज्वालासिंह से पूछू तो?'

'अब नाक कटाने न जाओ, इसमें हमारी बदनामी है। तुम्हारी पूछ-ताछ से लोगों को मालूम होगा कि उन्होंने रिश्ता तोड़ा है। इससे मंजू के लिए दूसरा वर ढूंढ़ने में परेशानी होगी। लोग न मालूम क्या-क्या अनुमान लगाएँगे!'

'तब तुम ही बताओ कि क्या किया जाय?'

'अगर मेरी सुनते तो आज यह दिन नहीं देखना पड़ता। सोने और सुगन्ध वाला लड़का हाथ से बे-हाथ न हो जाता।'

'मंजू के चीन जाने से क्या ऐब पैदा हो गया? कैप्टन की बहिन अमृता भी तो गई है।'

'अपनी आँख का टेंटर किसी को नहीं दिखाई पड़ता, लेकिन दूसरों की फूली दिखाई पड़ती है।'

'मेरा मतलब यह है कि महज़ मंजू के चीन जाने से कोई इतना बड़ा ऐब हो गया जिससे...।'

'झकी नहीं, तुम्हारे लिए वह अपनी लड़के को क्यों कुँआरा रखे रहे ।'

कर्नेल साहब बगलें झाँकने लगे ।

इसी समय बाहर पोर्टिको में केसर कुँवर की कार आकर रुकी और उसने उतरते हुए पुकारा—'प्रकाशो ! प्रकाशो !'

'मंजू को चंग पर चढ़ाने वाली उसकी यह दूसरी हिमायतिन आई ।'

केसर कुँवर ने आकर देखा कि रंग-बदरंग है । वह उन दोनों की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखने लगी ।

प्रकाश कुँवर ने निमन्त्रण-पत्र उठाकर अपनी माँ को देते हुए कहा—'ज़रा तुम भी पढ़कर खुश हो लो ।'

'यह तो किसी की शादी का निमन्त्रण-पत्र है । बिल्कुल नई 'डिज़ाइन' का है । बड़ा खूबसूरत है ।'

उसकी प्रशंसा से कुढ़कर कुछ तीखे स्वर में वह बोली—'निमंत्रण-पत्र की खूबसूरती पर न बहको, ज़रा खोलकर तो पढ़ो किसकी शादी का है ।'

निमंत्रण-पत्र पढ़कर केसर कुँवर बोली—'ठीक, मेरी लाड़ो की बात सवा सोलह आना सच उतरी । बड़ी दूरन्देश लड़की होगी ।'

प्रकाश कुँवर की समझ में कुछ नहीं आया । वह और क्रुद्ध होकर बोली—'तुम अपनी लाड़ो की दूरन्देशी से खुश हो रही हो, हुज़ूर कर्नेल साहब अपनी बुद्धिमानी पर फूल रहे हैं, कोफ्त है तो अकेले मुझको ।'

'मंजू ने पहले ही सूँघ लिया था कि कैप्टेन की शादी इस चीनी लड़की से होगी, इसलिए अपनी बेइज्जती से बचने के लिए वह चीन चली गई ।'

'क्या कहती हो ममी, मंजू को कैप्टेन के इस रिश्ते की बात मालूम हो गई थी ।'

'हाँ, उसे अमृता से मालूम हो गया था कि कैप्टेन और चीनी लड़की में मुहब्बत बढ़ रही है, और उसने अपने घर वालों को सूचना दे दी है कि वह उससे शादी करेगा ।'

'लेकिन उस कमबख्त ने मुझे कभी नहीं बताया ।'

'तुमसे क्या कहती ? तुम तो कैप्टेन पर रीझी हुई थी और उसकी बात

पर कभी यकीन न लाती।'

'ममी, तुम भी कैसी बातें कर रही हो? मैं उस पर यकीन न करती!'

'अगर वह कहती तो तुम उसी वक्त कर्नेल साहब को रस्म अदायगी के लिए भेजती, जिसका नतीजा यह होता कि उनको मुँह की खाकर लौटना पड़ता, और हम लोगों का सिर नीचा होता।'

'मैं इतनी······।'

'अब जो चाहे कहो, लेकिन तुम जरूर सगाई के लिए कर्नेल साहब को भेजती। मैं तो दाद दूँगी अपनी लाडो को, जो उसने हवा का रुख पहचान लिया। इधर कई दिनों से वह चीनी लड़की कैप्टेन पर डोरे डाल रही थी, और वह भी उसके जाल में बेतरह फँस गया था। अगर सगाई की रस्म अदा हो जाती, और फिर रिश्ता टूटता तो जरूर हमारी भद्दी होती, लेकिन अब ऐसी कोई बात नहीं है। वह भी आजाद थे, और हम भी। मंजू के लिए क्या वरों की कमी है? कैप्टेन से हजार गुना अच्छे मिलेंगे।'

'मंजू ने तुमसे कब यह सब बातें बताई थीं?'

'उसी दिन जब तुम उसे इजाजत नहीं दे रही थीं, और यहाँ से भाग कर मेरे यहाँ गई थी। उसने साफ-साफ कह दिया था कि मैं हरगिज़ यहाँ नहीं रहूँगी। मैं नहीं चाहती कि मेरी मौजूदगी में कैप्टेन का विवाह चीनी लड़की से हो, और अगर ममी इजाजत नहीं देंगी तो मैं उनकी परवा न कर के चली जाऊँगी।'

'उसका निर्णय ठीक था। वाक़ई मेरी मंजू बड़ी समझदार और दूरन्देश है।' कर्नेल साहब को कहने का साहस हुआ।

'क्या कहना है? जैसी तुम्हारी लड़की समझदार है उससे ज्यादा दूरन्देश तुम हो! तुम तो पहले सूँघ गए थे कि कैप्टेन के साथ तुम्हारी लड़की का रिश्ता नहीं हो सकता, इसलिए रस्म अदायगी के लिए तुमने जाना कभी मुनासिब नहीं समझा।' व्यंग्य से कर्नेल तिलमिला गए।

'खिसयानी बिल्ली खंभा नोचे' वाली कहावत कर रही है यह।'

कर्नल ने उपालंभ के साथ अपनी मास से कहा।

'ममी का बल पाकर कलियाँ कमने लगीं।'

केसर कुँवर ने किसी का पक्ष समर्थन न कर बातों का रुख दूसरी ओर मोड़ते हुए कहा—'लेकिन हुई है यह गजब की बात! 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' तो कहते सुना है, लेकिन 'हिन्दी-चीनी पति-पत्नी' नहीं सुना था।'

प्रकाश कुँवर का क्रोध शान्त हो गया था। उसने हँसते हुए कहा—'अब सुनने की जरूरत नहीं, कल शाम को देख लेना।'

'क्या कल ही शादी है?'

'शादी का दिन तो मालूम नहीं। कल प्रीतिभोज जरूर है, जिसका निमंत्रण आया है।'

'मालूम होता है कि 'सिविल मैरिज होगी।'

'और नहीं तो क्या मंडप के नीचे भांवरें पड़ेंगी? उठल्लू लड़कियों के विवाह ऐसे ही होते हैं।'

'अब जमाना बदल गया है, और पुराने रिवाज भी बदलेंगे?' कर्नल ने कहा।

'इस जमाने के आदमी पैरों में पगड़ी और जूते सिर पर बाँध कर चलेंगे!' कहती हुई प्रकाश कुँवर हँस पड़ी।

'देखो ममी, अपनी लड़की की वाक्-चातुरी।'

'तुम्हारे जैसे नष्ट देव की भ्रष्ट पूजा से ही अक्ल ठिकाने रहती है।'

'लाड़ो की कोई चिट्ठी-पत्री आई है?' केसर कुँवर ने फिर दूसरा मोड़ दिया।

'हाँ ममी, मैं इस उलझन में इतना फँस गई थी कि बताने की याद न रही। हाँ, कल उसका पत्र आया है। हवाई-जहाज निर्विघ्न पीकिंग पहुँच गया है।'

'और कोई खास बात नहीं लिखी?'

'बस इतना कि सब लोग सकुशल हैं, और कुछ थोड़ा हाल वहाँ के स्वागत-सत्कार का लिखा है, जिसमें कोई खास बात नहीं है।'

केसर कुँवर ने एक पत्र अपने हथझोले से निकालकर देते हुए कहा—'मेरे पास भी उसका एक पत्र आया है, यही बताने आई थी।'

प्रकाश कुँवर पत्र पढ़ने लगी। कर्नल साहब पत्र पढ़ने के लिए उत्सुक थे, किन्तु अपनी पत्नी से लेने की हिम्मत भी नहीं थी। वह उसका मुख निरखने लगे।

केसर कुँवर ने पूछा—'कैप्टन की शादी के प्रतिभोज में आप जायंगे ?'

'मैं जाकर क्या करूँगा ? फिर जैसी इनकी मरज़ी होगी, वैसा किया जायगा।'

पत्र पढ़ते-पढ़ते प्रकाश कुँवर बोली—'मैं नहीं जाती।'

'नहीं, तुम दोनों को जाना चाहिए। मेरी सलाह है कि ख़ाली हाथ ही नहीं बल्कि कुछ भेंट लेकर जाना चाहिए।'

'ममी, तुम भी कैसी बेहूदी सलाह दे रही हो ! अब कैप्टेन से क्या लेना-देना ?'

'नहीं, न जाने से प्रथम तो कैप्टन और लाला ज्वालासिंह बुरा मानेंगे, दूसरे तुम लोगों के वहाँ रहने से मंजू के विषय में कोई कुछ कहने का साहस नहीं करेगा, तीसरे कैप्टेन की बहू से भी परिचय हो जायगा।'

'न अब हमें उनकी नाराज़ी का डर है, और न उस चीनी लड़की से परिचय करने की कोई ज़रूरत है। उसने मेरे माल पर डाका डाला है, मैं उसे फूटी-आँखों भी नहीं देख सकती।'

'प्रकाशो, तुम सांसारिक व्यवहार नहीं समझती। आगा-पीछा भी नहीं सोच सकती।'

'यही मैं भी कहता हूँ, ममी। जब देखो तब खंग-हस्त चंडी बनी रहती है। बात करते वार करती है।' कर्नल ने मौका पाकर लाभ उठाया।

'बस सारी दूरन्देशी, तुम्हारे पल्ले पड़ी है।' प्रकाशो ने कहकर पत्र केसर कुँवर को दे दिया।

'मम्मी ! ज़रा पत्र मुझको भी पढ़ने दीजिए। इनको तो तमीज नहीं कि पहले पत्र मुझे पढ़ाती, फिर खुद पढ़ती। अच्छा यह न सही, स्वयं पढ़ने के

वाद मुझे दिया होता, गोया मंजू मेरे लिए गैर है, और उससे मेरा कोई ताल्लुक नहीं है।'

'बेशक, यदि मंजू का जरा भी ख्याल होता तो उसको इतनी दूर न भगा देते। कहावत है बाप का मन कसाई का, और माँ का गायी का।'

केसर कुँवर ने देखा कि बात फिर बढ़ने वाली है, इसलिए कहा—'न मालूम, कैप्टेन कैसे मुझे भूल गया निमंत्रण देने को ?'

'मालूम होता है कि आपको उसकी चीनी बहू को देखने की बड़ी लालसा है। मेरे साथ चलना।'

'यहाँ रहती होती तो शायद चली भी जाती, लेकिन अब मैं अपने घर में रहती हूँ। बिना निमंत्रण मिले मेरा जाना अशोभनीय है।'

'मम्मी, अब यहाँ आकर क्यों नहीं रहने लगती। मंजू के चले जाने से घर खाने को दौड़ता है। इतने बड़े घर में अकेले रहना पड़ता है। पहले तुम थीं, मंजू थी, बिरजू था, यह घर भरा-पुरा लगता था। हाँ, यह तो बताओ कि बिरजू कैसा है ?'

'क्या बताऊँ प्रकाशो, उसको एक अजीब बीमारी लग गई है।'

'क्या बेहोशी के दौरे बन्द नहीं हुए ?'

'कैसी बेहोशी के दौरे ! मुझे तो किसी ने कुछ नहीं बताया !' कर्नल ने उद्विग्न होकर पूछा। चिन्ता की स्पष्ट झलक उनकी आँखों में आ गई। प्रकाश कुँवर का मन्द पड़ता हुआ क्रोध सजग हो गया।

'बताओ मम्मी, इनके बिरजू को क्या रोग हो गया है ? जल्दी बताओ नहीं तो यह···।'

'क्या बात है प्रकाशो, तुम्हें आजकल क्या हो गया है ?'

'मम्मी, मुझे क्यों डाटती हो ? पहले इनकी चिन्तित मुद्रा देखो, फिर जरा गौर से इनकी और उसकी मुखाकृति का मिलान करो तो मालूम होगा कि इनमें कितना साम्य है !'

'तो इससे क्या हुआ ? कभी-कभी ऐसी समताएँ देखने में आती हैं।'

'क्या वैसी ही नाक, वैसी ही आँखें वैसे ही होंठ, वैसी ही ठुड्डी—सब

अंग एक-से होते हैं दो ग़ैर-ग़ैर आदमियों में ?'

'तो तुम क्या कहना चाहती हो ?'

'इनको शक है कि बिरजू मेरा लड़का है।' कर्नल ने मुस्कुराते हुए कहा।

'वाकई प्रकाशो, मंजू की जुदाई का बहुत गहरा असर तुम्हारे दिमाग पर पड़ा है।'

'मेरा दिमाग खराब नहीं हुआ। मुझे शक ही नहीं, अब यकीन है कि बिरजू इन्हीं का लड़का है।'

'और अपने लड़के को अनाथालय में पलने के लिए दे आए थे। हम और तुम दोनों इसकी पूरी जाँच-पड़ताल कर चुकी हैं, फिर भी तुम कर्नल साहब को बदनाम करती हो।'

'जब जाँच कर लिया है, तब मुझे सफाई देने की कोई ज़रूरत नहीं है। अगर ये बातें उसके कान में पड़ गई तो जानती हो, इसका क्या परिणाम निकलेगा—या तो वह जान दे देगा या फिर हमारी जायदाद में हिस्सा माँगेगा, और इतना बावेला उठेगा कि हम किसी को मुँह दिखाने योग्य नहीं रहेंगे। अभी उस दिन तुमने यही बात मंजू के सामने कही, मैं सुनी-अनसुनी करके भाग गया, और आज ममी से कह रही हो। खैर वह अपनी है, उनसे आगे बात जायगी नहीं। लेकिन मुझे डर है कि कहीं तीसरे आदमी के सामने अपनी आदत के मुताबिक तुम झूठा इलज़ाम लगा बैठी तो फिर एक शहादत खड़ी हो जायगी, और फिर तुम ऐं-ऐं करती रह जाओगी। जानती हो, नए कानून में जायज़ और नाजायज़ सन्तानों का हक बराबर कर दिया गया है ?'

'ठीक है प्रकाशो, तुम अपनी बेवकूफी से अपने घर में आग लगाओगी। खैरियत इतनी है कि वह आज यहाँ आया नहीं। अपनी अक्सर आने वाली बेहोशी से वह इतना कमजोर हो गया है कि वह मोटर चलाने के योग्य नहीं रहा। उसकी जगह मैं एक दूसरा ड्राइवर रखने को मजबूर हुई हूँ। प्रकाशो, ज़रा समझ-बूझकर मुँह से बात निकाला करो। अब तुम बच्ची नहीं हो जो

समझाना पड़े।'

'तुम भी मुझे डाटने लगी। लो मैं जाती हूँ। अब आज से किसी से बोलूँगी नहीं।' यह कहकर वह क्रोध से काँपती हुई चली गई।

केसर कुँवर और कर्नल एक दूसरे का मुख देखने लगे।

उत्तरार्द्ध

लाला मनोहरलाल कांग्रेस के उन तपस्वियों में थे, जिनके जीवन का मूलमंत्र था सेवा ! परोपकार उनके जीवन का लक्ष्य था, और निराभिमानी स्वभाव ने उन्हें सर्वप्रिय बनाया था। ईमानदार तथा सत्यव्रती इतने थे कि उसका सदैव पालन करने में उन्हें सदैव हानि उठानी पड़ती थी, परन्तु स्वार्थ पूर्ति का कोई भाव न होने से उनको मानसिक कष्ट के स्थान पर हार्दिक प्रसन्नता होती थी। स्वराज्य-प्राप्ति के पश्चात्, सरकारी पदों के लिए जो लिप्सा, लोलुपता, मोह, आसक्ति भयानक रूप में कांग्रेसजनों का गलहार बनी थी, उनसे वह पूर्णरूपेण मुक्त थे। उनमें न किसी पद-प्राप्ति के लिए कामना थी और न कोई आकर्षण। हाँ दूसरों के लिए वह निष्काम भाव से वाँछित पद दिलाने का अवश्य प्रयत्न करते। इन्होंने कभी अपनी कोई पार्टी नहीं बनाई, और न वह किसी की पार्टी में शामिल होकर उस का नेतृत्व करते। वह प्रत्येक कार्य को सत्यता की कसौटी पर कसते, और सदैव उसी का समर्थन करते जिसका नतीजा यह होता कि उनका पक्ष हमेशा निर्बल रहता और अल्पमत प्राप्त करता, परन्तु अपनी पराजय से वह कभी क्षुब्ध नहीं होते थे। त्याग तथा तपस्या के कारण कभी-कभी पति-पत्नी में कलह भी हो जाती थी, क्योंकि उनकी पत्नी करुणा सुन्दरी 'सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्' की समर्थक थी, और इसके विपरीत उनका सिद्धान्त था—'ब्रयात् सत्यम-प्रियं।' उनकी सत्यनिष्ठा से प्रभावित होकर चोटी के कांग्रेसजनों ने उनको संसद सदस्य बनाकर मंत्रिमंडल में लाने का प्रयत्न किया, परन्तु उन्होंने कभी स्वीकार नहीं किया। वह अपनी आत्मा का सौदा किसी मूल्य पर करना नहीं चाहते थे।

सबसे अधिक हार्दिक प्रसन्नता उन्हें दूसरों की कठिनाइयों को सरल बनाने में होती थी। वह प्रत्येक देशसेवक की, चाहे वह किसी पार्टी में हो,

सहायता दिल खोल तथा निष्काम भाव से करते थे। अपने तन के कपड़े तक देने में उन्हें झिझक न होती थी। हरिजनों तथा पद-दलितों के लिए तो वह कर्ण के समान दाता तथा पोषक थे। उनके शिक्षण आदि का प्रबन्ध करते, और अपने यौवन काल में जब उनमें शक्ति थी तब उनकी पाठशाला का संचालन करते थे। सत्याग्रह आन्दोलन के दिनों में वह अपने व्यय से आश्रमों का संचालन करते, जिनमें स्वयंसेवकों को दोनों समय का भोजन निःशुल्क मिलता था। अपनी आय का बहुत बड़ा भाग वह सार्वजनिक सेवा-कार्यों में लगाते थे, परन्तु ख्याति अथवा पद उसके विनिमय में प्राप्त करने के लिए तनिक भी इच्छुक नहीं थे।

उनके जीवन का अधिकांश भाग जेल की यातनाओं को भोगते बीता था, इससे उनका शरीर जर्जर हो गया था। मधुमेह जैसे घातक रोग के वह शिकार थे, परन्तु उसके कारण वह कभी कर्त्तव्य-पथ से विचलित न होते थे। अपने स्वास्थ्य की तनिक परवाह न करते हुए वह प्रत्येक कार्य संपादित करते थे, और अपनी इस वृत्ति के कारण वह कई बार मृत्यु-मुख में प्रवेश करते-करते बचे थे। पत्नी और पुत्री उन्हें बारम्बार सार्वजनिक सेवा-कार्यों से विरत कराने का प्रयत्न करते—यहाँ तक कि कभी-कभी घोर कलह का वातावरण उत्पन्न हो जाता, परन्तु वह कर्त्तव्य-पथ पर अटल और अडिग रहते। वह अपने साथ समस्त परिवार को राजनीति में घसीट लाए थे, परन्तु उनकी शिक्षा आदि के लिए वह सतत सचेष्ट रहे, अपनी प्रथम पत्नी के पुत्र प्रमोद को स्वतन्त्रता-प्राप्ति के साथ उन्होंने विदेश में शिक्षा तथा ज्ञान प्राप्त करने के लिए भेजा। पुत्री दामिनी को सर्वोच्च शिक्षा दी, और द्वितीय पत्नी करुणा सुन्दरी से उत्पन्न पुत्र सुशील को दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षित कर रहे थे। सुशील अपूर्व मेधावी और व्यवहार कुशल था। अपनी वयस के अठारहवें वर्ष में एम. एस. सी. प्रथम श्रेणी में पास कर आगे शोधकार्य में प्रवृत्त हो गया था। इस प्रकार लाला मनोहरलाल अपने महत् तथा परोपकारी वृत्तियों की प्रतिक्रियाओं से पूर्ण संतुष्ट एवं सुखी थे।

राजनीति में पति-पत्नी सक्रिय कार्यकर्त्ता होने के कारण, कभी-कभी

उलझ जाया करते थे, और वाद-विवाद कभी गृह-कलह का कारण बन जाता था। वह अपना दृष्टिकोण अवश्य स्पष्ट कर देते, परन्तु अपनी इच्छा कभी उन पर लादते नहीं थे। घूम-फिर कर वह अन्ततोगत्वा उसी विचार बिन्दु पर आ जाती थी, परन्तु पहले विरोध करना उनका स्वभाव हो गया था, क्योंकि वह अपना निजी अस्तित्व बनाए रखने के लिए सदैव सतर्क रहती थी।

राजनीतिक आन्दोलनों में लोगों को जुटाने में उन्हें अपूर्व सफलता मिली थी। आन्दोलन के दिनों उन्होंने न मालूम कितने भार वाहक मज़-दूरों से सत्याग्रह करवाया था, और वे कालान्तर में सचमुच देशसेवक हो गए थे। संगठन करने की उनमें अद्भुत क्षमता थी, और इसके लिए वह इतने विख्यात हो गए थे कि जब कोई कठिन कार्य आता, जिसमें लगन, श्रम, तथा धन की आवश्यकता होती, तब वह उनके आधीन किया जाता था और उसका संचालन कर उसमें सफलता प्राप्त करते थे, यद्यपि श्रेय दूसरे ही लूट ले जाया करते थे। अपनी बुद्धि-विचक्षणता के लिए भी वह विख्यात थे। उनकी सूझ-बूझ भी असाधारण थी, और उसके द्वारा वह कठिन से कठिन गुत्थियाँ सुलझाने में समर्थ थे। पर्यटन करने का उन्हें नशा था और यद्यपि राजनीति में उलझे रहने के कारण वह भारत के बाहर तो नहीं जा सके थे, तथापि सम्पूर्ण भारत का भ्रमण उन्होंने किया था, तथा अन्य मित्रों को भी कराया था। स्वभावतः उदार होने से वह अपने साथियों के कोषाध्यक्ष थे और उनके रहते किसी को अपना व्यय-भार नहीं उठाना पड़ता था।

दोपहर का भोजन कर लाला मनोहरलाल अपनी बैठक में आकर बैठे थे कि सूया, जो अब कैप्टेन की पत्नी बन चुकी थी, आई, और करुणा सुन्दरी से उसने मिलने की इच्छा प्रकट की। सूचना भेजकर उन्होंने उसे आसन ग्रहण करने के लिए आमंत्रित करते हुए कहा—'कहिए आपके संघ के क्या समाचार हैं ?'

'संघ का काम बड़ी सफलतापूर्वक चल रहा है। सदस्यों की संख्या में

पर्याप्त वृद्धि हुई है।'

'आप उसके लिए परिश्रम भी तो करती हैं।'

'जी हाँ' इतना नहीं कर पाती, जितना करना चाहती हूँ।'

'मनस्वी कार्यकर्त्ता ऐसा ही उत्तर दिया करते हैं। हाँ, अब आपका विवाह हो जाने से कुछ अड़चनें पैदा होना स्वाभाविक है। कैप्टेन अर्जुनसिंह आपका अपना सक्रिय सहयोग तो दे नहीं सकते, क्योंकि फौजियों के लिए कई प्रकार के प्रतिबन्ध लगे हैं।'

'जी हाँ, सार्वजनिक सेवा का भार अकेले मुझको ही वहन करना पड़ता है।'

'आप उनके परिवार में बिल्कुल हिल-मिल गई हैं? किसी तरह की रुकावट का सामना तो नहीं करना पड़ा?'

'आपके आशीर्वाद से सब ठीक है।'

लाला मनोहरलाल पारिवारिक मामलों में ज्यादा पूछ-ताछ कर किसी को कठिनता में नहीं डालते थे। उन्होंने आगे बात नहीं बढ़ाई।

थोड़ी देर मौन रहने के पश्चात् सूया ने कहा—'मेरा विचार कारपोरेशन के चुनाव में भाग लेने का है। आपकी क्या राय है?'

लाला मनोहरलाल उछल पड़े, क्योंकि उनको राजनीति में लोगों को दीक्षित करने में हार्दिक प्रसन्नता होती थी। बड़ी प्रसन्नता से बोले—'अवश्य आइए मैदान में। कहाँ से खड़ी हो रही हैं?'

'अभी कोई क्षेत्र निर्धारित नहीं किया है, उसी सम्बन्ध में चाची जी से परामर्श करने आई हूँ।'

'मेरा सुझाव है कि जिस मोहल्ले के निवासी अधिक से अधिक संख्या में संघ के सदस्य हों, उसी क्षेत्र से खड़ी हो जाइए। इससे आपका कार्य सुगम हो जायगा।'

'मेरे पिता भी यही कहते थे।'

'डाक्टर चिनसिन्ह से मैं पूर्ण सहमत हूँ।'

'आपको भी सहायता करनी पड़ेगी।'

'अवश्य, नारियों को राजनीति में प्रवेश कराने का मुझे शौक है।'

'जी हाँ, सभी लोग यही कहते हैं। यदि आप लोगों का सहयोग प्राप्त हो जाय तो मेरी सफलता में कोई संदेह नहीं रहेगा। घर वालों ने भी अपनी तिजोरी खोल देने का वचन दिया है।' कहती हुई वह मुस्कराई। उसकी दंतावलि उसके गौर वर्ण से होड़ करने लगी।

'फिर तो आपकी विजय निश्चित है।'

इसी समय करुणा सुन्दरी ने कमरे में प्रवेश किया। सुधा ने उठकर भक्ति-पूर्वक प्रणाम किया। आशीर्वाद देने के पश्चात् कहा—'मालूम होता है कि शिष्टमंडल का कोई समाचार लेकर आई है। रम्मो के पिछले पत्र से ज्ञात हुआ था कि चीन की कम्यून पद्धति का अध्ययन करने के लिए उसके कुछ सदस्य गाँवों में गए हैं।'

'जी हाँ, श्री तिनलिन ने दामिनी और प्रमोद जी को अपना निजी मेहमान बनाया है। इस प्रणाली की पूरी जानकारी कराने के लिए वह भी उनके साथ हैं।'

'दामिनी के साथ मंजुला और तुम्हारी ननद अमृता भी तो गई हैं?'

'जी हाँ, ये चारों अभी चीन में रहेंगे, शेष दूसरे सदस्य शीघ्र लौट आवेंगे।'

'मैंने प्रमोद को लिखा है कि वह भी मंडल के सदस्यों के साथ चला आवे।'

'तुमने उनको आने के लिए क्यों लिखा? वे भारत के भावी नागरिक हैं, देश को समुन्नत करने का भार उन्हीं पर है। यह उनका अध्ययनकाल है। जितना वे देखकर सीखेंगे, उतना पुस्तकों से नहीं सीख सकते।'

'जेल की काल-कोठरी में रहते-रहते तुम तो अकेले रहने के अभ्यस्त होगए हो, लेकिन मैं कभी काल-कोठरी में नहीं रही, इससे अकेले रह नहीं सकती।'

'तुम्हारा अधिकांश समय तो संसद में बीतता है, फिर भी अकेले रहने की शिकायत करती हो।'

''संसद के सदस्य घर वाले नहीं हैं।'

'अब तो 'वसुधैव कुटुम्बकं' समझने का समय आगया है।'

'तुम सबको इतना ही यथेष्ट है।'

'जो प्रणाली रूस में असफल रही उसे चीन सफल बना रहा है।' सूया ने कहा।

'हाँ, कम्यून प्रणाली में यदि चीन को सफलता मिल गई तो उसकी कठिनाइयाँ सरल हो जायँगी।' मनोहरलाल ने सकारा।

'उसकी जनसंख्या के मुकाबले में उसके पास उनके पास क्षेत्र बहुत कम है।'

'हाँ, उसकी सीमा का विस्तार नहीं हो सकता। चीन और भारत दोनों घर-घुसने बने रहे। उन्होंने नए-नए देशों को कभी खोजने का प्रयत्न नहीं किया। आस्ट्रेलिया जैसा महाद्वीप उनसे बहुत दूर नहीं था, यदि अन्वेषण का उन्हें चाव होता, और समुद्र यात्रा करते होते तो उसको अपना उपनिवेश बना सकते थे। चीन अफीमचियों के स्वर्ग में भटकता रहा और भारत दासता में जकड़ा रहा, फिर युवकों में साहसिक बुद्धि तथा लगन कैसे आये?'

'आपका कहना ठीक है। योरोप निवासियों में वह क्षमता थी, इसीलिए उनके इतने उपनिवेश हैं। अफ्रीका उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया, लगभग समस्त भू-मंडल इनके अधिकार में है। वे निकले थे भारत की खोज करने, और मिले उनको ये महाद्वीप घाते में।'

'इतना ही नहीं, उन्होंने एशिया को भी अछूता नहीं छोड़ा। उसके समस्त पूर्वी-दक्षिणी भू-खण्ड को अपने अधीन कर लिया था।'

'अभी भी इन भू-भागों पर उनका आधिपत्य है। अन्तर केवल इतना है कि पहले आन्तरिक शासन भी उनके अधिकार में था, और खुल्लम-खुल्ला शोषण होता था, और सब विदेशी नीति अपने हाथ में रखकर गृह-व्यवस्था उन देशों को सौंप दी है अथवा यों कहिए कि पहले फौलादी पंजे में जकड़े हुए थे, और अब सोने के पंजे में जकड़े हुए हैं, पहले ब्रिटेन, फ्रान्स और

हालैण्ड अर्थात् योरोप का शिकंजा था, और अब उन्हीं बन्धु अमेरिका की बारी है। बहरहाल एशिया पर एशिया वालों का कब्जा नहीं है। उनकी सारी योजना का सार यह है एशियाई देश हमेशा गुलाम, परमुखापेक्षी, और आन्तरिक फूट के कारण निर्बल बने रहें।'

'हाँ, बात कुछ ऐसी ही है, यदि फावड़े को फावड़ा कहकर पुकारा जाय।'

'और बेचारा अमेरिकन जो अरबों रुपयों की सहायता पहुँचा रहा है वह सब व्यर्थ है?' करुणा सुन्दरी से बिना बोले नहीं रहा गया।

'चाची जी, क्षमा कीजिए, अमेरिका की दानशीलता केवल इसलिए इतनी सजग हुई क्योंकि विश्व के दो महान् राष्ट्र रूस तथा चीन अपने ही साधनों से उग्र होकर उनके पूँजीवाद को चुनौती दे रहे हैं। यदि वैज्ञानिक साधन रूस के पास अमरीका की अपेक्षा अधिक उन्नत न होते, और चीन की जनसंख्या विश्व का चतुर्थांश न होती तो पश्चिमी राष्ट्रों में दानशीलता न जागती। अपनी सत्ता लुप्त होने के भय से एशियाई देशों की हिमायत कर रहे हैं। स्वेज-काण्ड ने उनका परदाफाश कर दिया है। यदि एशियाई देशों की आँखें अब भी नहीं खुलतीं तो मैं कहूँगी कि वे बुद्धि-विवेक खा चुके हैं।'

'इसमें कोई सन्देह नहीं। फ्रांस, ब्रिटेन और इसरायल की यह गुटबन्दी थी, और वे मिस्र पर फारूक को पुनः लादना चाहते थे।'

'और चाची जी, यदि रूस ने विक्षेपक अस्त्रों के द्वारा इंग्लैण्ड और फ्रान्स को नष्ट कर देने की धमकी न दी होती, तथा चीन ने अपने को भेजने का बीड़ा न उठाया होता तो क्या युद्ध रुकता, और स्वेज नहर मिस्र के पास क्या रहती?'

'किन्तु अमेरिका ने उसमें सहयोग नहीं दिया, बल्कि विरोध किया था।' करुणा सुन्दरी ने पक्ष लिया।

'यह तो सदैव विवाद का प्रश्न रहेगा कि अमेरिका के न साथ देने से युद्ध बन्द हुआ, अथवा रूस तथा चीन की धमकियों से।' मनोहरलाल ने

न्याय किया।

'बहरहाल इतना स्पष्ट है कि युद्ध रूस की धमकी के बाद बन्द हुआ था। इसके अतिरिक्त अभी कुछ दिनों पहले जब ईराक अमरीकी चंगुल से निकल कर आज़ाद हुआ तथा बगदाद पैक्ट भंग हुआ, और लेबनान में गृह-कलह थी, तब अमरीकी सेनाएँ वहाँ उतार दी गई—इस बिनाय पर कि 'शून्य' न रहने पावे।'

'किन्तु इसी चाल ने जुर्दान की रक्षा की, और वहाँ खूँरेज़ी नहीं होने पाई।'

'हरएक वस्तु के दो पहलू हुआ करते हैं, चाची जी! अच्छा आप बताइए कि क्या श्वेतांग देशों में वर्ण-भेद मिटा है? क्या इंगलैण्ड में नहीं है, अमेरिका में नहीं है, अफ्रीका में नहीं है, आस्ट्रेलिया में नहीं है? बताइए कहाँ नहीं है? चीनियों की गणना पीतांगों में की जाती है, और भारतीयों की कालों में। इन्हीं दोनों देशों के निवासियों को बसने के लिए स्थान नहीं मिलता इतने बड़े भू-मंडल में, यद्यपि इन दोनों की आबादी संसार की जनसंख्या की आधी है। तो ये मुट्ठी भर श्वेतांग अखिल भू-मंडल अपने कब्जे में किए हुए हैं। अफ्रीका निवासियों के लिए अफ्रीका नहीं है, और एशिया वालों के लिए एशिया नहीं है।'

करुणा सुन्दरी और मनोहरलाल एक-दूसरे का मुँह निरखने लगे, मानो अपनी आँखों के नुक्ता पर उसके कथन की सत्यता तौल रहे हों।

सुधा कहती जा रही थी—'प्रथम महायुद्ध के पश्चात् इन्हीं मक्कारों ने 'लीग-आफ नेशन्स' की स्थापना कर जर्मनी, आस्ट्रिया तथा रूस के टुकड़े-टुकड़े किए, और खुद चौधरी बनकर उनकी रक्षा का भार उठाया, किन्तु पुनर्गठित शक्त जर्मनी, इटली और जापान उनके मायावी जाल को छिन्न-भिन्न कर निकल भागे। जर्मनी के हिटलर ने उनको पुनः ललकारा, परन्तु रूस पर आक्रमण करने की उसने गलती की, और इनकी गुटबन्दी के सामने उसे हारना पड़ा। हिटलर के आक्रमण से रूस की वास्तविक शक्ति का कुछ अन्दाज़ा इन पश्चिमीय चौधरियों को मिला, क्योंकि रूस ने बिल्कुल

अकेले हिटलर की शक्ति नष्ट की थी, तथा अमरीकी सहायता केवल कागज पर 'लैण्ड एण्ड लीज़' के रूप में लिखी रखी रही। इस लाल दैत्य को पराभव करने के उद्देश्य से उन्होंने इस बार राष्ट्र-संघ की स्थापना की तथा उसके ऐसे सूत्र बनाए जिनसे संसार के राष्ट्र प्रभावित हों। रूस उनके इस जाल में घुसा अवश्य, किन्तु 'वीटो' का अधिकार लेकर। चीन उस समय देश के गद्दारों की हुकूमत में था, परन्तु जापान के अत्याचार ने सुप्त चीन को जगाया था, और माओ-सी तुंग ने पहले जापानियों को मार भगाया, फिर वह च्यांगकाई शेक के हाथों से सत्ता छीनने में चीन की जागृति शक्ति को लगाने लगा। अमरीकी शस्त्र और द्रव्य अजस्र धारा मे चीन में बहने लगे, किन्तु चीनी जनता, शत्रु-मित्र को पहचानने लगी थी, और परिणाम यह हुआ कि च्यांग को ताईवान में आश्रय लेना पड़ा, जिसकी रक्षा अमरीका का जहाज़ी बेड़ा कर रहा है। अब खिसयाये हुए चौधरी न्याय को ताक पर रख राष्ट्र-संघ में उसका प्रवेश रोक रहे हैं, जिसका असली रहस्य यह है कि चीन के प्रवेश से इनकी चालों को व्यर्थ करने वाले दो राष्ट्र 'वीटो' धारी हो जायँगे।'

लाला मनोहरलाल ने मुग्ध स्वर में कहा—'तुम्हारी राजनीतिक सूझ-बूझ बड़ी उच्च कोटि की है।'

'नहीं चाचा जी, राजनीति का साधारण विद्यार्थी इन तथ्यों को जानता है। अब एशिया का कल्याण इसी में है कि इसके दो महान् राष्ट्र चीन और भारत ऐक्य सूत्र में बँध जावे, और इनकी फूट डालने वाली नीति के शिकार न हों। चीन को नष्ट करने के लिए अमरीका ने उसके चारों ओर सैनिक अड्डे बनाए हैं। पाकिस्तान उन्हीं का क्रीड़ा-क्षेत्र लियाकतअली की हत्या के पश्चात् बन गया है। भारत की भाँति अमरीकी गुट्ट में वह बेचारा शामिल नहीं होना चाहता था, इसलिए उसकी हत्या करवा दी। अन्य पाकिस्तानी नेता देशभक्त न होकर स्वार्थ-भक्त थे। उन्होंने भारत से आक्रमण का भय दिखाकर जनता को गुमराह किया और देश को च्यांग की भाँति अमेरिका को बेच दिया। उनका सारा प्रयास इसीलिए है कि गिलगिट को सैनिक

अड्डा बनावें। इधर नैपाल को वश में करने के लिए अमरीकी डालरों के पारसल आते हैं। गर्जे, कि चीन को चारों दिशाओं से घेरा जा रहा है।'

'चीनी होने से चीन के प्रति प्रेम होना स्वाभाविक है।' करुणा सुन्दरी ने व्यंग्य किया।

'चाची जी, जब मैंने भारतीय से विवाह किया है, तब मैं भारतीय पहले हूँ। यदि भारत से मेरा प्रेम न होता तो मैं क्यों भारतीय नागरिक बनती। इसका कारण यह है कि दोनों देशों का भूत, वर्तमान और भविष्य एक सूत्र में आबद्ध था, है, और रहेगा। आर्य यदि रुद्र पुत्र हैं तो पीतांग सूर्य अथवा अग्नि पुत्र हैं। दोनों की संस्कृति भिन्न-भिन्न होते हुए भी रस्सी की ऐंठन की भाँति एक दूसरे से चिपटी रही। भारत ने यदि धार्मिक चेतना दी है, तो चीन ने कला कौशल दिया है। गौर और पीत यथार्थ में एक दूसरे के सबसे अधिक निकट हैं। भगवान की दया से इनकी जनसंख्या भी बराबर है, भारत में जो कुछ कमी है वह पाकिस्तान बन जाने से है, और इससे तो आप इन्कार कर नहीं सकतीं कि पाकिस्तान का निर्माण इन्हीं चौधरियों की कृपा तथा दूरन्देशी से हुआ है। भारत अथवा चीन का ही नहीं, वरन् संसार के समस्त पद-दलितों का कल्याण है, यदि ये दोनों देश रस्सी की ऐंठन की भाँति मिले रहेंगे।'

'इसमें क्या सन्देह। हमको एक एशियाई संघ बनाना चाहिए।' मनोहरलाल ने सुझाव दिया।

'भारत और चीन यदि सम्मिलित रहे तो वह एक अरब से अधिक मनुष्यों का संघ बनेगा, जिसको नष्ट करना इन चौधरियों के बल-बूते के बाहर होगा।'

इसी समय करुणा सुन्दरी ने उठते हुए कहा—'मैं तो अब जाऊँगी, क्योंकि मुझे पार्टी-मीटिंग में जाना है।'

सूया ने भी उठते हुए कहा—'क्षमा कीजिएगा, अपनी बकवास से आपका अमूल्य समय नष्ट किया।'

मनोहरलाल ने कहा—'सुनती हो, यह कारपोरेशन के चुनाव में खड़ी

हो रही है। तुमसे सहायता माँगने आई थी, और दूसरी बातें छिड़ गईं तथा वह ज्यों की त्यों रह गई।'

'चाची जी, अब किसी दूसरे दिन आकर इस विषय पर बात करूँगी। अपनी बात न कहने के लिए मैं स्वयं अपराधी हूँ। अच्छा, अब विदा दीजिए। नमस्ते!'

उसके जाने के पश्चात् मनोहरलाल ने कहा—'है यह अनोखी सूझ-बूझ की लड़की। इसकी बड़ी पैनी दृष्टि है।'

करुणा सुन्दरी ने अपना अभिमत प्रकट नहीं किया, और वह चली गई।

२

प्रमोद आदि पर तिनलिन की विशेष कृपा थी। चीन के मुख्य स्थानों के दिखाने के पश्चात् भारत का शिष्टमण्डल बहुत पहले लौट गया था, किन्तु तिनलिन ने प्रमोद, मंजुला, अमृता और दामिनी को रोक लिया था, तथा कुछ दिन और रोकने के विचार से कहा—'आप लोगों के साथ चीन का ऐसा सम्बन्ध जुड़ गया है, जिससे मुझे साहस होता है कि आप लोगों को कुछ दिन अधिक ठहरने की प्रार्थना करूँ।'

प्रमोद ने उत्सुकता से पूछा—'ऐसा कौन-सा सम्बन्ध अकस्मात् हो गया। हम लोग आपका देश देखने और आपकी कार्य-पद्धति समझने आए थे, वह कार्य लगभग पूरा हो गया है। अब हमें भी जाना चाहिए।'

'अभी तो आपने हमारे प्रयत्नों का सहस्रांश भी नहीं देखा। जो कुछ देखा है वह बाह्य चीन था, जिसको हम लोगों ने विदेशियों के देखने के लिए बनाया है। आन्तरिक चीन भी तो आपको देखना चाहिए।'

'क्या आन्तरिक चीन इससे भिन्न है, जो कुछ हमने देखा है, अथवा जो हमें दिखाया गया है?'

'बहुत।'

'क्या अन्तर है, ज़रा बताने की कृपा कीजिए।'

'अभी तक आपने खेती-बारी, उद्योग-धन्धों को देखा है, और वही हम विदेशियों को दिखाते भी हैं, और आपसे स्वीकार करने में हर्ज भी नहीं है, कि यह सब नुमायशी हैं।'

'इनके अतिरिक्त हमें कुछ देखना भी नहीं है।'

'नहीं, बहुत कुछ देखना है आपको।'

'अब क्या देखना है, मेरी समझ में नहीं आता।'

'मैं आपको चीन की सैनिक शक्ति की एक झलक दिखाना चाहता हूँ। शक्ति तो वस्तुतः सामरिक शस्त्रों की निर्माणक क्षमता में होती है। शताब्दियों से पद-दलित चीन अब उठा है, वह अपना पुनर्निर्माण कर रहा है। कृषि तथा उद्योग-धन्धों की उन्नति तथा प्रसार के साथ वह अपनी सामरिक शक्ति के निर्माण में भी दत्तचित्त है। हम लोग किसी विदेशी को वे सब वस्तुएँ नहीं दिखाते।'

'तब फिर आप हमें क्यों दिखाना चाहते हैं?'

"इसलिए कि अब आप लोग विदेशी नहीं रहे, चीन के निकट सम्बन्धी हैं।'

'हिन्दी-चीनी भाई-भाई के अतिरिक्त क्या कोई नया सम्बन्ध स्थापित या प्रकट हुआ है?'

'हाँ! वह तो मौखिक था, हमारी जनता को जाग्रत करने का नारा था, किन्तु अब दोनों देशों के रक्त को मिलाने का भी प्रयत्न आरम्भ हो गया है।'

'आपकी प्रत्येक बात किसी पहेली से कम नहीं है। उसको बूझना हमारी शक्ति से बाहर है।'

'क्या आपको अपने घर वालों की डाक नहीं मिली?'

'जब से हम लोग आए हैं तब से हमें कोई डाक नहीं मिली।'

'हाँ, मिल कैसे सकती है? मैंने आप लोगों की डाक पीकिंग के डाक-

विभाग में रोकने का प्रबन्ध कर दिया था, इसलिए कि आप लोगों के पत्र चाहे देर से मिलें, किन्तु मिले अवश्य। आपके घूमने का जो कार्यक्रम बनाया था, वह किसी स्थान पर दो दिन से अधिक टिकने का नहीं था, इसलिए आपके भ्रमण करते रहने से आपकी डाक भी घूमती-फिरती, और आपके पत्रों के गुम हो जाने का अंदेशा था, इसलिए उन्हें एक ही स्थान पर एकत्रित होने का प्रबन्ध कर दिया था।'

'परन्तु इस प्रबन्ध से हमें जो मानसिक क्लेश हुआ है उसकी शायद आपने कल्पना नहीं की थी।'

'वास्तव में मैं इस भूल का अपराधी हूँ। मुझे चाहिए था कि आपको इस प्रबंध की सूचना दे देता, परन्तु आप लोगों की खातिरदारी में इतना उलझा रहा कि इस प्रबन्ध को सूचित करने का ध्यान ही जाता रहा। आशा है कि आप मुझे क्षमा प्रदान करेंगे।'

'क्षमा तो है ही, हम लोग तो अब आपके अधीन हैं।'

'आपके इन शब्दों से जो बेबसी का भाव प्रकट हो रहा है, उससे मैं इतना लज्जित हूँ, कि आप जब तक इसके लिए दंड नहीं देंगे तब तक मुझे शान्ति नहीं मिलेगी। बेशक मेरी भूल से अर्थ का अनर्थ हो गया है। बोलिए, आप मेरे लिए क्या सजा तजवीज करते हैं।'

'बस आप हमें अब रोकिए नहीं।'

'इसके अतिरिक्त दूसरी कोई सजा दीजिए। अभी तक आप चीन के मेहमान थे, अब हमारी मेहमानी मंजूर कीजिए।'

'अब आपने दूसरा पैतरा बदला।'

इसी समय तिनलिन की नवयुवती पुत्री लूचिंग ने आकर कहा—'चाय तैयार है।'

तिनलिन ने उसकी ओर देखते हुए कहा—'लू, तुम क्यों नहीं अपने मेहमानों को आमंत्रित करती। ये लोग जाने की जिद कर रहे हैं, अपनी सखियों को मनाओ।' यह कहकर वह चला गया।

तिनलिन की पुत्री लू हिंदी भाषा से परिचित थी। वह मंजुला, दामिनी

आदि से हिंदी में बातचीत करती थी।

वह मंजुला के पास आकर उसका हाथ पकड़ती हुई बोली—'सखी, इतनी जल्दी चली जाओगी ? यह कैसे हो सकता है ? अभी आपको हमारा घरेलू जीवन देखना अवशेष है। सच्ची मैत्री दो देशों में तभी स्थापित होती है जब उनकी नारियों में भी वही भाव उत्पन्न हों। पुरुषों की मैत्री एकांगी है, अपूर्ण है।' यह कहकर वह उससे लिपट गई।

मंजुला अब बड़े असमंजस में पड़कर प्रमोद की ओर देखने लगी। प्रमोद ने अपना मुख दूसरी ओर फिरा लिया।

उसका कपोल चूमती हुई लू ने फिर कहा—'उनकी ओर क्या देख रही हो। अभी उनसे अनुमति माँगने का समय नहीं आया है।' उसका आशय समझकर दामिनी मुस्कराई, और अमृता हँसी छिपाने के लिए खाँसने लगी।

'मुझसे क्यों अनुरोध कर रही हो ? दम्मो और अमृता से क्यों नहीं कहती।' कहते-कहते मंजुला के कपोल लाल हो गए।

'हम दोनों की वास्तविक स्थिति से लू भलीभाँति परिचित है। वह वह जानती है कि किसको पकड़ने से कार्य सिद्ध होगा।' दामिनी ने मुस्कराते हुए कहा।

'दम्मो, तुम आजकल बहुत तंग करने लगी हो।'

'अभी से घबड़ा गईं, यह तो शुरूआत है।' इब्तिदाए इश्क है, रोता है क्या; देखिए आगे-आगे होता है क्या ?'

'तुम्हारी बेहयाई बढ़ती जाती है।'

'क्यों न बढ़ेगी, भाभी से बेहयाई न की जायगी, तो फिर किससे की जायगी। अच्छा, अमृता तुम बताओ, भाभी किसलिए होती हैं।'

अमृता के उत्तर देने से पहले ही प्रमोद ने कहा—'दम्मो, तुम हमेशा मंजू के पीछे पड़ी रहती हो। तुम्हें उचित-अनुचित का ज्ञान नहीं रह गया।'

'आप हम लोगों के बीच में क्यों बोलते हैं ? हम लोग सहपाठी हैं, लड़कपन से हमारा साथ है हम आपस में हँसती-बोलती हैं। हम लोग आपस में निपट लेंगी, आपसे जब पंचायत कराने आवें, तब आप कुछ कह सकते

हैं।' दामिनी ने भाई को फटकारा।

लू ने आँखें नचाते हुए कहा—'दामिनी बहन सत्य कहती हैं। आपको हम लड़कियों में से किसी का पक्ष न लेना चाहिए।'

'अरे, जिसके दिल को चोट पहुँचती है, वह क्या बिना बोले रह सकता है ?' अमृता ने भी जड़ा।

'इसका मतलब यह है कि मुझे यहाँ से चले जाना चाहिए।' कहकर प्रमोद जाने लगे।

लू ने उनको पकड़ते हुए कहा—'भारतीय तो अपनी शूरता के लिए विख्यात हैं, आपने इतनी जल्दी मैदान छोड़ दिया ?'

'अपनी शूर वीरता पुरुषों के मुकाबले के लिए सुरक्षित किए हैं, नारियों से तो वह सदा हारते आए हैं।' अमृता ने दूसरा वार किया।

'लेकिन मेरा अनुमान था कि पति केवल पत्नी से हारता है। क्या प्रेमी अपनी प्रेयसी से भी हार जाता है ?' लू ने आँखों से हँसते हुए पूछा।

'अरे वहाँ तो वह हमेशा हारा रहता है। एक बार चाहे पत्नी से वह जीत भी जाये, किंतु प्रेमिका जैसा नाच नचावे, वैसा नाचना पड़ेगा। क्यों दम्मो, मैं ठीक कहती हूँ न ?'

'भई, मैं कुछ नहीं बोलूँगी, भैया ने मेरे मुँह में ताला लगा दिया है।'

'अच्छा, तुम्हारा संकेत है, कि हम लोग भी अपने मुँह में ताला लगा लेवें।'

'भैया से पूछो, अगर उनसे पूछने का साहस न होता हो तो मंजू बहिन से पूछ देखो।'

'अब तो तुमने दूसरा सुर अलापना शुरू कर दिया, दम्मो।'

'अर्थात् ?'

'अर्थात् यही कि भाभी से बहिन बनाने लगी।'

'प्रमोद भैया के डर से कहना पड़ता है।'

मंजुला का धैर्य जवाब दे रहा था। उसने तिनककर कहा—'सब मिल कर एक पर प्रहार करने लगती हो। मैं किसको-किसको जवाब दूँ ?'

'हाँ, यह बात ठीक है। पहले दामिनी की बात का जवाब दो।' अमृता ने कहा।

'नहीं लू के प्रश्न का उत्तर मिलना चाहिए।' दामिनी ने कहा।

लू ने पुनः उसको आलिंगन में बाँधते हुए कहा—'कहो सखी, मेरी मेरी प्रार्थना स्वीकार है।'

'सब लोग रहेंगे तो मुझे भी रहना पड़ेगा।'

'मुझे तो ऐसा लगता है कि दामिनी और अमृता तभी रहेंगी, जब तुम रहना स्वीकार करोगी।'

'और मंजू जी तब रहेंगी, जब प्रमोद भाई साहब रहेंगे।' अमृता बीच में बोलकर हँसने लगी। लू और दामिनी भी हँस पड़ी।

मंजू ने अपने को छुड़ाकर जाते हुए कहा—'तुम सब लोग आज शरारत पर आमादा हो। यहाँ कोई भला आदमी नहीं ठहर सकता।'

लू ने उसे बहुत रोका, परन्तु वह चली गई। उसके जाने से वातावरण गंभीर हो गया। प्रमोद भी अन्यमनस्क होकर उनसे दूर उद्यान में टहलने लगे।

'मंजू सचमुच नाराज हो गई।' दामिनी ने कहा।

'नाराज होने की बात है। कोर्टशिप के काल में तुम भाभी बनाने लगी'

'मैं झूठ नहीं कह रही हूँ, दोनों के दिलों में आग बराबर लगी हुई है।'

'यह कौन नहीं जानता। हम लोगों से छिप-छिपकर बातें करते हैं।'

'अरे तमाम दौरे भर वह उनकी दुम बनी रही। हम लोगों को छोड़कर भैया से चिपकी रही।'

'वह हमारी बातों से नाराज नहीं, बल्कि मन ही मन लड्डू खाती रही।'

'मेरा सुझाव है कि तुम लोग अपने लिए एक-एक चीनी साथी ढूंढ़ लो।' कहकर लू मुस्कराई।

'क्या भारत में नहीं मिलते, या नहीं मिलेंगे जो चीनी चुने जायें?'

अमृता ने उत्तर दिया।

'तुम लोगों से इतना मन मिल गया है कि तुम्हें छोड़ने की इच्छा नहीं होती।'

'तब हमारे साथ चलो, वहाँ तुम्हारे लिए वर मिल जायगा।'

'हाँ, लू को तो मिल गया, मुझे भी मिल जायगा।'

'लू ने अर्जुन भैया से शादी की अथवा किसी दूसरे से ?' अमृता ने पूछा।

'तुम्हारे भाई से उसने शादी की है।'

'मेरे भारत में रहते भैया ने माता-पिता से कह दिया था कि वह मंजू से रिश्ता नहीं करेंगे, और मैंने मंजू को वह बात बता भी दी थी। मैं जानती थी कि जब हम सब वापस जायँगी तब विवाह होगा, लेकिन भैया ने बहुत जल्दी कर दी।'

'शायद उन्हें मंजू की तरफ से किसी किस्म का खतरा हो, क्योंकि उसकी शादी की बात पक्की हो गई थी, सिर्फ रस्मी जामा पहनना बाकी था।'

'बात यही थी। पिता जी की बड़ी इच्छा थी मंजू को बहू बनाने की, क्योंकि वह अपनी नानी की तमाम जायदाद की वारिस है। जायदाद भी कुछ कम नहीं है, कई लाख की होगी।'

'हाँ है तो मंजू भाग्यवान। अपने बाप की इकलौती सन्तान है।'

'इसके अलावा वह जायगी भी किसी अमीर घर में।'

'तुम्हारा घर कौन गरीब है। तुम्हारी माँ एम० पी० है। तुम्हारे पिता तपे हुए कांग्रेसी हैं, जो अपनी उदारता के लिए विख्यात हैं। तुम्हारी कोठी ही कई लाख की है। तुम्हारे धन की भी थाह नहीं है, दामिनी !'

'और तुम्हारी भी प्रतिष्ठा हम लोगों से कुछ कम नहीं है, अमृता बहिन।'

'भई, गरीब माता-पिता की बेटी तो मैं हूँ।' लू ने कहा।'

'वाह, यह तुम क्या कहती हो। इतना झूठ न बोलो। इतनी बड़ी कोठी रहने के लिए है, और तुम्हारे पिता का अधिकार कुछ कम नहीं है। चीन सरकार में एक उच्च पद प्राप्त किए हुए हैं।'

'लेकिन यह सब सरकारी है, हमारा निजी कुछ नहीं है। वेतन उतना मिलता है, जितना भारत के साधारण कर्मचारी को मिलता होगा। मोटर आदि सब सरकारी हैं, और आप लोगों के कारण हमारे यहाँ है। आपके जाते ही वैभव के सब सामान छिन जायेंगे, और पैदल रगड़ना पड़ेगा।'

'क्या स्थाई रूप से आपको नहीं मिले हैं ?'

'नहीं, आपसे क्यों छिपाऊँ, यद्यपि पिता जी की आज्ञा नहीं है। आप लोगों से न-मालूम क्यों इतना प्रेम हो गया है कि कोई बात छिपाने में असमर्थ हूँ।'

'तब तो हमारे देश की शासन-पद्धति आपके देश से कहीं अच्छी है। वहाँ अपनी कमाई अपने पास रहती है। निजत्व का नाश नहीं होता, और सबको समान रूप से मूलाधिकार प्राप्त हैं।'

'मैं स्वयं यहाँ के जीवन से ऊब गई हूँ। जो कुछ है वह सब कम्यून का है। हाँ, खाने को भरपेट मिल जाता है।'

'किन्तु मनुष्य केवल पेट भरने के लिए ही पैदा नहीं हुआ है। जीवन को सुखी, शान्त और पूर्ण बनाने के लिए बहुत-सी अन्य वस्तुओं की आवश्यकता है। उनमें सर्वोपरि है व्यक्तिगत स्वतन्त्रता। सोचने-विचारने, और अपनी बात कहने की पूर्ण स्वतन्त्रता होना चाहिए। इनके बिना तो मनुष्य केवल मशीन का एक पुरज़ा मात्र रह जाता है।'

'नहीं, यहाँ ऐसी कोई स्वतन्त्रता नहीं है। यहाँ तो यह हाल है कि हमारे नेता जो कहें, वही सोचें; जो करने का आदेश दें वही करें, और वह जो दिखावें वही देखो। हमारा व्यक्तित्व कुछ नहीं है, वह समुद्र के एक बूँद से अधिक नहीं है।'

'तब तुम हमारे साथ भारत चलो। वहाँ अनेकों चीनियों के संभ्रान्त परिवार रहते हैं। दिल्ली में उनकी कमी नहीं है, और कलकत्ता में तो उनकी पूरी बस्ती है।'

'जी चाहता है, किन्तु जा नहीं सकती। मैं चीन की गुलाम हूँ। गुलाम का क्या कोई अस्तित्व है ?'

'जा क्यों नहीं सकती ?'

'इसलिए चीन के बाहर पैर निकलते ही मार डाली जाऊँगी ?'

'अरे, क्या कह रही हो ! तुमको घूमने-फिरने की भी छूट नहीं है ?'

'नहीं, बिना कम्यून की आज्ञा के जरा भी हिल-डुल नहीं सकती ।'

'चीन की सीमा के अन्दर भी नहीं ।'

'हाँ, चीन की सीमा में मैं इच्छानुसार जा सकती हूँ, किन्तु कम्यून को बताकर । कम्यून के अधिकारियों से मुझे अनुमति-पत्र मिलेगा, और उसे वहाँ के कम्यून को दिखाना होगा । वहाँ से जब लौटूँगी तो वहाँ के अधिकारियों को सूचित करके ।'

'तब तो तुम्हारा देश ही तुम्हारे लिए बड़ा भारी क़ैदखाना है ।'

'हाँ, माता-पिता केवल जन्म देते हैं, किन्तु संरक्षण कम्यून का होता है, वह भी आजन्म ।'

'उफ ! कैसी विडम्बना है । तुम्हारी बातें दम घोटने वाली हैं ।'

'क्या किया जाय, चीन में जन्म लेने का अभिशाप है, उसे यावज्जीवन भोगना पड़ेगा ।'

'फिर सूया यहाँ से कैसे गई ? उसने तो वहाँ अपना विवाह भी कर लिया । अब तो वह भारतीय नागरिक बन गई है ।'

'सूया की बात न पूछो । मैं उसके सम्बन्ध में कुछ नहीं जानती ।'

'हमें तुम्हारी बात पर यक़ीन नहीं आता । तुम्हारे पिता के साथ उसकी इतनी घनिष्ठता है कि तुमसे उसकी कोई बात छिपी नहीं रह सकती ।'

लू ने अपने चारों ओर देखकर कहा—'आज नहीं, किसी दिन फिर बताऊँगी । यह समझ लो, तुम चारों ओर हमेशा, सर्वत्र चीन के गुप्तचरों से घिरी रहती हो । तुम उन्हें नहीं देख सकती, किन्तु वे तुम पर अपनी दृष्टि बराबर रखते हैं । तुम जो कुछ कहती-सुनती हो, वे सब सुनते हैं । कहाँ तक बताऊँ, माता-पिता, भाई-बहिन सब गुप्तचर की भाँति काम करने के लिए बाध्य हैं । यदि वे तनिक भी अवहेलना करें तो मौत की सजा है ।'

'उफ ! इतना घोर नियन्त्रण । इस देश में सब मानुषिक सम्बन्ध

समाप्त कर दिए गए हैं'

'कह तो दिया कि केवल जन्म देने को माता-पिता हैं, बाकी वे भी गुप्तचर हैं।'

'तब यहाँ का जीवन नर्क से भी बदतर है।'

'धीरे-धीरे बोलो, न मालूम कौन कहाँ छिपा हुआ सुन रहा हो। हाँ, बहिन ! एक तुमसे प्रार्थना है, किसी प्रकार भी यह प्रकट न हो कि मैंने यहाँ की बातें तुम्हें बताई हैं, नहीं तो मेरे लिए मृत्यु निश्चित है।'

'यहाँ अपने पिता के घर में भी तुम स्वतन्त्र नहीं हो।'

'नहीं, मुझे अपने पिता को उन सब बातों का संक्षिप्त विवरण देना होगा जो हमारे मध्य हुई हैं।'

'तुम क्या स्वीकार करोगी कि मैंने यहाँ का भेद बताया है ?'

'नहीं, सच्चा विवरण नहीं, कुछ बातें गढ़ कर बतानी होंगी।'

'उसकी पुष्टि भी हम से कराई जा सकती है।'

'हाँ, यदि उन्हें संदेह हो जाय कि मैंने सत्य विवरण नहीं दिया।'

'संदेह होने पर यदि हमसे पूछा गया, और हमारे कथन से तुम्हारे कथन की पुष्टि न हुई तो वह क्या करेंगे ?'

'मुझसे पुनः पूछेंगे, और यदि इस बार भी मैं सत्य नहीं बोली तो वे कम्यून को सूचना देने के लिए बाध्य होंगे, और कम्यून के अधिकारी नाना भाँति की यन्त्रणाओं से सत्य निकाल कर दम लेंगे।'

'मान लो तुम्हारे पिता कम्यून को सूचना न देवें तो ?'

'तब दूसरे छिद्रों से भेद प्रकट होने पर उनके लिए भी प्राण-दण्ड है।'

'अच्छा बताओ कि हम क्या कहें, यदि तुम्हारे पिता पूछ बैठे ?'

'अभी ऐसा कोई संदेह का कारण नहीं मिला है, किन्तु इसलिए सावधान कर दिया है कि यहाँ के आन्तरिक जीवन की आलोचना किसी से भी न करना।'

'ना बाबा, हम किसीसे नहीं कहेंगी, यहाँ तक कि संजू से भी नहीं।'

'हाँ, केवल अपने पेट में रखना।'

'तुमने तो बड़ी उलझन में डाल दिया।'

'न मालूम क्यों अनायास यह बातें निकल गईं।'

'किन्तु हम दोनों विश्वास दिलाती हैं कि हम कोई आलोचना किसी से नहीं करेंगी।'

'हाँ, इसी में हमारा और तुम्हारा कल्याण है।'

'क्या कम्यून हमें भी विपत्ति में डाल सकता है?'

'प्रत्यक्ष तो नहीं, अप्रत्यक्ष वह सब कुछ कर सकते हैं।'

'अप्रत्यक्ष कैसे?'

'कहीं भी, घर में, रास्ते में, होटल में, बड़ी सुगमता से विष-प्रयोग हो सकता है।'

'और वह क्या शव-परीक्षा से प्रकट नहीं होगा?'

'परीक्षण करने वाले भी तो वही हैं जो विष-प्रयोग करवायेंगे।'

'शायद आकस्मिक मृत्यु घोषित कर दी जायेगी।'

'दिल की धड़कन बन्द होने का सर्वोत्तम बहाना है।'

'किन्तु सब को एक साथ विष-पान नहीं करा सकते।'

'इसकी कोई जरूरत भी नहीं, यात्रा भर में एक-एक को स्वर्ग पहुँचा देंगे।'

'उफ! लू तुमने तो हमारे जीवन की शान्ति ही नष्ट कर दी। यहाँ से शीघ्र जाने में ही कल्याण है।'

'नहीं, अभी आपका जाना उचित नहीं है क्योंकि पिता जी आप लोगों को किसी विशेष कारण से रोकना चाहते हैं, यद्यपि वह मुझे मालूम नहीं है। आप तनिक भी चिन्तित न होइए। मैं आपकी रक्षा करूँगी। हाँ, आप अपनी जबान बन्द रखें। चलिए, पिता जी आप लोगों की प्रतीक्षा करते होंगे। मेरे यहाँ अधिक रहने से उन्हें सन्देह हो सकता है।'

यह कह कर वह उन्हें घर की ओर ले जाने लगी। अमृता और दामिनी चुपचाप उसके पीछे-पीछे चली गईं।

३

चीन के पर्वतीय क्षेत्र की प्रातः सुषमा देखने के लिए प्रमोद अकेले तिनलिन के बंगले के उद्यान में आकर टहल रहे थे। प्रातः समीर रात्रिभर की संगृहीत सुरभि मस्तिष्क में प्रवेश कराकर मंजुला संबंधित विचारों से उनके मन में गुद-गुदी उत्पन्न कर रहा था। वह जानते थे कि मंजुला भी उनकी ओर आकर्षित है, किन्तु प्रेमी जैसे संदेह के वातावरण में रहा करते हैं वैसे वह कभी संदेह और कभी विश्वास की नावों पर संतरण करते थे। दोनों अपने भावों को छिपाने की पूरी चेष्टा करते और अपने-अपने क्षेत्र में रहते हुए एक दूसरे के प्रस्ताव की प्रतीक्षा में थे, परन्तु वह सुयोग कभी न आता था, और यदि आता भी तो कोई इससे लाभ उठाने को तैयार न होता था। सुयोग निकल जाने पर दोनों हाथ मलते और पछताते थे। उतावले मन को फिर ढाढस देते कि भविष्य में वे अवश्य ऐसे सुयोग का सदुपयोग करेंगे, परन्तु वह हर बार आकर जल-प्रपात के वेग से निकल जाता था। दामिनी, अमृता और लू के प्रहार जो मंजुला पर कल हुए थे, उनसे उनका सन्देह किसी हद तक दूर हुआ था, और उसके भावों की छाया कुछ स्पष्ट हुई थी। वह कल से इन्हीं विचारों की उधेड़-बुन में लगे थे, तथा बहुत रात्रि तक सोने में असमर्थ रहे। उनका उत्तप्त मस्तिष्क शीतल मन्द पवन से कुछ शांत और पुलकित हो रहा था।

वह एक पुष्प-वल्लरी के पास आकर टहलते-टहलते खड़े हुए, और उत्फुल्ल सुमन को मुग्ध दृष्टि से देखने लगे। उनकी विचारधारा इस समय काव्यमय हो रही थी, और वह उसमें इतने तल्लीन थे कि उन्हें तिललिन का आगमन ज्ञात नहीं हुआ।

कुछ क्षणों तक देखने के पश्चात् जब प्रमोद का ध्यान भंग नहीं हुआ, तब उसने धीरे से कन्धे पर हाथ रखकर उनका ध्यान आकर्षित किया।

प्रमोद ने चौंक कर देखा, और कहा—'आप हैं ?'

'हाँ, बड़े ध्यान से देख रहे हो।'

'भगवान ने न-मालूम कहाँ का सौंदर्य इन मूक वस्तुओं को प्रदान किया है। ये सृष्टि को कितना सुन्दर बनाते हैं, और मनुष्य उसी सृष्टि को नष्ट करने पर तुला है। वह अपने महा-विध्वंसक अस्त्रों से प्रकृति के सुन्दर उद्यान को मरुभूमि बनाने के लिए उत्सुक हो रहा है। वह संहार में प्रवृत्त रहता है, प्रकृति निर्माण में। अब देखना है कि कौन विजयी होता है अन्त में।'

'मनुष्य यदि दूसरों का प्राप्य हरण न करे, और अपनी-अपनी अधिकार सीमा में रहे तो वह विनाश न कर निर्माण में प्रवृत्त हो सकता है, परन्तु मनुष्य का प्रभाव शोषक हो जाने से उसकी प्राकृतिक प्रवृत्तियों में अन्तर आ गया है।'

भगवान ने मानव को शक्ति प्रदान की थी इसलिए कि वह उसका जन-कल्याण में उपयोग करेगा, किन्तु वह उसका उपयोग कर रहा है संहार में। वह चाहे जितना प्रयत्न करे प्रकृति कभी नष्ट नहीं हो सकती। अंत में मनुष्य नष्ट होगा।'

'जो दूसरों को नष्ट करना चाहता है, वह स्वयं नष्ट होगा, यही प्रकृति का नियम है।'

'मनुष्य ने अभी तक जितने अनुसंधान किए, वे सब संहार करने के उद्देश्य से किए हैं और निर्माण करने वाले प्रयोग अकस्मात् प्राप्त हुए हैं, वैसे जैसे मोती की खोज में सीप स्वतः हाथ लगती है।'

'मज़ा यह है कि वह निर्माणक अनुसंधान को भी विनाश का साधन बनाता है। अणुशक्ति से वर्तमान संसार की काया पलट हो सकती है, परन्तु अमेरिका ने उसका प्रयोग किया जापान ने दो नगरों को विध्वंस करने में। वह अपनी महत्ता बनाए रखने के लिए कोरिया-युद्ध में भी उनका प्रयोग करता, किन्तु इसी बीच उसका प्रतिद्वन्द्वी रूस उन्हें बनाने में समर्थ हो गया। तब उसको साहस न हुआ क्योंकि विध्वंस की पुनरावृत्ति अमेरिका

में हो सकती थी। आततायी केवल भय से वशीभूत होते हैं।'

"हाँ, इस समय सत्य यही है, भय के बिना प्रीति नहीं उत्पन्न होती।"

"यह सिद्धान्त सदैव सत्य रहा है, और इस समय भी है। मनुष्य और राष्ट्र सदैव एक दूसरे से शंकित रहते हैं, इसलिए वे असत्य की रक्षा के लिए उससे अधिक शक्तिशाली अस्त्रों का निर्माण करते हैं। इस प्रकार केवल संहारक अस्त्रों का बाहुल्य हो गया है। चीन के सामने भी आत्मरक्षा का प्रश्न ज्वलन्त रूप से है। यद्यपि उसके सामने निर्माण का बहुत बड़ा कार्यक्रम है, किन्तु वह अपने समस्त साधनों को उस पुनीत कार्य में जुटा नहीं सकता। पश्चिमीय राष्ट्रों से उसे सतत भय है।'

'यही हाल भारत का भी है, किन्तु वह निर्भय है।'

'परन्तु बहुत दिनों तक उसकी निर्भीकता नहीं रहेगी। अभी भी पाकिस्तान नंगी तलवार लिए धमकियाँ दे रहा है।'

'हाँ, किन्तु वह आक्रमण करने की अवस्था में नहीं है।'

'ठीक है, शायद अमेरिका उसे ऐसा कदम तब तक नहीं उठाने देगा, जब तक चीन को वह परास्त नहीं कर लेता।'

'आपके विचार से अमेरिका अवश्य चीन पर आक्रमण करेगा?'

'निस्सन्देह।'

'शान्ति का पोषक वह नहीं है?'

'वह यह चोगा तभी तक पहने है जब तक उसकी तैयारी पूरी नहीं होती। आंखें खोलकर देखिए उसने रूस तथा चीन को फौजी घेरे में बन्द कर रखा है। दूसरे देशों को डालर की रिश्वत देकर वहाँ अपने सैनिक अड्डे बना लिए हैं। समस्त संसार की सैनिक शक्ति को उसने एकत्रित किया है केवल इसलिए कि मौका पाकर इन दोनों देशों को दबोच ले; परन्तु रूस भी सजग है और चीन भी।'

'रूस ने ऐटम और हाईड्रोजन बम बना लिए हैं।'

'चीन भी बना रहा है, कुछ दिनों में वह सफल हो जायगा।'

'किन्तु उसने घोषणा नहीं की।'

'उसकी क्या आवश्यकता है ? शत्रु को अपनी शक्ति का आभास न देना चाहिए। ऐटम तथा हाईड्रोजन बमों से भी भयंकर अस्त्र हमने बनाए हैं।'

'हाँ, आप अपनी सैनिक शक्ति का दिग्दर्शन कराना चाहते थे।'

'मेरा अब भी इरादा है, यदि आप देखना चाहें।'

'देख लूँगा।'

'आप जब हमारे सैनिक कारखानों तथा भूगर्भस्थ शस्त्रागारों को देखेंगे तो आपको मालूम होगा कि हम उनके निर्माण में कितना व्यय कर रहे हैं। काश, यदि उतनी शक्ति हम अपने देश के निर्माण में लगा पाते तो हम चीन को स्वर्ग बना देते।'

'हाँ, देश की आय का अर्धांश और कहीं-कहीं तो उससे भी अधिक सेना पर खर्च करना पड़ता है।'

'तब आप चलने को तैयार हैं।'

'हाँ, इच्छा तो होती है।'

'तब चलिए, किन्तु आपको एक शर्त माननी पड़ेगी।'

'वह क्या ?'

'आपको आँखों पर पट्टी बँधवानी होगी।'

'हाँ, शस्त्रागार पहुँचने पर बँधवा लूँगा।'

'नहीं, यहीं से बँधवाकर चलना होगा। हमारे नियम ऐसे ही हैं।'

'अच्छी बात है। मुझे कोई गुप्तचरी तो करनी नहीं।'

'गुप्तचर तो यहाँ पर नहीं मार सकते। जो जमीन सूँघ-सूँघकर चलते हैं, वे भी यहाँ आने के पश्चात् जीवित नहीं जा सकते।'

'अच्छा, बाँधिए पट्टी। लड़कियाँ तो यहीं रहेंगी।'

'हाँ, लू उनका मनोरंजन करेगी। उनकी ओर से आप निश्चिन्त रहिए।'

तिनलिन ने एक विशेष प्रकार की आवाज़ निकाली, जो उल्लू की आवाज़ से मिलती-जुलती थी। अभी उसकी प्रतिध्वनि समाप्त भी न हुई

थी कि चार हृष्ट-पुष्ट चीनी सैनिक उनके पास आकर खड़े होगए। तिन-लिन ने एक खास भाषा में उन्हें आदेश दिया और वे तुरन्त वैसे ही निःशब्द अन्तर्हित हो गए, जैसे प्रकट हुए थे।

४

केसर कुँवर के प्रायः सभी डाक्टरी उपचार, जो उसने बिरजू को अपने पति की आत्मा के प्रवेश तथा निर्गमन से मुक्ति दिलाने के अभिप्राय से किए, निष्फल गए, परन्तु एक अन्तर अवश्य आ गया। वह अब उसके माध्यम से बातें नहीं करता था—केवल अपने प्रवेश का परिचय उसको बेहोश करके देता और घंटे-आध-घंटे रहकर चला जाता। बेहोशी दूर होने के पश्चात् उससे केसर कुँवर जानना चाहती कि बेहोशी का दौरा आने के पहले उसने क्या अनुभव किया, परन्तु वह बताने में असमर्थ था। डाक्टर भी उसका कोई उपयुक्त कारण बता नहीं सके, किन्तु वह हताश होने वाली रमणी नहीं थी। हास्यास्पद बनने के भय से वह तान्त्रिक उपचारों का प्रयोग करना नहीं चाहती थी। बेहोशी के दौरे प्रायः उसी समय हुआ करते जब केसर कुँवर की नीयत कलुषित होती और तब उसकी वासना वैसा अतृप्त रह जाती थी। इन दिनों वह बिरजू को शक्ति तथा स्फूर्ति-दायक औषधियाँ व भोजन कराती, परन्तु उसकी बढ़ती हुई दुर्बलता पर उनका कोई प्रभाव नहीं होता था। वह दिनों-दिन कृश होता जाता था।

केसर कुँवर उस दिन की घटना के सम्बन्ध में किसी से कुछ कह नहीं सकती थी, इसलिए वह एक महान भार होकर उसके मन को पीड़ित करती थी। बेहोशी के समय वह सब को दूर हटा देती थी, क्योंकि उसे सतत भय रहता कि कहीं उसके पति की आत्मा उसके पापों का विवरण न देने लगे। उसके नौकर चाकर सभी हैरान थे और उनमें यह चर्चा होने लगी

थी कि कोठी में किसी प्रेत का वास है। माधवसिंह पहले दिन वाली घटना को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर अपनी तथा पड़ोसी के कोठियों के नौकरों से कहा करता था और चूँकि उस पर बार-बार नमक-मिर्च चढ़ाकर चटपटा बनाया जाता था, इसलिए वह कहानी अपने कई रूपों में फैल गई थी।

एक दिन शाम को जब केसर कुँवर अकेली बैठी इसी समस्या को हल करने के उपायों पर विचार कर रही थी, तब माधवसिंह उसके सामने आ कर चुपचाप खड़ा हो गया। वह अपने विचारों में इतनी उलझी थी कि उसका कोई ध्यान उधर नहीं गया। जब माधवसिंह ने देखा कि वह मुखा-तिब नहीं होती, तब उसने खखारा। केसर कुँवर ने सिर उठाकर देखा और पूछा—'क्या है माधव सिंह ?'

'मालकिन हुजूर, अगर गुस्ताखी माफ हो तो एक अर्ज करूँ ?'

'कहो, क्या कहना चाहते हो ?'

'हुजूर, यही कि बिरजू बाबू की बीमारी दिन-पर-दिन बढ़ती जाती है।'

'हाँ, डाक्टरी इलाज से कोई फायदा नजर नहीं आता।'

'हुजूर, इसमें डाक्टरी इलाज काम नहीं देगा ?'

'फिर कौन इलाज काम देगा ?'

'हुजूर, माफ कीजिएगा, हम लोग इसको आसेब कहते हैं।'

'मैं नहीं समझी।'

'आसेब कहते हैं भूत-प्रेत बाधा। मालिक इस कोठी में कोई भूली-भटकी आत्मा रहती है।'

'क्या तुमने कुछ देखा है ?'

'पहले कभी नहीं देखा, इधर कभी-कभी शक होता है।'

'कैसा शक !'

'ऐसा मालूम होता है कि हवा का कोई झोंका सर्र से निकल गया।'

'उसकी झपट क्या तुमको मालूम होती है ?'

'बस इतना मालूम होता है कि जैसे हवा का बवंडर टकराता हुआ

निकल गया हो, किन्तु न खिड़की खुली होती है और न दरवाजे।'

'मुझको कभी कुछ अनुभव नहीं हुआ।' उसने अपना समर्थन देना उचित नहीं समझा।

'हुजूर को न हुआ होगा, क्योंकि पुण्यात्माओं के पास भूत-प्रेत नहीं फटकते।'

'देखो माधवसिंह, ऐसी व्यर्थ की बातों को फैलाना मुझे पसन्द नहीं है। भूत-प्रेत पर मैं विश्वास नहीं करती, और न तुम लोगों को करना चाहिए। यह हिस्टीरिया की बीमारी है, जिसे तुम आसेब कहते हो।'

'लेकिन हिस्टीरिया, हुजूर, औरतों की बीमारी है।'

'बीमारी कभी स्त्री-पुरुष का भेद नहीं करती। हाँ, औरतों को ज्यादा होती हैं, क्योंकि उनका हृदय और मस्तिष्क कमज़ोर होता है।'

'ऐसा ही होगा हुजूर, हम गरीब आदमी क्या जानें। मगर हुजूर, आपका बहुत नमक खाया है, इसलिए अर्ज़ करता हूँ कि अगर हवन-पूजन से घर शुद्ध कर लिया जाय तो क्या हर्ज़ है। जबसे बड़े हजूर का स्वर्गवास हुआ, तब से इस कोठी में कोई हवन-पूजन नहीं हुआ, यहाँ तक कि रानी बिटिया (प्रकाश कुँवर) का विवाह भी दूसरी कोठी से किया गया। विवाह भी एक बड़ा यज्ञ है, जिसमें कन्यादान होता है।'

'हाँ, तो इससे क्या हुआ?'

'जब घर इसी तरह खाली पड़े रहते, तब दूसरे जीवों का निवास हो जाता जाता है। बड़े हजूर की वर्षी भी नहीं हुई, हुजूर! शायद उन्हीं की आत्मा भटकती हो। मालिक आप माने चाहे न माने, जब पहले दिन बिरजू बाबू ने बेहोश होने के पूर्व जो सवाल मेरा नाम लेकर पूछा था, एक बहुत पुरानी घटना थी, जिसका भेद केवल आपको या मुझको मालूम था।'

'कभी-कभी ऐसे आकस्मिक प्रश्न पूछ लिए जाते हैं, कोई खास बात नहीं है।'

केसर कुँवर ने फिर बात टाली।

'लेकिन हुजूर, पूजन कराने में तो कोई हर्ज नहीं है। दुर्गा जी का पाठ

बैठा दीजिए।'

'तुम्हारे मन में यह बात बैठ गई है कि यहाँ भूत रहता है, इसलिए तुम हमेशा तिल का ताड़ बनाया करोगे। पास-पड़ोस के नौकरों से तरह-तरह के झूठे किस्से सुनाओगे। यह मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है। अगर तुमको यहाँ रहने में भूत-प्रेत-आसेब का डर है तो तुम इस्तीफा देकर जा सकते हो। अगर कहीं नौकरी न कर अपने घर पर रहना चाहोगे तब तुमको जो वेतन मिलता है, वह बतौर पेन्शन तुम्हें अपनी जिन्दगी भर मिलता रहेगा, क्योंकि तुम मेरे सबसे पुराने नौकर हो, और तुमने अपना जीवन यहीं बिताया है।'

'नहीं हुजूर, मैं कहाँ जाऊँगा। मेरा घर-द्वार तो यही है। घरवाली है नहीं, लड़का आपके आशीर्वाद से परदेश रहता है। मैंने तो सबका भरम दूर करने के लिए उपाय बताया था।'

'इसका मतलब यह है कि मेरे सब नौकर विश्वास करते हैं कि इस कोठी में भूत रहता है और तुम उनके प्रस्ताव का सार लेकर कहने आए हो!'

'हाँ, हुजूर उन सबको यही विश्वास है।'

'और वह विश्वास पैदा करने वाले तुम हो।'

'मैं···मैं ··।'

'मैं···मैं···क्या करते हो। तुमने नमक-मिर्च लगाकर झूठी बातें गढ़ी हैं। माधवसिंह, मैं तुमको माफ नहीं कर सकती। जिस थाली में खाते हो उसी में छेद करते हो?'

'हुजूर, मैं नमक हराम नहीं हूँ। हुजूर के लिए जान दे सकता हूँ।'

'जान दे सकते हो, यह भी मुझे मालूम है, लेकिन मूर्ख हो, बे-अक्ल हो।'

'हुजूर, इस बार माफी बख्शी जावे।'

'बस एक शर्त पर माफ कर सकती हूँ, कि तुम नौकरों से कहो कि जो मैंने भूत-प्रेत की बातें कही हैं, वे सब झूठ हैं।'

'हुजूर, अब वे नहीं मानेंगे ।'

'उनसे कहो कि अपना रोआब जमाने के लिए मैंने ये बातें गढ़ी थीं ।'

'हुजूर कोशिश करूँगा ।'

'तुम अपनी तरफ से कुछ जन्त्र-मन्त्र अपनी कोठरी में करवा कर उनका डर दूर कर दो, क्योंकि वह भय तभी दूर होगा, जब उनके अनुसार उसका उपचार किया जायगा ।'

'जो हुक्म हुजूर, ऐसा ही करूँगा ।'

'किन्तु मेरा नाम न जाहिर हो कि मैंने इजाज़त दी है । अपने तौर से खूब छिप-छिपाकर, लेकिन उन नौकरों की मौजूदगी में करना ।'

'ऐसा ही होगा हुजूर ।'

केसर कुँवर ने उसे जाने का संकेत किया । वह प्राण लेकर भागा । वह अपनी सफलता पर मुस्कराने लगी ।

इसी समय घड़ी ने नौ घंटे बजाकर समय के गति की सूचना दी । उसने स्वगत कहा—'अब तो बिरजू का मास्टर चला गया होगा ।' वह यह सोच ही रही थी कि बिरजू ने भयानक मुद्रा में प्रवेश किया । उसके नेत्र लाल थे, और शरीर काँप रहा था । बेहोश होने के पहले बिरजू की ऐसी ही दशा हो जाती थी । उसने उठकर उसे पकड़ना चाहा, जिससे ज़मीन पर न गिरे, परन्तु आज उसने ढकेल दिया, और स्वयं कुर्सी पर बैठकर गंभीर स्वर में बोला—'केसरी, तू मुझे इस योनि से मुक्ति दिलाने में सहायता नहीं करेगी ?'

'जैसे इस योनि में प्रवेश किया, वैसे निकल जाओ, मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकती हूँ ?'

'जब तक मेरी कोई सहायता नहीं करेगा, तब तक शीघ्र मुक्ति न होगी ।'

'बिरजू के शरीर में तो प्रवेश कर जाने की क्षमता रखते हो, किन्तु अपनी योनि से छुटकारा पाने की नहीं ।'

'नहीं, मैं अपूर्ण हूँ, इसलिए समर्थ नही हूँ । किन्तु इतना जान ले कि

मैंने तेरे विरजू पर विजय पाली है, मैं उसको तबतक मुक्त नहीं करूँगा, जब तक तू मेरी मुक्ति का प्रबन्ध नहीं करेगी।'

'उसमें मेरी क्या हानि है ?'

'हानि है, इसीलिए तो मैंने इसको अपने अधीन किया है।'

'तुम कहते हो कि प्रेतयोनि में कोई झूठ नहीं बोल सकता, किन्तु तुम्हारे लिए शायद छूट है।'

'तेरी कुटिलता कभी दूर नहीं होगी।'

'क्या मेरी कुटिलता के कारण इस योनि में फँसे हो ?'

'बेशक, मूल कारण तेरी कुटिलता है। यदि मुझे विष न दिया होता तो मेरा मन मृत्यु समय कलुषित न होता, न प्रतिहिंसा की भावना उत्पन्न होती।'

'प्रतिहिंसा की भावना पोषित करने के लिए तुम जिम्मेदार हो या मैं।' कहकर वह हँसने लगी।'

'मूर्ख, हँसेगी तो गला घोट दूँगा।'

'मूर्ख, तुममें यदि यह शक्ति होती तो तुम अबतक क्या मेरी इच्छा या अनिच्छा की प्रतीक्षा करते।'

उसके पति की आत्मा विवश होकर दूसरी ओर देखने लगी। फिर कहा—'लेकिन तेरा ऐसा एक भेद मालूम है, जिसको जानकर तुझे अतीव प्रसन्नता होगी।'

'उसको तुम छिपाए रहो, मैं बिना भेद जाने अच्छी हूँ।'

'देख, पछतायगी। जिसके पाने के लिए तू व्यग्र है, वह मैं दे सकता हूँ।'

'वह क्या देगा, जो स्वयं लाचार है। मैं तुम्हारी लच्छेदार बातों में नहीं आने की।'

'तब मैं जो चाहूँ, करूँ ?'

'मुझसे क्यों पूछते हो ? बेशक तुम जो चाहो कर सकते हो। इतना जानती हूँ कि तुम मेरे पास फटक नहीं सकते।'

'हाँ, किन्तु बिरजू के द्वारा तेरी कलंक-कहानी दूसरों को सुना सकता हूँ।'

'वह सब पागल का प्रलाप समझा जावेगा।'

'उस समय के मेरे बहुत से मित्र जीवित हैं, माधवसिंह, मेरा नौकर अभी इसी कोठी में रहता है, जिससे तू अभी बातें कर रही थी।'

'इससे क्या होता है?'

'उनको बीती बातों की याद दिलाकर अपना विश्वास उत्पन्न कराऊँगा कि केसरी ने अपने पति को विष खिलाकर हत्या की थी; उस समय तेरी क्या हालत होगी।'

'मैं इन धमकियों से नहीं डरती।' उसने मुँह से कह तो दिया, किन्तु उसका मन काँप रहा था।'

'मैं वह विष भी पेश करूँगा, जिसको खिलाकर मेरा प्राण हरण किया था।'

'मैं उसको पहले ही नष्ट कर दूँगी।'

'जब मैं सबके सामने तेरी कथा सुनाऊँगा, तब तेरी मुखाकृति सब भेदों को खोल देगी।'

'कह दिया कि मैं तुम्हारी धमकियों से डरकर कुछ नहीं करूँगी, किन्तु तुम्हारी जायदाद भोग कर रही हूँ, इसलिए तुम्हारी मुक्ति के लिए मुझे कुछ करना उचित है।'

'आपसी समझौते से हमारी पारस्परिक भलाई है। मैं भी नहीं चाहता कि गड़े मुर्दे उखाड़े जायँ।'

'अच्छा, तुम क्या चाहते हो?'

'तुम एक सात्विक ब्राह्मण से मुझे गीता सुनवा दो।'

'गीता सुनकर क्या तुम्हारी मुक्ति हो जायगी?'

'हाँ, मेरा वह समय भी नज़दीक है, जब मुझे इस योनि से मुक्ति मिलेगी।'

'जब मुक्ति मिलने का समय आ गया है, तब गीता सुनकर क्या

करोगे ?'

'गीता सुनने से चित्तवृत्ति स्थिर और शान्त रहेगी। कलुषित भावनाएँ उत्पन्न नहीं होगी। द्वेप तथा ईर्ष्या के भाव जो कुछ अवशिष्ट हैं, नष्ट हो जायेंगे, और मेरा आत्मन् अपने निर्धारित मार्ग पर अग्रसर होगा।'

'अच्छा, किस दिन गीता सुनना चाहोगे ?'

'किसी शुभ दिन, भादौ वदी अष्टमी ठीक रहेगी।'

'जिस दिन जन्माष्टमी होती है।'

'महापुरुषों के जन्मदिन का एक बड़ा महत्वपूर्ण योग है, क्योंकि युग-युगान्तर से उसकी पूजा होती चली आ रही है, अतएव उसमें अगणित व्यक्तियों की पुण्यमयी भावनाओं ने प्रवेश पा लिया है, और वे स्वयं पूत तथा पावन हो गए हैं।'

'ठीक है, यदि तुम्हें वह दिन मान्य है, तो मैं उसी दिन गीता सुनवा दूँगी।'

'इतना अवश्य देखना कि सुनाने वाला व्यक्ति सच्चरित्र और सात्विक वृत्तियों का है।'

'मैं किसी के दिल में पैठ कर देख नहीं सकती। मैं कैसे जानूँगी कि अमुक व्यक्ति सात्विक है, और अमुक तामसिक।'

'चरित्र कभी छिपाए नहीं छिपता।'

'हमारे कुल पुरोहित गंगाधर शर्मा सात्विक हैं या तामसिक ?'

'नहीं, वह लोभी अधिक है, और अनाचारी है।'

'हमारे दामाद कर्नल साहब का पुरोहित कैसा है ?'

'नहीं, उससे काम नहीं चलेगा। वह पूर्ण सात्विक नहीं है।'

'क्या इस अनुष्ठान में ब्राह्मण के बिना काम नहीं चलेगा ?'

'नहीं, ब्राह्मण होना आवश्यक नहीं है, कोई भी हो, किन्तु हो सात्विक। दरअसल सात्विक वृत्ति वाले ही यथार्थ ब्राह्मण हैं।'

'तब क्या पंडित हरीकृष्ण से तुम्हारा काम चल जायगा ?'

'हाँ, यदि वह स्वीकार कर लें। एक समय वह मेरे मित्र थे।'

'मैं उनसे तुम्हारी विपत्ति कहकर उन्हें राजी करूँगी।'

'हाँ, उनसे मेरी यथार्थ स्थिति कहना, मुझे विश्वास है कि वह मेरी सद्गति के लिए प्रयत्न करेंगे।'

'तब ठीक है, उनसे जन्माष्टमी को तुम्हें गीता सुनवा दूँगी। इसके पश्चात् तुम कभी बिरजू के शरीर में प्रवेश नहीं करोगे?'

'नहीं, जब मेरी मुक्ति हो जायगी तब यहाँ यदि आना भी चाहूँ तो नहीं आ सकता।'

'ठीक है। यही तय रहा। जन्माष्टमी तक प्रतीक्षा करो; किन्तु अब इसको तंग न करना। तुम्हारे आने से इसको महान कष्ट होता है।'

'हाँ, मैं जानता हूँ, परन्तु तू मुझे आने के लिए मजबूर करती है।'

'अब तो सब बातें तय हो गई हैं, अब मत आना।"

'केवल एक बार जन्माष्टमी के दिन आऊँगा--वह भी गीता सुनने के लिए।'

'किन्तु क्या तुम बिरजू के शरीर में बिना प्रवेश किए नहीं सुन सकते?'

'नहीं, एक माध्यम के बिना असम्भव है, किन्तु वही दिन मेरी इस योनि का अन्तिम दिन होगा। अतएव उसे अधिक परेशान नहीं होना पड़ेगा। विदा होने के पहले तुझे एक छिपा हुआ भेद भी प्रकट करूँगा, जिसे जानकर तू प्रसन्न होगी, और मेरा बहुत धन इसी कोठी में छिपाया हुआ है, वह भी तुझे बताकर जाऊँगा। अच्छा अब मैं जाता हूँ।'

'हाँ, अब आप जाइए। जन्माष्टमी को आइयेगा।'

उसके जाते बिरजू बेहोश होकर कुर्सी पर लुढ़क गया।

५

अर्ध रात्रि से कुछ अधिक समय होगया था जब दामिनी की आँखें सहसा खुल गई। कमरे में अन्धकार था। प्रकाश में उसे सोने की आदत थी नहीं, इसीलिए बत्ती बुझाकर सोई थी। सहसा जाग उठने से उसको हृदय की धड़कन बढ़ गई थी और उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जैसे किसी शब्द से उसकी निद्रा भंग हुई है। दूसरी बार सुनने की उत्कंठा से उसने सजग होकर करवट बदली, परन्तु कमरे में सन्नाटाछाया था। धीरे-धीरे वह अपना हाथ पलंग के पास ले गई, जहाँ बिजली जलाने का बटन लगा था। इसी समय उसे स्पष्ट प्रतीत हुआ कि जैसे कमरे में कहीं कोई लकड़ी का तख्ता हल्की आवाज करता सरक गया हो। उसने तुरन्त बटन दबाया, और कमरे में प्रकाश फैलने के साथ देखा कि उसके सामने की लकड़ी की दीवार में एक छोटा द्वार बन गया है, और वहाँ पर खड़ी 'लू' मुस्करा रही है। लू को पहचान कर उसकी आशंका कुछ निवृत्त हुई, किन्तु उसको वहाँ खड़ी देख, आश्चर्य से विभोर हो गई। उसने भयाकुल स्वर से पूछा—
'कौन, लू। बोलो, तुम लू हो न।'

मुस्कराती लू ने उसके समीप आते हुए कहा—'हाँ, दीदी, मैं 'लू' हूँ। क्यों, डर गई थी क्या?' महीनों की घनिष्टता ने पारिवारिक सम्बन्ध स्थापित कर लिए थे।

'बेशक! डरने की बात थी।'

वह उसके पास बैठकर बोली—'कोशिश तो मैंने की थी कि ज़रा भी आवाज़ न होने पाये, किन्तु बहुत दिनों से यह गुप्त मार्ग बन्द रहने से कल-पुरजे मुरचा गए हैं।'

'जहाँ तुम खड़ी थीं, वह गुप्त द्वार है?'

'हाँ, देखो न, तुम्हारा वह द्वार वैसा ही बन्द है, जैसा तुमने किया था।'

'हूँ ! इस गुप्त द्वार से कहाँ आ-जा सकते हैं ?'

'समस्त घर के कमरों में, और बाहर भी।'

'बड़ी विचित्र बात है। ऐसे दोहरे रास्ते क्या चीन के सभी घरों में बनाए जाते हैं ?'

'नहीं, सभी घरों में नहीं बनाए जाते, क्योंकि इनका बनाना बहुत खर्चीला है। खास-खास जगह यह बनाए जाते हैं, और इनमें वे अतिथि ठहराए जाते हैं, जिनमें गुप्त कागज-पत्र हमें देखना, पढ़ना, या चुराना चाहते हैं, अथवा जिनके गुप्त परामर्श हमें सुनना अभीष्ट होता है। चूँकि लकड़ी की दीवारों में दरवाजे बड़ी आसानी से छिपाए जा सकते हैं, इस-लिए ऐसे मकानों में केवल लकड़ी का उपयोग होता है।'

इसका मतलब यह कि इस मकान की सब दीवारें दोहरी बनी हुई हैं ?'

'हाँ, चार फुट चौड़ा रास्ता सब कमरों के चारों तरफ छूटा हुआ है।'

'हम लोगों को इस कोठी में क्यों ठहराया गया ? हमारे पास न ऐसे कोई कागज-पत्र हैं, और न हम लोग कुछ घातक अभिसन्धियाँ लेकर आए हमें क्यों सन्देह की निगाहों से देखा जाता है ?'

'सन्देह न होते हुए भी, सदैव सतर्क रहने के लिए आदेश हैं। भूल अथवा आकस्मिकता के लिए चीन की राजनीति में कोई स्थान नहीं है। हैं ? जो कुछ हमारे प्रतिकूल होता है, उसका तात्पर्य यह है कि वैसा हमारी किसी कमी से अथवा गफलत से होता है।'

'इससे यही अर्थ निकलता है कि हमारी प्रत्येक गतिविधि पर आपके गुप्तचरों की दृष्टि रहती है।'

'हाँ, यह मैं पहले बता चुकी हूँ।'

'आज इतनी रात गए यहाँ कैसे आईं ?'

'कारण कुछ नहीं, सिर्फ बातें कर रात गुज़ारने की इच्छा से अपने को प्रकट किया है।'

'क्या मतलब ?'

'यही कि आज तुम लोगों की निगरानी रखने का भार मुझे सौंपा गया था।'

'तो क्या हमेशा किसी न किसी का पहरा रहता था ?'

'बेशक, यह तो मैं बार-बार बता चुकी हूँ कि हम सदैव सतर्क रहते हैं। प्रत्येक विदेशी पर चाहे वह मित्र या शत्रु हो, हमारी दृष्टि रहती है। जो आज मित्र है, कल वही शत्रु भी हो सकता है। यदि हमें जीवित रहना है तो हमें सदैव सतर्क रहना पड़ेगा। नष्ट वही होता है जो गाफिल रहता है।'

'तब यह बड़ा दुखद जीवन है। शान्ति क्षण भर के लिए नहीं है।'

'शान्ति का अर्थ है मृत्यु ! जीवन का लक्षण संघर्ष है।'

'परन्तु···।'

'हमारे यहाँ छोटी-छोटी भूल के लिए भीषण दंड नियत हैं—अधिकतर प्राण-दण्ड दिए जाने की व्यवस्था है।'

'जो कुछ तुमने उस दिन बताया था और जो कुछ आज देख-सुन रही हूँ, उससे मैं इसी परिणाम पर पहुँचती हूँ कि हमें शीघ्र इस देश को छोड़ देना चाहिए।'

'हाँ अपनी तरफ से यही सलाह देने में लिए मैं यहाँ आई हूँ।'

'तुमने यहाँ ठहरने की सबसे अधिक ज़िद की थी।'

'हाँ, उस समय मुझको ऐसे आदेश मिले थे।'

'अब क्या आदेश मिला है हमें यहाँ से शीघ्र विदा करने का ?'

'नहीं, ऐसा कोई आदेश नहीं मिला। यह तो मैं मित्रता के लिहाज और अपनी तरफ से कह रही हूँ।'

'यह कैसे विश्वास हो ?'

'कहना मेरा फर्ज है, और मानना अथवा न मानना तुम्हारा।'

'अब तो तुम फटी-फटी बातें कहने लगी।'

'नहीं, अपने मन में मेरे प्रति सन्देह होने से तुम ऐसा समझ रही हो।'

'तुम्हारे प्रति मुझे कोई सन्देह नहीं है। तुमने तो मुझपर विश्वास कर अपने घर का सारा भेद खोल दिया है।'

'किन्तु कहीं उसको प्रकट कर मेरी जान की ग्राहक न बन जाना।'

'नहीं, मैंने और अमृता ने पूरी स्वाधीनता बरती है।'

'हाँ, किन्तु आगे भी इसी प्रकार सावधान रहना। चीनी बड़े निष्ठुर और निरंकुश होते हैं। ये लोग अपने सगे-सम्बन्धियों के प्रति भी दया भाव नहीं रखते। प्रत्येक व्यक्ति यहाँ नियमों से जकड़ा हुआ है। दया, ममता, मोह करुणा आदि भाव इस देश के लिए अपरिचित हैं।'

'जिस देश का सामाजिक व्यवहार भी राजनीति पर आधारित हो, वहाँ यही हाल होता है।'

'पीतांगों का कोई मित्र नहीं है, इसलिए अपने को जीवित रखने के लिए उन्हें यह व्यवस्था अपनानी पड़ी। इसके अतिरिक्त संसार की श्वेतांग जातियाँ हमारा नाश करने के लिए तुली हैं, और उन्होंने फूट डलवाकर हम पीतांगों को पृथक्-पृथक् कर दिया है, इसलिए सुरक्षा की दृष्टि से हम ऐसे उपायों को ग्रहण करने के लिए बाध्य हुए हैं।'

'हूँ!'

'आप अभी हमारी परिस्थितियों से परिचित नहीं हैं, इसलिए यहाँ की बातों में आपको अनोखापन दिखाई पड़ता है। प्रकृति ने हम पीतांगों के रहने के लिए मध्य, पूर्वीय तथा दक्षिणी एशिया का भू-भाग प्रदान किया है। यह तमाम क्षेत्र अतीत में सदा चीनी साम्राज्य के अन्तर्गत रहा, किन्तु आजकल उसकी निर्बलता से इसके कई टुकड़े हो गए हैं, जो मंगोलिया, जापान, कोरिया, उत्तरीय तथा दक्षिणीय वीयतनाम, कम्बोडिया, लाओस, तिब्बत, थाईलैण्ड तथा बर्मा के नाम से विख्यात हैं। इन देशों में स्थापित सरकारों पर अमरीका, ब्रिटेन और फ्रांस का प्रभाव पहले भी था, और अब भी है। जहाँ ये क्षेत्र पहले उनके साम्राज्य के अंग थे, वहाँ यद्यपि वे इस समय राजनीतिक दृष्टि से स्वतन्त्र हैं, परन्तु अमेरिका के डालर उन्हें परतन्त्र और गुलाम बनाए हुए हैं। उनकी कूटनीति से चीन भी दो भागों में विभक्त था, किन्तु जनचीन ने अपनी मुख्य भूमि से उस देशद्रोही च्यांग को भगाकर देश को एकसूत्र में बाँध लिया है। चीन में नई व्यवस्था स्थापित

हुई, और पुरानी यद्यपि वह बहुत अंशों में नष्ट कर दी गई है, तथापि उसके बचे-खुचे अंश च्यांग के साथ अमरीकी साम्राज्य स्थापित करने के लिए उद्योगशील हैं। हमें सबसे अधिक इन आस्तीन के साँपों से सतर्क रहना है, इसीलिए क्षुद्र से क्षुद्र अपराध के लिए प्राणदंड की व्यवस्था है। हम लोग बुराई को जड़ से नाश करने के लिए हिंसात्मक प्रयोगों पर विश्वास करते हैं, भारत की भाँति हृदय परिवर्तन पर हमारा विश्वास नहीं है, और न हमारे कार्यक्रम में शताब्दियों तक प्रतीक्षा करने के लिए समय है।'

'आपके कथन से मालूम होता है कि जनचीन के सामने कोई विशेष कार्यक्रम है?'

'अवश्य! हमें अपने सब भू-भागों पर अधिकार करना है।'

'क्या चीन पुनः युद्ध की स्थिति उत्पन्न करेगा? संसार के राष्ट्र जब युद्धों के बहिष्कार की योजनाएँ बना रहे हैं, अटूट शान्ति स्थापित करने के लिए व्यग्र हैं, तब क्या चीन युद्ध को पुनर्जीवित करेगा?'

'युद्ध तभी बन्द किए जा सकते हैं, जब नई सृष्टि होगी, और प्रकृति की संघर्ष शक्ति किसी दूसरे रूप में परिवर्तित होगी।'

'अर्थात् आपके कथनानुसार युद्ध कभी बन्द नहीं किए जा सकते?'

'नहीं, संघर्ष करना प्राकृतिक धर्म है। संसार में वही जीवित रहता है जो अपनी शक्ति से अपनी रक्षा करने में समर्थ है। प्रकृति निर्वीर्य को जीवित रहने का अधिकार प्रदान नहीं करती। जब तक प्रकृति के इस व्यापक धर्म का परिवर्तन नहीं होता, तब तक संसार से युद्ध अथवा संघर्ष कभी मिटाए नहीं जा सकते।'

'किन्तु उनको स्थगित किया जा सकता है?'

'हाँ उनका स्थगन केवल तैयारी के लिए होता है। आपके धर्म में भगवान ने बार-बार कहा है कि जब पृथ्वी पर भार बढ़ता है, तब मैं उत्पन्न होकर संहार करता हूँ। भार से अर्थ है जनसंख्या से। जितना अधिक जन-संख्या में विस्तार होगा, उतना ही अधिक पाप, अनाचार, द्वेष, ईर्ष्या, मत्सर, आदि आदि बढ़ेंगे, और वे संसार को दो भागों में विभक्त कर

उनमें से प्रत्येक अपने पक्ष के लिए युद्ध में प्रवृत्त होंगे। दोनों पक्षों का पराभव होगा और पृथ्वी पर पुनः धर्माचरण स्थापित होगा। आदिकाल से प्रकृति का यही नियम चल रहा है, उसमें कोई राजनीतिक शक्ति परिवर्तन नहीं कर सकती।'

'तब फिर चीन की बढ़ी हुई जनसंख्या उनके विनाश का कारण बनेगी।'

'चीन का विनाश होगा या नहीं, यह तो भविष्य की बात है, परन्तु यह उसके विस्तार के लिए अपनी पैतृक भूमि अवश्य चाहता है, और बिना युद्ध के वह अपनी भूमि प्राप्त नहीं कर सकता।'

'इसीलिए चीन युद्ध के लिए तैयार हो रहा है।'

'हाँ, उसने अपनी भूमि को प्राप्त करने के लिए अभियान भी कर दिया है।'

'कहाँ, किस ओर ?'

'चीन पहले तिब्बत पर अधिकार जमाना चाहता है, जिसका निगल जाना उसके लिए बहुत आसान है। लामाओं की संघर्ष शक्ति बहुत वर्षों तक निकम्मी पड़ी रहने से नष्ट हो गई है। जो देश जितना अधिक निरापद जीवन व्यतीत करेगा, उतना वह अकर्मण्य और निस्तेज बनेगा। जिस भूमि को लामा भोग कर रहे हैं, उसे चीन अपने अधिकार में सहज प्राप्त कर सकता है, और बड़े पैमाने पर उसे संघर्ष भी न करना पड़ेगा।'

'इसका मतलब यह है कि तिब्बत को चीन निगल जायगा ?'

'हाँ, उसने अपनी पुलीसी कार्यवाहियों से तिब्बत के शासक दलाई-लामा को तुम्हारे देश में शरण लेने के लिए मजबूर कर दिया है, और पंचमलामा को अपने अधीन कर तिब्बत पर लगभग अपना अधिकार जमा लिया है। कुछ थोड़े-बहुत खम्पा लोग हमारी मुखालफत कर रहे हैं, परन्तु आधुनिक चीन की शक्ति के समक्ष उनका विद्रोह ठहर नहीं सकता।'

'क्या इसी उद्देश्य से आपने हमें जाने नहीं दिया था ?'

'हाँ, असली कारण यही था। जब आप लोग जाने के लिए आकुल हो

रहे थे, तब चीन तिब्बत पर अधिकार जमा रहा था। भला उस समय आपको किस प्रकार हम यहाँ से जाने देते ?'

'किन्तु इस युद्ध से हमें कोई खतरा नहीं था।'

'आपकी जान का कोई खतरा नहीं था, किन्तु हमारे कार्यक्रम को था। आप वहाँ जाकर अपनी सरकार को हमारी गुप्त अभिसन्धियों से सावधान कर सकते थे, और फिर हमें उस भूखंड को अधिकार में लाने के लिए भारत से युद्ध छेड़ना पड़ता, जिसे हम बिना एक बूँद रक्त बहाए हजम करने में सफल हो गए हैं।'

'क्या चीन ने भारत की भूमि पर भी अपना अधिकार जमा लिया है ?' दामिनी के स्वर में आशंका झाँक रही थी।

'वस्तुत: भारत की भूमि पर नहीं, किन्तु भारत से संलग्न उस भूमि पर जिसे ब्रिटेन ने चीन से छीन लिया था और जो मैकमोहन रेखा के नाम से विख्यात है।'

'मैकमोहन रेखा से भारत की सीमा निर्धारित की गई थी।'

'उसको निर्धारित करने वाला तो ब्रिटेन था। उस समय संसार का वह सबसे सशक्त देश था। उसने मदान्ध होकर जैसा चाहा कर डाला, किंतु चीन ने उसे कभी अपनी और न तिब्बत की सीमा स्वीकार की थी। वस्तुत: चीन की सीमा तो उससे भी आगे गढ़वाल और असम प्रदेश तक थी।'

'मैं आपका कथन स्वीकार नहीं करती।'

'आपके स्वीकार करने अथवा न करने से चीन का अधिकार नष्ट नहीं हो सकता। तिब्बत सदा से चीन के अधिकार क्षेत्र में रहा, भूटान और नेपाल तथा अहोम अथवा असम चीन के सम्राट के अधीन राज्य थे तथा चीन को कर देते थे।'

'यदि आपकी बात मान ली जाय तो यह बड़ी प्राचीन घटना है। उसके पश्चात् न-मालूम कितने उथल-पुथल हुए हैं, और कम-से-कम हर्षवर्धन के समय से ये प्रान्त तो भारत के अधीन हैं। असम, जो उस समय प्राग्ज्यो-तिष के नाम से विख्यात था, के राजा भास्कर वर्मन ने हर्ष को सम्राट् स्वी-

कार किया और कर तथा भेंट भेजी थी।'

'इसी प्रकार अहोम के दूसरे राजा भी चीन की प्रभुसत्ता मानकर उपहार तथा कर भेजा करते थे।'

'इसीलिए तो ब्रिटिश सरकार ने एक कमीशन नियुक्त कर चीन तथा भारत की सीमा, जो दुर्भेद्य तथा दुर्गम पहाड़ों व जंगलों से आवृत्त थी, एक सिद्धान्त के अनुसार तय किया था। वह सिद्धान्त था कि हिमालय तथा उससे सम्बद्ध पहाड़ों से जो नदी निकल कर जिस प्रदेश की ओर बहे वह उसका क्षेत्र स्वीकार किया जाय।'

'किन्तु उसे स्वीकार किया किसने, प्रश्न यह है?'

'लेकिन कोई न कोई आधार सीमाओं को निश्चित करने के लिए मानना ही पड़ेगा।'

'नये आधार तथा सिद्धान्त की आवश्यकता कहाँ उत्पन्न होती है, जब सब कुछ शताब्दियों से निश्चित है।'

'अर्थात्?'

'अर्थात् यही कि हिमालय के दोनों तटवर्ती क्षेत्र चीन के हैं, असम और बर्मा भी उसके करद राज्य हैं?'

'इसे क्या चीन की मनमानी समझी जाय।'

'संसार शक्ति का पुजारी है। शक्ति विधि-विधान का आधार है, और शक्ति अधिकार का औचित्य प्रमाणित करती है। जब तक चीन निर्बल और पंगु था, तब तक उसके ऊपर अत्याचार, उत्पीड़न और नोच-खसोट होती रही और वह सब सहन करता रहा, परन्तु आज जब वह शक्तिमान है तब अपने खोए हुए प्रान्तों को प्राप्त करने के लिए उद्योग करेगा, इसमें किसी को क्यों आपत्ति हो।'

'मतलब यह कि चीन की भारत के साथ मैत्री केवल दिखावा है।'

'मैत्री होने से कोई अपना अधिकार नहीं छोड़ देता।'

'और पंचशील के सिद्धान्त?'

'वह हमारी कूटनीतिक चाल थी। यदि हमने पंचशील के सिद्धांत

स्वीकार न किए होते तो तिब्बत पर अधिकार करने के लिए हमें भारत से युद्ध करना पड़ता, क्योंकि ल्हासा में भारतीय छावनी थी। पंचशील मानने से भारतीय सेना हट गई और भारत ने तिब्बत पर चीन की प्रभुसत्ता स्वीकार की।'

'किन्तु तिब्बत का गृह-शासन तो दलाईलामा के अधीन रखा गया था।'

'जब एक बार चीन की प्रभुसत्ता तिब्बत और भारत ने मान ली, तब यह चीन के अधिकार की बात है। वह अनुपयुक्त शासक को हटाकर किसी उपयुक्त शासक को नियुक्त करे, अथवा उसे अपने संरक्षण में सीधे तौर पर ले लेवे।'

'किन्तु यह आचरण पंचशील के सिद्धांतों के विरुद्ध है।'

'नए कपड़े हम पहिनते हैं, और पुराने होने पर उन्हें उतारकर फेंक देते हैं, अर्थात् उनकी जब तक उपयोगिता रहती है, तब तक हम उन्हें धारण करते हैं। इसी प्रकार जब हमने देखा कि पंचशील के सिद्धान्तों को मानने से हमारा कार्य सहज में सिद्ध हो सकता है, तब हम उन्हें क्यों अस्वीकार करें। जहाँ उनकी उपयोगिता नष्ट हुई वहाँ हमने उसे अस्वीकार कर दिया। भारत को चाहिए कि वह उनका पालन करे और हमारी पितृ-भूमि जो सदियों से उसके अधीन चली आ रही है, हमें वापस कर दे, नहीं तो⋯।'

'नहीं तो क्या?'

'यही कि चीन को भारत से युद्ध करना पड़ेगा, जो वह हरगिज नहीं चाहता। दरअसल एशियाई राष्ट्रों के शत्रु हैं श्वेतांग और पश्चिमी राष्ट्र।' हमें छोटी-छोटी बातों पर न झगड़ना चाहिए। यदि थोड़ी-सी अनुत्पादक भूमि चीन के अधिकार में आ गई तो भारत की कोई विशेष क्षति नहीं हुई। हमारा मन राजी हो गया, और भावी असन्तोष की जड़ मिट गई।'

'यदि भारत यही करता रहा तो एक दिन काबुल, फारस, ब्रिटेन सभी अपने-अपने क्षेत्र माँगने लगेंगे, क्योंकि इन देशों का भारत पर कभी कब्ज़ा रहा है।'

'अभी हिन्दू और मुसलमानों का बटवारा हुआ, और पाकिस्तान बना। इसी भाँति हिन्दू और बौद्धों का भी बटवारा हो सकता है, जिसमें भारत का उत्तरी भाग, बिहार प्रान्त तथा असम बौद्धों को मिलेगा और चूँकि चीन भी बौद्ध है, अतएव इस भू-भाग पर चीन का आधिपत्य होना स्वाभाविक है।'

'तब आप लोगों की यह योजना है?'

'हाँ, यह योजना अभी पूर्ण नहीं हुई, बन रही है। समय पर उद्घाटन होगा।'

'अब यहाँ से हम जा सकते हैं?'

'हाँ, अब आपको यहाँ रोकने में हमारा कोई लाभ नहीं है। आपके भाई को मेरे पिता ने चीन की सामरिक तैयारी की झलक दिखाई है, जिससे आपको समझ लेना चाहिए कि भारत का कल्याण चीन से लड़ने में नहीं है। हमारे पास ऐसे भयानक अस्त्र हैं, जिनके समक्ष हाइड्रोजन बम की भी शक्ति नगण्य ठहरेगी। हमने ऐसे शस्त्रों का आविष्कार कर लिया है, जिनसे हम समस्त विश्व का संहार क्षण मात्र में कर सकते हैं। भारत से लड़कर हम विजयी हो सकते हैं, और यह हमारे लिए बहुत आसान है, परन्तु हम यत्किंचित शक्ति भी क्षीण करना नहीं चाहते। हम चाहते हैं—पश्चिमी राष्ट्रों का समूल विनाश, और उसी के लिए हम प्रयत्नशील हैं। आप हमारी ओर से यही सन्देश लेकर जाइए। अब आप विश्राम कीजिए। आपका बहुत समय लिया और आपकी नींद में विघटन उत्पन्न किया, जिसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।'

यह कहकर 'लू' बिना किसी उत्तर की प्रतीक्षा किए गुप्तद्वार से चली गई। उसके जाते ही वह अपने-आप बन्द हो गया।

दामिनी के विचार के लिए बहुत सामग्री मिल गई थी, वह विचारों में मग्न हो गई।

६

सूया को दिल्ली कारपोरेशन के चुनाव में सहज ही विजय मिल गई, किन्तु उसकी महत्वाकांक्षाएँ वहीं तक सीमित न रहीं। वह उसके मेयर पद को प्राप्त करने के लिए लालायित हो उठी। डाक्टर चिनमिन्ह के प्रयत्न तथा द्रव्य-वितरण से वह पद भी उसे प्राप्त हो गया। जिस दिन वह मेयर घोषित हुई, उस दिन उसने अनुमान कर लिया कि राजनीतिक क्षेत्र में उसका प्रवेश हो गया, और सार्वजनिक सेवा के सब मार्ग उसके लिए खुल गए।

चीनी-हिन्दी मैत्री संघ के सदस्यों को भी सूया की विजय से अतीव सन्तोष हुआ, और उसको बधाई देने के लिए अभिनंदन समारोहों की धूम मच गई। इन अभिनंदन समारोहों का व्यय भार गुप्त रूप से डाक्टर चिन-मिन्ह उठाया करते थे, इससे न किसी को कष्ट होता था, और न उनमें कमी होने पाती थी। इन अभिनंदनों में सर्वत्र सूया के गुणों तथा योग्यताओं की प्रशंसा होने लगी। समाचार पत्रों के संचालकों को भी वड़ी-वड़ी रकमें सूया की प्रशंसा लिखवाने के लिए दी गई, जिसका परिणाम यह हुआ कि सूया युग प्रवर्त्तक मानी जाने लगी। चीनी-हिन्दी मैत्री की दुहाई चारों ओर फिरने लगी, और जनता को विश्वास दिलाया जाने लगा कि भारत और चीन, दो पृथक् देश नहीं वरन् एक हैं, और उनको अलग करने वाली हिमा-लय पर्वत माला केवल नकशों में दिखाने के लिए है

अनेक अभिनंदनों के पश्चात् डाक्टर चिनमिन्ह ने यह अनुभव किया कि यदि कुछ अभिनंदन-समारोह भारतीय राजनीति के प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा आयोजित किए जायँ तो उनसे सूया के सम्मान में चार चाँद लग जाएँ। उसने ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों की एक सूची बनाई, जिनमें करुणा सुन्दरी का नाम सबसे पहले रखा गया। अब प्रश्न यह उठा कि उनको सुझाव

कैसे और किसके द्वारा दिया जाय। यद्यपि सूया के चुनाव में उन्होंने उसके नारी होने के नाते बहुत दौड़-धूप की थी, तथापि अभी तक उसका अभिनंदन करने का विचार उनके मन में नहीं आया था। डाक्टर चिनमिन्ह ने सूया के अभिनंदन का प्रस्ताव लेकर करुणा सुन्दरी के पास जाने का निश्चय किया, जब कोई अन्य उपयुक्त व्यक्ति इस कार्य के लिए नहीं दिखाई दिया। इसी आशय से वह एक दिन प्रातः काल उसके निवास स्थान पर गया। वहाँ विविध कार्यों के लिए समागत व्यक्तियों की भीड़ जमा थी। उनमें से अनेकों उसको पहचानते थे। उसने नतमस्तक हो सबका अभिवादन किया, और चपरासी के द्वारा अपने आगमन की सूचना भेजी।

करुणा सुन्दरी अभी बैठक में नहीं आई थी। चपरासी से सूचना पाकर वह उसके साथ ही बाहर आई, और समागत व्यक्तियों का समुचित रीति से अभिवादन कर डाक्टर चिनमिन्ह से बोली—'कहिए डाक्टर साहब, आपने कैसे कष्ट किया?'

चिनमिन्ह ने विनम्रता से उत्तर दिया—'यों ही दर्शनों के लिए चला आया। आपके परिश्रम और सक्रिय सहयोग से सू ने मेयर का प्रतिष्ठित पद प्राप्त किया है।'

'वह सर्वथा उसके योग्य थी, और योग्य व्यक्तियों को योग्य पद मिला करता है, इसमें मेरे सहयोग से कोई विशेषता नहीं आई।'

'यह तो हम लोग जानते हैं कि आपके सहयोग से हमें कितना बल प्राप्त हुआ है, और उसके अभिनंदनों में आपकी अनुपस्थिति हम लोगों को खलती है।'

डाक्टर चिनमिन्ह को बैठक में आने को आमंत्रित करती हुई बोली—'शायद आप जानते होंगे कि मेरे ऊपर कितनी संस्थाओं का भार है। इतना भी मुझे अवकाश नहीं मिलता, कि घर-गृहस्थी के जरूरी काम देख सकूँ, विश्राम की तो बात ही छोड़िए।'

'यह हम सब भली भाँति जानते हैं कि आपका एक-एक क्षण पहले से सुरक्षित होता है हमेशा लौ यही लगाए रहते हैं कि आप पधार कर हमारे

आयोजनोंको आशीर्वाद देने को भी कुछ समय निकालें।'

'हाँ, कोशिश तो अवश्य करती हूँ, परन्तु कभी हज़ार कोशिशें करने के उपरान्त भी अवसर नहीं मिल पाता। अच्छा, कहिए क्या कोई आप आयोजन करने जा रहे हैं?'

'विचार तो है, किन्तु मैंने भी पक्का इरादा कर लिया है कि जब तक आप समस्त भार नहीं उठाएँगीं, मैं कोई समारोह नहीं करूँगा।'

'ऐसी क्या बात है? आपके साथ मेरा सहयोग रहेगा।'

'आपका सहयोग तो हमेशा हमें प्राप्त है, परन्तु मेरी इच्छा है कि आपके द्वारा सूया का अभिनन्द-कार्य सम्पन्न हो।'

'हाँ-हाँ, कह तो रही हूँ कि मैं उसमें सहयोग करूँगी।'

'मेरा मतलब यह है कि मेरी ओरसे अभिनंदन समारोह आपकी कोठी में हो, यद्यपि समस्त व्यय-भार मैं वहन करूँगा।'

'अब मैं आपका मतलब समझी। आप चाहते हैं कि 'नाम मेरा हो और काम तेरा' अर्थात् व्यय आपका हो।'

'हाँ, कुछ ऐसा ही समझिए।' यह कहकर वह मुस्कराने लगा।

'किन्तु यह फितरत मुझे पसन्द नहीं कि दुनिया में नाम हो कि करुणा सुन्दरी श्रीमती सूया का अभिनन्दन कर रही हैं, और उसका खर्च उठावें उसके पिता।'

''इसमें दोष क्या है? आप...।'

'नहीं नहीं मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है। यदि अभिनंदन करूँगी तो व्यय करने की ताकत भी रखती हूँ।'

'यह कौन नहीं जानता कि आपके लिए पाँच-दस हज़ार रुपयों का कोई मूल्य नहीं है। आपके घर की दानशीलता तथा परोपकारी वृत्ति से दिल्ली के लोग ही नहीं, बल्कि अन्य-अन्य शहरों की भी जनता परिचित, आभारी और कृतज्ञ है। किन्तु जब आयोजन मैं कर रहा हूँ, तब आपको क्यों कष्ट दूँ।'

'आप अपना आयोजन कीजिए और मैं अपना करूँगी। आपका सुझाव

ठीक है, नारी होने के नाते मुझे सूया का अभिनंदन करना उचित है। देखिए, समय निकाल कर कोई छोटा सा आयोजन मैं भी कर डालूँगी, किंतु अभी निश्चित रूप से नहीं कह सकती कि उसे कब कर सकूँगी।'

'हाँ, हाँ, अभी बहुत समय है। कुछ ऐसी कृपा है आपकी कि नित्य कोई न कोई अभिनंदन समारोह हुआ करता है, और पत्रों में भी उनका विवरण प्रकाशित होता है। शायद आपकी नजरों से भी एक-दो लेख गुज़रे हों।'

'हाँ मैंने देखे हैं। सूया के चुनाव से आपके मैत्री संघ को भी यथेष्ट बल मिला है।'

'जी हाँ। इससे दोनों देशों की मैत्री बहुत दृढ़ हो गई है। अब तो ऐसा मालूम होता है कि हिन्दी और चीनी जनता एक चने की दो दाल की भाँति रहेंगी।'

'ईश्वर करे ऐसा ही हो। भारत भी तो चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बनाने के लिए घोर आन्दोलन कर रहा है, यद्यपि इस कार्य से हमारा परम हितैषी और मित्र अमरीका अप्रसन्न रहता है।'

'पश्चिमी राष्ट्र हमारी उन्नति देख सकते हैं। उपनिवेशी मनोवृत्ति में मूलतः कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, यद्यपि उसके स्वरूप का परिवर्तन अवश्य हो गया है।'

'आपका विचार गलत है डाक्टर चिनमिह्न ! उपनिवेशवाद के दिन लद गए। संसार की जैसी स्थिति आजकल है, उससे मैं यह कह सकती हूँ कि अब कोई देश किसी अन्य देश पर शासन नहीं कर सकता, चाहे वह कितना ही कमज़ोर क्यों न हो। संसार में एक समय एक ही विचार-धारा बहा करती है। साम्राज्यवादी धारा जिस समय बह रही थी, उस समय राष्ट्र अपने साम्राज्य-विस्तार में संलग्न रहते थे, परन्तु अब प्रजातन्त्र-जनतन्त्र का युग है, अतएव उपनिवेशवाद अर्थात् साम्राज्यवाद पनप नहीं सकता। नराधिपों का अवसान हो रहा है, और समस्त संसार में राजाओं को आप आज उँगलियों पर गिन सकते हैं। सम्राट् नामधारी राजा कोई नहीं रहा। जितनी 'शाहियाँ' बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में थी, वे सब नष्ट हो गई हैं।'

'मैं इस प्रश्न पर विवाद नहीं करना चाहता। हाँ, इतना जरूर है कि आजकल की जनता जाग्रत है, और अब एक व्यक्ति द्वारा समस्त प्रजा का शोषण होना संभावना की सीमा का उल्लंघन कर गया है। अच्छा, यह बताइए कि मैं कब तक सू का अभिनंदन करूँ?'

'यह तो आपकी सुविधा पर निर्भर करता है।'

'आप तो उसके संचालन का भार ग्रहण करेंगी?'

'मैंने आपसे कहा नहीं कि मेरे पास समय का अभाव है। इसके अतिरिक्त मेरे पति का स्वास्थ्य भी दिन पर दिन गिरता जा रहा है। उन्हें काश्मीर का जलवायु बहुत अनुकूल पड़ता है, इसलिए उन्हें वहाँ ले जाना अति आवश्यक हो गया है। हम लोग कब प्रस्थान कर दें, यह बिल्कुल निश्चित नहीं है। आप आयोजन प्रारंभ कीजिए, और मैं उसमें शरीक होने की भरपूर कोशिश करूँगी। हाँ, मैं उसके संचालन का भार उठाने में असमर्थ हूँ।'

'अच्छी बात, आपकी उपस्थिति से मेरे गौरव की अभिवृद्धि होगी, किन्तु आप से प्रार्थना है कि सू का एक छोटा-सा अभिनंदन आपके द्वारा भी हो जाय।'

'अवश्य, कोशिश में यही करूँगी। मुझे अपने दायित्व का पूरा ज्ञान है, परन्तु परिस्थितियों से मनुष्य लाचार रहता है। अच्छा......।'

डाक्टर चिनमिन्ह ने उनके संकेत का आशय समझ कर उठते हुए कहा—'मैंने आपका बहुत समय लिया, इसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।'

करुणा सुन्दरी उसको पहुँचाने के लिए द्वार तक आई, और विदा करते हुए कहा—

'आप निश्चिन्त होकर सूया के अभिनंदन की तैयारी कीजिए। मैं यथाशक्ति और अवकाश उसमें अपना सहयोग दूँगी।'

डाक्टर चिनमिन्ह आश्वस्त होकर चले गए, और करुणा सुन्दरी अन्य व्यक्तियों से उनका दुख-दर्द सुनने में संलग्न हो गई।

७

लाला मनोहरलाल का स्वास्थ्य दिनों-दिन गिरता जा रहा था। उनका मधुमेह रोग अनेकानेक उपचारों के बावजूद अच्छा नहीं हो रहा था। डाक्टर उन्हें पूर्ण विश्राम लेने का परामर्श देते, किन्तु उसका यथारूप पालन नहीं हो पाता था। उनके मित्रों तथा सहायता प्राप्त करनेवालों की संख्या अत्यधिक थी और वे किसी भाँति उनका पीछा न छोड़ते थे। उनकी दयालु प्रकृति तथा उदार स्वभाव भी उन्हें आराम नहीं लेने देता था। जहाँ किसी की विपत्ति का समाचार मिला अथवा किसी मित्र अथवा उसके परिवार के किसी सदस्य की रुग्णता का हाल ज्ञात हुआ, वह अपनी पीड़ा, दुख, कष्ट सब भूल कर उसकी सहायता में लग जाते। करुणा सुन्दरी, उनका पुत्र सुशील तथा अन्य सम्बन्धित मित्र उन्हें मना करते, किन्तु वह किसी की बात न सुनकर उसी उद्योग में लगे रहते। परिणाम स्वरूप उनका रोग दिन-पर-दिन भयंकर होता गया। करुणा सुन्दरी उनके गिरते हुए स्वास्थ्य से चिन्तित हो उठी और दिल्ली छोड़ने का इरादा करने लगी, क्योंकि पूर्ण विश्राम उन्हें दिल्ली के बाहर ही मिल सकता था।

एक दिन दोपहर के भोजन के समय जब मनोहरलाल से कुछ भी खाया न गया, तब उसी दिन अपने सार्वजनिक जीवन से अवकाश लेने का निश्चय करके करुणा सुन्दरी ने कहा—'अब हमें वायु परिवर्तन के लिए कहीं दूसरी जगह चलना चाहिए।'

'क्या तुमको अवकाश है ?'

'अपने काम से तो अवकाश लिया जा सकता है, किन्तु दूसरों के कामों से कभी अवकाश मिले, यह असंभव है।'

'तब फिर तुम कैसे चलोगी ?'

'मैं तो सब काम छोड़कर चल सकती हूँ, किन्तु तुम अपनी कहो।

तुम्हारे लिए दिल्ली छोड़ना सदैव कठिन रहा है। हमेशा टालू मिक्श्चर पिलाया करते हो।'

'क्या करूँ, लोग छोड़ते ही नहीं। अपने मित्रों की विपत्ति भी नहीं देखी जाती। न-मालूम वे कितना आशाएँ लेकर आते हैं, फिर मैं कैसे उन्हें निराश करूँ।'

'इसीलिए तो कहती हूँ कि दिल्ली हमें शीघ्र-से-शीघ्र छोड़ देनी चाहिए।'

'चलो, मुझे क्या आपत्ति हो सकती है ? अभी आज सवेरे तुम सूया के अभिनंदन करने का कार्यक्रम बना रही थी, उसका क्या होगा ?'

'होना क्या है, अभिनंदन नहीं होगा। एक बात मैं तुम्हें बतलाना चाहती हूँ कि न-मालूम क्यों मेरे मन में इस काम के लिए कोई उत्साह नहीं है।'

'मैं आज यह एक नई बात सुन रहा हूँ। उसके चुनाव के दिनों में मैंने एक-दो बार मना भी किया, किन्तु तुमने हमेशा की तरह सुनी-अनसुनी कर दी।'

'बस तुम्हारे इस प्रकार के दोषारोपण से मेरे मस्तिष्क का संतुलन बिगड़ जाता है। तुम ही बताओ, आजतक मैंने कौन काम तुम्हारे पूछे बिना किया है। तुमने ही पहले दिन उसे उत्साहित कर चुनाव में खड़े होने का निमंत्रण दिया था। मैं तो तुम दोनों के परामर्श के पश्चात् आई थी। याद है न ?'

'मैं बात को बढ़ाना उचित नहीं समझता...'

'नहीं नहीं कह डालिए। मन का गुबार निकल जाने में कल्याण है।'

'लो, अब तुम लड़ने पर उतर आईं।'

'मैं लड़ती नहीं, पूछती हूँ कि मैंने यदि तुम्हारी आज्ञा का पालन किया तो भी मेरा अपराध है ?'

'मैंने कब कहा था कि तुम उसको मेयर बनने में सहायता दो।'

''हुजूर, मैंने नहीं, उसके रुपयों ने उसकी सहायता की है। कुछ मालूम है उसने आल्डर मैनों के एक-एक वोट पाँच-पाँच हज़ार रुपयों में खरीदे हैं।

अपने दोनों चुनावों में उसने कई लाख खर्च किए हैं। डाक्टर चिनमिन्ह के पास तो रुपयों की खान मालूम होती है । उसने प्रत्येक कार्यकर्त्ता को सब प्रकार से सन्तुष्ट रखा है। उस क्षेत्र में जहाँ से वह खड़ी हुई थी, उसने शराब की नदी बहा दी थी। न-मालूम उसने कितनी मिठाई घर-घर बटवाई, और गरीबों की गरीबी कई दिनों के लिए दूर कर दी। बच्चों में उसने खिलौने बटवाए, और चुनाव के दिन तो ऐसा मालूम होता था कि तमाम क्षेत्र निमंत्रित है । मैं यह रंग देखकर दंग रह गई। आजतक मैंने चुनावों में इतना खर्च होते नहीं देखा है।'

'मैंने भी यही सुना है कि सूया के क्षेत्र वाले निहाल हो गए हैं।'

'हाँ, और यह बात मुझे एक विश्वस्त सूत्र से मालूम हुई है कि उसने प्रत्येक कारपोरेटर को दो-दो हज़ार से कम भेंट नहीं किए हैं।'

'क्या किसी ने भी उस रकम को ठुकराने का साहस नहीं किया?'

'भला आती हुई लक्ष्मी को कौन ठुकरायेगा? इस ज़माने में तुम्हारा जैसा कोई बुद्धू तो है नहीं जो अपना धन लुटा कर प्रसन्न होता है।'

'अपना धन लुटाने की बात नहीं है, लेकिन यह बात है ईमानदारी की।'

'जब आपकी 'डेमोक्रेसी' की नींव ही पूँजी पर आधारित है, तब पूँजी का उपयोग होगा; इसमें आश्चर्य क्या है? आपकी 'डेमोक्रेसी' तो पूँजी-पतियों का खिलौना है।'

'डाक्टर चिनमिन्ह कोई बड़ा पूँजीपति नहीं है। दाँतों की चिकित्सा की एक छोटी-सी दूकान है।'

'हाँ, परन्तु सूया की ससुराल वाले तो धनी हैं।'

'मुझे मालूम है, उन लोगों ने एक पैसा भी खर्च नहीं किया है। लाला ज्वालासिंह से मेरी भेंट हुई थी। वह तो उसके चुनाव में पड़ने से बहुत क्षुब्ध थे, और पुत्र-बहू को गालियाँ दे रहे थे। उनके रहने के लिए अपनी एक दूसरी कोठी दे दी है, और वह कोई सम्पर्क उन दोनों से नहीं रखते।'

'एक विदेशिनी हमारी संस्कृति में कब खप सकती है?'

'हालाँकि कैप्टेन को अपने पिता से कोई आर्थिक सहायता नहीं मिलती, किन्तु रहते हैं दोनों बड़े ठाठ से। समझ में नहीं आता कि उनके पास कहाँ से इतना द्रव्य आता है। इसमें कोई-न-कोई रहस्य अवश्य है।'

'हाँ, कोई इस साधारण चुनाव के लिए दस-बारह लाख रुपया उस समय तक खर्च नहीं करेगा, जबतक कोई खास लक्ष्य न हो।'

'हाँ, मेरा भी यही ख्याल है। कह तो रहा हूँ कि इसके भीतर कोई रहस्य है ज़रूर।'

'अच्छा, क्या तुमने कुछ अनुमान किया है?'

'मेरा अनुमान है कि डाक्टर चिनमिन्ह को यह रकम कहीं बाहर से, या तो चीनी सरकार से या किसी संघ से इस चुनाव में खर्च करने के लिए मिली है।'

'चीनी संघ या चीनी सरकार का हमारे कारपोरेशन के चुनाव से क्या सम्बन्ध हो सकता है?' करुणा सुन्दरी ने व्यंग्य किया।

'प्रत्यक्ष में कोई सम्बन्ध नहीं है, किन्तु अप्रत्यक्ष हो सकता है।'

'वह क्या?'

'यही कि चीन किसी गंभीर उद्देश्य से हमारे देश की राजनीति में प्रवेश करना चाहता हो। इधर कई वर्षों से 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' का आन्दोलन बड़ा जोर पकड़ रहा है। इसके संचालक प्रमुखतः चीनी हैं। इसके द्वारा वे हमें भुलावे में रखना चाहते हैं, क्योंकि अभी संसार की आँखों में धूल झोंककर चीन ने तिब्बत को आत्मसात कर लिया है। मेरा अनुमान है कि वह अब भारत को भी निगलना चाहता है।'

'तिब्बत की बात दूसरी थी, उसकी प्रभुसत्ता वहाँ पर थी। इसके अतिरिक्त तिब्बत में जो अत्याचार जनता पर होते हैं, उनको दूर करने का बहाना उसके पास था, किन्तु भारत में वह किस प्रकार प्रवेश कर सकता है। हमारी उसकी मैत्री है, और पंचशील के सिद्धान्तों पर वह प्रथम हस्ताक्षर करने वाला है।'

'कूटनीति में ऐसे हस्ताक्षरों का कोई मूल्य नहीं होता। चीन की

आबादी उसके लिए एक बड़ा सिर दर्द है। वह अपने निवासियों के लिए भूमि चाहता है और दरअसल हमारी यह सबसे बड़ी भूल थी कि हमने सिद्धान्तवादिता के जोश में तिब्वत को उसके हाल पर अकेला छोड़ दिया। वहाँ नाम-मात्र के लिए भी सैनिक शक्ति नहीं थी, और जो दायित्व ब्रिटिश भारत ने उसकी रक्षा के लिए उठाया था, वह स्वतन्त्र भारत ने छोड़ दिया। कम-से-कम मैं इसे तिब्वत के साथ विश्वासघात ही कहूँगा।'

'हमारी नीति है कि किसी देश में विदेशी सैनिक न रखे जावें। हमारा यही आन्दोलन संसार में चल रहा है। अमेरिका के साथ हमारा विरोध केवल इसी बात पर है। अन्य देशों में उसके सैनिक अड्डों की हम तीव्र आलोचना करते हैं, तब फिर कैसे हम स्वयं तिब्वत में अपनी सेना रख सकते थे?'

'किन्तु हमें अपनी सेना उस समय तक रखनी थी जब तक तिब्बत की सैनिक शक्ति आत्मा रक्षा करने योग्य न हो जाती।'

'किन्तु हमने सन्धि द्वारा उसकी रक्षा का प्रबन्ध किया था।'

'तुम्हारा यह कथन तो उसी प्रकार है जैसे बिल्ली की सदाशयता पर विश्वास कर दूध के प्याले की रक्षा का भार इसी को सौंपा जाय।'

'परन्तु चीन एक महान् राष्ट्र है, उसकी बात पर विश्वास करना पड़ता है।'

'बेईमानी हमेशा महान् राष्ट्र ही करते हैं, क्योंकि उनकी महत्वाकांक्षाएँ उतनी ही महान् होती हैं।'

'तब आप यह कहना चाहते हैं कि हमने दूरदर्शिता से काम नहीं लिया।'

'हाँ, हमको तिब्बत की सुरक्षा का पूर्ण प्रबन्ध करके वहाँ से सेना हटाना था। चूँकि हमने चीन पर विश्वास किया, इसीलिए तिब्बत का निपात हुआ। तिब्बतियों की दुर्दशा के लिए हम नैतिक रूप से उत्तरदायी हैं। यदि हम कुछ नहीं तो तिब्बत को राष्ट्र-संघ का सदस्य बनवाने के बाद अपना संरक्षण हटाते।'

'किन्तु तिब्बत कभी स्वतन्त्र नहीं रहा।'

'मैं पूछता हूँ, वह अधीन किसके रहा ?'

'चीन और तिब्बत यथार्थ में दो भिन्न-भिन्न संस्कृति के भिन्न-भिन्न देश हैं। उनमें कोई समानता नहीं है। फिर किस प्रकार उसे चीन के अधीन राष्ट्र बनाया गया। क्या यह हमारी नीति के प्रतिकूल नहीं हुआ ?'

'कहती तो हूँ, उसकी स्वतन्त्रता की गारन्टी चीन से ले ली गई थी ?'

'उस गारन्टी को लेकर आप चाटिए, तिब्बती चाटें और चीन उसे रद्दी की टोकरी डालकर उस पर अधिकार जमा कर अपना साम्राज्य बढ़ावे।'

'तो क्या भारत को तिब्बत का उद्धार करने के लिए चीन से युद्ध करना चाहिए ?'

'वह आप कर नहीं सकती, क्योंकि युद्ध द्वारा विवाद को हल करना आपकी नीति के विरुद्ध है।'

'फिर क्या किया जाय ?'

'चुप बैठ कर तमाशा देखिए, हिन्दी-चीनी भाई-भाई के नारे लगाइए, चीनियों को यहाँ की राजनीति में प्रवेश कराइए, और यहाँ की सत्ता उन्हें हस्तान्तरित करने में अपना सहयोग दीजिए।'

'तुम बड़ी जली-कटी सुना रहे हो।'

'जली-कटी नहीं, सत्य कह रहा हूँ, और सत्य हमेशा कटु होता है।'

'राष्ट्र संघ में हमें तिब्बत के लिए कुछ प्रयत्न करना चाहिए।'

'वह भी आपकी शक्ति के बाहर की बात है, क्योंकि उस अभागे देश को स्वतन्त्र राष्ट्र माना नहीं गया, और न वह राष्ट्र संघ का सदस्य ही है। चीन का जादू आप पर चल गया, और जैसा उसने चाहा आपसे करा लिया। अब आपके पास जीभों की लपालप के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है।'

'आप तो यह भी कहते हैं कि चीन का प्रसार भारतीय क्षेत्र की ओर ही होगा।'

'तिब्बत की स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए आस-पास के भारतीय

क्षेत्र उसको अपने अधिकार में करने होंगे। पाकिस्तान में अमरीकी अड्डा है, उसकी भी तो चीन को चिन्ता है। उसके मुकाबले के लिए वह अवश्य कोई उपाय करेगा। चीनी राजनीतिज्ञ भोले-भाले नहीं हैं। पीठ में छुरा भोंकने की नीति वे शताब्दियों से अपनाए हुए हैं। साँप पर भले विश्वास कर लो कि वह डसेगा नहीं, किन्तु चीन पर विश्वास करना सदैव अपने लिए घातक होगा।'

'उसका कुछ परिचय तो अब मिल गया है, किन्तु यदि भारत और चीन में कहीं युद्ध छिड़ गया तो हमारे बच्चे चीन में बन्दी जीवन व्यतीत करेंगे। मैं उनके चीन जाने के पक्ष में कभी नहीं थी, परन्तु तुमने उन्हें ठेल-ठेलकर भेजा है।'

'तुम्हारे बच्चों को कोई खतरा उठाना नहीं पड़ेगा, वे अब शीघ्र आने वाले हैं।'

'क्या कोई समाचार मिला है ?'

'समाचार नहीं, किन्तु परिस्थितियों को समझ कर अनुमान लगाता हूँ।'

'वह क्या ?'

'प्रमोद और दामिनी को तुम्हारी सन्तान होने से उन लोगों ने किसी खास उद्देश्य से उनको रोका है। सच्चा हाल तो उनके आने पर मालूम होगा।'

'कहीं उनको जमानत के रूप में तो नहीं रोक लिया जायगा ?'

'देखो, तुम्हारा नारी-हृदय कितनी जल्दी प्रकट हो गया। अपनी सन्तान के लिए छटपटाने लगी। देश के ऊपर तो सन्तान नहीं है।'

'तुम हमेशा मेरी कमजोरियों को देखने के लिए आँख गड़ाए रहते हो। मैं इस कमज़ोरी के लिए शर्माती नहीं। यही तो मातृत्व का गौरव है।'

'अब कुछ पत्नीत्व का गौरव-लाभ करो।'

'मैंने निश्चय कर लिया है कि कल प्रातःकाल हम लोग काश्मीर चल देंगे। इस बार की यात्रा हम अपनी कार से करेंगे।'

'निश्चय कर लिया है ?'

'हाँ, पूरा निश्चय कर लिया है, अब कोई मीन-मेष नहीं है।'

'और तुम्हारी सन्तानें जो वापस आ रही हैं, उनका स्वागत यहाँ कौन करेगा ?'

'वे जब आयेंगे, तब वे भी काश्मीर चले आयेंगे।'

'जानती हो काश्मीर और चीन की सीमा मिली हुई है। चीन का आक्रमण यदि होगा, तो पहले वहीं होगा।'

'यदि चीन ने यह गलती की तो भारत भी उसका मुकाबला करेगा, और उसमें भारतीय नारी पीछे नहीं रहेंगी।'

इसी समय नौकर ने आकर सूचना दी कि टेलीफोन पर एक संसद सदस्य आवश्यक कार्य से बुला रहे हैं। करुणा सुन्दरी उठकर चली गई, और मनोहरलाल विचारों में मग्न हो गए।

८

दूसरे दिन लगभग प्रातःकाल आठ बजे लाला मनोहरलाल तथा करुणा सुन्दरी ने अपनी नई गाड़ी फिएट से काश्मीर के लिए प्रस्थान किया। उनकी ओर से प्रचार यह किया गया था कि वे किसी आवश्यक कार्य से चंडीगढ़ जा रहे हैं, और दो-तीन दिन बाद लौट आवेंगे। डाक्टर चिनमिन्ह को जब यह समाचार मिला, तब उसे निश्चय हो गया कि उनकी ओर से सूया का अभिनन्दन नहीं होगा, और यह भी सन्देह हुआ कि शायद इसीसे बचने के लिए उन लोगों ने यह बहाना किया है। सूया के अभिनंदन यों तो सैकड़ों हुए थे, परन्तु उनमें भाग लेने वालों की संख्या अति अल्प होती थी, और वे सब डाक्टर चिनमिन्ह के द्वारा ही आयोजित किये जाते थे, तथा उनका व्यय वही उठाते थे। शनैः शनैः यह भेद दिल्ली निवासी जान गये थे, और सिवाय चीनी-हिन्दी मैत्री संघ के सदस्यों के, साधारण

जनता उनमें उपस्थित नहीं होती थी, वरन् वह उनका वहिष्कार भी करती थी, क्योंकि चीन का आक्रमण तिब्बत पर होने से वे सद्भावनाएँ जो चीन के प्रति जागृत हुई थीं, स्वतः मन्द होकर नष्ट हो रही थीं। चीनी-हिन्दी मैत्री संघ के सदस्यों का उत्साह भी कुंठित हो गया और वे भी उससे दूर हटने लगे। डाक्टर चिनमिन्ह को आशा थी कि करुणा सुन्दरी के सहयोग से शायद स्थिति में सुधार हो, परन्तु अधबिच में छोड़कर चले जाने से वह क्रुद्ध हो गया, और उसने उनके आचरण को विश्वासघात कहकर सन्तोष किया।

करुणा सुन्दरी के प्रस्थान की सूचना पाकर वह सूया से परामर्श करने के लिए उसकी कोठी में गया। उस समय सूया सोकर उठी नहीं थी। तीव्र मदिरा के खुमार से उसका मस्तिष्क भन्ना रहा था और उससे त्राण पाने के लिए वह मदिरा की शरण में जाने का संकल्प कर रही थी। कैप्टेन अर्जुनसिंह नित्य की भाँति फौजी कार्यालय में चले गये, और वह उस समय अकेली शैय्या पर करवटें बदल रही थी। डाक्टर चिनमिन्ह को कोई सूचना भेजने की आवश्यकता नहीं थी—बिना किसी रोक-टोक के उसका आवागमन होता था, और जब से सूया चुनाव लड़ने के लिए राजनीति प्राङ्गण में उतर आई थी, तब से समय-असमय का विचार-भेद भी तिरोहित हो गया था। जब उसे नौकरों से मालूम हुआ कि वह शयनागार से नहीं निकली, वह सीधा वहाँ चला गया। सूया उस समय मदिरा का गिलास होठों से लगाए, उसके पान में संलग्न थी।

डाक्टर चिनमिन्ह उसके असमय मदिरा पान से कुछ क्षुब्ध हुआ, और करुणा सुन्दरी के प्रति जो आक्रोश था, वह इसके इस आचरण से उसके ऊपर ज्वालामुखी की भाँति फूट पड़ा। उसने सक्रोध कहा—'यह क्या हो रहा है। रात-दिन शराब में गर्त रहने से तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। तुम नहीं जानती कि तुम्हारे ऊपर कैसी-कैसी आपत्तियाँ आने वाली हैं?'

सूया ने मदिरा का घूँट पीकर कहा—'क्यों क्या हुआ? ऐसा कौन हिमालय टट पड़ा, जिससे तुम इतना अस्थिर हो रहे हो?'

'जानती हो करुणा सुन्दरी चली गई हैं।'

'चली गईं तो चले जाने दो, अब मुझे उनकी कोई आवश्यकता भी नहीं।' उसने मदिरा पीकर गिलास मेज पर सरका दिया।'

''तुम तो शराब पीकर गुलछर्रे उड़ाने में मशगूल रहती हो, इससे तुम्हारी आँखें बन्द हैं, और तुम नहीं देख पातीं कि दिन पर दिन हमारे सहायकों की संख्या कम होती जाती है।'

'उनकी संख्या कम होती जाती है, तो थोड़ी सी सम्पत्ति और लुटाओ। भूखे देश के निवासी चाँदी के जूतों की मार से ठीक रहते हैं।'

'तुम इसी विश्वास को लिए आँखें मूँदे बैठी रहो। तुम्हारी नींद तो जब टूटेगी, जब भारत सरकार का वारंट गिरफ्तारी आएगा।'

'वारंट गिरफ्तारी! तुम कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहे हो। भला दिल्ली के मेयर के खिलाफ कौन वारंट गिरफ्तारी निकाल सकता है?'

'इस ख्याल में न रहो। विदेशी गुप्तचरों को कोई उच्च पद संरक्षण नहीं दिला सकता।'

'या तो कल रात को तुम बहुत पी गए हो, जिसका खुमार अभी बाकी है, या फिर पीकर आए हो, और मुझे न पीने का उपदेश दे रहे हो।'

'यह तुमको मालूम होना चाहिए कि मैं काम के समय शराब तुम्हारी भाँति नहीं पिया करता।'

मदिरा ने उसके मस्तिष्क को परिष्कृत कर दिया था। वह मुस्कराती हुई बोली—

'मेरा दिमाग तो शराब से शुद्ध होकर काम करने लगता है, और मैं तुम्हें सलाह दूँगी कि तुम मेरे साथ एक पेग पीकर अपने असन्तुलित मस्तिष्क को ठीक करो।' कहती हुई उसने एक गिलास में थोड़ी मदिरा डाल कर उसकी ओर बढ़ाई। डाक्टर चिनसिन्ह क्रोध से उबलने लगा। उसने गिलास लेकर कमरे की खिड़की से लॉन पर फेंक दिया। क्षण भर के लिए सूया की भृकुटियाँ चढ़ी, परन्तु दूसरे ही क्षण वह खिलखिलाकर हँसती हुई बोली—'अब बूढ़ा परहेज़गार बना है। हज़ारों चूहे मार कर अब शायद

तुम हज़ करने जा रहे हो।'

डाक्टर चिनमिन्ह ने सक्रोध कहा—'सू ! होश में आओ ज़रा, तुम क्या भूली जाती हो कि तुम किससे बातें कर रही हो ?'

'जानती हूँ, बहुत अच्छी तरह जानती हूँ, कि मैं अपने झूठे पिता से बातें कर रही हूँ, उस पिता से जो मुझे अंक-शायिनी बनाने के लिए न-मालूम कब से आतुर है। परन्तु पिता जी ! मैं तो तुम्हें पिता जी मान चुकी हूँ इसलिए तुम्हारी इच्छा कभी पूरी नहीं होगी।'

'तुम इस समय अपने होश में नहीं हो। शराब ने तुम्हारा दिमाग़ बिगाड़ दिया है।'

'मैं कहती हूँ कि शराब मेरी दिमागी ताकत बढ़ाती है, और मेरी बुद्धि उतनी ही प्रखर होगी, जितनी मैं पिऊँगी। चूँकि तुम गुस्सा हो रहे हो, इसलिए उसका मुक़ाबला करने के लिए मुझे कुछ थोड़ी और पी लेनी चाहिए।' कह कर उसने बोतल ही अपने मुख से लगा ली।

डाक्टर चिनमिन्ह ने उसके हाथ से बोतल छीन कर उससे दूर की मेज पर रखते हुए कहा—'सू ! अब तुम्हारे विरुद्ध मुझे रिपोर्ट करनी पड़ेगी। तुम्हारे इस प्रकार के आचरण से हमारा बना बनाया खेल चौपट हो जायगा।'

'मेरे विरुद्ध तुम चाहे जितनी रिपोर्टें करो, मुझे उनकी परवाह नहीं है। चीन के निरंकुश शासन से मैं मुक्ति प्राप्त कर चुकी हूँ। मैं अब भारतीय नागरिक हूँ। चीन मेरा बाल बाँका नहीं कर सकता।'

'मैं पुनः सावधान करता हूँ ! सूया यह तुम्हारी बड़ी भूल है। समस्त संसार के चीनी, सबसे प्रथम चीनी हैं। चीन का दावा उन पर हमेशा सभी जगह वैसा ही रहेगा जैसा चीन में रहता है। चीन के बाहु बहुत लम्बे हैं—इतने जितनी तुम कल्पना नहीं कर सकती।'

'चीनी तुम हो, तुम्हें चीन की भुजाओं का भय हो सकता है, परन्तु मैं अब चीनी नहीं, भारतीय हूँ। मुझ पर अधिकार करने के लिए चीन को भारत से युद्ध करना पड़ेगा, जो वह कदापि नहीं कर सकता, क्योंकि अमेरिका इसी ताक में है कि वह कब किसी देश से युद्ध में प्रवृत्त हो, और कब

उसको पीस देने का अवसर मिले।'

'अच्छा ! अब तुम तो सोलह दूनी आठ पढ़ाने लगी।'

'मैं अपने ताश के पत्तों का खेलना खूब जानती हूँ। चीन की निरंकुशता से बचने के लिए सिवाय इसके कि मैं भारतीय नागरिक के अधिकार प्राप्त कर लूँ, दूसरा कोई रास्ता न था। तुम और लिनलिन समझते थे कि तुम लोग अपना खेल खेल रहे हो, और मैं अपने घात में थी कि किस प्रकार तुम ज़ालिमों के पंजे से अपने को मुक्त कर सकूँ। कैप्टेन के साथ शादी कराने में जो सहायता चीन ने तुम्हारे माध्यम से दी है, उसके लिए मैं कृतज्ञ हूँ, और उससे अधिक कृतज्ञ रहूँगी उस परिश्रम और आर्थिक सहायता के लिए जो मुझे दिल्ली के मेयर बनाने में आप लोगों ने की है।' उसकी हँसी से व्यंग्य बिखर कर चिनमिन्ह को व्यथित करने लगा।

'क्या मैं यही समझूँ कि तुम्हें अब हमारी अथवा चीन की सहायता की आवश्यकता नहीं रह गई ?'

'हाँ, अब कुछ अधिक उसकी आवश्यकता नहीं है। हिन्दी-चीनी मैत्री का जादू तिब्बत के आक्रमण से टूट गया है और भारतीय अब चीनियों को शंकित दृष्टि से देखने लगे हैं। आगे जब भारतीय भूमि के अपहरण के समाचार यहाँ पहुँचेंगे, तब समस्त चीनियों को भारत का शत्रु माना जायगा तथा उनको यहाँ से पलायन करना पड़ेगा। इसलिए अब आप अपने प्रस्थान की तैयारी करें, और मैं भी आपको पुरानी सेवाओं तथा सहायता के बदले में यहाँ से निरापद निकल जाने दूँगी।'

'अच्छा, यह हौसला। मेरी बिल्ली मुझी से म्याऊँ करने लगी।'

'शायद तुम इतना अवश्य जानते होगे कि सिंहनी भी बिल्ली की जाति की होती है।'

'हाँ, किन्तु जाति एक होते हुए भी बिल्ली कभी सिंहनी नहीं हो सकती। वह मिमयाने वाली बिल्ली बनी रहेगी।'

'किन्तु मौका पाकर वह भी कभी मनुष्य का प्राण हरण कर सकती है।'

'एक छोटा छुरा उसकी इहलीला को समाप्त कर सकता है।'

'हाँ, इस कला में चीनी बहुत दक्ष होते हैं, इसका मुझे ज्ञान है। वे सामने दोस्ती का दम भरते हैं, और मुड़ते ही पीठ में छुरा भोंकते हैं, किंतु इतना याद रखिए कि जन्म से मैं भी चीनी हूँ—ठठेरों-ठठेरों में बदलाई नहीं होती।'

'अवसर आने पर देखा जायगा। अभी तुम अपने होश में नहीं हो। तुमसे गम्भीर विषयों पर बात करना अनुचित है।' यह कहकर वह जाने लगा और सूया जोर से हँस पड़ी।

सूया ने अँगड़ाई लेते हुए कहा—'पिताजी, यद्यपि इस समय आपकी नज़रों में मदहोश हूँ, तथापि इतना मुझे होश है कि मैं आपको सलाह दूँ कि आप शीघ्र से शीघ्र अपना कारबार समेटकर भारत से भाग जाइए, नहीं तो किसी विपत्ति में फँस जायँगे।'

डाक्टर चिनमिन्ह भुनभुनाता-झल्लाता चला गया। उसके कानों में अब भी सूया के मुक्त हास्य की प्रतिध्वनि गूँज रही थी।

सूया जब हँसते-हँसते थक गई तो वह स्वगत बोली—'सूया शतरंज के मोहरों को आगे बढ़ाने में बहुत चतुर है। अभी तक अपनी चालों को इस भाँति चलाती आई हूँ कि मेरी बाज़ी कभी पराजित नहीं हुई। एक क्षुद्र चीनी किसान के यहाँ जन्म लेकर केवल अपनी बुद्धि के बल पर दूसरे देश की राजधानी की मेयर हूँ। वह दिन दूर नहीं है, जब मैं भारत की राजनीति में प्रमुख पद प्राप्त करूँगी। मेरा अद्भुत रूप, यौवन और विलक्षण बुद्धि मेरे उत्थान में मेरी सहायता करेंगे। चिनमिन्ह, मुझे अब तेरी आवश्यकता नहीं, तेरा मुँह यहाँ से जितनी जल्दी काला हो, उतनी ही जल्दी सूया मंत्रि-पद के निकट पहुँचती जायगी। बस घोड़े की एक छलाँग भरने की ज़रूरत है, फिर मात है और फिर सब कुछ मेरा है, मेरा है, मेरा है।' कहती हुई वह पुनः हँसने लगी।

९

दोपहर दिन चढ़े जब कैप्टेन अर्जुनसिंह नित्य नियमानुसार भोजन के लिए अपने घर आए, तब भी सूया पड़ी हुई आकाश- कुसुमों की माला गूँथने में तन्मय थी। नौकरों से सुनकर कि वह अभी तक नीचे नहीं उतरी, उनका माथा ठनका, और वह अनेक संकल्पों-विकल्पों में डूबते-उतरते अपने शयनागार में आए। उन्होंने देखा कि वह औंधी लेटी हुई विचारों में विमग्न है---इतनी कि वह उनके फौजी जूतों की आहट भी नहीं सुन सकी। उन्हें भान हुआ कि शायद वह सो रही है, इसलिए दबे पैरों उसकी शय्या के सिरहाने खड़े होकर उसे देखने लगे। सूया ने अनुभव किया कि कोई छाया-सी आकर खड़ी हो गई है। उसने उझककर सिर उठाया, किन्तु मसहरी के सिरहाने जड़े हुए तख्ते ने उसे स्पष्ट देखने नहीं दिया। विचारों की लड़ी टूट जाने से वह कुछ क्षुब्ध हो गई थी, अतएव कुछ रुक्षता के साथ उसने पूछा---'कौन है ?'

कैप्टेन ने सप्रेम उसके बालों को सहलाते हुए कहा-'यह मैं हूँ, तुम्हारा गुलाम।'

सूया की क्षुब्धता तिरोहित हो गई। उसने उठते हुए कहा---'देखो, अपनी बात पर स्थिर रहना। बदल मत जाना।'

'मैं कब अपनी बात से फिरा हूँ ?'

'अन्य अवसरों की बात दूसरी थी, बस आज से तुम मेरे गुलाम हुए, अब तुमको इससे अधिक नहीं समझूँगी।'

'मैं अपने को इसके अतिरिक्त कुछ नहीं समझता और अब तो स्थिति ही बदल गई है। तुम दिल्ली की मेयर हो, और मैं एक साधारण फौजी जिसका जीवन अक्षरशः गुलामी का जीवन है। अपना निजत्व, उसका कुछ नहीं है, अपने से ऊँचे अफसरों की अच्छी या बुरी आज्ञाओं का पालन करना

ही जिसका एकमात्र कर्त्तव्य है।'

'मुझको भी एक अफसर मानोगे क्या ?'

'नहीं, उससे भी अधिक। फौज में अफसर केवल जान का मालिक होता है, परन्तु तुम जान-माल दोनों की मालिक हो।'

'अर्थात् तुम मेरे हाथ बिके हुए हो।'

'बेशक, किन्तु जब तक फौज में नौकरी करता हूँ, तब तक अपने प्राणों पर मेरा अधिकार नहीं है।'

'किन्तु मैं तुम्हारी जान की भी मालकिन होना चाहती हूँ।'

'यह तभी संभव है जब मैं फौज की नौकरी छोड़ दूँ।'

'यही मैं चाहती हूँ।'

'अर्थात् तुम चाहती हो कि मैं नौकरी छोड़ दूँ ?'

'हाँ, और चाहती हूँ आज ही अपना इस्तीफा पेश कर दो।'

'भला इतनी जल्दी कब सम्भव है। फौजी कानूनों से मैं बँधा हुआ हूँ।'

'सरकार किसी को नौकरी करने के लिए मजबूर नहीं कर सकती।'

'हाँ, किन्तु प्रत्येक सरकारी विभाग के भिन्न-भिन्न नियम हुआ करते हैं। इसके अतिरिक्त यह मेरा पैतृक पेशा है। मैं फौज के अतिरिक्त किसी अन्य प्रकार की नौकरी नहीं कर सकता।'

'तुमको अब नौकरी करने की क्या जरूरत है ?'

'कुछ काम बिना ज़रूरत भी करने पड़ते हैं।'

'बिना ज़रूरत क्यों ?'

'इज़्ज़त आबरू के लिए। हमारे समाज में वही आदमी इज्जत के साथ देखा जाता है जो फौज में नौकर होता है।'

'किन्तु क्या मेयर का पद कम इज़्ज़त का समझा जाता है ?'

'नहीं, किन्तु उसका दूसरा रूप है। पहले तो वह अस्थायी है, दूसरे उसमें कोई आय नहीं, केवल व्यय है।'

'हमारे पास धन की कोई कमी नहीं है।'

'ठीक है, किन्तु डाक्टर चिनमिन्ह कब तक सहायता करेंगे ?'

'वहाँ से अब कोई सहायता नहीं मिलेगी। मैंने उसे आज नाराज़ कर दिया है।'

'क्यों ! अपने पिता से कोई लड़ता है ?'

'तुम क्यों अपने पिता से पृथक् हुए ?'

'मैं नहीं पृथक् हुआ, उन्होंने स्वयं मुझसे सम्बन्ध तोड़ लिया।'

'मेरे लिए तो तुमको छोड़ दिया है।'

'छोड़ो इन बातों को। व्यर्थ में परेशानी बढ़ती है।'

'परेशानी मिटाने के लिए कह रही हूँ कि अपनी गुलामी की तौक तोड़ डालो और स्वतन्त्र व्यक्ति की भाँति जीवन-यापन करो।'

'किन्तु हमारी आर्थिक कठिनताएँ कैसे दूर होंगी, जब तुम कहती हो कि तुमने अपने पिता को भी नाराज़ कर दिया है।'

'उसकी चिन्ता मत करो। हमारी आर्थिक कठिनाइयों को दूर करने के लिए हमारे पास साधन हैं। पहला साधन तो यही है कि तुम अपने पिता से सम्पत्ति का बटवारा कर लो, दूसरा······।'

'मैं तुम्हारे इस साधन का उपयोग नहीं कर सकता।'

'अर्थात् तुम अपने पिता से सम्पत्ति का बटवारा नहीं करा सकते।'

'नहीं। प्रथम तो वह उनकी उपार्जित है, दूसरे मुझमें इतना साहस नहीं है कि मैं उनके मुकाबले में खड़ा हो सकूँ।'

'मैं इसे स्वीकार नहीं करती।'

'परन्तु मैं विवश हूँ।'

सूया कुछ देर सोचने के बाद बोली—'तब फिर मुझे अपने ही धन पर आश्रित होना पड़ेगा।'

'किंतु मैं तुम्हारे धन का उपभोग नहीं कर सकता। जो कुछ तुम्हें मिला है, वह तुम्हारा है—स्त्री धन है। न मालूम तुम क्यों नौकरी छोड़ने को कहती हो।'

'मैं अब स्वतन्त्र व्यक्तियों की भाँति जीवन व्यतीत करना चाहती हूँ।'

'पहले तुम्हें फौजी जवानों से बड़ी दिलचस्पी थी। अपने संघ में इनको अधिक से अधिक संख्या में भरती करना चाहती थी, और मेरा उपयोग तुम इसी काम के लिए करती थीं।'

'उस समय परिस्थितियाँ दूसरी थीं, और अब दूसरी है।'

'मुझे तो कोई परिवर्तन नहीं दिखाई पड़ता।'

'तुम उनको नहीं समझ सकोगे।'

'क्या मुझे तुम इतना बुद्धू समझती हो?'

'जितना तुम सोच सको, उससे कहीं अधिक।' यह कहकर वह खिल-खिला कर हँस पड़ी।

हँसने के पश्चात् सूया गम्भीरता के साथ बोली—'भविष्य की उधेड़बुन में मैं इतनी फँस गई थी कि मुझे नहाने-धोने की भी याद न रही। अब परिस्थितियाँ ऐसी आ गई हैं, जो हमें दूसरे मार्ग की ओर संकेत कर रही हैं। गुलामी का जीवन छोड़ कर स्वतन्त्रता अपनानी है—अर्थात् नौकरी-चाकरी की वृत्ति त्याग कर राजनीतिक जीवन में प्रवेश करना है।'

'तुम्हारा राजनीति में रहना बहुत काफी है। मैं इसके योग्य नहीं हूँ।'

'तुम सक्रिय भाग न लो, किन्तु आज़ाद तो रहो।'

'परन्तु अभी यह मुश्किल है। जब तक आमदनी का कोई दूसरा जरिया नहीं हो जाता, तब तक इससे भी हाथ धो बैठना उचित नहीं है।'

'अच्छा, इस विषय पर हम फिर बात करेंगे। अभी फिलहाल में कुछ दिनों के लिए दिल्ली छोड़ना चाहती हूँ।'

'क्यों, यहाँ के अभिनन्दनों से क्या मन ऊब गया है?'

'अब अभिनंदन नहीं होंगे। चिनमिन्ह से झगड़ा हो गया है न।'

'आज तुम्हें क्या हो गया है? अपने पिता को इस प्रकार सम्बोधन करती हो।'

'वह मेरा पिता नहीं है?'

'तुम्हारा पिता नहीं है! यह तुम क्या कह रही हो?'

'मैं बिल्कुल सही कह रही हूँ; वह मेरा जन्मदाता पिता नहीं है।'

'किन्तु तुमको पिता की भाँति प्यार करता है, और दहेज़ में लग-भग एक लाख रुपए दिए हैं। ऐसे व्यक्ति के लिए'''''।'

'अरे, तुमको कुछ मालूम नहीं। न वह मेरा पिता है, और न उसने अपनी जेब से एक पैसा दिया है, बल्कि मेरा पैसा जो इसके कब्ज़े में था, दिया है, और वह भी सब नहीं।'

'इसका मतलब यह कि चीन में जो कुछ तुम्हारी सम्पत्ति थी, वह इसके कब्जे में थी, और उसी की आमदनी से यह खुद फायदा उठाता रहा और उसमें से कुछ थोड़ा हिस्सा तुमको दहेज़ के रूप में दिया है।'

'हाँ, कुछ ऐसी ही बात समझो। चिनमिन्ह अब उसी सम्पत्ति को हड़-पने के लिए मेरी हत्या तक कर सकता है।'

'तुम्हें आज क्या हो गया है? न मालूम कैसी बहकी-बहकी बातें कर रही हो, जिनका न सिर है और न पैर।'

'अच्छा, इस विषय पर फिर किसी दिन बातें करूँगी। मेरा विचार कुछ दिनों तक बाहर घूम आने का है, किन्तु मैं चलना चाहती हूँ गुप्त-रूप से।'

'क्यों, गुप्तरीति से क्यों?'

'जब तक मैं अपनी परिस्थिति सुदृढ़ नहीं बना लेती, तब तक अज्ञात वास करना चाहती हूँ। हमें ऐसा प्रबन्ध करना है कि चिनमिन्ह या किसी नौकर तक को मालूम न हो कि हम लोग कब और कहाँ गए हैं। मुझे इन नौकरों पर भी विश्वास नहीं है। यदि सब नहीं तो अधिकांश उसके गुप्त-चर होंगे। जब से झगड़ा हुआ है, तब से मैं इसी हैस-बैस में पड़ी हूँ। मैं नहीं जानती कि किसका विश्वास करूँ या न करूँ?'

'आज तुम्हारी एक बात भी मेरी समझ में नहीं आ रही है। क्या चिन-मिन्ह से तुम्हारी मित्रता दुबारा नहीं हो सकती? यदि कोई झगड़ा भी हो गया तो क्या वह इतना भयंकर है कि वह तुम्हारे प्राण का ग्राहक हो जाय?'

'हाँ, कुछ ऐसी ही बात है। मैं भी उससे अपना पिंड छड़ाना चाहती हूँ।'

'विवाह होने के पश्चात् बाप का अधिकार पुत्री पर नहीं रहता, इस प्रकार तुम उससे पृथक् हो चुकी हो। वह तुम्हारा अनिष्ट किस प्रकार कर सकता है?'

'मैं जानती हूँ कि वह कितना भयंकर आदमी है! वह चीनी साँप है, जिसका काटा हुआ लहरें तक नहीं लेता।'

'आश्चर्य है कि उसने अभी तक तुम्हारा पोषण क्यों किया, जबकि वह तुम्हें तुम्हारे बचपने में मार कर तुम्हारी सम्पत्ति हथिया सकता था।'

'उस समय वह ऐसा क़दम नहीं उठा सकता था, क्योंकि चीन सरकार का मेरे ऊपर संरक्षण था।'

'क्या वह संरक्षण अब नहीं रहा?'

'नहीं, वह मुझे अब भी प्राप्त है, और उसी के द्वारा मैं इस चिनमिन्ह को अपने रास्ते से दूर करना चाहती हूँ।'

'किन्तु यहाँ से भागने की क्या ज़रूरत है?'

'इसलिए कि उसके कुचक्र से अपनी रक्षा कर सकूँ।'

'इस घर में रहते हुए उसका कोई कुचक्र सफल नहीं हो सकता।'

'पीठ में छुरा मारने वालों के कुचक्र हमेशा सफल हुआ करते हैं।'

'क्या वह इतना क्रूर है कि वह तुम्हारी पीठ में छुरा घुसेड़ कर तुम्हें मार सकता है?'

'अफ़सोस, तुम इतना भी नहीं समझते। अभी तुमने चिनमिन्ह का भयंकर रूप नहीं देखा है। जितना ऊपर से वह प्रेम, स्नेह, सौजन्य का दिखावा करता है, उतना भीतर से वह क्रूर दुष्ट प्रकृति और नर-भक्षक है। वह इतना शक्तिशाली है कि वह किसी की हत्या करवा सकता है, और इतना चालाक कि कभी फँसे नहीं।'

'तुम उसको मुझसे अधिक जानती हो, और उसके मस्तिष्क की प्रतिक्रिया समझ सकती हो। वह तुम्हारा सम्बन्धी है, तुम उससे जिस प्रकार चाहो निपटो, मुझे कुछ नहीं कहना।'

'वही मैं चाहती हूँ, मैं उसे अपनी तौर पर निपट लूँगी। उसको भारत

से भगा कर दम लूँगी। उसे भी मेरी शक्ति का ज्ञान है, और इसलिए वह छिप कर मेरी हत्या करना चाहेगा, किन्तु मैं उसके पूर्व ही कुछ दिनों के लिए अज्ञात वास करना चाहती हूँ। इस बीच में मैं अपनी स्थिति दृढ़ कर लूँगी।'

'किन्तु दिल्ली की जनता तुम्हारे अदृश्य हो जाने से न-मालूम कैसे-कैसे अनुमान लगाएगी।'

'अभी औपचारिक रूप से मेयर का पद-ग्रहण समारोह दो महीने पश्चात् होगा। इतना समय मेरे लिए पर्याप्त है। इन दो महीने के समय में मैं चिन-मिन्ह का पत्ता काट दूँगी। यहाँ मैं यह विज्ञापित कर दूँगी कि मैं मेयर का पद ग्रहण करने के पूर्व विदेशों में प्रचलित मेयर की कार्य-पद्धति का अध्ययन करना चाहती हूँ, इसलिए लन्दन, पेरिस आदि स्थानों का भ्रमण करने जा रही हूँ, और निश्चित तिथि पर वापस लौट आऊँगी।'

'भला कोई विश्वास करेगा ?'

'किसी के विश्वास अथवा अविश्वास करने से मेरी हानि-लाभ कुछ नहीं है। मैं अवसर चाहती हूँ, वह मुझे मिल जायगा, और इस बीच में इस चिनमिन्ह से मुक्ति पा लूँगी।'

इसी समय कमरे के बाहर किसी के छींकने की आवाज़ हुई, जिसे सुन कर दोनों चौंक पड़े। सूया एक छलाँग में कमरे के बाहर आ गई, परन्तु उसने किसी को नहीं देखा। वह तेजी से भागती हुई नीचे उतरी, परन्तु उसने सब नौकरों को यथा स्थान काम करते पाया, जो उसको देख कर चकित रह गए। उसके पीछे-पीछे कैप्टेन भी चले आ रहे थे। सब नौकरों से पूछ-ताछ करने पर उन दोनों को न-मालूम हो सका कि ऊपर कौन छिप कर उनकी बातें सुन रहा था। सूया निराश होकर आगामी कार्यक्रम को सोचने लगी।

१०

रात्रि की निस्तब्धता को भंग करते हुए उल्लू के चीत्कार ने सोती हुई सूया को जगा दिया। वह हड़बड़ाकर उठ बैठी। मदिरा का खुमार और नींद का आक्रमण दोनों सट-गुथ कर उसको सो जाने के लिए विवश कर रहे थे, परन्तु प्रत्येक मिनट के अन्तर पर उल्लू का चीत्कार उसे उठकर खड़ा होने के लिए मजबूर कर रहा था। मसहरी से नीचे उतरने के पहले उसने नींद में गाफिल कैप्टेन अर्जुनसिंह की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखा। उसके मन ने कहा कि वह अभी जाग नहीं सकता, किन्तु उसकी सतर्कता ने कहा कि हमेशा पूर्ण सावधानी रखने में कल्याण है। उसने अपनी अलमारी से एक छोटी शीशी निकाली, और उसकी डाट खोलकर सुप्त अर्जुनसिंह के नसा-रन्ध्रों से उसे लगा दिया। बेहोशी पैदा करने वाली तीव्र गन्ध ने उसके मस्तिष्क में प्रवेश कर उसको बेहोश कर दिया। उसने शीशी बंद कर अपनी कमर में खोंस ली, और मेज़ की दराज़ से कैप्टेन का रिवाल्वर निकालकर परीक्षा की तथा उसे ठीक पाकर अपने को काली चादर से ढाँक कर वह दबे पैरों से कमरे के बाहर निकली। बाहर चारों ओर अन्धकार तथा सन्नाटा छाया हुआ था। वह बरामदे में खड़ी होकर नीचे उद्यान की ओर देखने लगी। मार्ग पर लगी हुई विद्युत्-वत्तियों का प्रकाश यत्र-तत्र उसे आलोकित कर रहा था। इसी समय उल्लू का चीत्कार पुनः हुआ, और वह अपने नेत्र गड़ाकर उस दिशा में देखने लगी जिधर से आवाज़ आई थी। उसके बँगले के किनारे एक विशाल पीपल का पेड़ था, और उसे ऐसा आभास हुआ कि उल्लू वहीं-कहीं आसपास बोल रहा है। वह नीचे उतरकर बँगले का सदर दरवाज़ा खोलती हुई उद्यान में आई, और धीरे-धीरे चारों तरफ की आहट लेती वह उस पीपल की ओर बढ़ने लगी। इसी समय पुनः उल्लू की आवाज़ हुई, और इस बार उसने भी उसी स्वर में उत्तर दिया। तीसरे पहर

की नैश-वायु के झोंके पीपल की पत्तियों के साथ खेल रहे थे। उनकी खड़-खड़ाहट में अपने को छिपाती हुई मानव-आकृति उतर कर उसके सामने उसी समय आकर खड़ी हुई, जब वह उसके नीचे पहुँची। सूया उसको देख-कर न डरी और न झिझकी। उसने अपना रिवाल्वर बाहर निकाला, और उसको अपने लक्ष्य में रखकर कहा—'अपना परिचय संकेत बताओ।'

काली आकृति ने धीमे स्वर में हँसते हुए कहा—'यह आज मालूम हुआ कि सू भी किसीसे भयभीत हो सकती है। मैं हूँ चीनविजय। अब तो विश्वास हुआ। अपना रिवाल्वर अपनी जेब में रखो।'

चीनविजय के स्वर में आदेश की कठोरता थी। सूया ने रिवाल्वर अपने लबादे में छिपाते हुए कहा—'आप कब और कैसे आए ?'

'मैं आज ही आया हूँ, और कल लौट जाऊँगा, क्योंकि मुझे कलिम्पोंग जाना है।'

'वहाँ कुछ गड़बड़ी है क्या ?'

'नहीं, किन्तु हमें देख-रेख रखनी पड़ती है। हमें देखना है कि सरकारी रकम का कहीं दुरुपयोग तो नहीं हो रहा है। मैंने यहाँ आकर सुना है कि चिनमिन्ह से तुम लड़ने लगी हो, और उसके परामर्श के अनुसार तुम काम नहीं करती।'

'ऐसी बात नहीं है। उस दिन नशे में कुछ बहकी-बहकी बातें बक गई थी।'

'उसके बाद भी तुम उससे न मिली, और न पश्चात्ताप का एक शब्द ही उससे कहा, जो हर हालत में करना तुम्हारे लिए आवश्यक था।'

'इधर मेरी तबियत कई दिनों से खराब है, और···।'

'टेलीफोन से तो तुम बातें कर सकती थी ?'

'टेलीफोन का उपयोग हमारे आन्तरिक काम के लिए नहीं किया जा सकता। यह तो आप लोगों के ही आदेश हैं।'

'काम की गुप्त बातों के लिए वे आदेश हैं, साधारण बातों के कहने-सुनने की मनाही नहीं है। तुम्हारी बेतुकी बात से स्पष्ट है कि तुम्हारी

नीयत में फर्क आ गया है। मुझे चिनमिन्ह की आशंका में सत्यता मालूम होती है।'

'चिनमिन्ह की नीयत खुद खराब है। वह मेरे ऊपर झूठा आरोप लगाता है।'

'तुम शायद इसी बात का संकेत कर रही हो कि वह तुम्हारे ऊपर आसक्त है, और उसने तुम्हारे विरुद्ध कभी बल प्रयोग किया था।'

'हाँ, जब उसे सफलता नहीं मिली, तब से वह मेरा दुश्मन बन गया है।'

'तुम्हारे जाति मामलों में मैं कोई दखल देना नहीं चाहता, तुम जिस प्रकार चाहो अपना फैसला करो, परन्तु संघ के काम में नुकसान न होना चाहिए।'

'उसकी ओर से मैं असावधान नहीं हूँ। मैंने मेयर होकर भारतीय राजनीति में प्रवेश पा लिया है, और अब आगे का कार्यक्रम भी पूरा करूँगी'

'ठीक है, तिनलिन की ऐसी ही इच्छा है।'

'वे आजकल कहाँ हैं ?'

'लद्दाख के समीप हैं। लद्दाख के पूर्वीय कोण में अपना अधिकार जमा रहे हैं।'

'तो क्या वहाँ फौजी चौकी बन गई है ?'

'हमें उस भू-भाग पर अपना अधिकार जमाने में तिलमात्र भी अड़चन नहीं हुई। वहाँ पर भारतीय चौकी थी नहीं, और पाँच-पाँच छः-छः महीनों तक कोई गश्त करने वाली टुकड़ी भी नहीं जाती थी, इसलिए बड़ी सुगमता से हमारा वहाँ अधिकार हो गया है।'

'किन्तु यह घटना बहुत दिनों तक छिपी न रहेगी।'

'आवश्यकता भी नहीं है। जब तक हमारा कब्जा नहीं हुआ था, तब तक हमें लुक-छिप कर काम करना था, किन्तु अब तो वहाँ हमारा अधिकार है, और हमने वहाँ तक अपनी सड़क भी तैयार कर ली है, जिसके द्वारा हम अपनी सेनाएँ वक्त-जरूरत पर पहुँचा सकते हैं। इसी अवसर में हम अपनी सैनिक छावनी स्थापित कर लेंगे।'

'किन्तु भारतीय सरकार को हमारी नीयत का पता चल जायेगा।'

'एक दिन तो परदाफाश होना ही है, परन्तु आज हमारी स्थिति सुदृढ़ है इसलिए हमें उसकी कोई चिन्ता नहीं है। भारत से हम लोहा ले सकते हैं।'

'परन्तु उससे हम चीनियों पर आपत्ति आ जायेगी।'

'कोई आपत्ति नहीं आयेगी। हमारे हज़ारों आदमी भारतीय नागरिक बने हुए हैं। उन्हें मताधिकार तक प्राप्त है। अपने ही मामले को देखो, तुम भारतीय सैनिक की पत्नी हो, दिल्ली की मेयर भी हो, फिर तुम्हारे विरुद्ध भारतीय सरकार कैसे कदम उठा सकती है?'

'कुछ नहीं, सन्देह होने पर नजरबन्द तो कर सकती है।'

'इससे क्या बनता बिगड़ता है?'

'परन्तु क्या यह हमारे लिए हितकर न होगा कि हमारे कार्यकर्त्ताओं को इधर-उधर बदला जाए।'

'इसी उद्देश्य से मुझे तिनलिन ने भेजा है। उनके आदेशानुसार यहाँ की व्यवस्था में आवश्यक हेर-फेर किए जायंगे।'

सूया चुप होकर कुछ सोचने लगी।

आगन्तुक छद्म-वेषधारी 'चीन विजय' ने कुछ देर तक उत्तर की प्रतीक्षा करने के पश्चात् कहा—'क्या सोच रही हो?'

स्वर की कर्कशता ने उसे सजग किया। उसने उत्तर दिया—'कुछ नहीं।'

'मुझे मालूम होता है कि तुम दोहरी चालें चल रही हो, और हमारे साथ विश्वासघात करना चाहती हो।'

'यह सब झूठ है। चिनमिन्ह बिल्कुल झूठ कहता है।'

इसी समय पीपल के तने के पीछे से एक काली शक्ल निकल कर उसके सामने खड़ी हो गयी। सूया उसे देखकर जड़वत् हो गई, और भीत दृष्टि से उसे देखने लगी।

चीनविजय ने कड़क कर पूछा—'सू, क्या तू इन्कार कर सकती है

कि तूने चिनमिन्ह को भारत छोड़ जाने को नहीं कहा था ?'

'मैं पहले कह चुकी हूँ कि मैं नशे में थी, और उस हालत में मैं क्या बक गई, नहीं जानती। स्वयं चिनमिन्ह स्वीकार करेगा कि मैं मदिरा पी रही थी।'

'यदि मदिरा पीकर तुम इस प्रकार बहकने लगोगी, तो तुम्हें संघ के नियमों के अनुसार दंड दिया जायगा, और शायद तुम्हें मालूम होगा कि वह प्राण-दंड है।'

काली मूर्ति ने अपनी जेब से छुरा निकाला। उसकी श्वेत आभा रात्रि की कालिमा भेद कर सूया को डराने लगी। वह पीपल के पत्ते की भाँति काँपने लगी। वह पीछे हटती हुई अपना रिवाल्वर काली चादर के बाहर निकालने का प्रयत्न करने लगी।

चीनविजय ने आगे बढ़कर कहा—'सू, अपना रिवाल्वर मुझे दो।'

उसके आदेश को सूया टाल न सकी। उसने रिवाल्वर उसे पकड़ा दिया।

रिवाल्वर को उलटते-पलटते हुए कहा—'यह तो मुझे फौजी रिवाल्वर मालूम होता है। क्या यह कैप्टेन का है ? क्या वह जागता है ?'

'नहीं, वह सो रहा है। मैं उसको बेहोश करने के बाद यहाँ आई हूँ।'

'बोल, अब तू कहाँ मरना चाहती है ? यहाँ कि अपने कमरे में ?'

'यदि आप मेरी हत्या ही करना चाहते हैं तो कहीं कर सकते हैं, किन्तु जितनी सेवा मैं अपने संघ और देश की कर सकती थी, वह मैंने की है। आज दिल्ली में जो शान्ति आप देख रहे हैं, उसका एक मात्र कारण मैं हूँ। मैं यहाँ की जनता की विश्वासपात्र बन चुकी हूँ, और यदि आप मेरे स्थान पर किसी अन्य को नियुक्त करेंगे, तो सोच लीजिए कि आपके कार्य तथा उद्देश्य में कितनी अड़चनें आवेंगी, और देर होना स्वाभाविक है। रह गया चिनमिन्ह का झगड़ा, वह हमारा आपसी है, जैसा आप स्वयं कह चुके हैं। हाँ, अब चिनमिन्ह की अधीनता में मैं काम नहीं कर सकती। यदि इस अपराध के लिए मुझे प्राण-दंड देना चाहते हैं, तो दीजिए, मैं नत मस्तक

होकर उसे आपकी अन्य आज्ञाओं की भाँति स्वीकार करूँगी।' यह कहते हुए उसने अपना सिर चिनमिन्ह के सामने नत कर दिया, मानो वह अपना सिर भेंट कर रही हो।

चीनविजय ने काली मूर्ति को वहाँ से जाने का संकेत किया। वह जिस प्रकार निःशब्द प्रकट हुई थी, उसी प्रकार अदृश्य हो गई।

सूया का हृदय यद्यपि काँप रहा था, किन्तु उसे विश्वास था कि परिस्थितियाँ उसकी रक्षा करेंगी। थोड़ी देर पश्चात् उसने कहा—'लीजिए, मेरा सिर हाजिर है। आदेश दीजिए कि वह अपना छुरा मेरे रक्त से रंजित कर आपको समर्पित करे।' कहती हुई वह उसके समीप खिसक आई। उसके सिर से भीनी-भीनी सुगन्ध निकल कर चीनविजय के मस्तिष्क में खलबली पैदा करने लगी।

चीनविजय ने अपने को संभालते हुए कहा—'सू, तुम जाओ, इस बार मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ, और तिनलिन को भी क्षमा प्रदान करने की सिफारिश करूँगा।'

सूया ने हर्ष-विह्वल होकर कहा—'क्या सत्य ही आपने क्षमा कर दिया?'

'यदि क्षमा न करता तो कहता भी नहीं, किन्तु इतना समझ लो कि हमारी दृष्टि से तुम ओझल नहीं हो। तुम्हारी प्रत्येक बात हम सुनते हैं, प्रत्येक काम हम देखते हैं, और प्रत्येक हरकत पर दृष्टि रखते हैं। तुम कैप्टेन के साथ अज्ञातवास में जाने का परामर्श करती हो, वह भी हमको मालूम है। मेरे पास पुष्ट प्रमाण हैं कि तुम संघ के विरुद्ध आचरण करने पर उतारू हो, और मेयर बन जाने से तुम्हारे मस्तिष्क का संतुलन नष्ट हो गया है। तुम अज्ञातवास में चली न जाओ इसलिए इस बार मैं लद्दाख, कश्मीर, जम्मू होता हुआ आया हूँ।'

'अच्छा, यह सीधा मार्ग क्या आपने खोल दिया है?'

'हाँ, हम लोगों ने लद्दाख का वह सब भू-भाग अपने अधिकार में ले लिया है, जितना हमारा है, और जिसकी हमें ज़रूरत है। इसी प्रकार भारत

के नेफा* क्षेत्र के कुछ स्थानों पर हमारा यथावांछित कब्जा हो गया है। पूर्वीय नाके से हम थाईलैण्ड की ओर अग्रसर होंगे, और पश्चिमी नाके से हम अमरीकनों की किले बन्दी को, जो उन्होंने पाकिस्तान में कर रखी है, विफल बनाएँगे, और यदि युद्ध छिड़ गया तो उसको हम पहले आक्रमण में नष्ट कर देंगे।'

'तब तो एक प्रकार से हमारा काम पूरा हो गया। अब यहाँ रहने में खतरा ही है।'

'हाँ, इसीलिए हम यथा उचित परिवर्तन कर रहे हैं। यहाँ के कुछ कार्य-कर्त्ताओं को हम कलिम्पोंग भेज रहे हैं। कलकत्ता तथा कलिम्पोंग के आद-मियों को हम इधर भेज रहे हैं।'

'मुझे आप यहाँ क्यों रख रहे हैं? मेरी जान का भी खतरा है।'

'नहीं, तुम्हारे लिए उतना खतरा नहीं है। तुमको यहाँ की राजनीति में प्रवेश कराने के लिए ही हमने इतना उद्योग, परिश्रम, और व्यय किया है। हाँ, यदि तुम विश्वासघात करोगी, तो अवश्य तुम्हारे लिए खतरा है।'

'विश्वासघात मैं कभी नहीं कर सकती। क्या मैं 'चीनी अजदहे' की ताकत से अनभिज्ञ हूँ?'

'जैसा हमारी संस्था का नाम है, वैसी ही उसकी शक्ति भी है। 'चीनी अजदहा' आज अपनी पूरी लम्बाई में उत्तर भारत के दोनों कोणों तक फैल गया है।'

'यहाँ से जो हमारे संघ के द्वारा शिष्टमंडल चीन गया था, उसके सब अन्य व्यक्ति सिवाय चार के लौट आए हैं, किन्तु वे चार जो रोक लिए गए थे, अभी तक वापस नहीं आए……।'

'वे लोग अब शीघ्र आने वाले हैं।'

'उनको कुछ मेरे संबंध में सन्देह तो नहीं हो गया है।'

'ऐसी आशा नहीं है, और यदि सन्देह भी हो जाय तो तुम अपने बुद्धि-बल से अपनी रक्षा कर सकती हो। इसके अतिरिक्त हमारी सारी शक्ति तुम्हारी रक्षा के लिए तैनात रहेगी। अच्छा तुम क्यों न कश्मीर चली जाओ,

और वहाँ से लद्दाख के नगर लेह पहुँच कर उनका स्वागत करो। उन्हें हम वहाँ तक बड़ी आसानी से पहुँचा सकेंगे।'

'हाँ, यह ठीक रहेगा।'

'बस यही ठीक है, तुम दो-तीन दिनों में कश्मीर की यात्रा करो। अपने साथ कैप्टेन को भी ले जाना, जिसके द्वारा वहाँ की सैनिक शक्ति का अन्दाज़ा लेना, और अपने वायरलेस से हमारे कार्यालय को सूचित करना। देखो, पौ फट रही है, अब मैं जाऊँगा। तुम भी जाओ।'

यह कहकर चीनविजय नाम धारी व्यक्ति झाड़ियों में घुस कर अदृश्य हो गया। सूया जाने के लिए मुड़ने वाली थी कि वह पुनः वापस आया, और सूया को कैप्टेन का रिवाल्वर वापस करते हुए कहा—'अपने इस रिवाल्वर को लेती जाओ, नहीं तो बेचारा कैप्टेन आफत में फँस जायगा। आयन्दा उसका रिवाल्वर कभी अपने काम के लिए प्रयोग न करना।' उसको रिवा-ल्वर देकर वह पुनः अदृश्य हो गया।

११

चीनविजय के जाने के पश्चात् सूया छिपती हुई अपने शयनागार में आई और जब उसने कैप्टेन को अचेत पाया तब उसको मानसिक शान्ति मिली। उसने अलमारी से दूसरी शीशी निकाल कर उसे सुँघाया। उसकी सुगन्ध ने उसकी अचेतनता को भंग कर करवट बदलने के लिए उत्तेजित किया। सूया को उससे ज्ञात हो गया कि वह अपनी सहज निद्रा में पुनः मग्न हो गया है। उस शीशी को पुनः अपनी अलमारी में बन्द कर अपनी स्थिति का सिंहावलोकन करने के लिए वह कुर्सी पर बैठ गई।

वह सोचने लगी—'इस चीनविजय ने आकर मेरा कार्यक्रम भंग कर दिया है। सोचा था कि मैं अपने दाँव में चिनमिन्ह को फँसाकर उसको यम-

लोक पहुँचा दूँगी, परन्तु वह कुछ न हो पाया। न मालूम यह 'चुनचान' कहाँ से आ टपका। मालूम होता है कि चिनमिन्ह ने सारी रिपोर्ट पीकिंग भेज दी है और तिनलिन ने अपने इस सहकारी को भेजा है। प्रमोद आदि भी शीघ्र आने वाले हैं। इस दुष्ट प्रमोद को उन्होंने अछूता छोड़कर मेरे मार्ग में एक नई बाधा उपस्थित कर दी है। मैंने लू को अपनी ओर से लिखा था कि वहीं चीन में प्रमोद की कब्र बनाई जावे, परन्तु उसने भी कुछ नहीं किया। उसने मेरा अपमान किया है, मैं उसे कभी क्षमा नहीं कर सकती। अब मुझे स्वयं अपना प्रतिशोध लेना होगा, किन्तु मुझे अब काश्मीर जाना है। वहाँ करुणासुन्दरी और लाला मनोहरलाल भी हैं। उनके साथ हिल-मिल कर रहने से राजनीति में मुझे जल्दी सफलता मिलेगी, और प्रमोद से बदला लेने का मौका मिलेगा। चिनमिन्ह से सतर्क रहना है। पहले प्रमोद, फिर चिनमिन्ह इन दोनों शत्रुओं को मुझे अपने रास्ते से दूर करना है।'

इसी समय हस्वमामूल नियम के अनुसार कैप्टेन की नींद टूटी, और अपने समीप सूया को न पाकर वह हड़बड़ा कर उठ बैठे। सूया उसके जगने की आहट पाकर उसके पास आकर बोली—'तुम घबड़ाए से क्यों हो?'

'मैं एक बड़ा दुःखद स्वप्न देख रहा था। उससे घबड़ाकर ज्योंही जागा, तुम्हें अन्य दिनों की भाँति सोते हुए नहीं पाया, इससे चिन्ता होने लगी।'

'स्वप्न क्या मेरे सम्बन्ध में देखा था।'

'हाँ, बड़ा भयानक स्वप्न था। यद्यपि मैं सैनिक हूँ, खून देखकर घबड़ाता नहीं, किन्तु तुम्हारा खून होते देखकर मैं···।'

'क्या मुझे मरता देखा था?'

'हाँ, मैंने देखा कि डाक्टर चिनमिन्ह तुम्हें छुरे से मार कर तुम्हारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर रहा है।'

'चिनमिन्ह मेरे टुकड़े कर रहा था?'

'हाँ, और मेरे हाथ-पैर बँधे हुए हैं।'

'तुमने अच्छा स्वप्न देखा है। मेरी उम्र बहुत अधिक है, और मैं अनेक सन्तानों की माँ बनकर अनन्त सुख-सौभाग्य प्राप्त करूँगी।'

'यह तुम क्या कहती हो ! दृश्य इतना हृदय-विदारक था कि अभी तक मेरा हृदय काँप रहा है ।'

'चीनी विश्वास के अनुसार यह स्वप्न मेरी भावी सफलताओं की ओर संकेत करता है ।'

'अच्छा, दोनों देशों के विश्वासों में इतना अन्तर है ?'

'हाँ, अपनी-अपनी भावनाएँ हैं । चीन में यह विश्वास प्रचलित है कि जब स्वप्न में किसी का वध देखा जाय तो उसकी आयु बढ़ती है, और यदि उसके शरीर के टुकड़े होते देखा जाय तो अनेकों सन्तानों की उत्पत्ति की ओर संकेत है । शरीर के टुकड़े होने के अर्थ हैं सन्तानोत्पत्ति ।'

'तब क्या तुम कोई शुभ समाचार सुनाने जा रही हो ?'

सूया ने लजाते हुए उत्तर दिया—'नहीं, अभी ऐसी कोई बात नहीं है, किन्तु इसके यह अर्थ नहीं है कि मैं तुम्हें सुन्दर सन्तानें कभी नहीं दे सकूँगी ।'

'नहीं, नहीं, मैं ऐसा नहीं समझता । यह बताओ कि तुम आज इतने सवेरे कैसे उठ गईं ?'

'कोई खास बात नहीं थी । तुम्हारे जगने से कुछ देर पहले मैं उठकर बाथरूम गई थी, और प्रातःकाल की सफेदी देखकर पुनः सोने का मन नहीं हुआ । कुर्सी पर बैठकर यहाँ से जाने का कार्यक्रम बनाने लगी ।'

'क्या कार्यक्रम बनाया, ज़रा सुनूँ ।'

'हम लोग कल यहाँ से श्रीनगर के लिए प्रस्थान करेंगे, यह मैंने निश्चय कर लिया है ।'

'कल ही ?'

'हाँ, कल हम हवाई जहाज़ से काश्मीर के लिए चल देंगे, और दो-तीन घण्टों में वहाँ पहुँचकर रात्रि में विश्राम वहीं करेंगे ।'

'किन्तु मैं छुट्टी के बिना कैसे चल सकता हूँ ।'

'आज दिन भर का अवकाश है ।'

'किन्तु छुट्टी लेना मेरे अधिकार में नहीं है ।'

'क्यों, आप क्या कर्नल वेदप्रकाश से······।'

'नहीं, वह कुछ न करेंगे, शायद वह रुकावट ही डालें ?'

'इसलिए कि तुमने उनकी लड़की से शादी नहीं की।'

'हाँ, मुख्य कारण तो यही है, परन्तु वह स्वयं कभी छुट्टी नहीं लेते और न सिफारिश करते हैं।'

'किन्तु जैसे भी हो छुट्टी लेनी पड़ेगी। यदि डाक्टरी सार्टीफिकेट से छुट्टी मिल सकती हो, तो उसके द्वारा लो।'

'कोशिश करूँगा।'

'चाहे जैसे हो, कल तुम्हें चलना है, छुट्टी मिले या न मिले।'

'वाह, क्या नौकरी छोड़ दूँ ?'

'मै अपना निर्णय इस प्रश्न पर दे चुकी हूँ।'

'किन्तु मौजूदा हालत में त्यागपत्र देना असम्भव है।'

'त्यागपत्र नहीं दे सकते तो फिर छुट्टी लीजिए।'

थोड़ी देर सोचने के बाद अर्जुनसिंह बोले—'यह तो बताओ, तुम यहाँ से क्यों भागना चाहती हो। मेरी समझ में नहीं आता, जब दिल्ली की जनता तुम्हें अपनी आँखों की पुतली बनाकर रखना चाहती है, तब फिर उससे दूर जाने में क्या मसलहत है ?'

'अभी तुम इन बातों को नहीं समझ सकते। चिनमिन्ह को भुलावे में रखकर उसकी पहुँच से दूर जाना चाहती हूँ।'

'तुम्हें चिनमिन्ह का इतना भय है ?'

'उससे नहीं, उसकी चालों से घबड़ाती हूँ। उसी दिन तुमने देखा कि कोई हमारी बातें छिपकर सुन रहा था, क्योंकि छींकने की आवाज़ हम दोनों ने सुनी थी, परन्तु जब पता लगाने लगे तो ऊपर किसी के आने की शहादत नहीं मिली। उसके जासूस चारों ओर फैले हुए हैं। यहाँ रहते हम उनकी शिनाख़्त नहीं कर सकते।'

'किन्तु उसके जाने के पश्चात् भी उसके जासूसों का भय बना रहेगा।'

'नहीं, जब तक मैं वापस आऊँगी तब तक परिस्थितियों में महान् अन्तर पड़ जायगा।'

'तुम भावुक हद से ज्यादा हो, इसलिए ऐसे फासिद विचार तुम्हारे मस्तिष्क में उठा करते हैं। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि चिनमिन्ह तुम्हारा कोई अनिष्ट नहीं कर सकता।'

'ईश्वर करे तुम्हारा कहना सच हो, परन्तु मैं कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहती।'

'यदि तुम इतना उससे घबड़ा गई हो, तो दूसरी बात है।'

'तुम चाहे जो समझो, मुझको हर हालत में दिल्ली छोड़कर काश्मीर जाना है।'

'यह तर्क नहीं, हठ है।'

'नारी के हठ के विषय में तुमने बहुत पढ़ा होगा। इसे मेरा हठ ही समझो।'

'ठीक है, तुम्हारा यह हठ पूरा होगा। मैं आज छुट्टी के लिए प्रयत्न करूँगा।'

'हाँ, वही कीजिए।'

'तुमने बड़ी कठिनाई में डाल दिया। आजकल दफ्तर का चार्ज कर्नेल वेदप्रकाश के पास है। मुझे उनके पास जाना पड़ेगा।'

'तुम कहते हो कि वह छुट्टी देने में कंजूस है।'

'किन्तु बिना उनके पास गये छुट्टी शीघ्रता से नहीं मिल सकती।'

'यदि उसने इन्कार कर दिया।'

'तब तुम अकेली चली जाना।'

'अकेली भी जा सकती हूँ, किन्तु तुम्हारे चलने से सैर-सपाटे का सच्चा आनन्द आता।'

'हाँ चलने की मेरी भी इच्छा है। मानापमान की कोई परवा न कर कर्नेल साहब से छुट्टी माँगनी ही पड़ेगी। शादी के बाद से मैं उनके सामने नहीं गया, और उनसे आँख बचाकर रहता हूँ।'

'मेरे साथ विवाह करके तुम्हें अपने संबंधियों से मुँह छिपाना पड़ता है।'

'दूसरों से नहीं, किन्तु उनके सामने जाने में कुछ हिचक होती है।'

'इसलिए कि वह तुम्हारी मंगेतर के पिता हैं।'

'इतना अच्छा था कि मंगनी रस्म नहीं हुई थी।'

'एक बात पूछूँ, सही उत्तर देना।'

'मैं क्या कभी तुमसे झूठ बोला हूँ।'

'अच्छा यह बताओ, मेरे साथ विवाह करके तुम पछताते तो नहीं हो?'

'ऐसा बेतुका प्रश्न क्यों पूछती हो?'

'यों ही। बिल्कुल सत्य उत्तर देना।'

'अभी तक पछताने का कोई कारण पैदा नहीं हुआ है, और न शायद कभी होगा?'

'यदि कोई मेरे सम्बन्ध में झूठे अपवाद लगाकर तुम्हारे कान भरे तो······।'

'मैं किसी भाँति विश्वास नहीं कर सकता।'

'यदि कोई मुझे चीनी गुप्तचर बतायें तो तुम क्या करोगे?'

'उसकी बात पूरी करते ही मेरे रिवाल्वर की गोली उसके सीने से पार हो जायेगी।'

'सच?'

'तुम्हारे सम्बन्ध में किसी को कुछ कहने का अधिकार नहीं है। मैंने तुमको अच्छी तरह परख लिया है, तुम दूध की तरह उज्ज्वल, गंगा की भाँति पवित्र और देवी की भाँति निष्कलंक हो। सच बताओ क्या किसी ने ऐसी धृष्टता की है?'

सूया ने अपना मस्तिष्क उसके सीने में छिपाते हुए कहा—'नहीं, कहा किसी ने नहीं, किन्तु यों ही पूछा। जानते हो, प्रेमी एक दूसरे के प्रेम की गहराई जानने को सदा उत्सुक रहते हैं।'

'क्या तुमको मेरे प्रेम की गहराई में कोई सन्देह है?'

'रञ्चमात्र नहीं, जिस दिन सन्देह हो जायगा, उस दिन तुम सूया को जीवित नहीं पाओगे। जीवन में केवल तुम्हारा प्रेम पाया है। इसका मूल्य मेरी नजरों में अपने प्राणों से भी अधिक है।'

कहते-कहते वह प्रेम-विह्वल होकर उनके चौड़े सीने में छिप गई। कैप्टेन भी उसके सिर को बारम्बार सूँघ कर अपने प्रेम की गहराई का परिचय देने लगे।

इसी समय परिचारिका चाय का ट्रे लेकर कमरे में प्रविष्ट हुई। सूया हटकर अलग बैठ गई, और दोनों प्रत्यूषकालीन चाय पान करने लगे।

१२

लू के जाने के पश्चात् दामिनी को फिर नींद नहीं आई। भारत चीनी-मैत्री संघ की आड़ में जो कुछ हो रहा था, उसका स्पष्ट आभास उसे मिल गया। शेष रात्रि उसने करवटें बदलते हुए काटी। जहाँ प्रकाश की किरणें अन्धकार को भगाने में व्यस्त हुईं, वह अपनी शय्या त्याग कर उठ बैठी, और सबसे पहले वह उस चोर दरवाजे के पास गई, जहाँ से लू ने रात्रि में प्रवेश किया था। वहाँ उसे कोई द्वार का चिह्न नहीं दिखाई दिया। धीरे-धीरे ठोंक पीट कर देखने के बाद जब वह कहीं से न खुला तब अपने कमरे से निकल कर सीधी अमृता के कमरे के द्वार थपथपाने लगी। अमृता मानो उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसने तुरन्त द्वार खोल दिया। दामिनी ने देखा कि उसका भी मुख उतरा हुआ है, और भय उसके नेत्रों से झाँक रहा है। उसने कमरे में प्रवेश करते हुए पूछा—'क्यों, क्या बात है? बहुत डरी-डरी दिखाई पड़ती हो?' अमृता ने अपने होठों पर उँगली रखकर मौन रहने का संकेत किया और उसके कान के समीप मुँह लगाकर कहा—'यहाँ कुछ न बोलो, हमारी प्रत्येक बात सुनी और प्रत्येक हरकत देखी जाती है। आज रात को लू न-मालूम कैसे मेरे कमरे में आई थी, हालाँकि मैंने सोने के पहले दरवाजा भीतर से बन्द कर दिया था।'

'मुझे मालूम है। इस मकान के चारों ओर गुप्त मार्ग है, उसीसे वह

यहाँ आई होगी। इसी तरह वह मेरे कमरे में भी दाखिल हुई थी, किन्तु मैं उस समय जाग गई थी, और उसको प्रवेश करते मैंने देख लिया था।'

'कुछ बातें हुई थीं ?'

'हाँ, वह मेरे पास लगभग एक घन्टे बैठी रही, और अनेक विषय पर बातें की।'

'ये लोग बड़े भयंकर हैं। हम लोग न-मालूम कब यहाँ से मुक्ति-लाभ करेंगे। यदि यह हमें जरा भी मालूम होता कि भारत-चीनी मैत्री संघ केवल एक बड़ा भारी धोखा है, तो हम इनके जाल में न फँसती। अब तो जान बचाने के भी लाले पड़े हैं।'

'नहीं, तुम इतना न घबड़ाओ। हमारे प्राण लेने में इन्हें कोई लाभ नहीं। यह हम लोगों का उपयोग किसी दूसरे कार्य में कराना चाहते हैं। प्राण लेना चाहते तो अब तक ले लिए होते।'

'वह क्या ? मेरी समझ में तो कुछ नहीं आता।'

'चीनी अपनी शक्ति का दिग्दर्शन करा कर भारत को आतंकित करना चाहते हैं। हमारे द्वारा वह यह स्थापित कराना चाहते हैं कि भारत का कल्याण चीन से लड़ने में नहीं है। भारत इतना कमजोर है कि वह अपनी रक्षा करने में असमर्थ है, और चीन ने जो भू-भाग हड़प लिए हैं, वह उसके हैं, और वह उन्हें कभी वापिस नहीं करेगा।'

'तब तो यह चीन का विश्वासघात ही कहा जायगा।'

'आजकल कूटनीति के अर्थ हैं विश्वासघात। बात यह है कि ये लोग चाहते हैं कि हम जब भारत पहुँचे तो यहाँ की सैनिक तैयारी का आँखों देखा वर्णन उनसे करे, जिससे भारत भयभीत होकर चीन से युद्ध न छेड़े, और उसकी उत्तरी सीमा का जो भू-भाग उन्होंने हड़प लिया है, उसे हम स्वीकार कर लें।'

'किन्तु हमारे कहने से क्या होगा, कोई राज-शक्ति हमारे हाथ में नहीं है।'

'हाँ, ऐसी कोई शक्ति हमारे हाथ में न होते हुए भी हमारा कुछ

सम्बन्ध राजनीति से है। अम्मी संसद सदस्य हैं, बाबू पुराने देश सेवक हैं जिनकी बात का मूल्य है। यदि वे दोनों चीन से युद्ध छेड़ने के विरुद्ध होंगे, तो इसका गहरा प्रभाव पड़ेगा। मेरा तो अनुमान है कि इन लोगों ने हम चारों को इसीलिए रोका है।'

'ठीक है, तुम्हारा और प्रमोद भाई साहब का सीधा सम्बन्ध है, किन्तु मेरा और मंजुला का कोई संबंध राजनीति से नहीं है।'

'मंजुला के पिता भारतीय सेना में एक कर्नल हैं, और तुम लाला ज्वालासिंह की पुत्री तथा कैप्टेन अर्जुनसिंह की बहिन और सूया की ननद हो। यदि हम लोग राजनीति से सम्बंधित हैं, तो तुम लोग सेना से हो।'

'परन्तु सैनिक अफसरों के हाथ में युद्ध छेड़ने या न-छेड़ने का अधिकार नहीं है।'

'किन्तु उनके द्वारा सेना के जवानों का नैतिक स्तर गिरा कर हौसला पस्त किया जा सकता है। यह भी कूटनीति की गहरी चाल है कि केवल प्रचार के द्वारा दूसरों के देशों को हड़प जाना। इसी उद्देश्य में 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' के मन्त्र का इतना प्रचार हुआ और शिष्टमंडलों के आवागमन में अधिकता हुई है। इसमें सन्देह नहीं कि हम लोग बुरी तरह ठगे गए हैं।'

'सूया के विषय में तुम्हारा क्या ख्याल है?'

'वह भी चीन की गुप्तचर है, इसमें तनिक सन्देह नहीं है।'

'तब फिर भैया का जीवन भी खतरे में है। न-मालूम क्या देखकर उस पर वह रीझ गए। हमारी मंजुला कहीं अच्छी है उस नकचिपटी सूया से।'

'दरअसल तुम्हारे भैया नहीं, बल्कि वही नकचिपटी उनकी गलग्रह हो गई। वह किसी भारतीय अफसर की पत्नी बनना चाहती थी।'

'इसमें उसका लाभ क्या था?'

'भारतीय नागरिकता प्राप्त करना।'

इसी समय मंजुला भी वहाँ आ गई, उसका भी चेहरा उतरा हुआ था।

अमृता ने उससे पूछा—'क्यों लाड़ो, मालूम होता है कि तुम्हें भी कोई कटु अनुभव हुआ है?'

'हाँ, दीदी, मैं एक दिन भी यहाँ नहीं रह सकती।'

'क्यों, क्या हुआ ? कुछ बताओ भी ।'

'लू न-मालूम कैसे मेरे बंद कमरे में घुस आई, आई, और बड़ी देर तक चीन की सैनिक शक्ति का गुण गान करती रही। उसने कई नए-नए अन्वेषणों का वर्णन किया, जिसके द्वारा मनुष्य बिना किसी प्रयास के मारा जा सकता है। उसने एक छोटी डिबिया दिखाकर कहा कि वह केवल इसकी सहायता से बड़ी-बड़ी सेनाओं का संहार कर सकती है।'

'और तुमने विश्वास कर लिया ?'

'आज के इस वैज्ञानिक युग में सब कुछ संभव है।'

'हम लोगों को डराने की बातें हैं। बहरहाल रात में लू ने हम सबको चेतावनी दे दी।'

'अब प्रमोद भैया से पूछना चाहिए कि उनको क्या अनुभव हुआ है।'

'इस काम को मंजुला जी बहुत कुशलता से सम्पादित कर सकती हैं।'

'तुम्हारी जबान पर किसका ताला लगा है, जो इतना घबड़ाती हो।'

'शाबाश मंजुला, बहुत ठीक। अमृता-बीबी, अब बताइए•••।'

'देखिए चक्र-सुदर्शन घुमाते स्वयं भगवान् अपनी हथिनी की रक्षा के लिए चले आ रहे हैं।'

दामिनी और अमृता हँसने लगीं। मंजुला का मुख लाल हो गया।

प्रमोद ने उनको हँसते देखकर कहा—'दम्मो, तुम दोनों न-मालूम क्यों एक आदमी के पीछे पड़ी रहती हो ? फिर समय-असमय भी नहीं देखती हो। हम लोग कितनी मुसीबत में फँस गए हैं, और तुमको मज़ाक सूझा है।'

'मालूम होता है कि तुमको भी कुछ अनुभव हुआ है ?'

'हाँ, क्या तुमने भी कोई आश्चर्य जनक घटना देखी है।'

'हाँ, कुछ अद्‌भुत बातें हुई हैं।'

'वह क्या ?

'हमारे कमरों में लू गुप्त द्वारों से आई थी, और चीन की सैनिक शक्ति की तारीफ कर गई है। आपने क्या देखा है ?'

'मैं अभी तक यह तय नहीं कर पाया हूँ कि मैंने स्वप्न देखा है—या सत्य।'

'अच्छा, अब तो आपको कुछ दिखाया गया है।'

'हाँ, किन्तु यहाँ नहीं, चलो मैदान में बातें करें।' अमृता ने कहा।

उसके सुझाव को मानकर सब लॉन पर आ गए, और टहलते हुए बातें करने लगे।

दामिनी ने पूछा—'हाँ, भैया अब बताइए कि आपने क्या देखा ?'

'तुम लोगों से विदा होकर मैं सोने चला गया, और हस्वमामूल तरीके पर पानी पीने के बाद मैं चारपाई पर लेट रहा, और एक उपन्यास पढ़ने लगा। दूसरे दिन तो नींद बहुत मुश्किल से आती थी, किंतु कल मुझे मालूम ही न पड़ा और सो गया। जब आँख खुली तो मैंने अपने को एक बड़े भारी हाल में पाया। मेरे हाथ-पैर बँधे तो नहीं, किन्तु अवश थे, और एक स्वचालित गाड़ी पर मैं बैठा था। हाल में चारों ओर सन्नाटा था, और वह तीव्र प्रकाश से आलोकित था। गाड़ी मुझे लिए हुए चारों ओर चक्कर लगा रही थी। वह हाल कितना बड़ा था, इसका अन्दाज़ा मुझे नहीं हो सका। नहीं कह सकता कि वह सुरंग थी, अथवा भूगर्भस्थ कोई फैक्टरी। चारों ओर नाना प्रकार के अद्भुत अस्त्रों के अम्बार लगे थे, और प्रत्येक ढेर पर चित्र लगे थे, जो उनकी मरात्मक शक्ति बता रहे थे। एक चित्र में किसी अस्त्र का विस्फोट अगणित मनुष्यों के मध्य दिखाया गया था, दूसरे में उनको जलते हुए दिखाया था, तीसरे में आकाश से आती हुई किरणों से मनुष्यों को जलता दिखाया गया था। न-मालूम वहाँ कितने चित्र दिखाए गए थे, किन्तु उन सबमें नर-संहार के दृश्य अंकित थे।'

'यह आप कब तक देखते रहे ?'

'इसका मुझे कोई ज्ञान नहीं है, लेकिन बहुत देर तक वह स्वचालित गाड़ी मुझे दिखाती रही, किन्तु जो दृश्य मैंने उन चित्रों में देखे, उनसे मेरे रोंगटे खड़े हो गए। यदि वास्तव में वह स्वप्न नहीं है तो यह कहना पड़ेगा कि चीन की सैनिक शक्ति, नए-नए विध्वंसक अस्त्रों के अन्वेषण से बहुत

प्रबल हैं, और अकेले समस्त संसार से लोहा ले सकता है।'

'बस आपके दिमाग पर वही असर हुआ जो वह पैदा करना चाहते हैं।' दामिनी ने कहा ?

'क्या मतलब !'

'हम लोग इस निष्कर्ष पर पहुँची हैं कि चीन हमारा उपयोग अपनी सैनिक शक्ति की प्रबलता के प्रचार में करना चाहता है। शायद आपको मालूम हो गया होगा कि चीन ने भारत की उत्तरीय सीमा पर अधिकार कर लिया है।'

'तुमको कैसे मालूम हुआ ?'

'लू ने मुझे बताया है।'

'मुझे कुछ नहीं बताया गया, किन्तु यह संभव है। अच्छा, सूया के सम्बन्ध में तुम्हारा क्या विचार है ?'

'मुझे वह चीनी गुप्तचर मालूम होती हैं।'

'हाँ, अब मेरी भी यही धारणा हो रही है। कैप्टेन अर्जुनसिंह जी बुरे फँसे।'

'इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह नकचिपटी चीनी गुप्तचर है।' अमृता ने कहा।

'वह किसी बड़े घर में प्रवेश पाना चाहती थी।' मंजुला ने कहा।

'हाँ, उसके आचरणों से ऐसा ही कुछ प्रतीत होता था।' प्रमोद ने सोचते हुए कहा।

'क्या आपको भी कुछ अनुभव हुआ है ?' अमृता ने मुस्कराते हुए पूछा।

'हुआ भी होगा तो क्या हम लोगों को बताएँगे ?' मंजुला ने कहा।

'हम लोग न मालूम कहाँ बहक गए। भैया यह तो बताइए कि आप पुनः अपने कमरे में कैसे पहुँचे ? क्योंकि इतना तो स्पष्ट है कि आपने प्रातः-काल अपने को अपने ही कमरे में पाया होगा।'

'हाँ, उस गाड़ी में घूमते-घूमते, सहसा उस वृहत् हाल अथवा सुरंग में अन्धकार छा गया, जैसे किसी ने विद्युत्-प्रवाह एक दम से रोक दिया हो।'

'तब तो आप बहुत घबड़ाए होंगे ?'

'हाँ, किन्तु उसी क्षण दीवार से एक प्रकाश की किरण निकलकर मेरी आँखों से टकराने लगी।'

'हाँ, उसका प्रकाश इतना तीव्र था कि मेरी आँखों में जलन होने लगी, और न-मालूम कब मैं बेहोश हो गया। जब पुनः आँख खुली, तो अपने मुख पर किताब रखे हुए अपने को पाया। तब से इसी विडम्बना में पड़ा हुआ हूँ कि जो कुछ मैंने देखा है, वह क्या स्वप्न था ?'

'नहीं, वह स्वप्न नहीं, बिल्कुल सत्य था। हमको डराने का प्रयत्न किया जा रहा है।'

'यह किसलिए ?'

'चीनी शक्ति का प्रचार कराने के लिए। दरअसल, 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' का जाल बिछाकर भारत को बुरी तरह फाँसा गया है। इस संगठन में कोई सत्यता नहीं है। अपनी दुरभि संधियों को छिपाने के लिए इस नारे का आविष्कार हुआ है।'

'और चीन इसमें सफल भी हो गया है। हमारी आँखों में परदा डालकर वह हलुए के कौर की भाँति हमारा उत्तरीय प्रदेश निगल गया।'

इसी समय सहज मुस्कान लिए हुए तिनलिन आते हुए दिखाई पड़े। वे चुप होकर उसके आगमन की प्रतीक्षा करने लगे।

उसने उनके पास पहुँचकर प्रमोद से कहा—'लीजिए, आपके लिए यह पत्र है। अब मैंने यहाँ पर आपकी डाक मँगाने का प्रबन्ध कर लिया है।'

प्रमोद उत्सुकता से पत्र पढ़ने लगे। दामिनी झुककर पढ़ने का प्रयत्न करने लगी। पत्र इस प्रकार था—

कुकुड़नाग (काश्मीर)

प्रिय प्रमोद,

तुम्हारे पिता की अस्वस्थता के कारण हम लोग वायु-परिवर्तन के लिए काश्मीर आ गए हैं। यह तुमको मालूम है कि तुम्हारे पिता के स्वास्थ्य के लिए काश्मीर की जलवायु बहुत हितकर है। कुकुड़नाग के झरने के जल में बहुत पोषक तत्व हैं। कुछ दिन यहाँ रहने का विचार है। यहाँ से फिर हम लोग पहलगाम जाकर ठहरेंगे। वहाँ तब तक रहेंगे, जब तक बर्फ न गिरने लगेगी। यदि तुमको सुविधा मिले तो तुम लोग उत्तरी रास्ते से लद्दाख चले आओ, और फिर वहाँ से पहलगाम आ सकते हो। तुम्हारे और दामिनी के आ जाने से तुम्हारे पिता का आधा रोग अच्छा हो जायगा। वह अपने मुख से कुछ कहते नहीं, किन्तु तुम दोनों के लिए चिन्तित रहते हैं।

दिल्ली में सब ठीक है। सूया और कैप्टेन अर्जुनसिंह के विवाह का समाचार मैं अपने पहले पत्रों में दे चुकी हूँ, और यह भी बता चुकी हूँ कि सूया कारपोरेशन में चुनाव लड़कर जीत गई है। अब वह मेयर भी चुन ली गई है। पहली बार एक नारी दिल्ली की मेयर हुई है। वह तुम लोगों के सम्बन्ध में प्रायः पूछा करती है।

अब तुम वहाँ से शीघ्र से शीघ्र सीधे काश्मीर आ जाओ। महाशय तिन-लिन से मेरी ओर से अनुरोध करना, मुझे विश्वास है कि वह इसका प्रबन्ध कर देंगे। मैं उनको एक पत्र इसी अनुरोध के साथ लिख रही हूँ।'

तुम्हारी माँ
करुणा सुन्दरी।

पत्र पढ़कर प्रमोद ने तिनलिन से पूछा—'माता जी का पत्र आपको मिल गया है?'

अपनी जेब से उसे निकालते हुए कहा—'हाँ, आप लोगों को लद्दाख के रास्ते भेजने का अनुरोध किया है।'

'जी हाँ, हमारे माता-पिता आजकल काश्मीर में हैं। इधर से जाने में सुविधा रहेगी।'

'किन्तु कैप्टेन अर्जुनसिंह की वहिन अमृता और उनकी सहेली मंजुला को दिल्ली पहुँचाना है।'

अमृता ने तुरन्त कहा—'मैं भी इन लोगों के साथ जाऊँगी और मंजुला भी हमारा साथ नहीं छोड़ेगी, इसलिए आपको कोई दूसरा प्रवन्ध नहीं करना होगा।'

'तब ठीक है। मैं पहले भी आपको इस नये मार्ग के द्वारा भारत भेजने का विचार कर रहा था। यह जानकर आप लोगों को प्रसन्नता होगी कि हमने भारत की सीमा तक सड़क बना ली है।'

'लेकिन पहले कोई मार्ग नहीं था।'

'हाँ, यह अभी हाल में ही पूर्ण हुआ है, यद्यपि हम गत चार वर्षों से इस मार्ग को तैयार करने में संलग्न थे।'

'किन्तु भारत को इस नये मार्ग की कोई खबर नहीं है।'

'होनी भी नहीं चाहिए, क्योंकि यह क्षेत्र चीन के अधीन है। यह तो आपको लू के द्वारा मालूम हो गया है कि चीन ने तिब्बत को अपने संरक्षण में ले लिया है, क्योंकि वहाँ पर मनुष्य दासों का जीवन व्यतीत करते थे। लामाओं के अत्याचार इतने बढ़ गए थे कि वहाँ मानव-जीवन का कोई मूल्य नहीं रह गया था। उनकी पुकार पर हमें मजबूर होकर उनके आन्तरिक गृह-प्रबन्ध में हस्तक्षेप करना पड़ा। वहाँ पर अविद्या और अज्ञान इतना छाया था कि वहाँ के निवासी एक मनुष्य को भगवान् मानकर पूजते थे। उसकी सत्ता को हमने अपने एक ही प्रहार में नष्ट कर देशान्तरों में आश्रय पाने के लिए मजबूर कर दिया है। वह भागकर भारत की शरण में गया है।'

'किन्तु हमें यहाँ उसका कोई आभास तक न मिला।'

'वह पुलीसी कार्यवाही थी, कोई युद्ध तो था नहीं, जिसकी हलचल आपको देखने को मिलती। अब आजकल हम तिब्वत की सीमाएँ दुरुस्त कर रहे हैं। उस देश में कोई शासन था नहीं, इसलिए उसकी सीमाएँ अस्त-व्यस्त थीं। शायद इस सम्बन्ध में भारत से भी कोई विवाद उठ खड़ा

हो। यद्यपि विवाद का कोई कारण नहीं है, परन्तु दोनों देशों में मित्रता है। कोई किसी की भूमि नहीं चाहता, इसलिए सीमा सम्बन्धी विवाद सहज ही निपट जायँगे। आप इस मार्ग से जा रहे हैं, सत्य असत्य का निर्णय आप लोग स्वयं कर लेंगे, और हमें विश्वास है कि आप अपने माता-पिता के द्वारा भारतीय सरकार का भ्रम निवारण करने में 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' होने का प्रमाण देंगे।'

'हाँ, इसमें क्या सन्देह है।'

'आप लोगों ने अपनी आँखों से स्वयं देखा है कि चीनी जनता में भारतीयों के प्रति कितनी सहानुभूति, कितना प्रेम, और कितना सौहार्द्र है। भारत की महानता को चीन भली भाँति जानता है। हम लोग पड़ौसी होते हुए भी कभी आपस में लड़े नहीं, क्योंकि हमारे देशों की नीति उपनिवेशवाद पर कभी आधारित नहीं रही। इसीलिए अतीत से आज तक इन्हीं दोनों देशों के उपनिवेशों का कोई विवरण नहीं मिलता।'

'हमने कभी अपनी शक्ति का दुरुपयोग नहीं किया।'

'चीन भी दूसरों को गुलाम बनाने के विरुद्ध है, इसीलिए तिब्बत में गुलामी का अन्त करने के लिए उसको यह कड़ुवा घूँट पीना पड़ा। आज आपके प्रस्थान का दिन नियत था, किन्तु रास्ते में हेर-फेर हो जाने से कुछ घंटे आपको प्रतीक्षा करनी होगी। कल प्रातःकाल सात बजे हम लद्दाख के लिए रवाना हो जायँगे। हम यात्रा वायुयान से करेंगे, इसलिए दोपहर या अधिक-से-अधिक तीसरे पहर आपको अपनी सीमा तक पहुँचा देंगे, और लेह के अधिकारियों को आपके आगमन की सूचना भेज देंगे। वहाँ से उसके आगे काश्मीर सरकार आपको श्रीनगर पहुँचा देगी। वहाँ से आप पहलगाम जाकर अपने माता-पिता से मिल सकेंगे। अच्छा, मैं अब आपके प्रस्थान का प्रबन्ध करने जा रहा हूँ। कल प्रातःकाल छः बजे आप लोगों से पुनः भेंट होगी। यहाँ लू आपके सत्कार में कोई कमी नहीं आने देगी।'

बिना किसी उत्तर की प्रतीक्षा किए तिनलिन शीघ्रता से चला गया।

अमृता ने कहा—'आज मैं अपने कमरे में अकेले सो नहीं सकती।'

'मैं भी नहीं सोऊँगी', मंजुला ने भी अपना मत प्रकट किया।

दामिनी ने कहा—'हम लोगों में से कोई अकेले नहीं सोएगा। आज रात भर हम लोग ब्रिज खेलेंगे।'

सबों ने इस विचार का अनुमोदन किया।

१३

दूसरी रात्रि को कोई घटना नहीं घटी। रात्रि को दो बजे तक बड़े उल्लास के साथ ब्रिज का खेल चलता रहा। पहले मंजुला और दामिनी एक तरफ थी, और प्रमोद तथा अमृता उनके प्रतिद्वन्द्वी थे। मंजुला खेलने में कमजोर थी, इसलिए दामिनी की हार पर हार हो रही थी, इससे क्रुद्ध होकर उसने खेलना बन्द कर दिया। वह भी कुछ खिसिया गई और परेशानी से उनका मुख निहारने लगी। प्रमोद ने जब उसका उतरा हुआ चेहरा देखा, तो उन्हें बड़ी वेदना हुई, और मंजुला को अपना साथी बनाकर पुनः खेलने लगे। साथियों के परिवर्तन से भी कोई लाभ नहीं हुआ, दामिनी और अमृता फिर भी हारती गईं। अन्त में दामिनी ने ताश के पत्ते फेंक दिए, और खेलने से इन्कार कर दिया। तब यह तय हुआ कि बातचीत में शेष रात्रि काटी जाय। इधर-उधर की बातें होने लगीं, किन्तु नींद का आक्रमण इतनी जोर से हुआ कि वे चारों बातें करते हुए सो गए। दामिनी की नींद तब खुली जब प्रातःकाल पाँच बजे के लगभग लू उन्हें जगाने आई। सबसे पहले उसने दामिनी को उठाया। अपने सामने लू को देखकर वह पहले घबड़ा गई, परन्तु जब उसने कनखियों से अपने साथियों को पास ही सोते देखा तो वह कुछ आश्वस्त हुई।

लू उसकी घबड़ाहट का अनुमान कर कुछ मुस्कराई, फिर बोली—'बहिन दामिनी, आज आप लोगों के प्रस्थान का दिन है। मुझे जितनी पीड़ा

हो रही है, उसे मैं शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं कर सकती। क्या भारत पहुँचकर मुझे याद करोगी ?' कहते-कहते उसकी आँखों में वियोगाश्रु उभरने लगे।

दामिनी का हृदय उन अश्रुओं को देखकर कुछ विगलित हुआ। उसने उसे हृदय से लगाते हुए कहा—'भला यह कैसे सम्भव है कि मैं अपने जीवन के सबसे सुखी दिनों को भूल जाऊँ और जब प्रत्येक सुखी दिन पर तुम्हारे प्रेम, स्नेह, तथा सौहार्द्र की छाप लगी हो, तब तुम्हें कैसे भुलाया जा सकता है ? हम भारतीय केवल प्रेम के भूखे हैं। निष्कपट प्रेम देते हैं, और प्रतिदान में प्रेम चाहते हैं। बहिन, तुम लोगों से प्रेम तथा स्नेह अति प्रचुर मात्रा में पाया है।'

'यदि मेरी बातों से तुम्हारे मन में कोई दुर्भावना अथवा आशंका उत्पन्न हुई हो, मैं सच्चे मन से उसके लिए क्षमा चाहती हूँ। मेरे सहज आचरण में जो कुछ अंतर मालूम पड़ा हो, मैं स्पष्ट बता देना चाहती हूँ कि वह मेरी अनिच्छा एवं दवाव से हुआ है। तुम अनुमान नहीं कर सकती कि हमारा जीवन कितना संकटापन्न है। हम स्वाधीनता के सुख की कल्पना करती हैं, किन्तु उसको भोग कर नहीं जान सकती। संसार की कोई वस्तु हमारी नहीं है—सभी कुछ राष्ट्र का है। इसी भाँति हमारा जीवन भी केवल राष्ट्र के लिए है—हमारी इच्छा तथा अनिच्छा का कोई महत्त्व नहीं है।'

'मैं जानती हूँ बहिन, तुम लोगों की कठिनाइयों को। तुम्हारे साथ हमारी पूर्ण सहानुभूति है। मैं तुम्हें भारत आने के लिए निमंत्रित करती हूँ। देखो तुम्हारे देश की सूया है, और भारत में रहते हुए कुछ ही दिन बीते हैं, किन्तु इसी अवसर में वह दिल्ली की मेयर चुन ली गई है। भला किसी अन्य देश में यह संभव है। प्रजातन्त्र का विकास जितना हमारे देश में हुआ है, उतना किसी देश में नहीं। भारत मानव मात्र से प्रेम करता है। देश, जाति तथा वर्ण का भेद उसकी दृष्टि में बिल्कुल नहीं है।'

'हाँ, यह तो मैं स्वयं अनुभव कर रही हूँ। तुम्हारे निष्कपट स्नेह से यह निश्चय हो गया है कि मेरे लिए भारत में सूया की भाँति सम्माननीय स्थान है, परन्तु मेरे लिए चीन छोड़ना उस समय तक सम्भव नहीं है, जब तक

यहाँ के अधिकारी अनुमति न द।'

'तब सूया अधिकारियों की इच्छा से भारत गई है ?'

'हाँ, वह निस्सन्देह उनके आदेश से गई है। सूया की भाँति कई अन्य युवतियाँ भी भारत के अतिरिक्त बर्मा, इण्डोनेशिया आदि देशों में गई हैं।'

'जब आवागमन का सिलसिला जारी है तब तुम भी भारत आ सकती हो।'

'परन्तु मेरा पिता मुझे कहीं नहीं भेजना चाहता।'

'किन्तु थोड़े दिनों के लिए तुम आ सकती हो। क्या तिनलिन से मैं कहूँ ?'

लू दाँतों से जीभ काटती हुई बोली—'अरे नहीं, कहीं गजब न ढा देना। यदि उन्हें मालूम हो जाय अथवा शंका भी हो जाय कि तुम लोगों से मैंने सिवाय स्वीकृत विषयों के अन्य विषयों पर बातें की हैं तो यह अपराध अक्षम्य है और कोई न कोई यन्त्रणा मुझे दी जायगी। बहिन, अत्याचारों को सहन करना हमारी प्रकृति बन गई है। हम पर चाहे जितना जुल्म हो, हम उसके विरुद्ध कहीं फरियाद नहीं कर सकतीं। जिस किसीसे हम अपने दुःख कहेंगी, वही हमारा शत्रु बन जायगा, और परिणाम यही होगा कि शायद प्राण भी विसर्जन करना पड़े। तुमसे अपना दुखड़ा इसीलिए रोई हूँ कि मेरी बात तुमसे आगे नहीं जायगी।'

'तुम मेरी ओर से निःशंक रहो। अच्छा बहिन, इतना तो बता दो कि कल रात्रि को तुमने जो बातें बताई थीं, वे क्या सब किसी के आदेश से कही थीं।'

'हाँ, मैं उस समय बड़ी अनिच्छा से बातें कह रही थी, क्योंकि मेरा पिता चोर दरवाजे के बाहर खड़ा सुन रहा था।'

'इसका रहस्य कुछ समझ में नहीं आया।'

'मेरी समझ में भी इस रहस्य का आदि-अन्त न आया। शायद इसमें कोई राजनीतिक चाल हो, परन्तु इतनी प्रार्थना है कि मुझे उन चालों में शरीक न समझना। मैं नारी हूँ, प्रेम करना मेरा स्वभाव है, किंतु यहाँ किसी

से मैं प्रेम नहीं कर सकती। तुम लोगों को पाकर मेरा सुप्त प्रेम जाग पड़ा, और मैंने अपना हृदय उसमें उंड़ेल दिया। तुम लोगों के मिलन की स्मृति मेरे बोझिल जीवन को कभी-कभी हलका बनाएगी। तुम लोगों से जो प्रकाश मेरे अन्धकारपूर्ण जीवन को प्राप्त हुआ है, वह सदा अमिट रहेगा, और वही मुझे उत्साह प्रदान किया करेगा, जब मैं निराश होकर सोचूँगी कि इस विराट् पृथ्वी पर मुझे कोई प्यार करने वाला नहीं है।' कहते-कहते उसके नेत्रों से अश्रुधाराएँ बहने लगीं।

दामिनी ने उसे अपने हृदय से लगाते हुए कहा—'लू, तुम्हारे कष्टों को देखकर मेरा हृदय फटा जा रहा है। तुम भावुक स्वभाव की हो।'

'हाँ दीदी, मैं बड़ी भावुक हूँ, और यही भावुकता मेरे जीवन का अभिशाप बनी हुई है। कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता है कि शायद मुझे आत्महत्या न करनी पड़े।'

भावावेश से उसे पुन: आलिंगनबद्ध करते हुए दामिनी बोली—'हमारे तुम्हारे प्रेम की सौगंध है, ऐसा दुष्कर्म न करना। यदि कहीं ऐसा तुमने कर लिया तो हम लोगों को अतीव कष्ट होगा। संघर्ष करो, यही जीवन है। एक दिन तुम्हारी कठिनाइयाँ हल होकर रहेंगी। एक-समान कभी दिन नहीं जाते।'

लू अपने अश्रुओं को पोंछती हुई बोली—'बहिन यदि भारत पहुँचकर कभी दो शब्द लिखकर भेज दिया करोगी तो वे सम्बल बनकर मुझे साहस प्रदान करेंगे। एक बार कोशिश करूँगी भारत आने की, किन्तु उसमें मुझे सफलता मिलेगी या नहीं, यह नहीं बता सकती।'

'मेरा अनुरोध है कि तुम अवश्य कोशिश करना। जिस प्रकार मैं शिष्टमंडल में तुम्हारे देश में आई हूँ, उसी प्रकार तुम भी आ सकती हो। माता जी के द्वारा प्रयत्न कराऊँगी कि भारत भी चीन के शिष्टमंडल को आमन्त्रित करे।'

'सुना है कि तुम्हारे माता-पिता का भारतीय सरकार में विशिष्ट स्थान है।'

'हाँ, उनकी मन्त्रणा का आदर होता है, यद्यपि वे कोई सरकारी पद पर आसीन नहीं हैं। उन दोनों का समस्त जीवन स्वातन्त्र्य संग्राम में बीता है और उनकी निस्वार्थ सेवा भाव की सभी इज्जत करते हैं।'

'तब अवश्य उनके द्वारा यह प्रयत्न कराना कि चीन और भारत की मित्रता में कोई अंतर न आने पावे। चीन सत्य ही भारत का मित्र है, और जो घटनाएँ तिब्बती सीमा के सम्बन्ध में घटी हैं वे इतनी महत्वपूर्ण नहीं हैं, जिससे मित्रता में व्याघात पहुँचे। हम लोगों का पुनर्मिलन तभी सम्भव है, जब दोनों देशों में मैत्री स्थाई रहे। इसीलिए मैं बार-बार अनुरोध करती हूँ कि ऐसा प्रयत्न करना जिससे हमारा आवागमन बराबर बना रहे।'

'हाँ, हम लोगों का प्रयत्न इसी दिशा में रहेगा।'

'चीन को अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए ही ऐसा कदम उठाना पड़ा है, नहीं तो पहाड़ी बंजर भूमि जैसी अब तक असीमित पड़ी थी, वैसी ही पड़ी रहती। पश्चिमी राष्ट्र हमारे दोनों राष्ट्रों का जागरण सहन नहीं कर सकते, इसीलिए भारत और चीन दोनों के चारों ओर नाकाबंदी कर रखी है। जब ब्रिटेन ने भारत को स्वतंत्रता दी तो दी उसको चारों दिशाओं से बाँध कर।'

'यह मेरी समझ में नहीं आया, भारत तो सर्वथा मुक्त है।'

'दीदी, क्या तुम्हारे देश के साथ जो कूटनीतिक चाल चली गई थी, वह भी मुझे बताना पड़ेगा क्या?'

'अवश्य बताइए।'

'देखिए जब भारत की स्थिति जल, थल तथा वायु के सैनिक विद्रोहों से अत्यन्त जटिल हो गई, और ब्रिटेन की सैनिक शक्ति इतनी क्षीण हो गई कि उसके लिए भारत तथा अन्य देशों को अपने नियंत्रण में रखना असंभव हो गया, तब उसने कूटनीति का आश्रय लेकर भारत का विभाजन कराया। पाकिस्तान पर उसका वरद हस्त था, और एक प्रकार से उसे वह अपनी जागीर समझता था, क्योंकि वह जानता था कि पाकिस्तान अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सकता। इसी भाँति वह भारत को भी शासन-क्षमता से हीन

समझता था। भारत के लिए छः सौ देशी रियासतों का जाल भी बिछा गया, जिनमें वह उलझा रहे, और उसके नेता संसार के समक्ष यह न प्रमाणित कर सकें कि उनमें शासन चलाने की वही क्षमता है जो पश्चिमीय निवासियों में है। इसलिए इन रियासतों के अलावा उसको चारों दिशाओं से जकड़ भी दिया। उन्हें विश्वास था कि जिस नीति पर भारत का विभाजन हुआ है, उससे काश्मीर और हैदराबाद पाकिस्तान में मिल जायँगे। इस प्रकार पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में पाकिस्तान अथवा उससे संरक्षित प्रदेश भारत को घेरे रहेंगे, और जहाँ वह सिर उठायेगा, वहाँ पाकिस्तान की आड़ में वह उसे नष्ट कर देगा।'

'हाँ, इस दृष्टिकोण से सत्य ही ब्रिटेन की यही चाल मालूम होती है।'

'मैं आपसे कहती हूँ कि पश्चिमीय राष्ट्र कभी नहीं चाहते कि पूर्व के देश मनुष्य की भाँति स्वतंत्र जीवन व्यतीत करें। जिस शेर को मनुष्य-रक्त का मज़ा मिल जाता है, वह नर भक्षी हो जाता है। उसी प्रकार पूर्वीय देशों का शोषण करते-करते वे इतने समृद्धशाली बने हैं, उनकी जीवन-धारा ही उपनिवेशवाद पर अवलम्बित है, तब फिर कैसे वह चीन तथा भारत को पनपते, फूलते, फलते देख सकते हैं? चीन और भारत की मैत्री वे कभी नहीं चाहते।'

'चीन और भारत दोनों सजग हैं, वे अब उनके कुचक्र में नहीं पड़ेंगे।'

'हाँ, हमारा ध्येय यही होना चाहिए, किन्तु कूटनीति में पश्चिमीय राष्ट्र बड़े सिद्धहस्त हैं। वे मित्र बनकर बड़ी सुगमता से हमारे मध्य प्रवेश पा जाते हैं, और फिर हमारा शोषण करने लगते हैं। बिल्कुल ताज़ी मिसाल सामने रखती हूँ। अपनी स्थिति को दृढ़ करने तथा पश्चिमीय राष्ट्रों को सुरंग लगाने का अवसर देने के विचार से जब चीन ने तिब्बत को अपने अधीन किया, तो उसकी प्रतिक्रिया में पश्चिमीय राष्ट्र चिल्ला-चिल्ला कर भारत की अदूरदर्शिता के लिए कोसने लगे। दलाई लामा को, जो भगवान् बुद्ध का अवतार बन कर मनुष्यों का शोषण करता है, अपने प्रचार का केन्द्र बनाया, और भारत को उसका पक्ष लेने के लिए ललकारने लगे, किंतु

उनको वह सफलता न मिली जिसका अंदाज़ा उन्होंने लगाया था। इसी सिलसिले में तिब्बत की सीमा भी ठीक करने का प्रश्न सामने आया, और जो प्रदेश निर्जन, उजड़े पड़े थे, जहाँ से चीन के शत्रु लुक-छिपकर आक्रमण कर सकते थे, उसे अपने अधीन करना आवश्यक समझा गया। भारत की ओर से कोई खतरा चीन को नहीं था, किन्तु पाकिस्तान से वह सशंकित अवश्य है, क्योंकि वहाँ अमरिका के फौजी अड्डे बन गए हैं। चीन की सुरक्षा के लिए यह आवश्यक था कि वह इस भू-भाग पर सैनिक चौकियाँ बैठा कर अपना नियंत्रण रखे। यह पश्चिमीय राष्ट्रों को नहीं भाया, क्योंकि उन्होंने जो सैनिक अड्डों की शृंखला एशिया से योरोप तक बना रखी है, उसमें एक बड़ा भारी छिद्र हो गया, इसीलिए वह वावेला मचा रहे हैं और भारत को चीन के विरुद्ध खड़ा कर रहे हैं।'

'यह तो बिल्कुल स्वाभाविक है, जिसको ठेस लगेगी वह चिल्लाएगा।'

'बस यही अवसर हमारे दोनों देशों की परीक्षा का है। यदि उनके प्रचार से हमारी मैत्री शिथिल हो गई तो संभव है कि वे हमारी शक्ति क्षीण होने पर पुनः हम पर हावी हो जाय। मुझे आपसे आशा है कि आप हमारा दृष्टिकोण अपने माता-पिता के समक्ष रखकर दोनों देशों के मैत्री सम्बन्ध नहीं बिगड़ने देंगी। हिन्दी-चीनी भाई-भाई का आन्दोलन जो शिथिल पड़ रहा है, उसे पुनर्जीवित करेंगी।'

'अवश्य, हमलोग ऐसा ही करेंगे, परन्तु यह तो बताओ, तुमको इन राजनीतिक दांव-पेचों की जानकारी कैसे हुई?'

'अरे यह तो बहुत साधारण बातें हैं। कम्यूनों में जो शिक्षण पाठ-शालाएँ चल रही हैं उनमें प्रतिसप्ताह अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति पर व्याख्यान होते हैं, और प्रत्येक चीनी को उससे अवगत करा कर उसकी जानकारी अद्यावधिक रखी जाती है।'

'कम्यूनों में दूसरी कौन-कौन शिक्षाएँ दी जाती है?'

'चीन को एक दिन पश्चिमीय राष्ट्रों के साथ संघर्ष में प्रवृत्त होना है, इसलिए प्रत्येक युवा-युवती को ऐसे शारीरिक अभ्यास कराए जाते हैं, जिससे

वे कुछ सप्ताहों में सुदक्ष सैनिक बन जायँ। इस समय हमारे पास एक करोड़ सैनिक तैयार हैं—चालीस लाख तैयार हो रहे हैं, और कई लाख कुछ ही वर्षों में तैयार हो जायँगे। इस प्रकार दो करोड़ से अधिक आधुनिक शस्त्रास्त्रों के संचालन में दक्ष सैनिक रखने की योजना है, जो चीन के लिए कठिन नहीं है।'

'इतने सैनिकों के रखने से देश के ऊपर कितना भार पड़ता है?'

'हमारा देश उसे उठाने में सर्वथा समर्थ है। हम साज-सज्जा, और दिखावे पर व्यय नहीं करते—हमारा व्यय होता है अपनी सुरक्षा में। संसार का इतिहास यह बताता है कि शक्त राष्ट्र की शक्ति का केन्द्र है सुदृढ़-सुशिक्षित सेना।'

'किन्तु संसार में तो निरस्त्रीकरण हो रहा है। वह युद्धों को नष्ट करना चाहता है।'

लू खिल-खिलाकर हँस पड़ी। दामिनी अप्रतिभ होकर उसको निहारने लगी।

'मैं पहले भी कह चुकी हूँ कि मानवीय भावनाओं में यदि आमूल परिवर्तन संभव है, तो संसार से युद्धों का निवारण भी संभव हो सकेगा, अन्यथा नहीं। मनुष्य स्वभावतः युयुत्सु है। संघर्ष पर उसका जीवन निर्भर करता है, फिर वह युद्धों से कैसे विरत हो सकता है? निरस्त्रीकरण भी उनकी कूटनीतिक चाल है।'

'परन्तु यह आवाज तो रूस उठा रहा है।'

'इसमें उसका कोई स्वार्थ-निहित होगा। वह क्या है यह मैं नहीं बता सकती, परन्तु इतना अवश्य कह सकती हूँ कि शायद वह अधिकाधिक शक्त होने के लिए अवकाश और शान्ति चाहता है। संभव है कि उसके कार्यक्रम में कुछ ऐसी अड़चनें हों, जो कुछ समय के पश्चात् ही दूर हो सकती हों, और इसलिए यह नारा उठाना आवश्यक हो गया है।'

'यदि युद्ध छिड़ता है तो ऐसे-ऐसे नर-संहार अस्त्रों का निर्माण हो गया है, जिससे संसार के नष्ट होने की संभावना है। विस्फोटक अस्त्रों से न

केवल सैनिक बरबाद होंगे, बल्कि समस्त चेतन तथा अचेतन जगत् विध्वंस हो जायगा।'

'संसार के विचारक युद्ध नहीं आरम्भ करते। युद्ध का सूत्रपात होता है छोटी-छोटी बातों से और वह भी दायित्वहीन व्यक्तियों के द्वारा। जब युद्ध की अग्नि प्रज्वलित हो जाती है, तब उसमें सूखा और गीला सब जलने लगता है। उस समय केवल दृष्टि रहती है शत्रु के संहार की, और वह अवस्था उस विक्षिप्त की भाँति होती है, जो अपने ही घर में आग लगाकर स्वयं उसमें नष्ट हो जाने से भयभीत नहीं होता।'

इसी समय प्रमोद, मंजुला और अमृता भी जाग पड़ीं। वे विस्मित नेत्रों से उन दोनों को देखने लगे। लू ने उनको जागते देखकर कहा—'अजी उठिए, जाने की तैयारी कीजिए। छः बज रहा है। एक घंटे से आपके जागने की प्रतीक्षा कर रही हूँ।'

दामिनी ने भी उन्हें उठने का संकेत करते हुए कहा—'मंजुला, शीघ्र तैयार हो, हमारा वायुयान सात बजे रवाना हो जायगा।' फिर लू से कहा—'बहिन तुम्हारे इस प्यार को हम लोग कभी नहीं भूल सकते, और जो कुछ तुमसे ज्ञान प्राप्त हुआ है, उसका पूर्ण सदुपयोग करूँगी।' यह कहती हुई वह पुनः लू से गले मिली। दोनों एक दूसरे को स्नेहावेग से आलिंगन में बाँधने लगीं। बार-बार की धरा-पकड़ी में लू के अनजाने एक मरोड़ा हुआ लिफाफा उसके कपड़ों से सरक कर पृथ्वी पर गिर पड़ा। अमृता और मंजुला की दृष्टि एक साथ उस पर पड़ी। दोनों गले मिलने के बहाने लू के पास आईं, और मंजुला ने उसे अपने पैरों के नीचे दबा लिया। जब तक लू से अमृता मिली, तब तक वह मंजुला की साड़ी के भीतर चला गया। कमर में खोंसने के बाद वह भी प्रहृष्ट मन से उससे गले मिली।

लू उनसे मिलने के पश्चात् जाते-जाते यह कहती गई—'आप लोगों के लिए प्रातः कलेवा लेकर आती हूँ, शीघ्र-से-शीघ्र तैयार हो जाइए।'

लू के चले जाने के पश्चात् वे सब स्वदेश-प्रस्थान के हर्ष में डूबकर शीघ्रातिशीघ्र तैयार होने लगे।

१४

चीनविजय ने मैत्री-संघ के कार्यालय के कागजों की पड़ताल के पश्चात् चिनमिन्ह से कहा—'सूया के चुनाव में तुमने बहुत बड़ी रकम खर्च कर दी ?'

चिनमिन्ह क्रुद्ध बैठा था। आज के पहले उसके हिसाब की किसीने जाँच नहीं की थी। जैसा वह लिख कर भेजता, वैसा 'चीनी अजदहा' के कार्यालय में मन्जूर कर लिया जाता। यह केवल इत्तिफाक था कि चीनविजय सूया के चुनाव-खर्च का लेखा देखने लगा। हिसाब बड़ा बेतरतीब था, और खर्च की रकमें बार-बार लिखी-काटी, बढ़ाई-घटाई गई थीं, जिससे प्रथम दृष्टि में ही असावधानी लक्षित होती, और शंका होने लगती थी। उसने जब उन कागज़ों के अनुसार व्यय का लेखा-जोखा तैयार किया तो प्रकट हुआ कि केवल चुनाव खाते में पच्चीस लाख रुपए खर्च हुए हैं। उसने उपरोक्त प्रश्न इस व्यय के आँकड़ों को देखकर पूछा।

चिनमिन्ह ने गुर्राते हुए कहा—'होगा ही। एक विदेशिनी को मेयर बनाना कोई हँसी-खेल नहीं है। चाँदी के जूतों की भरमार यदि मैंने न की होती तो क्या वह दुष्ट विश्वासघातिनी कभी दिल्ली की की मेयर हो सकती थी ? भारत में प्रजातन्त्र है, और यहाँ वोटों का आर्थिक मूल्य है, इसीलिए उसके पक्ष में इतने वोट खरीदे गए, जिससे वह पहले साधारण सदस्य और फिर मेयर चुनी जाय। मेरे परिश्रम पर तो आपका ध्यान नहीं गया, किन्तु रुपयों पर चला गया।'

'क्या 'चीनी अजदहे' का सदस्य अपने परिश्रम का मूल्य माँग सकता है ?'

'परिश्रम का मूल्य रुपयों में नहीं, किन्तु उसका यथोचित गुणावधारण तो होना ही चाहिए।'

'उसमें कोई लाञ्छन नहीं लगाता, किन्तु......।'

'क्या आप यह कहना चाहते हैं कि मैंने इस खर्च में कुछ जाती फायदा उठाया है, अथवा दूसरे शब्दों में,क्या आप गबन का आरोप लगाते हैं ?'

'यदि गबन नहीं तो कम-से-कम अव्यवस्थित रूप से हिसाब रखने का आरोप तो तुम्हारे विरुद्ध लगता ही है।'

'अकेले मैं कहाँ तक काम कर सकता हूँ। सू से किसी प्रकार की सहायता मिलती न थी।

'मैं देखता हूँ कि तुम सू के बहुत खिलाफ हो।'

'उसके खिलाफ नहीं, उसके विश्वासघात के खिलाफ हूँ।'

'तुम्हारा क्या अनुमान है, कि वह हमारे साथ विश्वासघात करेगी।'

'अनुमान ही नहीं, वरन् यह सत्य है कि विश्वासघाती भावना उसमें घर कर चुकी है।'

'मैंने तो उसमें उसकी गन्ध तक नहीं पाई।'

'उस जादूगरनी की चालों का मापना सबके लिए सम्भव नहीं है।'

'मेरे लिए यह असाध्य है, किन्तु तुम तो उसे बखूबी समझ सकते हो।'

'जो इतने वर्ष मेरी संरक्षता में रही, क्या उसकी वास्तविकता मुझसे छिपी है ?

'परन्तु तुम थोड़े ही दिनों से उसके विरुद्ध हुए हो, पहले तुम उसकी तारीफ लिखते हुए अघाते नहीं थे।'

'पहले मैं भी उसके मुखड़े के भोलेपन में फँस गया था, किन्तु ज्यों-ज्यों व्यवहार में उसके परखने का अवसर मिला, त्यों-त्यों उसकी असलियत प्रकट होती गई।'

'और मेरा अनुमान है कि उसकी असलियत उस दिन प्रकट हुई जब उसने तुम्हारी प्रेयसी बनना अस्वीकार कर दिया।'

चिनमिन्ह का चेहरा एकदम उतर गया। वह बगलें झाँकने लगा।

चीनविजय ने अपनी मुस्कान छिपाते हुए कहा—'क्यों, क्या कहते हो, मेरा अनुमान ठीक है न ?'

चिनमिन्ह ने शुष्क हँसी के साथ कहा—'मालूम होता है, सू ने मेरे विरुद्ध यह झूठा दोषारोपण किया है—केवल अपने बचाव के लिए। नारी के पास यह अद्भुत अस्त्र उसको अनेक संकटों तथा जवाब देहियों से बचाता और उबारता है।'

'परन्तु चरित्रवान व्यक्ति के सन्मुख उसका यह अस्त्र व्यर्थ हो जाता है, क्योंकि नारी यदि किसी से डरती है तो सच्चरित्र से।'

'परिस्थितियाँ जब विपरीत होती हैं, तब चरित्रवान भी फँस जाते हैं।'

'तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि सू ने अपनी विश्वासघाती भावना छिपाने के लिए तुम्हारे विरुद्ध यह आरोप लगाया है।'

'हाँ, यह स्पष्ट है। जब मैंने उसके विरुद्ध रिपोर्ट भेजी, तब उसने अपने बचाव के लिए मेरे विरुद्ध यह आरोप लगाया, ताकि मेरा कथन सत्य न माना जाय।'

'हो सकता है कि यह उसकी पेशबन्दी हो।'

'बिल्कुल स्पष्ट है। वह पहले मेरे घर में रहती थी। यदि मेरी नीयत खराब होती तो उसकी पूर्ति अति सहज थी।'

'परन्तु एक नारी यह आरोप उस समय तक नहीं लगाएगी जब तक उसमें कुछ सत्यता न हो।'

'यदि इसमें कुछ सत्यता थी तो उसने 'चीनी अज़दहे' के प्रधान तिन-लिन से क्यों नहीं रिपोर्ट की ? वह तो यहाँ बहुत दिनों तक रहे थे।'

'संभव है कि यह घटना उसके बाद घटी हो।'

'पत्र द्वारा वह मेरे विरुद्ध शिकायत कर सकती थी ?'

'यदि वह ऐसा करती तो मैं अवश्य उसकी पेशबन्दी शुमार करता। तुम्हारी शिकायत पर जब मैं जाँच करने यहाँ आया, और उसकी परीक्षा ली, तब ज्ञात हुआ कि आपने क्यों उस पर विश्वासघात का दोषारोपण किया है। आपके हिसाब-किताब को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि आप इस योग्य नहीं है कि दायित्व पूर्ण कार्यों का भार सँभाल सकें।'

'तब···?'

'तब क्या, आप दिल्ली से बाहर कहीं भेजे जायँगे। मैं सोचूँगा कि आपके विरुद्ध क्या कार्रवाई की जाय, और आपका कहाँ उपयोग किया जाय।'

'मुझे अपनी सफाई का अवसर दिए बिना क्या आप यह निर्णय करते हैं ?'

'हम लोगों की संस्था में न्याय करने की प्रणाली दूसरी है, जिससे तुम भली-भाँति परिचित हो। हमें साक्षियों की आवश्यकता नहीं रहती।'

'किन्तु मुझे भी तो कुछ कहने दीजिए।'

'जो सत्य था, वह तुम्हारे चेहरे के परिवर्तन से लक्षित हो गया। अब व्यर्थ वाद-विवाद के लिए हमारे पास समय नहीं है।'

'यह मेरे साथ अन्याय हो रहा है।'

'चुप रहो, 'चीनी अज़दहा' कभी किसी के साथ अन्याय नहीं करता। जिस प्रकार तुमने हिसाब का घोटाला किया है, उससे तुम्हारी विश्वास-घाती नीयत का पता बखूबी चल जाता है। यह बताओ, तुमने संघ की कितनी रकम हड़प ली है ?'

चीनविजय की कुञ्चित भृकुटियों के समक्ष उसका अन्तस्तल काँपने लगा। वह जड़ होकर बैठा रहा।

चीनविजय ने पुनः कड़क कर पूछा—'बोलो, उत्तर दो तुमने संघ की कितनी सम्पत्ति गबन की है ?'

'एक पैसा नहीं। हिसाब रखने में मैं पटु नहीं हूँ इसलिए आपको काटा-कूटी से सन्देह होता है। सू ने आपके कान अच्छी तरह भर दिए हैं।'

'बस इसी से प्रमाणित हो गया कि सू के प्रति कोई छिपा हुआ द्वेष अथवा आक्रोश तुम्हारे मन में था, और उसी का प्रतिशोध लेने के लिए तुमने यह चाल चली, तथा व्यर्थ ही संघ को परेशानी में डाला, जिससे भागकर मुझे आना पड़ा। तुमने संघ के एक ईमानदार कार्यकर्त्ता के विरुद्ध झूठा आरोप लगाकर संघ के नियमों के विरुद्ध आचरण किया है, इसलिए कारण बताओ कि तुम्हें क्यों न दंड दिया जाय ?'

चिनमिन्ह् दंड की कल्पना करके मन-ही-मन विह्वल होने लगा। उसे कोई उत्तर नहीं सूझा।

चीनविजय ने फिर कड़क कर पूछा—'बोलो, क्या कोई कारण बता सकते हो ? मैं सफाई माँग रहा हूँ। दीजिए।'

'जब आपने निर्णय ले लिया है, तब मेरी सफाई से क्या अन्तर पड़ेगा।'

'जो बातें स्पष्ट हैं, उनके विरुद्ध आप क्या सफाई दे सकते हैं ?'

'जैसी आपकी इच्छा। सफाई में मैं यही कह सकता हूँ कि···।'

'कि सूया विश्वासघातिनी है, तुमने उसके साथ कोई दुर्व्यवहार नहीं किया।'

चिनमिन्ह् के मस्तक पर पसीने की बूँदे छलछलाने लगीं।

चीनविजय ने थोड़ी देर सोचने के पश्चात् कहा—'एक घंटे के अन्दर तैयार हो जाओ, और मेरे साथ कलकत्ता चलो। वहाँ के मुख्य कार्यालय में तुम्हारा न्याय होगा।'

'वहाँ न ले जाइए मुझे, आप जो चाहें मेरे लिए दंड तजवीज़ कर दें।'

'अपराधों का निर्णय तो वहीं होता है, क्योंकि वहाँ हमारे संघ का न्यायालय है।'

'आप न्यायालय से भी ऊपर है, आप जो कुछ आदेश देंगे उसे मैं नत मस्तक होकर ग्रहण करूँगा।'

'तब तुम यह स्वीकार करते हो कि तुमने सूया के विरुद्ध मिथ्या आरोप लगाया है ?'

'आपको जब उसकी सत्यता पर विश्वास हो गया है, तब मुझे स्वीकार करना पड़ेगा कि मेरा आरोप गलत था।'

'और संघ की रकम गबन करने के विषय में क्या कहते हो ?'

'मेरे बैंकों का खाता देख लीजिए। यदि कोई रकम मैंने हड़प की होगी तो किसी बैंक में ही जमा की होगी। मेरे स्त्री-बच्चे हैं ही नहीं, जिनको दे दिया हो। संघ के कार्य के लिए मैं स्वयं अपने वेतन का कुछ भाग वक्त-

जरूरत पर खर्च कर दिया करता हूँ, क्योंकि मैं अपने को संघ का ही एक अंग मानता हूँ, और मेरे ऊपर गबन का अपराध लगाया जाता है।' कहते-कहते वह रोने लगा।

'कलकत्ता में तुम्हारे हिसाब की छान-बीन होगी, और तब मालूम होगा कि तुम्हारे जिम्मे संघ की कितनी रकम निकलती है और उस समय तुम अपनी सफाई में जो प्रमाण दोगे वह सुने जायेंगे।'

'किन्तु मेरे यकायक दिल्ली छोड़ने से संघ को कितनी क्षति पहुँचेगी, यह भी आपने विचार किया है?'

'क्या तुम संघ का कार्य चलाते हो?'

'नहीं, किन्तु बिना किसी को कुछ कारण बताए, यहाँ से अदृश्य हो जाने से अनेक आशंकाएँ उठेंगी। जब से तिब्बती शरणार्थी भारत में आने लगे हैं, तबसे भारतीय जनता चीन से कुछ शंकित हो गई है। अब 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' की कटु आलोचना होने लगी है, और यदि स्थिति इसी प्रकार बिगड़ती गई, तो हमको यहाँ से अपना कारबार समेट कर भागना पड़ेगा——या फिर नजरबन्द होकर रहना पड़ेगा।'

चीनविजय के सामने एक नया प्रश्न उपस्थित हो गया। चिनमिन्ह ने देखा कि उसका वार खाली नहीं गया। उसने उससे लाभ उठाने के उद्देश्य से कहा——'आप जिस किसी को मेरे स्थान पर भेजेंगे, वह नया होने से संघ का कार्य सुचारु रूप से सम्पादन नहीं कर सकेगा। प्रथम तो दिल्ली की जनता उसपर विश्वास नहीं करेगी, दूसरे वह यदि यहाँ की सरकारी जाँच पड़ताल में घबड़ा गया तो हमारा भंडा-फोड़ हो जायगा, उसका क्या प्रभाव हमारे संघ पर पड़ेगा, उसका अनुमान लगा लीजिए। मैं संघ का सदस्य हूँ, चीनी अजदहे की बड़ी विशाल बाहु हैं, मैं अगर भागूँ भी तो भागकर कहाँ जाऊँगा। दुनियाँ में मेरे लिए छिपने की जगह नहीं है, हाँ दोजख में शायद मिल भी जाय, किन्तु वह व्यर्थ है।'

चीनविजय ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह सोचता रहा।

चिनमिन्ह ने आश्वासित होकर तीसरा बाण चलाया——'इसके अति-

रिक्त मैंने सू के विरुद्ध जो आरोप विश्वासघात का लगाया है, वह बिल्कुल झूठ नहीं है। उसको प्रमाणित करने के लिए मुझे अवकाश चाहिए। मैं वचन देता हूँ कि मैं उसको रंगे हाथों पकड़ लूँगा। वह अतीव महत्वाकांक्षिणी है। जहाँ भारत तथा चीनी सरकार में कुछ तनाव हुआ, वह तुरन्त भारत के साथ मिलकर हमारा भंडा फोड़ करेगी। यहाँ की राजनीति में उसे प्रवेश कराके हमने काई अच्छा कार्य नहीं किया है। भारतीय नागरिकता प्राप्त कर वह हमारे नियंत्रण से दूर निकल गई है।'

'किन्तु 'चीनी अज़दहे' के चंगुल से दूर नहीं।' चीनविजय के मुख से सहसा निकल गया। चिनमिन्ह को विश्वास हो गया कि उसने बाज़ी उलट दी है। जिससे उसको मात हो रही थी वह उसकी चाल से विफल तो हो ही गई, और उलटे उसीकी शय लगने लगी। उसने एक पाँव आगे बढ़ाया—'मान लीजिए कि सू का आरोप मेरे विरुद्ध सत्य है—लीज़िए, मैं स्वीकार करता हूँ कि उसके विरुद्ध मेरी नीयत खराब थी, और ऐसा होना बिल्कुल प्राकृतिक आचरण है। अग्नि और फूस साथ रहने से फूस जलेगा, इसमें कोई सन्देह नहीं, किन्तु यह हमारा वैयक्तिक आचरण है, इससे संघ को कोई क्षति नहीं पहुँचती। हम आपस में इस प्रश्न को हल कर लेगें—न्यायतः संघ के अधिकारियों के हस्तेक्षेप की कोई आवश्यकता नहीं है। हमें केवल संघ की आवश्यकताओं का ध्यान रखना चाहिए। उसमें यदि कोई त्रुटि पाई जाय तो वह क्षम्य कदापि नहीं है। मुझे अवसर दीजिए, मैं सू का विश्वासघात प्रमाणित कर दूँगा। इतना बड़ा आरोप मैं व्यर्थ न लगाऊँगा, महज़ इस छोटी-सी बात के लिए कि उसने मेरा प्रेम ठुकरा दिया है। ऐसी घटनाएँ एकाकी जीवन व्यतीत करने वालों के साथ बराबर होती रहती हैं। ऐसी नाजुक परिस्थितियों में मुझसे दिल्ली छुड़वाना संघ के हित में कदापि न होगा।'

मन ही मन चीनविजय को चिनमिन्ह के तर्कों के औचित्य को स्वीकार करना पड़ा। उसने पराजित स्वर में कहा—'ठीक है। मैं तुमको सू की विश्वासघातकता प्रमाणित करने का अवसर देता हूं।'

चिनमिन्ह ने प्रसन्न कंठ से कहा—'मैं अवश्य प्रमाणित करूँगा। संघ में काम किया है, घास नहीं खोदी है। जरा यहाँ की फिजाँ बदलने दीजिए, वह अपने असली रंग में आ जायगी। वह करुणासुन्दरी की सहायता से संसद सदस्य होकर हमें अँगूठा दिखाना चाहती है।'

'करुणासुन्दरी के पास जाने की मैंने उसे सलाह दी है।'

'तो क्या वह भी काश्मीर गई?'

'उससे मिले आज तीसरा दिन है। कल से मैं तुम्हारे हिसाब-किताब की जाँच में लगा हूँ। ज़रा फोन तो करो, वह अपने आवास में है या नहीं?

'फोन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। वह दिल्ली छोड़कर अपने कैप्टेन के साथ किसी अज्ञात स्थान को चली गई है, इसका समाचार हमें मिल चुका है।'

'तब वह क़ाश्मीर गई?'

'सम्भव है कि वह वहीं गई हो। अब प्रमाण शीघ्र दे सकूँगा।'

'क्या सत्य ही तुम्हें विश्वास है कि वह हमें धोखा देगी?

'निश्चय, इसमें तनिक सन्देह नहीं है।'

'किन्तु स्वीकार करना पड़ेगा कि है वह बड़ी जीवट वाली नारी। जब मैंने उसे मृत्यु-दंड देने की बात कही तो उसने निर्भय अपना सिर मेरे सम्मुख कर दिया, और मरने के लिए बिल्कुल तैयार हो गई, जब कि ह्वान चून मेरा अर्दली नंगी कटार लिए उसका वध करने के लिए प्रस्तुत था।'

'इसी साहस तथा निडर आचरणों से उसे उत्तरोत्तर सफलता मिलती गई, और अब वही उसके पतन के कारण बनेंगे।'

'अच्छा, मैं इस झंझट में नहीं फँसना चाहता। यदि तुम उसका विश्वास-घात प्रमाणित कर सके तो संघ इसके लिए तुम्हारा कृतज्ञ होगा, और यदि प्रमाणित न हुआ, तो तुम्हें वही दंड दिया जायगा जो संघ के नियमों के अनु-सार निर्दिष्ट है।'

'मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ।

'तब आप मुझे दिल्ली से नहीं हटा रहे हैं।'

'नहीं। ऐसी हालत में तुमको यहाँ से दूर फेंकना उचित नहीं मालम होता।'

चिनमिन्ह ने उसका अभिवादन कर अपनी कृतज्ञता प्रकाशित की।

चीनविजय ने उठते हुए कहा—'मैं कल प्रातःकाल कलकत्ता जाऊँगा। वायुयान में मेरे लिए एक स्थान सुरक्षित करो। ह्वान-चून को आज किसी गाड़ी से रवाना कर दो, जिसमें वह मेरे वहाँ पहुँचने के कुछ आगे-पीछे पहुँच जाय। कलकत्ते से मैं कुछ चतुर व्यक्तियों को यहाँ की जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजूँगा, जिसमें यदि कभी तुम्हारे स्थानान्तरित करने की आवश्यकता पड़े तो संघ के कार्य में कोई गड़बड़ी न पैदा हो। तुम्हारा हिसाब-किताब मैं कलकत्ता ले जाऊँगा, वहाँ ठीक से इसकी जांच-पड़ताल होगी, और इसके सम्बंध का निर्णय बाद में किया जायगा।'

चिनमिन्ह अपने शुभ ग्रहों को धन्यवाद देता हुआ शीघ्रता से चीन-विजय का आदेश पालन करने के लिए चला गया।

१५

कर्नेल वेदप्रकाश एक कागज़ लिए हुए प्रकाश कुँवर के कमरे में झाँकने लगा। वह मेज़ के पास बैठी हुई एक पत्र मंजुला को लिखने में तल्लीन थी। कर्नेल दबे पैरों से आकर उसके पास खड़े हो गए, और थोड़ी देर तक उसको देखने के पश्चात् बोले—'प्रकाशो!'

प्रकाश कुँवर ने बिना उनकी ओर मुखातिब हुए कहा—'कहिए। आज कहाँ का प्रेम जाग पड़ा?'

'क्यों, क्या उसमें कभी कमी हुई है?'

'इधर कई महीनों से मुँह फुलाए रहे। आज अचानक······।'

'उलटा चोर कोतवाल को डाटे। तुम मुँह फुलाए रहीं, या मैं?'

'प्रातःकाल चोरों की तरह तुम बिना कलेवा किए भाग जाते, दोपहर का भोजन कार्यालय में मँगा लेते, और वहीं से क्लब चले जाते, फिर रात्रि को आकर सो जाते थे।'

'क्या करूँ, तुम्हारे भय से जान छिपाता फिरता था।'

'मेरे डर से तुम भागते फिरते थे? क्यों झूठ बोल रहे हो, और वह भी मुँह पर!'

'सत्य, जब से तुम्हारे मन में यह सन्देह उत्पन्न हो गया है कि बिरजू मेरा पुत्र है, तब से मुझे तुमसे डर लगने लगा।'

'अब उस बात को क्यों उखाड़कर मेरा मन बिगाड़ना चाहते हो?'

'इतने दिनों तक मैं इसी उधेड़बुन में था कि मैं उसका असली रहस्य तुम्हें बताऊँ या नहीं, किन्तु अब इस निश्चय पर मैं पहुँचा हूँ कि उसे अधिक दिनों तक छिपाए रखने से पारिवारिक अशान्ति बढ़ती जायगी।'

'नहीं, पारिवारिक अशान्ति क्यों बढ़ेगी? मैं तुम्हारे किसी काम में क्या दखल देती हूँ?'

'यही तुम्हारी मानसिक मलीनता का चिह्न है।'

'उससे तुम्हारा क्या बनता-बिगड़ता है?'

'मेरे मन की शान्ति नष्ट हो गई है।'

'अपराधी की शान्ति भंग होती ही है। झूठ से यदि शान्ति मिलती होती तो संसार में सत्य के आचरण का नाम ही उठ जाता।'

'आज तुम्हारे इसी झूठे सन्देह की धज्जियाँ उड़ाने आया हूँ।'

'क्यों भूसे पर लीपने का प्रयत्न करते हो।'

'नहीं, मैं पुष्ट प्रमाण दूँगा, अपने कथन को सत्य प्रमाणित करने के लिए। लीजिए, वह प्रमाण यह है। मेरे पिता की यह 'विल' अर्थात् इच्छा-पत्र पढ़ लीजिए, जिसे मैंने आपको पढ़ाया नहीं था, क्योंकि उससे मेरे पिता के सुयश पर कलंक लगता था।'

यह कहकर अपने हाथ का कागज़ उसके सामने मेज़ पर रख दिया।

प्रकाश कुँवर पढ़ने लगी—

'विदित हो कि यह 'विल' मैं अपने अन्तिम समय में, किन्तु सम्पूर्ण चेतन अवस्था में लिख रहा हूँ, और चाहता हूँ कि मेरा एकमात्र औरस पुत्र वेदप्रकाश इसीके अनुसार मेरी मृत्यु के पश्चात् मेरी सम्पत्ति का प्रबन्ध करे।

इस समय मेरी अचल सम्पत्ति में चार बँगले—हेमभवन, राजभवन, इन्द्रलोक, और नन्दन-कानन हैं, जिनका क्षेत्रफल आदि का विस्तृत वर्णन उनसे सम्बन्धित दस्तावेज़ों में मिलेगा, और चल सम्पत्ति में 'टाटा आयरन' के सौ शेयर, 'बाम्बे स्पिनिंग' के ३० शेयर, मलाया रबर कम्पनी के ५० शेयर हैं, जिनके प्रत्येक का मूल्य एक सौ रुपया है, तथा पंजाब नेशनल बैंक में ६७६८) रु०, सेन्ट्रल बैंक में १५०८७) रु०, चार्टर्ड बैंक में २७८१८) रु० और नैशनल बैंक में ६०,५७८), रु० अर्थात् ६०२८१)रु० जमा हैं। उपर्युक्त सब चल तथा अचल सम्पत्ति केवल नैशनल बैंक में जमा १०,५७८) रु० और 'हेमभवन' नामक बँगले को छोड़कर सब मेरा औरस पुत्र वेदप्रकाश भोगे, और वही उसका एकमात्र स्वामी है। किन्तु 'हेमभवन', और नेशनल बैंक की रकम का स्वामी मेरा दूसरा पुत्र ब्रजमोहन, जो मेरी विवाहित स्त्री से उत्पन्न नहीं है, होगा यदि वह बालिग होने तक जीवित रहेगा। ब्रजमोहन के जन्म का वृत्तान्त रहस्यमय है, और मैं उसका उद्घाटन करना उचित नहीं समझता, क्योंकि कोई पिता अपने पुत्र से अपने चारित्रिक अधःपतन को व्यक्त करना नहीं चाहेगा। बस इतना बता देना चाहता हूँ कि ब्रजमोहन मेरा जारज पुत्र है, जिसके विषय में कोई सन्देह नहीं है। ब्रजमोहन को मैंने पहले अपने एक मित्र कर्त्तारसिंह को गोद दे दिया था, क्योंकि उनके कोई सन्तान नहीं थी, किन्तु दुर्भाग्य से कर्त्तारसिंह की पत्नी पागल हो गई, और उसे पागलखाने में भेजना पड़ा। कर्त्तारसिंह की बदली पेशावर छावनी को हो गई। तब ब्रजमोहन को यहाँ के अनाथालय में भरती करा दिया गया, और मैंने उसके पालन-पोषण का प्रबन्ध कर दिया। कर्त्तारसिंह ने स्पष्ट बता दिया कि वह ब्रजमोहन को गोद नहीं रखेंगे क्योंकि उसके गोद लेने के बाद उनकी पत्नी पागल हो गई

है। मैं वेदप्रकाश को आदेश देता हूँ कि वह कर्त्तारसिंह से मिलकर दरयाफ्त कर ले कि आया वह ब्रजमोहन को गोद रखेंगे या नहीं ? यदि वह अब भी इनकार करें, तो वेदप्रकाश उसका पालन-पोषण करे तथा मेरी सम्पत्ति में से वह भाग उसको बालिग होने पर दान स्वरूप देवे।' इति, तारीख तथा स्ताक्षर ओमप्रकाश।

'विल' पढ़ने के पश्चात् प्रकाश कुँवर का चेहरा उतर गया।

वेदप्रकाश ने इच्छा-पत्र उठाते हुए कहा—'अब तो आपको विश्वास हो गया कि ब्रजमोहन मेरा पुत्र नहीं, वरन् भाई है, और इसीलिए उसकी मुखाकृति मुझसे इतनी अधिक मिलती है। आकृति की समानता पुत्र में ही नहीं, बल्कि भाइयों में भी होती है।'

'यदि यह जाल नहीं है, तो ठीक है।'

'तुम मेरे पिता के हस्ताक्षर बहुत अच्छी तरह पहचानती हो। क्या यह लिखावट जाली है ?'

काश कुँवर चुप रही।

'बोलती क्यों नहीं ? अब तो तुम्हें विश्वास हुआ, कि मैं क्यों उस अभागे पर इतनी दया प्रदर्शित करता था, और उस निरपराध को क्यों इतना चाहता था। दरअस्ल, मैं अपने पिता की इच्छानुसार उसका पालन-पोषण कर उसे अच्छा नागरिक बनाना चाहता था, परन्तु······।'

'परन्तु वह मेरे कारण न हो सका। मैं उसमें बाधा डालती रही।'

'नहीं, उस अभागे के भाग्य में यही बदा था।'

'यदि तुम इस भेद को पहले बता देते तो शायद······।'

'अब उन बातों को सोचने से क्या लाभ ? मैं तुम्हारी नजरों में अपने पिता को नत नहीं करना चाहता था, यही मेरी कमजोरी थी। इसके अतिरिक्त मंजुला का भी ख्याल था। उसे तो मैं किसी प्रकार नहीं बताना चाहता था कि उसका पितामह चरित्रहीन था।'

'किन्तु मुझसे तो तुम कह सकते थे, क्योंकि मैं भी तो उनको बचपन से जानती हूँ, उनकी गोद में खेली हूँ, और उन्हीं की प्रेरणा से मेरी माँ ने तुमसे

मेरा विवाह किया था।'

'हाँ, यह सत्य है कि तुम्हारे पिता लाला वंशीधर के स्वर्गवास के पश्चात् मेरे पिता ही तुम्हारी माँ की सम्पत्ति की देख-रेख करते थे, और हमारे दोनों परिवारों में अत्यन्त घनिष्टता थी, और वह तुम्हारे, उतने ही निकट थे जितने मेरे, किन्तु कहने में फिर भी एक तरह की हिचक तथा संकोच होता था।'

'किन्तु आज कहने में क्या वह संकोच नहीं हुआ ?'

'इसी संकोच से तो इतने दिन उधेड़-बुन में पड़ा रहा। अब जब अनुभव किया कि बिना सारा रहस्य बताए तुम्हारे मन से यह सन्देह न मिटेगा, तब हार कर प्रमाण सहित सब सामने रख दिया।'

'ठीक है, मेरा सन्देह मिट गया, और श्रीमान् ब्रजमोहन जी अब मेरे देवर हैं।'

'किन्तु इस भेद को गुप्त रखना पड़ेगा। यदि यह कहीं प्रकट हो गया तो वह नए कानून के अनुसार हमारी आधी सम्पत्ति का दावागीर हो जायगा।'

नए कानून में क्या औरस और जारज सन्तानों का अधिकार बराबर रखा गया है ?'

'हाँ, यदि प्रमाणित हो जाय। मेरे पिता की 'विल' से यह भली भाँति प्रमाणित होता है कि वह उन्हीं से उत्पन्न हुआ है। एक यह भी कारण था मेरे इस रहस्य को छिपाने का। पिता ने जो 'विल' में प्रकट किया है, वह मैं व्याज सहित उसको दूँगा, किन्तु उससे अधिक देने से मुझे मंजुला के भाग से छीन कर देना होगा।'

'वह बहुत दिनों तक हमारे विवाह के पश्चात् जीवित रहे, किन्तु हमें उनके चरित्र के विषय में कभी सन्देह नहीं हुआ।'

'शायद तुम्हारी माँ को कुछ मालूम हो।'

'हाँ, वह ब्रजमोहन का पक्ष हमेशा लेती है, और यहाँ तक कि उसको लेकर वह हमसे पृथक् रहने के लिए चली गई।'

'संभव है कि उनको कुछ पता हो। जब वह बिरजू को लेकर अपनी कोठी में रहने चली गई, तो मैं उसकी ओर से निश्चिन्त हो गया था।'

'यही कि मैं उसे अधिक उत्पीड़ित नहीं कर सकूँगी।'

'हाँ, बात तो यही है। उस पर जो अत्याचार तुम करती थी, उसका कारण अपनी बेबसी समझ कर मुझे भी दुखी होना पड़ता था। प्रायश्चित-स्वरूप कुछ चुरा-छिपा कर उसको सन्तोष देने का प्रयत्न करता था, परन्तु उससे मेरे मन को शान्ति नहीं मिलती थी। कई बार मेरे मन में विचार आया कि मैं सब रहस्य खोल दूँ, परन्तु अपने पिता की शुभ कीर्ति में बट्टा लग जाने के भय से खामोशी अख्त्यार कर लेता था।'

'जो हुआ सो हुआ, किन्तु अब क्या विचार है?'

'वह तुम्हारी माँ के पास बड़े आराम से रहता है। उसको वह पढ़ा-लिखा रही है। अब मैं निश्चिन्त हूँ।'

'किन्तु उसकी पढ़ाई-लिखाई में हमारा खर्च होना चाहिए न कि ममी का।'

'इसमें दखल न दो। यदि वह नहीं जानती तो उनसे भी मैं यह भेद छिपाना चाहता हूँ, इसे भले ही तुम मेरी कमजोरी समझो।'

'जब तुम्हारी इच्छा नहीं है, तब मैं क्यों कहूँगी। यदि मुझको यह भेद पहले बता दिया होता, तो मैं इतने दिनों तक क्यों कुढ़ती? इस कुढ़न ने तो मेरी तन्दुरुस्ती खराब कर दी।'

'हाँ, इसके लिए मैं अपराधी अवश्य हूँ।'

'मंजुला का कोई समाचार बहुत दिनों से नहीं मिला?'

'मैं स्वयं उसके लिए चिन्तित हूँ। तीन-चार दिन पहले मैं लाला मनोहरलाल के, जो मेरे कभी सहपाठी थे, घर यही जानने के लिए गया गया था, परन्तु मालूम हुआ कि वह काश्मीर चले गए हैं। उनके छोटे लड़के सुशील ने बताया कि शायद उसके भाई-बहिन लद्दाख के मार्ग से सीधे काश्मीर आ जायँगे। वह इसी सम्बन्ध में करुणा सुन्दरी का पत्र लेकर विदेश मन्त्रालय गया था, और भारत सरकार ने काश्मीर सरकार को परा-मर्श दिया है कि शिष्टमंडल के अवशिष्ट सदस्यों को वह लेह से लाने का

प्रबंध करे।'

'तब हमको भी काश्मीर चलना चाहिए। मुझे मंजुला का वियोग अब सहन नहीं होता।'

'सुशील स्वयं कुछ दिनों के लिए अपने माता-पिता के पास काश्मीर जाना चाहता है। यदि तुम्हारे चलने की इच्छा है तो हम लोग उसी के साथ क्यों न चलें। बड़ी सुगमता से हम बिना इधर-उधर भटके लाला मनोहरलाल के पास पहुँच जायँगे।'

'ठीक है, उसके साथ चलो। हम लोग अपनी नई 'ब्यूक गाड़ी' में चलेंगे, और उसको साथ ले लेंगे।'

'इस प्रस्ताव को तो वह बड़ी प्रसन्नता से स्वीकार करेगा, क्योंकि उसको यही शिकायत थी कि वह कार पर यात्रा नहीं कर सकेगा। उसे कार चलाने का बड़ा शौक है, और पहाड़ी रास्तों पर उसे ले जाने की महत्वाकांक्षा है।'

'ठीक है। देखने-सुनने में कैसा है?'

'बड़ा होनहार बालक है। शरीर से जितना हृष्ट-पुष्ट है, उतना ही बुद्धि से भी। अभी अट्ठारह वर्ष का है, किन्तु भौतिक विज्ञान में शोध-कार्य कर रहा है। उसको देख कर मन प्रफुल्लित हो जाता है, और मन में विचार आता है कि काश, यदि भारत के सभी बच्चे उसके समान हों तो उसकी काया पलट में कोई विलम्ब न हो।'

'उनके बड़े लड़के प्रमोद को मैंने देखा है।'

'उन दोनों में बहुत अधिक शारीरिक अन्तर है। यह तो तुम जानती हो कि पंजाबी की पहली दृष्टि स्वास्थ्य और उन्नत शरीर पर जाती है। उसका शरीर फौजी जवानों की भाँति मांसल तथा पुष्ट है। मैं तो पहली ही दृष्टि में उसे प्यार करने लगा हूँ।'

'तब जरूर उसको अपने साथ ले लो।'

'तब मैं जाकर उससे काश्मीर-भ्रमण की तारीख निश्चित करता हूँ।'

'हाँ, जाइए।'

कर्नेल वेदप्रकाश प्रसन्न मन से चले गए।

१६

लाला मनोहरलाल तथा करुणासुन्दरी के प्रस्थान से उनकी कोठी की चहल-पहल खत्म हो गई थी। पहले जहाँ भीड़ लगी रहती थी वहाँ कोई व्यक्ति सिवाय घरेलू नौकरों के दिखाई नहीं पड़ता था। लाला मनोहरलाल की मौसी रुग्ण थी और एक प्रकार के पक्षाघात के कारण चलने-फिरने योग्य नहीं थी। सुशील अपने अध्ययन में संलग्न था, इसलिए वह अपने कमरे से उसी समय बाहर निकलता जब कोई आवश्यकता होती।

सुशील स्नान करने के लिए नीचे उतर कर बरामदे में आया ही था कि कर्नल वेदप्रकाश की कार फाटक में प्रविष्ट हुई। वह ठहर कर उनके आगमन की प्रतीक्षा करने लगा, फिर कर्नल साहब को पहचान कर प्रणाम करते हुए बोला—'बाबू और अम्मी अभी काश्मीर से वापस नहीं आए। तीन-चार दिन पहले मैंने आपको बताया था कि बाबू अपना स्वास्थ्य सुधारने के लिए अम्मी के साथ काश्मीर गए हैं।'

उसके उत्तर की कोई परवाह न करते हुए वह बोले—'मैं तुम्हारे बाबू और अम्मी से मिलने नहीं आया, मैं आया हूँ तुमसे मिलने, और तुम मिल गए।'

'मुझसे मिलने आप आए हैं! भला मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ। राजनीति से मेरा कोई लगाव नहीं है। मैं अभी विद्यार्थी हूँ।'

'यह सत्य है कि जो यहाँ आता है वह किसी काम से अथवा सहायता प्राप्त करने के लिए आता है, और मैं भी इसी उद्देश्य से आया हूँ, किन्तु इस समय उनसे नहीं, तुम्हारे पास एक काम से आया हूँ।'

'यदि मुझसे आपका कोई उपकार हो सके तो मैं अपने को महाभाग्यशाली समझूँगा। आपको कष्ट करने की क्या आवश्यकता थी? फोन से आदेश दिया होता, मैं स्वयं सेवा में उपस्थित हो जाता।'

'नहीं, फोन के द्वारा वह सम्पन्न नहीं हो सकता था।'

'जब आपने इतना कष्ट किया है तब आइए, बैठिए।'

'पहले यह बताओ, मेरे आने से तुम्हारे किसी काम में बाधा तो नहीं पड़ रही है? मैं किसी अन्य समय आ सकता हूँ, जब तुम्हें अवकाश हो।'

'मुझे पूर्ण अवकाश है। मैं स्नान करने जा रहा था, उसमें ज़रा थोड़ी देर हो जायगी, इसमें मेरी कोई हानि नहीं है।'

'अच्छा, तुम भी बैठो। हाँ, पहले यह बताओ कि तुम्हारे बाबू का कोई पत्र आया है?'

'हाँ, कल शाम को आया था। वह आजकल पहलगाम में हैं। बाबू के स्वास्थ्य में बहुत सुधार हुआ है, और अम्मी भी स्वस्थ हैं।'

'चीन से आने वालों का कोई समाचार मिला है?'

'केवल इतना लिखा था कि सरकारी स्तर पर प्रबन्ध हो गया है कि दीदी और भैया आदि पहाड़ी रास्ते से लद्दाख तक पहुँचा दिए जाएँ, और वहाँ से काश्मीर सरकार उनको बाबू के पास पहुँचा देगी।'

'तुम्हारी दीदी और भैया के साथ वे सभी लोग आयेंगे जो वहाँ रुक गये हैं।'

'अनुमान तो यही होता है कि पार्टी के सभी व्यक्ति वहाँ आयेंगे।'

'बात यह है कि मेरी लड़की मंजुला भी उनके साथ चीन में रुक गई थी।'

'तब तो उनके साथ वह भी आएगी। इसमें तनिक सन्देह नहीं है।'

'अच्छा, यह बताओ कि क्या काश्मीर जाने की तुम्हारी इच्छा है?'

'इच्छा तो है, परन्तु जाऊँगा नहीं।'

'क्यों?'

'कोई खास बात नहीं है। पहले भी कई बार मैं काश्मीर घूम आया हूँ। वहाँ कोई वस्तु मेरे लिए नई नहीं है, जिसका आकर्षण हो।'

'पुराने जाने-माने स्थानों को पुन: देखने की इच्छा और बलवती होती है।'

'हाँ, किन्तु······।'

'बहानेबाज़ी मत करो। अपने बाबू से जैसे मन की बात कहते हो, वैसे ही मुझसे कहो। अपने लिए तुम मुझको यदि उनसे अधिक नहीं तो किसी प्रकार कम भी नहीं पाओगे।'

'यह मैं जानता हूँ कि आपकी कृपा मेरे ऊपर है, किन्तु इधर पढ़ाई-लिखाई भी चल रही है।'

'मैंने सुना है कि तुम्हें मोटर चलाने का बहुत शौक है।'

'हाँ, उसमें मुझे बड़ा आनन्द आता है।'

'यदि तुम्हारे सामने यह प्रस्ताव रखूं कि तुम मेरे साथ मोटर पर काश्मीर चलो, तो तुम्हारा क्या उत्तर है?'

'आप क्या काश्मीर जा रहे हैं अपनी कार पर?' उत्साह तथा उत्सुकता आँखों से झाँकने लगी।

'हाँ, किन्तु यदि तुम मेरे साथ चलना स्वीकार करो।'

'कुड्ड की चढ़ाई पर मोटर चलाने की अवश्य मेरी इच्छा है, परन्तु इधर पढ़ना भी तो बहुत है।'

''दस-पाँच दिन न पढ़ने से कोई विशेष हानि नहीं हो सकती। उधर तुम्हारे भाई-बहिन भी आ रहे हैं, और तुम्हारे माता-पिता वहाँ पहले से हैं, उन सबसे मिल आओगे। इन सब बातों से जो स्फूर्ति तुम्हें मिलेगी, उससे वहाँ से लौटने के पश्चात् पढ़ने में तुम्हारा मन अधिक लगेगा।'

'हाँ, परिवर्तन जीवन का सत्व है, ऐसी कहावत भी प्रचलित है।'

'अब तुम स्वयं निर्णय करो। अभी हाल में ही मैंने 'ड्यूक गाड़ी' खरीदी है, काफी बड़ी गाड़ी है। जहाँ मन आवे, उसे चलाना। सहायता के लिए शोफर साथ चलेगा। खाने-पीने के बर्तन, और थोड़ी भोजन-सामग्री साथ ले चलेंगे। दिल्ली से श्रीनगर तक की यात्रा बड़ी मनोरंजक रहेगी। मेरी पत्नी की इच्छा भी मोटर से यात्रा करने की है, क्योंकि हम लोग मंजुला से

शीघ्र से शीघ्र मिलना चाहते हैं।'

'आपका प्रस्ताव बहुत उत्तम है, परन्तु······।'

'अब क्या परन्तु-वरन्तु! मैं तुम्हारे पिता के तुल्य हूँ, तुम्हें मार्ग में कोई कष्ट नहीं होने दूँगा, और तुम्हारी इच्छा भी पूर्ण हो जायगी।'

'पहले बाबू से लिखकर पूछ लूँ।'

'तुम उस दिन कहते ही थे कि उन्होंने तुम्हें बुलाया है।'

'हाँ, अम्मी का विशेष रूप से अनुरोध है।'

'तब बाबू की अनुमति है, यह निश्चय है।'

'हाँ, उन्हें आपत्ति नहीं होगी, यह मैं जानता हूँ।'

'तब फिर तुम क्यों चलने में संकोच कर रहे हो? शायद इसीलिए कि मैं तुम्हारे लिए बिल्कुल अपरिचित हूँ। वस्तुतः ऐसी बात नहीं है। लाला मनोहरलाल और हम दोनों साथ-साथ पढ़े हैं। वह असहयोग संग्राम में उतर पड़े और मैं फौज में भरती हो गया। चूँकि हम लोगों का रास्ता जुदा हो गया, इससे मिलना-जुलना कम हुआ, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम लोगों की मित्रता में कोई अन्तर आ गया है।'

'बाबू के सहपाठियों की कोई कमी नहीं है। प्रायः उनके साथी अधिकतर उनके सहपाठी हैं। हमारी समझ में नहीं आता कि उनके कितने सहपाठी हैं।'

'काश्मीर चलकर स्वयं अपने बाबू से पूछ लेना, यदि वह स्वीकार करें तब मेरी बात मानना, नहीं तो फिर······।'

'नहीं-नहीं, आप झूठ क्यों बोलेंगे। मैंने यों ही कहा था कि जितने उनके मित्र मुझे मिलते हैं, उनमें से अधिकांश पुराने सम्बन्धों की दुहाई देते हैं।'

'उनके वैसे सम्बन्ध होंगे, तब वे कहते हैं। यह भी सम्भव है कि अपने स्वार्थ-साधन के लिए भी कुछ ऐसा कह बैठते हों, परन्तु मेरा कोई विशेष स्वार्थ नहीं है।'

'आप बुरा मान गए?'

'मैंने बुरा नहीं माना, केवल अपनी स्थिति स्पष्ट की है।'

'क्षमा कीजिएगा, मैं अभी बच्चा हूँ, यदि कुछ अनुचित मुँह से निकल गया हो।'

'इन बातों को छोड़ो, यह बताओ कि तुम मेरे साथ चलोगे ?'

'आपकी आज्ञा का पालन करना मेरा धर्म है, जब आप बाबू के मित्र तथा सहपाठी हैं। मेरी दृष्टि में आप और बाबू बराबर हैं।'

'शाबाश ! अब मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। मेरी पत्नी न-मालूम कितनी सुखी होगी। तुम उससे मिलकर प्रसन्न होगे।'

'वह मेरी माँ के तुल्य हैं, उनके सन्तोष के लिए अवश्य चलूँगा। आपने किस दिन जाने का निश्चय किया है ?'

'मेरा विचार शीघ्र से शीघ्र चलने का है। क्या परसों प्रातःकाल चलना तुम्हारे अनुकूल रहेगा ?"

'हाँ, बिल्कुल अनुकूल रहेगा। यूनिवर्सिटी भी कुछ दिनों के लिए बन्द होने वाली है, क्योंकि कई विदेशी आदमी आ रहे हैं। उनके सम्मान में कई समारोह होंगे।'

'बस फिर ठीक है, परसों प्रातःकाल हम यहीं आ जायँगे, और तुम केवल अपने पहनने के कपड़े ले लेना, बाकी जरूरत का सामान मैं अपने साथ लेकर चलूँगा। तुम विश्वास रखो, तुम्हें कोई असुविधा या कष्ट नहीं होगा।'

'मुझे मालूम है, भला आपके साथ क्यों कष्ट होगा। कष्ट यदि होगा तो सहने की शक्ति भी रखता हूँ।'

'शाबाश ! तुमने एक फौजी जवान की भाँति उत्तर दिया है। मैं अब चलूँगा। परसों प्रातःकाल ठीक आठ बजे मैं अपनी पत्नी सहित आऊँगा। तुम बिल्कुल तैयार मिलना।'

'हाँ, मैं आपको तैयार मिलूँगा।'

सुशील उन्हें विदा कर प्रहृष्ट मन से गुनगुनाता हुआ स्नान करने चला गया।

१७

प्राय: काश्मीर के पर्यटक जम्मू से पहले श्रीनगर जाते हैं, और वहाँ से फिर उनके अन्य स्थानों को जाया करते हैं, क्योंकि सरकारी यातायात का प्रवन्ध ऐसा है। अतएव वनिहाल सुरंग और श्रीनगर के मध्य में पड़ने वाले वेरीनाग, अनन्तनाग, कुकुड़नाग, मार्त्तण्ड तथा पहलगाम आदि स्थानों के देखने के लिए यात्रियों को श्रीनगर से घूमकर वापस आना पड़ता है। लाला मनोहरलाल चूँकि अपनी गाड़ी से यात्रा कर रहे थे, इसलिए बनिहाल सुरंग से निकल वह सीधे वेरीनाग गए, और वहाँ दो रात्रि डाक बँगले में बिताई। वेरीनाग झेलम नदी का उद्गम स्थान है, और मुगल सम्राट् जहाँगीर द्वारा आरंभ किया तथा शाहजहाँ द्वारा पूर्ण किया हुआ परकोटा है, जिसके अन्दर वह विशाल कूप है, जहाँ से निरन्तर जल-प्रवाह अपने आप निकलकर झेलम को जन्म देता है। वहाँ से अच्छावल, अनन्तनाग होते हुए वह कुकुड़नाग आए, जहाँ उन्होंने लगभग एक सप्ताह विश्राम किया। यहाँ से उन्होंने भारतीय तथा काश्मीरी सरकार से अनुरोध किया कि उनके बच्चों को, जो चीन में रुक गए थे, लद्दाख के मार्ग से काश्मीर भेजने का प्रवन्ध किया जावे। भारत के विदेशी विभाग ने उनका सुझाव स्वीकार कर चीन सरकार को परामर्श दिया कि वह प्रमोद आदि को वायुयान से लद्दाख की राजधानी लेह तक पहुँचाने का प्रबन्ध करे, और काश्मीरी सरकार को आदेश दिया कि कथित चारों यात्रियों को लेह से श्रीनगर वायुयानों में ले आवे। करुणासुन्दरी ने भी एक पत्र तिनलिन को इसी सम्वन्ध में लिखा तथा प्रमोद को उस प्रबन्ध की सूचना दे दी। कुकुड़नाग में रहते हुए उन्होंने डकसुम नामक एक नए स्थान को देखा। तत्पश्चात् वे सब अनन्तनाग, खन्नावल होते हुए मार्त्तण्ड आए, और उसी दिन पहलगाम पहुँच गए। पहलगाम निस्सन्देह काश्मीरी घाटी का सर्वश्रेष्ठ स्थान है, जो

प्याले की भाँति चारों ओर पहाड़ों से घिरा है, और वह स्वयं समुद्र के धरातल मे लगभग साढ़े सात हज़ार फुट ऊँचा बसा हुआ है। चीड़ तथा देवदारु के आकाशचुम्बी वृक्ष उसे अत्यन्त सुहावना और रमणीक बनाते हैं। कल-कल नाद करती हुई पहाड़ी नदी उसके प्राकृतिक सौन्दर्य में चार चाँद लगाती है।

लाला मनोहरलाल काश्मीर घाटी के सभी स्थानों में, किंतु पहलगाम में विशेषकर परिचित थे। पुराने दिनों में वह उनके राजनीतिक आन्दोलनों का एक कार्यक्षेत्र रहा है, इसलिए उसके निवासी उन्हें बखूबी जानते-पहचानते तथा आदर-सम्मान की दृष्टि से देखते। जब-जब स्वास्थ्य की खराबी से वह यहाँ आते, तब तब वह किसी आन्दोलन का सूत्र-पात कर जाते, और उनके जाने के पश्चात् वह चला करता था। यद्यपि उनकी यह यात्रा पाँच छः वर्षों के पश्चात् हुई थी, तथापि वहाँ के निवासियों की स्मृति में वह उसी भाँति विद्यमान थे, जैसे अक्सर मिलने वाले हुआ करते हैं।

नदी के उस पार प्लाजा होटल के बगल में एक कोठी लेकर वह ठहर गए। उसके समीप एक दूसरी 'काटेज' में कलकत्ता के एक विश्रुत् मारवाड़ी परिवार की दम्पति रहती थी, जिनसे बड़ी घनिष्ठता हो गई। वह दम्पति अमरनाथ की यात्रा करने के लिए उत्सुक थी, किन्तु मार्ग की दुरूहता उन्हें अग्रसर नहीं होने देती थी। लाला मनोहरलाल उत्साहित करने की कला के मर्मज्ञ थे और वह इसी की बदौलत कितने ही व्यक्तियों को स्वातन्त्र्य आन्दोलन में घसीट लाए थे। मारवाड़ी दम्पति को उन्होंने पुनः पुनः उत्साहित किया और मार्ग की दुरूहता निवारण करने के लिए अपनी गाड़ी से चन्दनबाड़ी तक पहुँचा देने का आश्वासन दिया। मारवाड़ी दम्पत्ति का सुप्त उत्साह जाग्रत हुआ, और वह अपने नौकरों के साथ अमरनाथ की यात्रा के लिए उनकी गाड़ी पर चली गई। इसका परिणाम यह हुआ कि उस दम्पत्ति ने श्रीनगर जाने के समय उनको वहाँ आकर अपने उस बँगले में ठहरने के लिए आमन्त्रित किया, जो उसके परिवार वालों ने निशात बाग के पार्श्व ब्रेन गाँव में किराए पर लिया था, और उन्होंने उसे सहर्ष

स्वीकार किया।

पहलगाम में रहते हुए उन्हें काश्मीर सरकार की भेजी सूचना मिली कि भारतीय सरकार के परामर्श के अनुसार चीन में गए शिष्टमंडल यात्रियों को अविलम्ब श्रीनगर पहुँचाने का प्रबन्ध कर दिया गया है। वह इस प्रबंध से सन्तुष्ट हो, पहलगाम में निश्चिन्त रहने लगे। उनके वहाँ रहते हुए सोया हुआ पहलगाम जाग पड़ा और अनेकानेक उनके पुराने साथी दूर-दूर गाँवों से आकर मिलने लगे। वह अपने साथ अपने पुराने सेवकों को देने के लिए कपड़े तथा अन्य सामान ले गए थे, जिनके वितरण से उनकी ख्याति सर्वत्र फैल गई। यहीं से उन्होंने सुशील को बुलाने के लिए पत्र भेजा, और अपनी सन्तानों के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे।

प्रतीक्षा में जब कई दिन बीत गए और काश्मीर सरकार की ओर से कोई दूसरा समाचार नहीं मिला, तब करुणासुन्दरी की अकुलाहट बढ़ने लगी। एक दिन भोजन के पश्चात् जब वे दोनों धूप-सेवन कर रहे थे, तब करुणासुन्दरी ने कहा—'प्रमोद और दम्मो के आने का कोई समाचार नहीं मिला। उनके आने में ज्यों-ज्यों देर हो रही है, त्यों त्यों मेरा मन घबड़ा रहा है।'

'न मालूम तुम क्यों इतना घबड़ाती हो। वे सब शीघ्र आने वाले हैं। इधर का मार्ग बड़ा दुरूह तथा दुर्भेद्य है; आने में कुछ देर होना स्वाभाविक है। सीधे मार्ग से आने में वे बड़ी सरलता के साथ दिल्ली पहुँच जाते, परन्तु तुमने हठ करके इस नवीन मार्ग से उन्हें बुलाया है। तुम्हारे इस प्रबन्ध से चीन सरकार को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा; इसका तुमने जरा भी ख्याल नहीं किया।'

'बस तुम्हें मेरी हर बात में हठ या बेवकूफी दिखाई पड़ती है।'

'तुमसे कोई बात कहना मुश्किल है, हमेशा लड़ने पर कमर कसे रहती हो।'

'यह देखो, यदि मैं किसी बात का प्रतिवाद करूँ तो तुम्हें लड़ाई सूझती है। वही कहावत है कि 'जबरा मारे और रोने न देवें।' जितना तुम दूसरों

की असुविधा या कष्ट पर ध्यान देते हो, उसका शतांश भी यदि मेरी मानसिक व्यथा पर ध्यान देते होते, तो आज दिन इतना पछताना या दुःखी होना न पड़ता।'

'घुमा-फिराकर फिर वही पचड़ा ले आई। भ्रमण भी सक्रिय शिक्षा का सुगम साधन है। तुम देखना कि वे अनेकानेक बातों का ज्ञान प्राप्त करके लौटेंगे, जिसे यहाँ से प्राप्त करना कठिन ही नहीं वरन् असम्भव है।'

'दम-दिलासा देकर फाँसी पर चढ़वा देना तुम्हारी प्रकृति है, किन्तु मुझ पर तुम्हारा जादू नहीं चलने का। तुमसे मैं किसी बात में उन्नीस नहीं हूँ।'

'अरे भई, तुम तो उन्नीस कहती हो, जबकि मैं तुम्हें अपने से इक्कीस मानता हूँ, बाईस तथा पच्चीस तक मानने में मुझे जरा भी हिचक नहीं है।'

'तुम लोग समझते हो कि अक्ल का ठेका तुम पुरुषों ने ले रखा है। स्त्रियों को तुम लोग पैर की जूती समझते हो।'

'तुम्हारी गलती बताते हुए डर मालूम होता है, लेकिन अपने स्वभाव से लाचार होकर कहता हूँ कि स्वतन्त्र भारत में नारियाँ पुरुषों के पैर की जूती नहीं, बल्कि शिखर पर चटचटाने वाली जूतियाँ अवश्य हो गई हैं।'

करुणासुन्दरी सुनकर हँसने लगी। फिर बोली—'मैं अपनी परिधि से बाहर नहीं जाऊँगी, और न तुम्हारी मूर्खतापूर्ण बात स्वीकार करूँगी। हम पुरुषों के आगे नहीं जाना चाहतीं और न उनकी अपेक्षा हीन होकर रहना चाहती हैं। हम केवल बराबरी का दावा करती हैं।'

'प्रकृति ने जब बराबरी का दर्जा दिया है तब क्या हमारे कहने से वह छोटा या घट जायगा। हमारे सबसे बड़े विधायक मनु ने अपनी स्मृति में स्पष्ट कहा है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।'

'बस व्याख्यान देने के लिए कुछ श्लोक रट लिए, और सभा-मंडपों में तोते की तरह सुनाने लगे। इस चमड़ी के नीचे देखो तो सबको एक पाओगे। संसार मात्र के पुरुषों का व्यवहार स्त्रियों के प्रति हीन भावना से मंडित रहा है, और रहेगा।'

'तुम अब पुरुष-नारी की उच्चता, समानता एवं हीनता का झगड़ा फैलाने लगी।'

'अब बगलें झाँकने लगे न। सत्य सबका मुख बन्द कर देता है। बच्चों के न आने से मैं यों ही दुःखी रहती हूँ, फिर तुम्हारी दिल फाड़ने वाली बातों से···।'

'अरे, अरे, तुम रोने लगी। स्त्रियाँ जब अपने ऐटम बम का प्रयोग करती हैं, तब पुरुष को निरुपाय होना पड़ता है। देखिए ज़रा, वह कौन आ रहा है?'

कहते हुए लाला मनोहरलाल उठ खड़े हुए और करुणा सुन्दरी ने देखा कि उनका पुत्र सुशील चला आ रहा है। वह भी उसका स्वागत करने के लिए उठकर उसकी ओर दौड़ी। ज्योंही वह उनके चरण-स्पर्श करने के लिए झुका, त्योंही उसको अपने कंठ से चिपका लिया, और कुछ देर पहले के क्रोधाश्रु सुशील के सम्पर्क से आनन्दाश्रु में परिणत हो उनके कपोलों पर बहने लगे।

मनोहरलाल ने कहा—'बेटा तुमने बड़े मौके से आकर मेरी रक्षा की, नहीं तो तुम्हारी अम्मी आज शाम का भोजन मुझे नहीं देती।'

सुशील ने माँ के बाहुपाश से निकलकर उनके चरण-स्पर्श के लिए अग्रसर हुआ। करुणासुन्दरी ने मुस्कराते हुए कहा—'तुम बूढ़े हो गए हो, और लड़का भी बड़ा हो गया है, किन्तु···।'

'मनोहरलाल ने भी उसे कंठ से लगाते हुए कहा—'सुनी बेटा अपनी अम्मी की दलील। तुम आ गए हो, अब तुम ही न्याय करो···।'

'कहती हूँ कि तुम्हारी बुद्धि का दिवाला निकल गया है। बच्चा इतनी दूर से चला आ रहा है, उसके आराम-तकलीफ का हाल न पूछा और आते ही उस पर जिम्मेदारी लाद दी कि करो न्याय! किस बात का? माता-पिता के विवाद का?'

'कमजोर हमेशा न्याय-न्याय चिल्लाता है। हमारे-तुम्हारे झगड़ों का न्याय हमारे बच्चे ही करेंगे।'

'आप बड़े कमजोर हैं न !'

'बीमार तो रहता ही हूँ।'

सुशील ने पूछा—'बाबू, आपका स्वास्थ्य तो दिल्ली की अपेक्षा अच्छा मालूम होता है।'

'हाँ, बेटा, मेरे स्वास्थ्य में और अधिक सुधार होता, किन्तु तुम्हारी अम्मी…।'

'तुम चुप नहीं रहोगे ?'

'देखो बेटा तुम्हारी अम्मी मुझे कैसा डाँटती हैं।'

'देखा है सब। क्यों सुशील यह कौन चले आ रहे हैं ? मैं समझी थी कि तुम टैक्सी पर आए हो श्रीनगर से।'

'अम्मी, यह कर्नल वेदप्रकाश हैं—बाबू के सहपाठी।'

करुणासुन्दरी ने उपेक्षा से मुँह बनाते हुए कहा—'जिसको देखो, वही तुम्हारे बाबू का सहपाठी बन जाता है। जैसे इनके पास गप्पों का खज़ाना है, वैसे ही इनके सहपाठियों का भी समूह है, जिनका कोई अन्त नहीं मिलता।'

'नहीं अम्मी, ये सचमुच बाबू के पुराने सहपाठी हैं। रास्ते भर पुरानी घटनाओं की चर्चा करते रहे। इनकी लड़की मंजुला भी दीदी और भैय्या के साथ चीन गई थी और उन्हीं की तरह वह भी वहाँ रुक गई है। जब उन्हें मुझसे मालूम हुआ कि वे सब लद्दाख आयेंगे, तो यहाँ आने के लिए तैयार हो गए, और मुझे भी घसीट लाए।'

'मंजुला को मैं अच्छी तरह जानती हूँ, वह तो दम्मो के साथ अक्सर आया करती थी। हाँ, कर्नल साहब को कभी नहीं देखा।'

मनोहरलाल कर्नल वेदप्रकाश के स्वागत के लिए आगे बढ़ गए और प्रसन्नता से कहा—'आइए कर्नल साहब, स्वागत ! आप क्या दिल्ली से आ रहे हैं ? वहाँ के क्या हाल-चाल हैं ?'

'यह मेरी पत्नी है जिनको शायद आप पहली बार देख रहे हैं।' फिर प्रकाश कुँवर से कहा—'यही लाला मनोहरलाल हैं, जिनकी तारीफ में

रास्ते भर करता आ रहा था।'

प्रकाश कुँवर के नमस्कार के प्रत्युत्तर में नमस्कार करते हुए मनोहर-लाल ने कहा—'आइए, आपका परिचय अपनी पत्नी करुणासुन्दरी से करवा दूँ। आप लोग खूब आए। हमारा अकेलापन दूर हो गया।'

इसी बीच करुणासुन्दरी भी उनके समीप पहुँच गई, और उनका परिचय कराने के पश्चात् लाला मनोहरलाल ने कहा—'हाँ, बताइए दिल्ली के क्या समाचार हैं ?'

'कोई नया परिवर्तन नहीं हुआ, सब साविक दस्तूर है। एक नई बात इतनी हुई है कि इस बार दिल्ली की मेयर एक चीनी स्त्री हुई है।'

'आपका तात्पर्य सूया से है। हमारे सामने ही उसका चुनाव हो गया था।'

'वह भी आजकल अपने पति के साथ काश्मीर आई हुई है।'

'हाँ, यह नई खबर अवश्य है। पहलगाम में वह नहीं आई, क्योंकि यहाँ यदि वह आती तो हम लोगों से उसकी भेंट अवश्य होती। आपने देखा होगा कि यहाँ का बाजार केवल एक सड़क पर बसा हुआ है, और हम लोग नियमित रूप से दूसरे यात्रियों की भाँति सवेरे-शाम यहाँ घूमते हैं। प्रायः यहाँ सभी रहने वालों की मिला-भेंटी हो जाती है।'

'तब वह श्रीनगर अथवा किसी अन्य स्थान पर होगी।'

'किन्तु वहाँ उसके अभिनंदन हो रहे थे, उनको छोड़ कर वह कैसे आ गई ?'

'आगे मैं कुछ नहीं जानता। काश्मीर आने का हाल उस समय मुझे ज्ञात हुआ, जब उसका पति कैप्टेन अर्जुनसिंह मुझसे छुट्टी माँगने आया था।'

'शायद उसी कैप्टेन से पहले आपकी लड़की का विवाह हो रहा था।'

'हाँ, पहले बातचीत चली थी, परन्तु सगाई-वगाई कुछ नहीं हुई थी।'

'किन्तु कैप्टेन ने इस चीनी लड़की से विवाह अपने पिता ज्वालासिंह की इच्छा के विरुद्ध किया है।'

'आजकल के लड़के अपने बुजुर्गों की बात कब सुनते हैं।'

'यही शिकायत आजकल हर जगह सुनने को मिलती है। अरे भाई! लड़कों की बात जाने दो, पत्नियाँ भी आजादी मिलने के साथ आजाद हो गई हैं, पति को तिनके के बराबर भी नहीं समझतीं।'

करुणा सुन्दरी ने प्रकाश कुँवर से कहा—'सुना बहिन, यह शिकायत मेरी हो रही है।'

'यही शिकायत मेरे सम्बन्ध में आप सुनने वाली हैं।'

'कहो तो, मैं भी एक-आध सुनाऊँ।'

'अभी नहीं, जरा इन्हें आगे बढ़ने दीजिए।'

उधर कर्नेल ने पूछा—'चीन से बच्चे कब तक लौटेंगे, कोई निश्चित तारीख मालूम हुई ?'

'नहीं, किन्तु अधिक देर नहीं है। अभी डाक आने वाली है, शायद आज कोई समाचार आ जाय। आज का दिन बड़ा शुभ है। आप सपत्नीक आए, सुशील आया, अब उन लोगों के आने का समाचार आना चाहिए।'

'वे लोग हमारी भाँति अकस्मात् आ सकते हैं।'

'आ सकते हैं, परन्तु शायद आवेंगे नहीं। उनको लेने के लिए हमें श्रीनगर जाना होगा। जब वे लोग लेह पहुँच जायँगे, तब उनकी सूचना काश्मीर सरकार को श्रीनगर में मिलेगी, और वह मुझे तार द्वारा सूचित करेगी।'

'लेह से श्रीनगर आने में केवल एक घंटे से अधिक नहीं लग सकता।'

'हाँ, वायु-मार्ग से इससे अधिक समय नहीं लगेगा।'

'यह भी सम्भव है कि वे श्रीनगर न जाकर सीधे यहाँ चले आवें।'

'पहलगाम में हवाई अड्डा नहीं है, इसलिए वायुयान नहीं उतर सकता। श्रीनगर से यहाँ तक मोटर से आना पड़ेगा।'

इसी समय मनोहरलाल के ड्राइवर ने आकर एक लिफाफा उनको दिया। उसको देखते ही उन्होंने कहा—'मैं कहता न था कि आज बड़ा शुभ दिन है, इसमें उन लोगों के आने की सूचना है।'

सुशील ने आगे बढ़ कर लिफाफा छीन लिया, और स्वयं उत्सुकता से पढ़ने लगा। पढ़ते ही उसका चेहरा प्रसन्नता से खिल गया। उसने, अपनी माँ से कहा—'अम्मी, बाबू का कहना सच है! दीदी, भैया, अमृता और मंजुला सब लोग सकुशल आज लद्दाख पहुँच गए हैं। कल प्रातःकाल वे लोग श्रीनगर के लिए प्रस्थान करेंगे। वाह, मैं कैसे मौक़े से आया।'

'इस समाचार से सब प्रफुल्लित हो गए। करुणासुन्दरी ने हर्ष-विह्वल होकर प्रकाश कुँवर से कहा—'बहिन यह शुभ समाचार आपके पग-फेरे के परिणाम स्वरूप सुनने को मिला है। कदाचित् आप कुछ दिनों पहले आ जातीं तो यह समाचार उतनी ही जल्दी सुनने को मिलता।'

सुशील ने हँसते हुए कहा—'अम्मी, यह मेरे आने की बदौलत हुआ है। आज मुझे मिठाई खिलाइए। मैंने आज अनन्त बाग में कहा था, कि मालूम होता है, भैया, दीदी आदि भारत आ गए हैं।'

प्रकाश कुँवर ने समर्थन में कहा—'बेशक बेटा, तुम्हारा कहना बिलकुल सच हुआ। मिठाई मैं खिलाऊँगी।'

'क्या इसने आज सबेरे कहा था?'

'हाँ, अनन्तबाग से जलपान कर हम लोग ज्योंही गाड़ी में बैठे थे, त्योंही सुशील ने सहसा कहा—मालूम होता है भैया, दीदी सब लोग लद्दाख पहुँच गए हैं। उस समय हमने हँस कर टाल दिया था, परन्तु इसने बिल्कुल सच कहा था। मुझे तो आपका यह लड़का बड़ा होनहार मालूम होता है।'

पुत्र की प्रशंसा से कौन माता गौरवान्वित नहीं होती? करुणासुन्दरी हर्ष से गद्गद् हो गई।

लाला मनोहरलाल ने तार पढ़ने के बाद कहा—'क्या कोरी बातों से इनका पेट भरोगी, अथवा कुछ इनके खिलाने-पिलाने का भी प्रबन्ध करोगी?'

'श्रीमान् की भाँति मैं ग़ाफिल नहीं हूँ। ड्राइवर से मैंने पहले ही कह दिया है।'

'अम्मी, इस समय तो मैं कुछ खाऊँगा नहीं, क्योंकि अनन्तबाग से मैं भर पेट सूतफेनी खाकर चला हूँ।'

'वही हाल हमारा भी है, बहिन। शाम को भोजन करेंगी।'

'किन्तु शाम तक हमें श्रीनगर पहुँच जाना है।' लाला मनोहरलाल ने कहा।

'तब खाने-पीने का झंझट न लगाइए। श्रीनगर में हम रात्रि का भोजन करेंगे।' प्रकाश कुँवर और कर्नल साहब ने एक साथ कहा।

'सच है, यहाँ अब खाने-पीने में मन नहीं लगेगा। श्रीनगर पहुँचने के बाद खाने-पीने की सूझेगी।' करुणासुन्दरी ने कहा।

'तब फिर हमको इसी समय श्रीनगर चल देना चाहिए। मैं जाकर तैयारी करती हूँ।' कह कर वह शीघ्रता से चली गई।

१८

लगभग ग्यारह बजे दिन को चीन सरकार का वायुयान प्रमोद आदि को लिए हुए लेह के हवाई हड्डे पर उतरा। उनके साथ तिनलिन भी आया था। यद्यपि प्रमोद ने उससे अनुरोध किया था कि वह उनके साथ चलने का कष्ट न करें, परन्तु तिनलिन ने कहा कि जिस प्रकार वह उनको अपने साथ लाया था, उसी प्रकार भारत तक सकुशल पहुँचाने का दायित्व भी उस पर है, और वह उसका पालन करेगा। भारत-आगमन के समय उसने वायुयान से वह क्षेत्र दिखाया जिस पर चीन ने अधिकार जमाकर सड़क बना ली थी। जब उनका यान 'हाट स्प्रिंग्स' नामक स्थान पर पहुँचा, तब उसने कहा—'यदि आप ध्यानपूर्वक देखें, तो आपको मालूम होगा कि चीन ने भारत की भूमि पर कब्जा नहीं किया है। यह सब क्षेत्र सदा से तिब्बत के अधिकार में रहा है, यद्यपि उसने अपनी चौकियाँ इत्यादि नहीं बनवाईं।

लामाओं के शासन में किसी प्रकार की हदबन्दी की आशा करना व्यर्थ है। अपने अनुयायियों के शोषण से उन्हें अवकाश नहीं था, फिर इस पहाड़ी, बंजर भूमि की सुधि कैसे लेते ? जब चीन ने मानव शोषण बन्द करने के लिए उस पर अधिकार किया, और पुराने कागजात उसको देखने को मिले, तो मालूम हुआ कि सन्धियों के अनुसार तिब्बत की सीमा इस स्थान तक थी। भारत का भी कोई प्रकट अधिकार इस क्षेत्र में न मिलने से, हमें उन सन्धियों पर विश्वास करना पड़ा और हमने यहाँ सड़क बनाना आरम्भ कर दिया। जब किलेबन्दी के समय भी किसी ने आपत्ति नहीं की, तब उन सन्धियों की वार्ता पुष्ट हो गई और हमने काम पूरा कर डाला।' यह कहते हुए उसने विमान चालक को संकेत किया कि वह वायुयान को बहुत ऊँचे पश्चिम की ओर ले चले। थोड़ी देर बाद उसने फिर कहा—'अब हम लोग काराकुरम पर्वतमाला के ऊपर हैं। आप दूरबीन के द्वारा सामने की दिशा में देखिए। आप देखेंगे पहाड़ों की आड़ में कुछ ठूँठ। वास्तव में पृथ्वी से चिपके हुए, ये काले निशान अमरीकी किले बन्दी के हैं, जहाँ से वे चीन पर आक्रमण कराने की योजना बना रहे हैं। थोड़ी देर के लिए आप अपने निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि हमें इसके मुकाबले में अपनी किलेबन्दी करना चाहिए, जिसमें चीन पर आक्रमण होने से हम इस सैनिक अड्डे को नष्ट कर दें। बस चीन इसी भाँति अपनी सुरक्षा का प्रबन्ध कर रहा है।' इतना कहने के पश्चात् उसने चालक को संकेत किया, और विमान पुनः लेह की ओर लौट पड़ा।

प्रमोद उसके तर्क को सुनकर मन ही मन असंतुष्ट हो रहे थे, किन्तु उत्तर देना युक्ति संगत प्रतीत न हुआ, इससे वह मौन होकर केवल श्रोता बने रहे। दामिनी, मंजुला और अमृता बैठी मुँह बना रही थी। सबके मन में यही भावना जोर कर रही थी कि कब भारत की पुण्य भूमि में उतर कर उसकी मृत्तिका की वन्दना करे। उनको तिनलिन की बातों में रस नहीं आ रहा था, क्योंकि वह चीन के अनधिकारपूर्ण कार्यों की सफाई देने में दत्तचित्त था।

तिनलिन पुनः कहने लगा—'इतना मेरा अनुरोध है कि आप निष्पक्ष होकर चीन की संकट पूर्ण स्थिति पर विचार करें, ठीक उसी भाँति जैसे कोई सहृदय मित्र कर सकता है। इस विश्व में चीन के दो ही सहायक हैं, एक रूस और दूसरा भारत। पश्चिमी राष्ट्र इन तीनों को नष्ट करने की चेष्टा में है, किन्तु हम तीनों की सम्मिलित शक्ति के सामने स्वयं उनको घुटने टेकना पड़ेगा। अभी फ्रांस और इंग्लैंड ने मिस्र को डकार जाने की योजना बनाई थी, परन्तु जब रूस और चीन उसकी रक्षा के लिए खड़े हो गये तो वे भीगी बिल्ली बन कर बैठ गए। इसी से आपको पता चल जायगा कि इनके मन से उपनिवेशवाद की भावना मरी नहीं, बल्कि जीवित है। किसी सुअवसर की प्रतीक्षा में वे ताक लगाए बैठे, ऊपर से मुँह चुपड़ी बातें करते हैं। इस समय हमें पूर्ण सतर्क रहना है, क्योंकि न जाने कब धोखे में वे हम पर आक्रमण कर दें।'

इतना कहकर तिनलिन ने समर्थन प्राप्त करने के लिए उनकी ओर देखा।

प्रमोद ने अपना सिर हिलाकर समर्थन किया। तिनलिन कहने लगा—'मैं चीन की ओर से प्रार्थना करूँगा कि यदि कभी अमरीकी गुट्ट के राष्ट्र इस सम्बन्ध में बावेला उठा कर हमारी मित्रता भंग करने की चेष्टा करें, तो यहाँ की स्थिति को आप स्पष्ट करें, तथा अपने माता-पिता के द्वारा भारतीय संसद में स्पष्ट करावें। लेह का हवाई अड्डा आ गया है, अब हमारा वायुयान नीचे उतरेगा।'

वायुयान नीचे उतर कर ठहर गया। काश्मीर सरकार के अधिकारी उनका स्वागत करने के लिए तैयार खड़े थे। सबसे पहले तिनलिन उतरा और उसके पीछे-पीछे प्रमोद आदि उतरे। काश्मीर सरकार के अधिकारी ने समीप आकर तिनलिन से हाथ मिलाया। उस समय तिनलिन ने कहा—'लीजिए, अब हमारे अतिथियों का भार आप ग्रहण करें।'

अधिकारी ने प्रमोद आदि का अभिवादन करने के पश्चात् कहा—'हम लोग कई दिनों से आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। क्या आप लोग अभी

श्रीनगर चलेंगे या आज रात भर विश्राम कर कल प्रातः काल प्रस्थान करेंगे ?'

प्रमोद ने मंजुला आदि की ओर उनका अभिमत जानने के लिए देखा। मंजुला तो चुप रही, किन्तु अमृता ने उत्तर दिया--'आज तो लेह में ठहर कर कल प्रातः काल चलेंगे। जब यहाँ आ गए हैं तो लद्दाख की राजधानी भी देख लेनी चाहिए।'

प्रमोद ने अधिकारी से वहाँ ठहरने की इच्छा प्रकट की। तिनलिन ने कहा—'ठीक है, आज रात्रि भर विश्राम कर कल आप प्रस्थान करें, किन्तु मैं अभी वापस जाऊँगा।'

प्रमोद ने हँसते हुए कहा—'यह कैसे संभव है। अभी तक हम लोग आपके अतिथि थे, आज आप हमारे अतिथि बनने की कृपा करें। कल आप चीन रवाना हों, और हम लोग श्रीनगर।'

तिनलिन ने उनको सन्तुष्ट करने के लिए उनका निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

अधिकारी ने कहा—'यहाँ पर कोई अच्छा होटल नहीं हैं, आप लोग डाक बँगलों में ठहर जाइए। एक में शिष्टमंडल के सदस्य ठहर जावें और दूसरे में चीन सरकार के अधिकारी।'

वहाँ से वे दो दलों में विभक्त हो गए। एक अधिकारी प्रमोद आदि को मार्ग-प्रदर्शन करता हुआ एक ओर ले चला, तथा बिल्कुल उनकी विपरीत दिशा में तिनलिन और उसके चीनी साथियों को लेकर दूसरा अधिकारी रवाना हो गया।

डाक बँगले में उनकी सब वस्तुओं को यथास्थान रखवाने के पश्चात् अधिकारी चला गया। उसके जाने के पश्चात् सब एक दूसरे को इस प्रकार देखने लगे, जैसे वे किसी जेल से छूट कर आए हों, और स्वतंत्र वायु का आनन्द इस प्रकार अनुभव कर रहे हों, जैसे वे भयानक दिन अब लौटकर नहीं आएँगे।

अमृता ने कहा--'अब मैं श्रीमती मंजुला देवी से प्रार्थना करूँगी कि

वह उस पत्र को निकाल कर हम सबके सामने उपस्थित करें, जो लू से मिला-भेंटी के समय उसके वस्त्रों से निकल कर गिर पड़ा था।'

दामिनी ने मुस्कराते हुए कहा—'मंजुला तुम्हारे हाथ में क्या लू का कोई पत्र पड़ गया है ?'

मंजुला ने उसे अपने ब्लाउज़ की जेब से निकाल कर दामिनी को देते हुए कहा—'जब तुमसे लू बार-बार गले मिल कर अपना प्रेम प्रकट कर रही थी, तब उसके वस्त्रों से खिसक कर एक लिफाफा नीचे गिर पड़ा। अमृता और मैंने उसे गिरते देख लिया। उससे मिलने के बहाने मैं उसके पास पहुँच गई, और अपने पैरों के नीचे उसे दबा लिया। अमृता जब उससे मिलने लगी तो मैंने उसकी आँख बचा कर कमर में खोंस लिया।'

दामिनी ने मंजुला की पीठ थपथपाते हुए कहा—'शाबाश, तुमने चोर के ऊपर बटमारी की। इस पत्र से चीनी षड्यन्त्र का भेद खुलेगा। इसे अब पढ़ना चाहिए।

यह कह कर वह लिफाफे से पत्र निकाल कर पढ़ने लगी। पत्र चीनी भाषा में लिखा था। उस भाषा से दामिनी आदि सभी परिचित थीं, क्योंकि अपने प्रवास काल में उसे बखूबी सीख लिया था। उसका हिन्दी रूपान्तर इस प्रकार है—

दिल्ली

बहिन लू,

यह तुम्हें जानकर प्रसन्नता होगी कि मैं दिल्ली की मेयर चुन ली गई हूँ। भारतीय राजनीति में प्रवेश करने का मार्ग मैंने बना लिया है, और अब यह आशा की जा सकती है कि 'चीनी अजदहे' के अधीन यह विशाल प्रदेश जहाँ सदा वसन्त ऋतु रहती है, शीघ्र आ जायगा।

अपने पिछले कई पत्रों में अनुरोध कर चुकी हूँ कि तुम किसी न किसी प्रकार मेरे परम शत्रु प्रमोद को वहीं खपा दो, ताकि मेरा मार्ग निष्कंटक हो जाय। पहले मैंने प्रमोद के माध्यम से यहाँ की राजनीति में प्रवेश करने का निश्चय किया था, क्योंकि उसके माता-पिता भारत-सरकार में बहुत

अधिक प्रभाव रखते हैं। इस परिवार की वधू बनने से अवश्य लक्ष्य प्राप्त करने में सुगमता रहती, और कोई संकट आने पर मेरी रक्षा भी हो सकती थी तथा यहाँ के चोटी के नेताओं से सम्पर्क बनाने में भी मुझे बड़ी सहायता मिलती, परन्तु वह कुछ न हो पाया। उस पर मेरे रूप का जादू न चला। जो जाल मैंने बिछाया था उसको फाँसने के लिए, उसको तोड़कर वह निकल भागा, और मैं पराजित हुई। नारी जिससे पराजित होती है, उसे वह कभी क्षमा नहीं करती। मैं भी उसे कभी क्षमा नहीं कर सकती। उसके चीन जाने से मुझे प्रसन्नता हुई थी, क्योंकि मुझे विश्वास था कि वहाँ पर मेरी एक ऐसी सहेली है, जो मेरी पराजय का प्रतिशोध ले लेगी। लू, यदि वह जीवित लौट आया, तो मेरी उन्नति का मार्ग अवरुद्ध हो जायगा। वह मेरा भंडाफोड़ भी कर सकता है। यदि उसने मेरा असली रूप चीनी गुप्तचर होने का प्रकट कर दिया, तो हमारा बना-बनाया खेल बिगड़ जायगा। 'चीनी अजदहे' का गुप्त रूप कभी प्रकट न होना चाहिए।

मुझको पराजित करने की घटना तुम्हारे पिता तिनलिन की उपस्थिति में घटी थी, और मैंने उनसे भी अपने शत्रु को नष्ट करने की प्रार्थना की थी। उन्होंने मुझे आश्वासन भी दिया था कि मेरा प्रतिशोध चीन में चुका लिया जायगा। शायद वहाँ जाकर मेरी व्यथा भूल गए हैं। उनको मैं पृथक् पत्र नहीं लिख सकती, क्योंकि यह संघ के नियमों के विरुद्ध पड़ता है, परन्तु तुमसे मैं ऐसा अनुरोध कर सकती हूँ। 'अज़दहे' का विष तुम सहज ही उसके शरीर में प्रवेश करा सकती हो। दुनिया यही जानेगी कि सर्पदंश से उस की मृत्यु हुई है। मैं उसकी वह तड़पड़ाहट देखना चाहती थी, जो 'अज़दहे' के विष से होती है, परन्तु तुम्हारी लेखनी से उसका दृश्य देखने को मिल जायगा। बाहर घूमते हुए, तुम्हें अपने काम में शायद उतनी आसानी न होती, जितनी अब तुम्हारी छत के नीचे उसके रहने से हो सकती है। मैं समझती हूँ कि उन लोगों को उसी अतिथिगृह में रखा गया होगा, जिसके प्रत्येक कमरे में जाने के गुप्त मार्ग हैं। किसी रात को उसके कमरे में जाकर 'अज़दहे' के विष की सुई लगाकर उसको चिरनिद्रा में सुला

दो। मैं आजन्म इस कृपा के लिए तुम्हारी ऋणी रहूँगी, और विनिमय में तुम्हारा कठिन से कठिन काम करने के लिए तैयार रहूँगी।'

आशा है कि वह जीवित लौटकर भारत नहीं आएगा।

तुम्हारी सु।

पत्र पढ़कर सब स्तब्ध रह गए। उन तीनों की दृष्टियाँ प्रमोद पर स्थिर हो गईं। दामिनी ने कहा—'भैया, तुम बहुत बचे। एक प्रकार से तुम मौत के घर से बचकर आए हो।'

मंजुला ने यद्यपि मुख से कुछ नहीं कहा, तथापि उसके नेत्रों ने भगवान् को हार्दिक धन्यवाद दिया। अमृता अपनी साड़ी का छोर मरोड़ती हुई बोली—'इस विष भरी साँपिन से मेरे भाई की कैसे रक्षा की जाय। यह तो उनको भी एक दिन डस लेगी।'

प्रमोद के सामने उस दिन का चित्र घूम गया। वह चुपचाप सोचने लगा।

दामिनी ने पूछा—'क्यों भैया, उसको तुमने इतना क्यों चिढ़ा दिया?'

अमृता बोली—'उसने साफ लिख दिया है कि वह तुम्हारी भाभी बनना चाहती थी, किन्तु प्रमोद भैया ने उसे ठुकरा दिया। किसी स्त्री के लिए इससे अधिक अपमानजनक बात क्या दूसरी हो सकती है?'

मंजुला ने कहा—'अब यह सोचना चाहिए कि इस साँपिन से छुट-कारा कैसे हो?'

अमृता—'हाँ, कोई ऐसा उपाय सोचना चाहिए, जिसमें कैप्टेन भैया को कानों-कान खबर न हो।'

दामिनी—'मेरा सुझाव है कि पहले हमें वह डाल काटनी चाहिए, जिस पर वह बैठी है। कैप्टेन को बिना अपने पक्ष में मिलाए हम उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।'

मंजुला—'यह पत्र उनके सामने रख दो, सब अपने आप स्पष्ट हो जायगा।

दामिनी—'मुश्किल यह है कि यह पत्र चीनी भाषा में लिखा हुआ है,

मालूम नहीं कि उनको सूया ने चीनी भाषा सिखाई भी है ? यदि नहीं सिखाई तो इसकी सत्यता पर उन्हें सन्देह हो सकता है।'

अमृता--'मुझे यही भय है ? कैप्टेन भैया उस पर इतना रीझे थे कि उन्होंने किसी की परवा नहीं की, यहाँ तक कि सारी जायदाद छोड़ देना मंजूर किया, परन्तु सूया को छोड़ना नहीं। वह उन पर पूरा नियंत्रण रखती होगी। सहसा वह हमारे कथन तथा प्रमाण पर विश्वास नहीं करेंगे।'

दामिनी—'तब हमको अम्मी के द्वारा प्रयत्न करना चाहिए।'

प्रमोद इतनी देर बाद बोले--'यह कोई व्यक्तिगत मामला नहीं है। इसमें स्वदेश रक्षा का प्रश्न निहित है; हमें 'चीनी अज़दहे' के विष दाँत तोड़ने हैं, नहीं तो वह एक दिन भारत को निगल जायगा। यह तो हम सबको अच्छी तरह मालूम हो गया है कि चीनी गुप्तचरों ने भारत में अपना जाल बिछा लिया है, और हिन्दी-चीनी भाई-भाई के लबादे में वे हमारे देश पर अपना अधिकार जमाना चाहते हैं। हमारे ऊपर बहुत बड़ा दायित्व आ गया है। हमें बहुत बड़े शत्रु से लड़ना है, यदि एक चाल भी गलत हो गई तो बाज़ी हारने की संभावना है, अतएव पहले हमें बाबू के सामने सब बातें स्पष्ट रूप से रखना चाहिए। वह जैसा उचित समझेंगे, करेंगे। उच्चस्तर पर वही वार्ता कर सकते हैं।'

प्रमोद के कथन का सबने समर्थन किया।

इसी समय एक कश्मीरी अधिकारी ने आकर कहा--'हुजूर, अभी-अभी एक महिला का खून हो गया है। पहनावा उसका अंग्रेज़ी है, परन्तु सूरत चीनी जैसी है। उसके साथ एक फौज़ी कप्तान है, जो उसे अपनी विवाहिता पत्नी बताता है। मारने वाला पकड़ लिया गया है। उसका चेहरा-मुहरा भी चीनी जैसा है।' सब विस्फारित नेत्रों से उसकी ओर देखने लगे।

प्रमोद ने पूछा--'वह मृत स्त्री कहाँ है, और उसका पति फौजी कप्तान कौन है ?'

'यहाँ बिना आज्ञा के पर्यटक नहीं आ सकते, और इतना हम जानते हैं कि यह दम्पत्ति प्रवेश-पत्र लेकर नहीं आई, क्योंकि यदि प्रवेश-पत्र द्वारा वे दोनों आते तो हमें उसकी सूचना होती। वारदात फौजी परिधि के बाहर एक जनशून्य स्थान में हुई है। पकड़ने वाला फौजी कैप्टेन है—नाम उनका नहीं मालूम हुआ। ऐसा मालूम होता है कि फौजी कप्तान और चीनी में बहुत गुत्थम-गुत्था हुआ है, क्योंकि दोनों बुरी तरह आहत हैं। घटना ऐसे स्थान में हुई है, जहाँ प्रायः कोई आता-जाता नहीं। हमें सूचना मिली एक चरवाहे से जो अपने जानवरों को नीचे मैदानों में ले जा रहा था, क्योंकि ये दिन उनके नीचे उतरने के हैं।'

'श्रीनगर से लेह तक तो केवल वायुयान से आवागमन होता है।'

'नहीं पैदल आ सकते हैं, घोड़ों का भी उपयोग हो सकता है, और जीप का भी मार्ग लगभग बन गया है, यद्यपि यात्रियों के लिए वह खुला नहीं है।'

'संभव है, वे लोग घोड़ों पर आए हों, किन्तु तुम कहते हो कि मृतक और हत्यारा दोनों चीनी आकृति के हैं, तो क्या इधर से चीनी आते-जाते हैं?'

'इधर से चीनी का खुश्की रास्ता नहीं है। इतने अगम पहाड़ हैं, जिन्हें साधारण यात्री पार नहीं कर सकते। पहाड़ी चरवाहे प्रायः अपने जानवरों को लेकर उधर जाया करते हैं।'

दामिनी ने कहा—'मुझे सन्देह होता है कि मरने वाली सूया है।'

अमृता—'वह यहाँ क्या करने आवेगी। वह दिल्ली की मेयर बनी गुलछर्रे उड़ा रही होगी।'

प्रमोद ने उनसे कहा—'आप लोग यहाँ ठहरेंगे, मैं जाकर पता लगाता हूँ। अब यहाँ कोई भय नहीं है। हम भय के क्षेत्र से सकुशल लौट आए हैं, और अब पूर्ण निरापद हैं। मैं अभी घंटे-आध घंटे में वापस आता हूँ।' फिर काश्मीरी अधिकारी से कहा—'आइए हम लोग चलें।'

यह कह कर वह शीघ्रता के साथ चले गए। मंजुला आदि कल्पना के घोड़े दौड़ाने लगीं।

१९

प्रमोद ने जाकर देखा कि हत्याकारी चिनमिन्ह है और मरने वाली सूया है। एक स्ट्रेचर पर लाया हुआ सूया का मृतक शरीर एक मेज़ पर रखा हुआ था, लहू-लुहान कैप्टेन अर्जुनसिंह एक कुर्सी पर बैठे थे, तथा उनके घावों की चिकित्सा हो रही थी। प्रमोद को देखकर उसने पूछा—'आप लोग आगए। अमृता भी आई है न?'

उनको परिचित देखकर अधिकारी ने पूछा—'क्या आप इन सबको पहचानते-जानते हैं?'

'हाँ, मैं इन तीनों से परिचित हूँ। यह भारतीय फौज में कप्तान है, और मृतक इनकी पत्नी सूया है, जो अभी हाल में दिल्ली कारपोरेशन की मेयर चुनी गई थी। तथाकथित हत्याकारी मृतक स्त्री का पिता दन्त चिकित्सक डाक्टर चिनमिन्ह है।'

'ईश्वर को धन्यवाद है कि आप तीनों को जानते हैं, अब हम इनका पता लगाने के झंझटों से बच गए। किन्तु यह है बड़ा पेचीदा मामला। पिता ने पुत्री का खून किया?'

'संसार में विचित्र कुछ नहीं है। रहस्य-भेद तो तब होगा जब मुकद्दमा यहाँ के न्यायालय में चलेगा।'

'यह एक संगीन वारदात है, हमें सबको श्रीनगर भेजना होगा।'

'किन्तु हत्या यहाँ हुई है।'

'यहाँ फौजी शासन है, जो अन्तर्प्रदेशीय मामलों का फैसला नहीं कर सकती। आपके साथ कल इन दोनों को भी हम श्रीनगर ले जायँगे।'

'और मृतक को ?'

'कैप्टेन की इच्छानुसार उसका संस्कार कर दिया जायगा।'

'कैप्टेन का उपचार होने के पश्चात् आप क्या उनके ठहरने का प्रबन्ध हमारे साथ कर सकेंगे? हम लोग पुराने मित्र हैं, और इनकी सगी बहिन हमारे साथ आज ही चीन से लौटी है। भाई-बहिन मिलकर प्रसन्न होंगे, और कैप्टेन को भी कुछ राहत मिलेगी।'

'जब आपका आग्रह इनको अपने साथ रखने का है, तब हमें क्या आपत्ति हो सकती है? कैप्टेन के विरुद्ध कोई आरोप नहीं है, वह शौक से आपके साथ रह सकते हैं। हमने इनका बयान ले लिया है, और बाकी कारवाई श्रीनगर के अधिकारी करेंगे।'

कैप्टेन अर्जुनसिंह की पट्टियाँ बँध गई थीं, वह प्रमोद के साथ डाक बँगले के लिए रवाना हुए।

प्रमोद ने उनको सहारा देते हुए कहा—'यहाँ से डाक बँगला कुछ दूर है, जीप पर चलें तो अच्छा रहेगा।'

'अरे मैं फौजी जवान हूँ, इतनी छोटी-मोटी चोटों से नहीं घबड़ाता। चलिए मुझमें चलने की शक्ति है।'

रास्ते में आकर प्रमोद ने पूछा—'यह हत्याकांड कैसे घटित हुआ, और आप दिल्ली से यहाँ कैसे आए—और आए बिना परमिट के, यह सब क्या रहस्य है?'

'बात यह है कि सूया से विवाह कर मैं एक अजीब चक्रव्यूह में फँस गया था। यह चिनमिन्ह सूया का असली पिता नहीं है, बल्कि उसका नौकर था, जिसने उसका पालन-पोषण उसके बचपन में किया, और उसकी सम्पत्ति की देख-रेख करता था। जब चीन में कम्यूनिस्टों का शासन हुआ, और वैयक्तिक सम्पत्ति का नाश हुआ, तब ये दोनों भारत आकर रहने लगे। सूया की चल सम्पत्ति चीन सरकार में जमा है, जिसकी देख-रेख उसके चाचा तिनलिन करते थे। सूया के मेयर हो जाने के पश्चात् न-मालूम क्यों, चिनमिन्ह और सूया में खटक गई। सूया ने मुझे बताया कि चिनमिन्ह

उसकी हत्या कर उसकी सम्पत्ति हथियाना चाहता है। वह मुझसे दिल्ली छोड़ने की ज़िद करने लगी। मैंने उसे बहुत समझाया, परन्तु वह मानी नहीं और मुझे भी छुट्टी लेकर उसके साथ काश्मीर आना पड़ा। श्रीनगर में उसने बताया कि चीन गया हुआ भारतीय शिष्टमंडल लद्दाख के रास्ते लौटेगा और उसके साथ तिनलिन अवश्य आवेंगे। मैं उस अवसर पर उनसे मिलकर चिनमिन्ह का भंडाफोड़ कर उसको भारत से पुनः चीन भिजवा दूँगी। श्रीनगर में मालूम हुआ कि यहाँ आने के लिए सरकारी अनुमति की आवश्यकता है। मैंने अनुमति-पत्र लेना चाहा, किन्तु सूया इसके लिए तैयार नहीं हुई, और घोड़ों से हमने चलने का निश्चय किया। मैंने बार बार उसको समझाया, किन्तु अनुमति-पत्र लेने के लिए वह किसी प्रकार राज़ी नहीं हुई। हम लोग चार दिन पहले श्रीनगर से रवाना हुए और घोड़े वालों की सहायता से आज प्रातःकाल यहाँ पहुँचे। हमने नगर के बाहर एक घाटी में डेरा डाला। एक तम्बू हमारे साथ था, और खाने-पीने का सब सामान भी साथ था, इसलिए कोई अधिक असुविधा मार्ग में नहीं हुई। हमने घोड़ों वालों को हवाई अड्डे की तरफ पता लगाने के लिए भेजा कि चीन से कोई वायुयान आया है, या नहीं ? अथवा कब तक आने वाला है ? उनके जाने के पश्चात् हम दोनों जंगली पेड़ के नीचे बैठे अपनी थकान मिटा रहे थे कि सहसा पिस्तौल की आवाज हुई और सूया पक्षी की भाँति गिर पड़ी। मैंने उलटकर पीछे देखा तो चिनमिन्ह मुझे भागता हुआ दिखाई दिया। उस समय मैंने उसे पहचाना नहीं था, परन्तु जब उसके समीप पहुँच कर उसे पकड़ने चला था कि उलट कर उसने मेरे ऊपर भी गोली चला दी। भगवान् की कृपा से उसका निशाना चूक गया, यद्यपि कैसे चूक गया, इसका मुझे ताज्जुब है, क्योंकि मैं उसके बहुत समीप था। मैंने उछल कर उसका पिस्तौल वाला हाथ पकड़ लिया, और ऐसा मरोड़ा कि उसके हाथ से रिवाल्वर गिर पड़ा। हम दोनों फिर गुथ गए, और उसी में मुझे ये चोटें आईं। चिनमिन्ह यद्यपि देखने में वृद्ध मालूम होता है; परन्तु उसमें अद्भुत शक्ति है। यदि पहाड़ी चरवाहे वहाँ न आ जाते तो हम दोनों में से कोई

अवश्य मरता---कम-से-कम मैं अकेले उसको गिरफ्तार नहीं कर सकता था। उसकी गिरफ्तारी के पश्चात् सूया की परीक्षा की तो मालूम हुआ कि निशाना इतना साध कर लिया गया था कि गोली उसके हृदय को विदीर्ण करती हुई बाहर निकल गई थी। उसका जीवन-प्रदीप गोली लगते ही बुझ गया था।'

कहते-कहते कैप्टेन के नयनों से अश्रु उमड़ने लगे।

प्रमोद ने सान्त्वना देते हुए कहा---'शोक करने से सूया पुनः जीवित नहीं होगी। जो होनहार था, वही हुआ। फौजी तो प्रायः भाग्यवादी होते हैं।'

'हाँ, अब सब्र करने के अतिरिक्त और क्या हो सकता है? मेयर चुने जाने पर उसे न-मालूम कितनी खुशी हुई थी, किन्तु दुःख यही है कि औपचारिक रूप से वह एक दिन भी उस पद पर आसीन नहीं हो सकी।'

'यह भी भाग्य के खेल के अतिरिक्त और क्या हो सकता है? आपका इतना व्यय बिल्कुल निरर्थक हुआ।'

'धन नष्ट नहीं हुआ, उसका प्रतिदान उसके मेयर चुन जाने से मिल गया। दुख इस बात का है कि मेरा जीवन नष्ट हो गया। सूया के समान प्रेम करने वाली स्त्री अब मुझे नहीं मिलने की। वह अपने प्रेम की इतनी गहरी स्मृति छोड़ गई है जिसका धूमिल होना असंभव है।'

'चिनमिन्ह के साथ उसका सांघातिक बैर कैसे हो गया, यह मेरी समझ में नहीं आता।'

'मुझे भी कुछ नहीं मालूम है। मुझे ऐसा सन्देह होता है कि उसने सब बातें खोलकर नहीं बताईं। संभव था कि आगे कुछ मालूम होता।'

'मेरा अनुमान है कि संघर्ष के कारण बहुत गहरे थे। शायद चिनमिन्ह के बयान से कुछ आभास मिले।'

'चिनमिन्ह ने ऐसी चुप्पी साधी है मानो वह गूँगा है।'

'तिनलिन मेरे साथ आए हैं, शायद उनसे सारा भेद कहे।'

'संभव है कि तिनलिन स्वयं उससे मिलने आये, क्योंकि सूया का वह

चाचा है ।'

'आप क्या उससे मिलना चाहेंगे ?'

'हाँ, कल प्रातःकाल उससे मिलूँगा । वह वापस चीन जायगा या आपके साथ श्रीनगर ?'

'पहले वह हमारे साथ विदा होकर चीन जाने की बात करता था, अब शायद उसके कार्यक्रम में इस हत्याकांड से कोई परिवर्तन हो जाय। बहरहाल कल वह बिना मिले तो जायगा नहीं । आइए सामने यही डाक-बँगला है । अमृता से अभी मिलिए, फिर देखा जायगा ।'

यह कहकर वह कैप्टेन को सहारा देते हुए डाक बँगले में ले गए ।

२०

जन्माष्टमी का पावन दिवस आया। इस वर्ष अष्टमी, रोहिणी और बुधवार का अपूर्व मिलन घटित हुआ, अतएव वैष्णवों, शैवों तथा वैरागियों ने एक ही दिन भगवान् कृष्ण का जन्म मानकर उत्सव करना शुरू किया। केसर कुँवर उस दिन विशेष रूप से सतर्क थी, क्योंकि आज के दिन उसने अपने मृत पति की आत्मा के उद्धार के लिए वचन दिया था। उसकी सुप्त धार्मिक भावनाएँ सजग हो गईं, और उसने बिरजू के साथ उपवास करने की घोषणा कर दी। माधवसिंह को विशेषकर उसके उपवास करने की घोषणा से अतीव आश्चर्य हुआ, क्योंकि अपनी नौकरी की अवधि में, इससे पूर्व हिन्दू धर्म में वर्णित व्रतों के प्रति उसकी आस्था उसने कभी नहीं देखी थी। इससे अधिक उस समय अधिक आश्चर्य हुआ, जब उसने उसको पंडित हरिकृष्ण को बुलाकर लाने का आदेश दिया। वह मन ही मन प्रसन्न होता हुआ पुरानी दिल्ली से पंडित हरिकृष्ण को बुलाने के लिए चल दिया।

पंडित हरिकृष्ण भी इतने वर्षों के पश्चात् अपने मित्र की विधवा पत्नी द्वारा बुलाए जाने पर चकित रह गये। माधवसिंह से वह भलीभाँति परिचित थे। उन्होंने सहसा इस बुलाहट का कारण पूछा, परन्तु जब वह कुछ न बता सका, तो उसके साथ चले आए। केसर कुँवर ने बड़ी श्रद्धा-भक्ति के साथ उनका स्वागत किया, और कुशल क्षेम पूछने के पश्चात् कहा—'पंडित जी आपका इस घराने से पुराना सम्बन्ध है, और मेरे मृत स्वामी के आप परम मित्र थे। आज आपको एक कष्ट देने के लिए बुलाया है।'

'कहिए, आपके पति लाला वंशीधर के इतने एहसान मेरे ऊपर हैं, जिनका बदला चुकाना मेरी शक्ति से बाहर है। आपका यदि कुछ भी उपकार कर सकूँ, तो मैं अपने को धन्य मानूँगा। आपने तो पूजा, व्रत, अनुष्ठान करना-कराना बन्द कर दिया है।'

'परन्तु आज से मैं उनको आरम्भ करना चाहती हूं। बहुत दिन भटकती फिरती रही, मन को शान्ति नहीं मिली।'

'बीवी जी, अब इच्छित शान्ति मिलेगी, क्योंकि उसकी प्राप्ति निवृत्ति में है प्रवृत्ति में नहीं।'

'ठीक है इसीलिए आपसे प्रार्थना है कि आप आज रात्रि को गीता का पाठ भगवान् की मूर्ति के सामने करें।'

'मुझे यह सहर्ष स्वीकार है। पूजन किस स्थान में होगा, क्योंकि उसको स्वच्छ करना है, तथा वहां भगवान् की प्रतिमा स्थापित करनी है।'

'मैं समझती हूँ की सबसे उत्तम स्थान मेरा शयन कक्ष होगा, जहां का वातावरण शुद्ध होकर मुझे उस दिशा में सदैव प्रेरणा दिया करेगा।'

'अति उत्तम विचार हैं आपके। किन्तु मुझे एक बार घर जाकर पूजन सामग्री, भगवान् की मूर्ति आदि लानी पड़ेगी।'

'बेशक, आप उन्हें जाकर ले आइये, और जो यहाँ प्रबन्ध करना हो, वह माधवसिंह को बता जाइए। आपकी आज्ञानुसार वह सब तैयारी कर रखेगा।'

'बस अभी अपने कमरे को स्वच्छ जल से धुलवा दीजिए, बाकी मैं

लौटकर उसे शुद्ध करूँगा।'

केसर कुँवर ने उन्हें एक सौ रुपये का नोट देते हुए कहा—'आप अपनी इच्छानुसार पूजन-सामग्री खरीदने के लिए यह स्वीकार करें। दक्षिणा तो आपको पूजन के पश्चात् दी जायगी।'

'बीबी जी ! इतनी बड़ी रकम मैं लेकर क्या करूँगा। पूजन-सामग्री में मुश्किल से चार-पाँच रुपए खर्च होंगे। प्रसाद और भोग यहीं बनेगा। जिन-जिन वस्तुओं की आवश्यकता है, वह सब मैं माधवसिंह को बताकर जाऊँगा, जिन्हें वह संग्रह करेगा। सौ रुपए का नोट आप उसी को दें। मैं गरीब ब्राह्मण इस भार को उठाने में सर्वथा असमर्थ हूँ। इतनी बड़ी रकम यदि कोई पुलिस वाला देख लेगा तो मुझे लेने के देने पड़ जायँगे, और सारा दिन सफाई देते-देते बीत जायगा। भगवान् के जन्म दिन पर उनकी पूजा से वंचित हो जाऊँगा।'

पंडित हरिकृष्ण ने किसी प्रकार उस नोट को लेना स्वीकार नहीं किया। अन्त में केसर कुँवर को पाँच रुपए का नोट देना पड़ा। उसे देने के पश्चात् उसने पूछा—'पंडित जी, आप चाँदनी चौक मेरी मोटर पर जायँगे अथवा उसमें भी आपको कोई आपत्ति है।'

इन फटे-पुराने कपड़ों से उस पर बैठकर जाना क्या शोभा देता है। माधवसिंह साथ में था इसलिए बैठकर चला आया। मैं यहाँ से बस में बैठकर चला जाऊँगा, आप इसकी चिंता न करें। यदि लौटकर शीघ्र आना न होता तो मैं पैदल ही जाता, क्योंकि उसमें जितनी सुविधा रहती है, उतनी सवारी में नहीं।'

'नहीं यह नहीं हो सकता। आप मोटर पर जाइए, और उसी पर आइए।'

'अच्छा, जैसी आपकी इच्छा। आज मैंने आपकी सेवा स्वीकार की है, आपका आदेश पालन करूँगा।'

केसर कुँवर ने माधवसिंह को पंडित हरिकृष्ण के सम्बन्ध में यथोचित आदेश करने के लिए बुलाया। माधवसिंह उस दिन की डाक उसके सामने

रखकर आदेश के लिए खड़ा हो गया। केसर कुँवर ने छाँटकर एक पत्र निकाला, और पढ़ने लगी। पत्र प्रकाश कुंवर का था और उसकी लिखावट पहचानकर उसने उसे उठाया था। वह शीघ्रता से लिफाफा फाड़ कर पढ़ने लगी।

श्रीनगर

प्यारी ममी,

यह जानकर तुम्हें प्रसन्नता होगी कि मंजू सकुशल चीन से लौट आई है, और वह आजकल मेरे पास है। मैं करुणासुन्दरी के साथ उनके परिचित एक मित्र के बँगले में रहती हूँ, जो निशातबाग के बगल ब्रेन गाँव में स्थित है और यहीं पर उनके पति मनोहरलाल, उनकी पुत्री दामिनी, उनके दोनों पुत्र प्रमोद तथा सुशील, कैप्टेन अर्जुनसिंह और उसकी बहिन अमृता भी हैं। कैप्टेन की चीनी पत्नी सूया, जो दिल्ली कारपोरेशन की मेयर चुन ली गई थीं, अपने पालक पिता दन्तचिकित्सक चिनमिन्ह के द्वारा लद्दाख की राजधानी लेह में मार डाली गई। चिनमिन्ह को कैप्टेन ने रँगे हाथों पकड़ लिया था, और वह भी हिरासत में यहीं लाया गया है तथा हवालात में बन्द है। उसका आजकल मुकदमा चल रहा है। आशा है कि उसे प्राण-दण्ड दिया जायगा। यहाँ ऐसी विचित्र घटनाएँ हुई हैं, जिनको मैं पत्र द्वारा बताने में असमर्थ हूँ, अतएव तुम शीघ्र से शीघ्र श्रीनगर आ जाओ। मैं एक दूसरी कोठी की तलाश में हूँ। आशा है कि शीघ्र मिल जायगी और मैं सपरिवार उसमें रहने के लिए चली जाऊँगी। कैप्टेन के विवाह का रहस्य अब खुला है। वह चीनी लड़की सूया, दरअसल चीन की गुप्तचर थी, और उसने कैप्टेन को इस प्रकार मोहित कर लिया था कि वह उससे विवाह करने से इनकार नहीं कर सका। अब कैप्टेन बहुत पछताता है, और मुझे ऐसा मालूम होता है कि वह मंजू से विवाह करने के लिए आतुर है, क्योंकि वह मेरी और तुम्हारे दामाद की बड़ी खुशामद करता है, तथा अपनी भूल के लिए पश्चात्ताप करता है। तुम अपने दामाद के स्वभाव से परिचित हो। वह उसे क्षमा कर मंजू का विवाह उससे करने की इच्छा रखते हैं, परन्तु

मंजू साफ इन्कार करती है, और मैं भी अब यह टूटा हुआ सम्बन्ध जोड़ने के पक्ष में नहीं हूँ। इस समय मुझे भी तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है। मंजू भी तुमसे मिलने के लिए बड़ी आतुर है। वह तुम्हें लेने के लिए वायुयान से तुम्हारे पास आ रही थी, किन्तु मैंने उसे यह आश्वासन देकर रोक लिया है कि तुम स्वयं शीघ्र चली आओगी। इसलिए पत्र लिखते ही वायु मार्ग से श्रीनगर के लिए प्रस्थान कर दो। आवश्यक विलम्ब के अतिरिक्त एक क्षण भी विलम्ब न करना। मंजू बड़ी उत्कण्ठा से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है।

तुम्हारी—

प्रकाशो।

पत्र पढ़ने के पश्चात् उसने पंडित हरिकृष्ण से कहा—'लीजिए पंडित, बड़ा शुभ समाचार आया है। मेरी नातिन चीन से लौट आई है, और मेरी लड़की प्रकाशो ने मुझे शीघ्र से शीघ्र श्रीनगर बुलाया है।'

'बीवी जी, भगवान् का अनुष्ठान करते ही आपको फल मिला। आप आज पूजन कर कल प्रस्थान करिए। मंगलमय भगवान् सदा मंगल ही करते हैं।'

'हाँ, पण्डितजी मालूम ऐसा ही होता है। आपके आशीर्वाद से आगे भी मंगल ही मंगल होगा। अच्छा, माधवसिंह! पण्डितजी की आज्ञानुसार तुम सब प्रबन्ध करो। अभी आप घर जाकर पूजन सामग्री आदि लायेंगे, इसलिए रामभजन ड्राइवर से कहो कि वह इनको ले जावे, और इनकी आज्ञानुसार काम करे। टेलीफोन मुझे देते जाओ, मैं तब तक श्रीनगर जाने के लिए प्रबन्ध करती हूँ।'

माधवसिंह ने टेलीफोन लाकर उसके पास रख दिया, और वह पण्डित हरिकृष्ण को अपने साथ लेकर चला गया।

केसर कुँवर अत्यन्त प्रहृष्ट मन से अपनी यात्रा के आयोजन में दत्तचित्त हो गई।

२१

गीता-पाठ आरम्भ होने के पहले केसर कुँवर ने पण्डित हरिकृष्ण से बिल्कुल एकान्त में कहा—'पण्डित जी, आपसे एक अत्यन्त गुप्त बात बताती हूँ, जिसे आप अपने ही तक रखिएगा, क्योंकि यह आपके मृत मित्र से सम्बन्धित है।'

पण्डित हरिकृष्ण साश्चर्य उसकी ओर देखने लगे।

केसर कुँवर बोली—'आपके मृत मित्र अभी प्रेतयोनि में हैं।'

'क्या कहा, ऐसा पुण्यात्मा प्रेतयोनि में ! असम्भव !'

'नहीं, यह असम्भव नहीं, बिल्कुल सत्य है। वह मेरे सामने प्रकट हो चुके हैं, और आज आपके सामने भी प्रकट होंगे। उन्हीं के आदेश से मैं यह आयोजन कर रही हूँ।'

'यह बड़े आश्चर्य की बात है। अच्छा वह कैसे प्रकट होते हैं ?'

'उन्होंने बड़ी-बड़ी बातें बताई हैं, वे सत्य हैं या असत्य, मैं नहीं बता सकती, क्योंकि धार्मिक विषयों के सम्बन्ध में मैं बिल्कुल कोरी हूँ। मेरे यहाँ एक लड़का ब्रजमोहन नामक रहता है। उसे मेरे दामाद किसी अनाथालय से लाकर उसका पालन-पोषण करते थे। प्रकाशो के विवाह के पश्चात् मैं भी उनके साथ रहने लगी थी। प्रकाशो के श्वसुर ओमप्रकाश जी से मेरा पुराना परिचय था, क्योंकि वह मेरे पिता के मित्र थे, और लड़कपन से जानने के कारण उनका विश्वास करती थी। उनकी प्रेरणा से मैंने प्रकाशो का विवाह उनके लड़के वेदप्रकाश से कर दिया। ओमप्रकाश जी मेरे ऊपर बहुत मेहरबान रहते थे, और मृत्यु-समय वह मेरी देख-रेख करने के लिए वेदप्रकाश को आज्ञा दे गए थे। वेदप्रकाश अपने उस दायित्व को बड़ी कुशलता से निभाते आ रहे हैं।'

'यह मैंने सुना था कि आप अपनी लड़की-दामाद के साथ रहती हैं।'

'दूसरा कोई सहारा न होने से मुझे मजबूरन उनके साथ रहना पड़ता था, परन्तु खाती-पीती थी अपना। उनका एक पैसा अपने ऊपर खर्च नहीं होने दिया।'

'आपको कमी किस बात की थी, जो दामाद की सहायता लेतीं। लाला-जी स्वयं लाखों की सम्पत्ति छोड़ गए थे।'

'इसमें कोई सन्देह नहीं। वह इतना छोड़ गए हैं, जो सात जन्मों के लिए काफी है।'

'अपनी कहानी कहिए, मैं लाला जी के सम्बन्ध में जानने के लिए बहुत उत्कण्ठित हूँ।'

'हाँ, मेरे दामाद के यहाँ वह अनाथ बालक ब्रजमोहन, जिसको बिरजू कहते हैं, रहता था। वह बड़ा भोला और सुन्दर था। मेरी प्रकाशो उससे कुछ असन्तुष्ट रहती थी, इससे मैं उसे अपने साथ ले आई। जिस दिन उसे लेकर मैं अपने इस घर में आई, उसी दिन उसके शरीर में मेरे मृत पति की आत्मा, जो इसी घर में रहती थी, प्रवेश कर गई और उसने कुछ पुरानी बातें बताईं, जिनको केवल माधवसिंह और मैं जानती थी।'

'उसने क्या कोई भेद की बात बताई थी?'

'जी हाँ, कोई गुप्त भेद तो नहीं था, किन्तु भूली-बिसरी बातें अवश्य थीं। थोड़ी देर पश्चात् वह बेहोश हो गया। मैं उसे कोठी में ले आई, और उप-चार कराया। माधवसिंह ने उसे मिरगी बताई, और डाक्टरों ने हिस्टीरिया, परन्तु दरअस्ल वह कोई रोग नहीं था। एक दूसरे दिन की घटना से विदित हुआ कि आपके मित्र की आत्मा ने उसमें प्रवेश किया है। उस समय मैंने उनसे बातें कीं।'

'अच्छा, आपने उनसे बातें की थीं?'

'जी हाँ, और आज आप भी उनसे बातें करेंगे। उन्होंने मुझे बताया कि उनको उस जीवन से मुक्ति मिल सकती है यदि उन्हें गीता किसी सच्च-रित्र ब्राह्मण से सुनाई जाय। कई नाम मैंने बताए, किन्तु उन्हें अस्वीकार कर केवल आपका नाम बताया कि वह यदि मुझे गीता सुनाने तथा मेरी

आत्मा के कल्याण के लिए मन, वचन कर्म से प्रार्थना करें तब मेरी यह योनि छूट सकती है। उन्होंने इस कार्य के लिए जन्माष्टमी का दिन भी निश्चित किया। आज उसी के निमित्त आपको यह कष्ट दिया है।'

'इसमें कष्ट की क्या बात है? यह मेरा सौभाग्य है कि मरने के पश्चात् भी उन्होंने मुझे स्मरण किया, और मेरी सहायता से यह प्रेत-योनि से छुटकारा पायेंगे। मैं अपनी सारी तपस्या का फल उनकी आत्मा की सद्गति के लिए प्रदान करूँगा। इस शरीर का रोम-रोम उनके नमक से बिंधा हुआ है। वह कब प्रकट होंगे?'

'जब आप गीता का पाठ आरम्भ करेंगे।'

'मैं बिल्कुल तैयार हूँ।'

'तब मैं बिरजू को बुलाऊँ, क्योंकि उसी के शरीर में प्रवेश होने की क्षमता वह रखते हैं।'

'अवश्य, उसे शीघ्र बुलाइए।'

केसर कुँवर ने बिरजू को बुलाने के पश्चात् कहा—'आपसे एक प्रार्थना और है, वह यह कि शायद आपको कुछ विचित्र बातें सुनने को मिलें, तो आप उन्हें गुप्त रखियेगा, किसीसे कहिएगा नहीं, क्योंकि यह परिवार से सम्बन्धित बातें होंगी, जिनका दूसरों पर प्रकट होना उचित नहीं है।'

'बीबी जी, उस ओर से निश्चिंत रहिए। मैं मित्रघात का अपराधी नहीं हो सकता। जिस दृष्टि से मैं लाला जी को देखता था उससे अधिक श्रद्धा आपके प्रति है। इस परिवार का कोई भी गुप्त भेद मेरे द्वारा प्रकट नहीं होगा, यह आप निश्चय जानिए।'

केसर कुँवर की बुलाहट सुनकर बिरजू कमरे में आया। वह अपने साधारण रूप में नहीं था। उसके नेत्र लाल थे, और उसके शरीर के समस्त अवयव इस प्रकार काँप रहे थे, मानो कोई बहुत भारी वस्तु का भार उस पर हो। उसने कमरे में प्रवेश करते ही पंडित हरिकृष्ण को प्रणाम किया, और कहा—

'कहिए हरिकृष्ण जी, आप आनन्द पूर्वक हैं?'

पं० हरिकृष्ण उसकी ओर देखते हुए बोले—'हाँ, लाला जी, आपकी कृपा से सब कुशल हैं।'

'मालूम होता है केसरी ने सब बातें आपको बता दी हैं।'

'जी हाँ, किन्तु उन बातों से मुझे मार्मिक पीड़ा हुई है। आप जैसे पुण्यात्माओं की जब यह गति हो सकती है, तब हमारा क्या होगा, नहीं जानता ?'

'मेरी कुगति तो इस केसरी के कारण हुई है।'

केसर कुँवर ने अनुभव किया कि शायद वह यह प्रकट कर दे कि विष-पान उसी ने कराया था, इसलिए उसने उसे सचेत करते हुए कहा—'जो होना था वह हो गया। आपके आदेशानुसार मैंने आपके मित्र को बुलवाकर गीता सुनाने का प्रबन्ध कर दिया है। अब आप शान्तचित्त होकर गीता सुनिए, और इस योनि से मुक्ति पाइए।'

यह सुनते ही विरजू के शरीर में प्रविष्ट वंशीधर का आत्मन् बड़े वेग से हँस पड़ा, फिर बोला—'इस समय मेरे मन में किसी के प्रति द्वेष नहीं है, और न पुरानी बातों को कहकर वातावरण अशान्त बनाने की इच्छा रखता हूँ। हाँ, हरिकृष्ण जी आप संकल्प पढ़िए।'

यह कह कर वह वेदी के सामने हाथ जोड़कर बैठ गया। हरिकृष्ण ने भगवान् का षोड़शोपचार से पूजन प्रारम्भ किया। पूजन के पश्चात् संकल्प पढ़ा और कहा कि इस पूजन का समस्त फल लाला वंशीधर की आत्मा को प्राप्त हो, जो इस समय प्रेत-योनि में बद्ध है। इसके पश्चात् उन्होंने गीता का पाठ आरम्भ किया।

लगभग दो घंटों में उसके अठारहों अध्याय समाप्त हुए। पाठ-काल में वह ध्यान में निमग्न रहा, और उसकी दृष्टि निरन्तर हरिकृष्ण के मुख पर जमी रही, वह उनके प्रत्येक शब्द को हृदयंगम करता रहा।

पाठ समाप्त होने के पश्चात् वंशीधर का आत्मन् बोला—'हरिकृष्ण जी, आज मैं एक विशेष प्रकार की शान्ति का उपभोग कर रहा हूँ। इस प्रेत-योनि में मेरी यह रात्रि अन्तिम है। अब मैं पूर्वकृत कर्मों की प्रतिक्रिया

द्वारा बनाए हुए मार्ग में अग्रसर होऊँगा, किन्तु आप लोगों से विदा होने के पूर्व मैं कुछ गुप्त बातें केसरी को बताना चाहता हूँ, जिसका ज्ञान मुझको इस योनि में रहते हुए हुआ है, किन्तु केसरी उससे बिल्कुल अनभिज्ञ है। कुछ क्षणों के लिए आप कमरे के बाहर पधारने की कृपा कीजिए। आप कुछ बुरा न मानिएगा क्योंकि वह गुप्त भेद केवल केसरी से सम्बन्धित है।'

हरिकृष्ण जी ने कहा—'किन्तु पूजन अभी समाप्त नहीं हुआ। स्वस्ति-वाचन एवं आशीर्वाद देना शेष है।'

'उसे आप बाद में कीजिएगा, इसे केवल मध्यावकाश ही समझिए। पूजन में भी अवकाश होने का विधान है।'

'हाँ, मैं जाता हूँ।'

यह कह कर वह बाहर चले गए। केसर कुँवर उत्कंठित दृष्टि से देखने लगी।

एकान्त होने पर वंशीधर का आत्मन् बोला—'केसरी ! जिस बालक के शरीर में मैं प्रविष्ट हुआ हूँ, वह तेरा गर्भजात पुत्र है, जो तेरे प्रेमी ओम-प्रकाश द्वारा उत्पन्न हुआ था।'

केसर कुँवर विस्फारित नेत्रों से उसकी ओर देखती हुई बोली—'झूठ बिल्कुल झूठ। यह मैं किसी प्रकार नहीं मान सकती।'

'मानना और न मानना तेरे अधीन है, किन्तु इस घर में रहते हुए जो मैंने देखा, वह तुझे बता दिया।'

'किन्तु उसकी तो मृत्यु हो गई थी।'

'ओमप्रकाश ने तुझसे झूठ कहा था। तू उस बालक को मार डालना चाहती थी, जिससे तेरा भेद प्रकट न होने पावे। कठोर और स्वार्थी प्रकृति तेरी है। तुझे पाप का कभी भय न हुआ, अतएव तू उसकी हत्या करने पर उतारू हो गई थी, परन्तु ओमप्रकाश ऐसा नहीं था। प्रसव के पश्चात् जब तूने ओमप्रकाश को उसका प्राणहरण करने के लिए दिया, तब वह उसे अपने एक मित्र कर्त्तारसिंह को, जो निस्सन्तान था, दे आया, क्योंकि उसमें तेरा जैसा न साहस था, और न प्रकृति से वह हत्यारा था। कर्त्तारसिंह

तेरे उस पुत्र का अपने घर ले जाकर पालन-पोषण करने लगा। जब वह कुछ वर्षों का हुआ तो कर्त्तारसिंह की पत्नी पागल हो गई, और उसे स्वयं पेशावर जाना पड़ा। उस समय वह ओमप्रकाश को उसका पुत्र लौटाने आया, किन्तु वह उसे ले न सकता था। उन दोनों ने उसे एक अनाथालय में रख दिया और उसके पालन-पोषण का व्यय ओमप्रकाश ने देना स्वीकार किया। कुछ दिनों बाद ओमप्रकाश की मृत्यु हो गई। मृत्यु के समय उसने अपने पुत्र वेदप्रकाश को,जिसके साथ तूने उसी के कहने से प्रकाशो का विवाह कर दिया था, अपनी 'विल' में यह आदेश दिया कि वह तेरे इस पुत्र का पालन-पोषण करे, क्योंकि वह उसका सौतेला, किन्तु उससे उत्पन्न जारज सन्तान है। वेदप्रकाश ने उस आदेश का अक्षरश: पालन किया, और वह उसे अपने घर ले आया। उसके पश्चात् की घटनाएँ तुझे मालूम हैं। ओम-प्रकाश ने अपने पुत्र को यह नहीं बताया था कि वह सन्तान तेरे गर्भ से उत्पन्न हुई थी, क्योंकि उससे लाभ के स्थान पर हानि होने की सम्भावना थी।'

'यह सब रहस्य तुमको कैसे मालूम हुआ ?'

'मैंने सब देखा है।'

'क्या तुम्हारे नेत्र हैं ?'

'पार्थिव शरीर के नेत्र होते हैं, परन्तु हम उनके बिना ही देख-सुन सकते हैं। जब तेरी नीयत इस बालक के प्रति खराब हुई, तब मैंने इसके शरीर में प्रवेश कर भयानक तथा असंगत पापाचरण से तेरी रक्षा की है।'

'क्या सत्य ही बिरजू मेरा गर्भजात पुत्र है ?'

'इतनी गुप्त बातें बताने पर भी तेरे सन्देह का निवारण नहीं हुआ।'

'सत्य ही मैं बड़ी पापिनी हूँ ! नहीं जानती मेरी क्या गति होगी,किन्तु तुम तो क्षमा प्रदान करते जाओ। मैंने तुम्हारे साथ बड़ा अन्याय किया है, अन्त में तुम्हें विष भी दिया।' कहती हुई वह उसके पैरों को पकड़ कर रोने लगी।

'जितना पश्चात्ताप कर सको, उतना करो, जितना हो सके उतना

रोओ, और अपने पापों के लिए भगवान् से क्षमा माँगो। इस योनि में भी पार्थिव शरीर के विकार नष्ट हो जाते हैं। तेरे प्रति अब कोई द्वेष, आक्रोश, नहीं है। अब भी समय है, तू अब भी अपना जीवन सुधार सकती है। तेरे पास द्रव्य है—उससे तू कितनों का कल्याण कर सकती है। अपनी काम-लिप्सा को त्याग एकान्त मन से भगवान् की आराधना कर—अधिक-से-अधिक जनों का कष्ट निवारण कर। उनके आशीर्वाद की प्रतिक्रिया अब भी तेरा उद्धार करने में समर्थ होगी। पंडित हरिकृष्ण को अब बुलाओ। मैं उनको दक्षिणा देना चाहता हूँ। वह सात्विक तपोनिष्ठ सच्चे अर्थों में ब्राह्मण है। इसके परामर्श के अनुसार चलने से तेरा कल्याण ही कल्याण होगा।'

केसर कुँवर ने पंडित हरिकृष्ण को बुलाया। उनके आसन ग्रहण करने पर वंशीधर का आत्मन् बोला—'हरिकृष्ण जी, तुम्हारी कृपा से मैं मुक्ति-लाभ कर रहा हूँ। तुम्हें जो कुछ भी दक्षिणा मैं दूँ, वह इसके मुक़ाबले में अल्प ही ठहरेगा।'

'लाला जी, मैं दक्षिणा का भूखा नहीं हूँ, मुझे तो आपकी कृपा, दया, स्नेह चाहिए।'

'अब मेरे प्रस्थान का समय है। मैं आपको अपना वह धन देना चाहता हूँ, जो मैंने सबसे छिपाकर किसी कठिन समय के लिए रखा था।'

'नहीं लाला जी, मुझे क्षमा कीजिए। मैं धन लेकर क्या करूँगा। बिना परिश्रम के धन प्राप्त होने से बुद्धि विकृत होती है, संयम नष्ट होता है, और मनुष्य कुमार्गगामी होता है। जितना परिवार के पोषण के लिए धन चाहिए, भगवान् के आशीर्वाद से उतना मैं अपने परिश्रम से प्राप्त कर लेता हूँ, और वही मेरे लिए यथेष्ट है।'

'अभी आपने जो परिश्रम किया है, उसके विनिमय में दे रहा हूँ।'

'वह तो बीवी जी से मिल जायगा, और सत्य पूछिए, तो इस पुण्य कार्य का कोई विनिमय नहीं है। आपके धन से ही यह शरीर बना है, और भगवान् की अनन्त दया से यह सुअवसर मुझे मिला है कि आपके

कल्याण के लिए प्रार्थना करूँ। जो कुछ आपको देना हो आप बीवी जी को दे जाइए। उनके हाथ से उसका सदुपयोग होगा। मुझे इस झंझट में न डालिए। धन साधन है, साध्य नहीं।'

'आपके स्वीकार न करने से मुझे शान्ति नहीं मिलेगी। आप दान कर दीजिए।'

'दान का सुयश भी एक प्रकार का बंधन है, लाला जी! यत्किञ्चित् स्नेह यदि आपका है, तो मुझे क्षमा कीजिए।'

'अच्छा केसरी, तुम इस तपोनिष्ठ ब्राह्मण के परामर्श के अनुसार यदि जीवन व्यतीत करोगी तो तुम्हें शान्ति प्राप्त होगी, तुम्हारे पापक्षय होंगे। नीचे बैठक वाले कमरे की दहलीज़ के नीचे दो फुट की गहराई पर दो कलश स्वर्ण मुद्राओं के रखे हैं, जिन्हें मैंने अपने पिता से पाया था। उसको निकाल कर किसी सार्वजनिक सेवा कार्य में पंडित जी के परामर्श के अनुसार लगा देना। अब मेरी अन्तिम घड़ी आ रही है। जो कुछ पूजन में अवशिष्ट रहा हो, उसे पूर्ण कीजिए। फिर रामधुन लगाइए। ठीक बारह बजे मैं इस योनि से मुक्ति पाऊँगा।'

यह कह कर वह निश्चेष्ट बैठ गया। पंडित हरिकृष्ण ने स्वस्ति वाचन कर आशीर्वाद दिया—'मैं हरिकृष्ण भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि इस गीता पाठ के अतिरिक्त मेरी तपस्या के फल से लाला बंशीधर की मुक्ति इस प्रेतयोनि से हो।'

इसी समय घड़ी ने बारह बजाए, और सर्वत्र शंखों घड़ियालों का तीव्र निनाद भगवान् कृष्ण के जन्मोत्सव की सूचना देने लगा।

उसी स्थान पर बंशीधर के प्रेत से वेष्ठित बिरजू लेट गया, और उसके मुख से तीन बार 'हरिशरणम्, हरिशरणम्, हरिशरणम्' की ध्वनि निकली, और फिर सब शान्त हो गया।

बंशीधर की आत्मा किसी अनजाने लोक को प्रस्थान कर गई।

२२

डाक्टर चिनमिन्ह की गिरफ्तारी और सूया की हत्या के समाचार जब देशी तथा विदेशी पत्रों में प्रकाशित हुए, तब तमाम विश्व में एक हलचल मच गई। चीन के शत्रु-राष्ट्रों के पत्र-प्रतिनिधियों की बन आई। चीन को अपराधी के रूप में विश्व-न्यायालय के समक्ष उपस्थित कर उसके विरुद्ध प्रमाण पर प्रमाण देने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि विश्व के कम्यूनिस्ट देशों के अतिरिक्त सभी राष्ट्र उसके विश्वासघात की निन्दा करने लगे, और बर्मा, नैपाल, भूटान आदि देशों के कान खड़े हो गए। इन देशों ने अब तक अपनी उत्तरीय सीमाओं की ओर उनकी दुर्भेद्यता के कारण कभी ध्यान नहीं दिया था, अब वे सचेत होकर अपने-अपने देशों की हदबन्दी करने लगे।

दिल्ली में इन दोनों समाचारों की प्रतिक्रिया विशेषरूप से हुई, क्योंकि हत्यारा और हत दोनों दिल्ली के चिर-परिचित विशिष्ट व्यक्ति थे। डाक्टर चिनमिन्ह चीनी-हिन्दी मैत्री संघ का जन्मदाता था ही, तथा सूया के चुनाव में मुक्तहस्त से रुपया लुटाने के कारण वह अपूर्वरीति से प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका था। कारपोरेशन के चुनाव में सूया के नाम की भेरी घर-घर बजी थी, इस कारण दिल्ली के अमीर-गरीब, नर-नारी, बालक-वृद्ध सभी उसको जानते, पहचानते और आदर की दृष्टि से देखते थे। उसकी हत्या के समाचार की पहली प्रतिक्रिया सर्व-साधारण में सहानुभूति तथा आश्चर्य की हुई, तत्पश्चात् जब क्रमशः पत्र-प्रतिनिधियों के विवरण प्रकाशित हुए, जिनमें चीन की अभिसन्धियों पर प्रकाश पड़ता था, तब वह सहानुभूति तथा आश्चर्य, क्रोध तथा घृणा में परिवर्तित हो गई। हिन्दी-चीनी मैत्री संघ का किला जो वर्षों के परिश्रम से बनकर तैयार हुआ था, तत्क्षण ढह कर भूमिसात् हो गया। उसके सब देशी कार्यकर्त्ताओं के मन क्षुब्ध हो गए, तथा

व्यंग्यपूर्ण आक्षेपों के समक्ष उनको मुँह दिखाना कठिन हो गया।

डाक्टर चिनमिन्ह के मन में भी इस काण्ड की प्रतिक्रिया 'चीनी-अजदहा' संघ के विरुद्ध हुई। उसने निश्चय किया कि वह उसका भंडा-फोड़ करने के पश्चात् ही फाँसी के तख्ते पर चढ़ेगा। इस प्रतिक्रिया का एक विशेष कारण था—वह यह कि जब लेह में पकड़े जाने के पश्चात् उसने तिनलिन से मिलने की इच्छा प्रकट कर उसके पास सन्देश भिजवाया तो वह बिना उससे मिले अथवा किसी प्रकार आश्वासन दिए, उसी रात्रि को चीन के लिए प्रस्थान कर गया। जिस घड़ी उसे सूया की हत्या तथा चिनमिन्ह की गिरफ्तारी का समाचार मिला, वह सतर्क हो गया, और भारत की भूमि छोड़ कर भाग जाने में ही उसे अपना तथा अपने संघ का कल्याण दिखाई पड़ा क्योंकि अभी तक उसके विरुद्ध किसी को सन्देह नहीं हुआ था, और न उसका कोई सम्पर्क सूया अथवा चिनमिन्ह से प्रकट हुआ था, इसलिए फौजी अधिकारियों के पास कोई सूत्र उसको रोकने के लिए नहीं था। रात्रि के प्रथम प्रहर में जब उसने चीन के लिए पुनर्गमन की इच्छा प्रकट की तब उन्हें कुछ विस्मय अवश्य हुआ, परन्तु वे कोई कदम उठाने में असमर्थ थे। तिनलिन का विमान जब चीनी सीमा में प्रविष्ट हो गया, तब उनकी जान में जान आई। वह सीधा अपने प्रधान कार्यालय में गया, और अपने गुप्त रेडियो से भारत स्थित चीनी-अजदेह के कार्यालयों को सूया की हत्या तथा चिनमिन्ह की गिरफ्तारी की सूचना देकर उनको बन्द कर तथा उनके कर्मचारियों को यथाशीघ्र चीन वापस आने के आदेश प्रचारित किए। इस प्रकार जब लेह से चिनमिन्ह को श्रीनगर ले जाने की व्यवस्था हो रही थी, तब चीनी-अजदहे के कार्यालय बन्द हो चुके थे, और उनके कर्मचारी भारत छोड़ने की तैयारी में लगे थे। और जब तक चिनमिन्ह को श्रीनगर पहुँचाया गया, तब तक वे लोग भारत से दूर जा चुके थे, तथा उसकी पुलिस की पहुँच से वे बाहर हो चुके।

चीनी गुप्तचरों के पूरे षड्यन्त्र का विवरण चिनमिन्ह के उस लिखित बयान से प्रकट हुआ, जो उसने अपना मुकद्दमा पेश होने पर न्यायालय के

समक्ष उपस्थित किया। उसने अपने बयान में 'चीनी-अज़दाह' नामक संस्था की उत्पत्ति एवं उसके कार्यकलाप पर पूर्णरूप से प्रकाश डालते हुए लिखा था:—

'जब चीन पर कम्यूनिस्टों का शासन स्थापित हुआ, तब उनके सामने जो प्रश्न अत्यन्त ज्वलन्त रूप से उपस्थित हुआ, वह उसकी महा जन-संख्या का था। इस जटिल प्रश्न को हल करने के लिए उन लोगों ने कूट नीति का आश्रय लेना श्रेयस्कर समझा, क्योंकि युद्ध के द्वारा वे उसको हल करने में समर्थ नहीं थे। चीन का प्रसार केवल उसकी दक्षिण दिशा की ओर हो सकता था, शेष दिशाओं में उसके आगे बढ़ने के मार्ग अवरुद्ध थे। तिब्बत ही एक ऐसा देश था, जो बिना किसी युद्ध के चीन के अधिकार में आ सकता था, परन्तु वहाँ एक थोड़ी सी बाधा थी, वह यह कि उस पर भारत का संरक्षण था, जिसे किसी न किसी प्रकार हटाए बिना चीन सफलकाम नहीं हो सकता था। इस उद्देश्य से चीन की सरकार ने भारत के साथ मैत्री सम्बन्धों को स्थापित किया, भारत भी उसके लिए व्यग्र था, क्योंकि वह अपने पड़ौसी देशों के साथ मित्रता रखने का, शान्ति रखने का इच्छुक था, एवं पंचशील के सिद्धांतों का वह जनक था। सरकारी स्तर पर दोनों देशों की मैत्री बढ़ने लगी, तथा चीन ने मुक्त कंठ से पंचशील को मानकर अपनी ओर से उसकी सब आशंकाओं का निवारण कर दिया। मैत्री संबंधों को अधिकाधिक बढ़ाने के उद्देश्य से चीन में एक अर्ध-सरकारी संस्था 'चीनी-अजदहा' के नाम से बनाई गई। इसका उद्देश्य यह था कि चीन से हिन्दी भाषा से अभिज्ञ कुछ नवयुवक तथा नवयुवतियाँ भारत भेजी जायँ, जो हिन्दी-चीनी मैत्री को अग्रसर करने में सहायक हों, तथा वहाँ राजनीति में दखल कर चीन की सत्ता को जमाएँ। सूया और मैं यहाँ इसी उद्देश्य से आए थे। दिल्ली हमारे कार्यालय का प्रधान शिविर बना, क्योंकि भारत की राजनीति का यह हृदय था। कनाट सर्कस में मैं एक दंत चिकित्सक के रूप में दूकान खोलकर बैठ गया, और सूया पुत्री के रूप में रहने लगी। चीनी-अजदहे संघ से हमें आर्थिक सहायता मिलती थी, और हमें अनुमति

थी कि हम उसका खुलकर उपयोग मैत्री सम्बन्धी समारोह में करें, जिससे जनता हमारी ओर आकर्षित हो। धीरे-धीरे चीन ने अवसर पाकर भारत के साथ मैत्री की ओट में रहकर कुछ ऐसी संधि की, जिससे भारत का नियंत्रण जो तिब्बत पर था उठ गया, और ल्हासा में स्थित उसकी सेना भी वहाँ से हटाली गई। चीन का उद्देश्य सफल हो गया, क्योंकि तिब्बत को हथियाने की सब बाधाएँ मिट गई थीं, और साथ ही तिब्बत पर चीन की प्रभुसत्ता स्वीकृत होने से पश्चिमीय राष्ट्रों के हस्तक्षेप की आशंका भी दूर हो गई थी। चीन के अधिकारियों ने इस सन्धि से पूरा लाभ उठाया, और तिब्बत की उद्धार करने का बहाना लेकर उसको हड़प लिया। दलाईलामा को तिब्बत विवश होकर छोड़ना पड़ा।

इधर सूया अपनी रूप माधुरी से भारतीय नवयुवकों को मोहित कर रही थी। उसकी सहायता के लिए कई सुन्दरियाँ चीन आईं, जिनको इस प्रकार शिक्षित किया गया था कि वे अपने रूप-जाल में यहाँ के नवयुवकों को फाँसकर उन्हें भुलावे में रखें। भारतीय सेना के सैनिक जवानों को चीन का अनुयायी तथा भक्त बनाने का कार्य वे विशेष तत्परता से करती थीं। सूया सबमें चतुर थी, इसलिए वह एक मनचले सैनिक जवान को अपना प्रेमी बनाने में सफल हो गई, और उससे उसने अपना विवाह कर लिया तथा भारतीय नागरिकता प्राप्त कर ली। इस सफलता से उसकी महत्वाकांक्षा आगे बढ़ी, और वह यहाँ की राजनीति में भी प्रवेश करने के मनसूबे बाँधने लगी। उसके इस प्रयास को 'चीनी-अजदहा' ने सराहा, और आर्थिक सहायता के लिए अपना कोष खोल दिया। सूया ने इस अवसर पर मुझे वचन दिया था कि वह गुप्तरूप से मेरी प्रणयिनी बनेगी, यदि मैं उसको दिल्ली कारपोरेशन का मेयर बनाने में मन, वचन, कर्म से उसकी सहायता करूँगा। इस कार्य में मैंने अपना वह सब पैसा भी खर्च कर दिया, जो मैंने चीनी-अजदहे की सेवा करते जोड़ा था। मेयर होते ही सूया की आँखें फिर गईं, और वह मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र रचने लगी। यही नहीं कि उसका विश्वासघात मुझे ही तक सीमित रहा हो, वह अजदहे के साथ भी विश्वासघात

करने पर उतर आई। उसने स्पष्ट शब्दों में कहा कि दिल्ली स्थित चीनी-अजदहा का कार्यालय बन्द कर मैं भारत छोड़ कर चीन चला जाऊँ, और मेरा कटु उपहास भी करने लगी। मैंने चीनी अजदहे के अधिकारियों को उसके हृदय परिवर्तन की सूचना दी, किन्तु जो व्यक्ति वहाँ से आया, उसे सूया ने अपनी चालाकी से मेरे विरुद्ध कर दिया। वह मुझे दिल्ली से स्थानान्तरित करने की योजना बनाने लगा, किन्तु किसी प्रकार मैंने कुछ दिनों के लिए दिल्ली में रहने की अनुमति प्राप्त कर ली। सूया मुझसे बचने के लिए काश्मीर भाग आई, किन्तु जब उसकी सूचना मुझको मिली तो मैं भी उसका अनुसरण करता हुआ वहाँ आ गया, और लेह में उसे जा पकड़ा। उसी दिन चीनी अजदहा संघ का मुख्य अधिकारी तिनलिन शिष्टमंडल के उन अवशिष्ट व्यक्तियों को लेकर लेह आया, जो वहाँ रोक लिए गए थे। सूया उसी से मिलने तथा मेरे विरुद्ध अनेक आरोप लगाने के लिए छिप कर लेह गई थी। तिनलिन से मिलने के पूर्व ही मैं उसे मार डालना चाहता था। पहले मैंने योजना बनाई थी कि किसी दिन अवसर पाकर मैं उसकी हत्या कर पहाड़ी रास्ते से चीन भाग जाऊँ, या फिर छिपकर पुनः भारत चला आऊँगा, परन्तु उसी दिन अकस्मात् तिनलिन के आ जाने से मुझे अपने काम में शीघ्रता करनी पड़ी, और मौका पाकर एक शून्य स्थान में जहाँ वह अपने पति के साथ बैठी थी, गोली मार दी। उसके पति ने मेरा पीछा किया, और मैंने उस पर वार किया, किन्तु वह खाली गया, और मैं चरवाहों के आ जाने से पकड़ लिया गया। इसके पश्चात् जो कुछ हुआ वह सब प्रकट है। मैं अपना अपराध मुक्त कंठ से स्वीकार कर रहा हूँ, क्योंकि मैं अब जीवित रहना नहीं चाहता, तथा मैंने विश्वासघात का प्रतिशोध ले लिया है, और चीन का उद्देश्य सफल हो गया है, अतएव मैं प्रसन्न मन से फाँसी पर झूलने को तैयार हूँ। चीन विजयी हो, दीर्घजीवी हो, उसके शत्रुओं का नाश हो।'

जब इस बयान की प्रतिलिपि समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई, तब समस्त देश में चीन के विरुद्ध आक्रोश का वातावरण बन गया, और 'हिन्दी-चीनी

भाई-भाई' के नारों से जो सद्भाव दोनों देशों में उत्पन्न हुआ, कर्पूर की भाँति उड़ गया। भारत की आँखें खुलीं, और भारतीय जनता चीन के विश्वासघात का प्रतिशोध लेने के लिए आकुल होने लगी।

२३

केसर कुँवर के श्रीनगर आ जाने से मंजुला को सबसे अधिक उल्लास हुआ, किन्तु जब उसे बिरजू के गोद लिए जाने का हाल मालूम हुआ, तो वह कुछ क्षुब्ध हुई। केसर कुँवर वस्तुस्थिति को प्रकट करने में सर्वथा असमर्थ थी, और इसी प्रकार प्रकाश कुँवर तथा कर्नल वेदप्रकाश भी उससे अपना वास्तविक सम्बन्ध बताने में अक्षम थे। अतएव वे दोनों बिरजू को समाज में वह स्थान दिलाने की क्षमता नहीं रखते थे, जो उसका न्यायोचित अधिकार था। अपनी जननी के पास रहता हुआ भी वह मातृहीन था और एक ही पिता से उत्पन्न भाई उसके पिता का नाम बताकर प्रकट रूप में भाई स्वीकार करने के लिए प्रस्तुत न था। माता-पिता का ज्ञान न होने के कारण वह सनाथ होता हुआ भी समाज-विधान का शिकार बनकर अनाथ कहलाने का अधिकारी बना रहा।

निशातबाग के समीप जिस कोठी में लाला मनोहरलाल अपने परिवार के साथ ठहरे थे, और उनके साथ कर्नल वेदप्रकाश का परिवार भी रहता था, केसर कुँवर के आ जाने से, उसमें रहना उन्हें अनुचित प्रतीत हुआ, और वह पड़ौसी की एक दूसरी कोठी में रहने के लिए चले गए। अभी तक मंजुला कुछ दबी-दबी-सी रहती थी, और उसे एक ऐसे साथी का अभाव बराबर खटकता रहता था, जिससे वह अपने मन की बात निःसंकोच होकर कह सकती। केसर कुँवर को पाकर उसका वह अभाव दूर हो गया, और वह भी उसे पाकर इस प्रकार सन्तुष्ट हुई, मानों उसे खोई हुई वस्तु मिल

हो। बिरजू का रहस्य प्रकट हो जाने से उसके जीवन में एक आमूल परिवर्तन घटित हुआ, तथा उनकी वासनाएँ बिल्कुल नए रूप में बदलकर उसे वह शान्ति तथा आन्तरिक सुख प्रदान करने लगी, जिनका अनुभव उसने अपने जीवन में कभी नहीं किया था। अपने जीवन का चिर संचित प्यार वह बिरजू पर उँड़ेलनें लगी, और जब वह उसके मुख से 'माँ' का सम्बोधन सुनती तो वह गद्गद हो जाती, किन्तु मंजुला उसे मामा के रूप में स्वीकार करने में एक अजीब कुंठा अनुभव करती, और वह उसे बिरजू कहकर पुकारती, और पहले जैसा शासन करती थी। केसर कुँवर को उसके उस व्यवहार से अब मार्मिक पीड़ा होने लगी, किन्तु मंजुला की शोखी को दबाना भी उसकी शक्ति के बाहर था।

कैप्टेन अर्जुनसिंह बराबर अनमने, व्याकुल तथा चिन्तित रहते थे। उन्हें अपने ऊपर इतनी ग्लानि थी कि वह खुलकर किसी से बात नहीं करते थे, और प्रायः सबसे मुँह छिपाया करते थे। वह दिल्ली चले जाना चाहते थे, परन्तु चिनसिन्ह का मुकदमा समाप्त होने के पहले वह असमर्थ थे, इसलिए एक कैदी की भाँति अपना जीवन बिता रहे थे। जब प्रमोद ने अनुभव किया कि वह उससे कतरा कर आते-जाते हैं, तथा उसके साथ खुलकर वार्तालाप नहीं करते, तब वह भी उनसे दूर-दूर रहने लगा। अमृता भी अपने भाईके स्वभाव-परिवर्तन से दुखित रहती, किन्तु वह उसकी कोई सहायता करने में असमर्थ थी। उसने समस्त घटनाओं का विस्तृत विवरण अपने पिता ज्वालासिंह को लिख भेजा, और उनसे श्रीनगर आने की प्रार्थना की। ज्वालासिंह के मन का मैल दूर नहीं हो सका, और उन्होंने लाला मनोहरलाल से पत्र द्वारा प्रार्थना की कि जब वे दिल्ली आवें, तो अमृता को साथ ले आवें, तथा उस मध्यावधि में वह अपने को उसका संरक्षक समझें।

केसर कुँवर के आ जाने से प्रकाश कुँवर से मन में मंजुला के विवाह करने की उतावली पुनः उग्र हो गई। उसे अमृता आदि से, और स्वयं मंजुला की चेष्टाओं से विदित हो गया था कि प्रमोद के प्रति उसका लगाव है। उसने कर्नेल साहब से इस विषय में कुछ कहने के पूर्व अपनी माता से परा-

मर्श करना उचित समझा, और जब उसका अनुमोदन प्राप्त हो गया, तब उसने उनसे बात की। कर्नल साहब ने बड़ी प्रसन्नता से इस सम्बन्ध का अनुमोदन किया, तथा तीनों के एकमत होने पर करुणासुन्दरी के समक्ष एक दिन एकान्त में केसर कुँवर ने मंजुला के विवाह का प्रस्ताव रखा। वह भी दामिनी से वस्तुस्थिति जान चुकी थी और लाला मनोहरलाल से परामर्श करने के लिए उसने आश्वासन दिया।

जब दामिनी, सुशील की उपस्थिति में करुणासुन्दरी ने प्रमोद के विवाह की चर्चा चलाई तब मनोहरलाल ने कोई आपत्ति प्रकट नहीं की, बल्कि एक प्रकार से उसका स्वागत किया, क्योंकि यह अपनी सन्तानों का विवाह अन्य जाति में कर एक आदर्श समाज के सामने उपस्थित करने की कामना रखते थे। उनके जीवन में सक्रियता साकार होकर उतरी थी, और वह कथनी से अधिक करनी में विश्वास करते थे। मंजुला के साथ विवाह-सम्बन्ध पक्का करने के पूर्व वह प्रमोद का स्पष्ट अभिमत भी जानना चाहते थे, इसलिए उन्होंने करुणासुन्दरी को उसका भार सौंपा।

जबसे मंजुला पृथक् कोठी में जाकर रहने लगी थी, वह दामिनी तथा अमृता से भी दूर-दूर रहती थी, तथा वह उनके निवासस्थान में नहीं आती-जाती थी। वे दोनों भी उसके इस परिवर्तन को लक्ष्य कर रही थीं, किन्तु इससे उनको कोई दुख नहीं, वरन् सन्तोष ही होता था।

एक दिन चिनमिन्ह के मुकद्दमे में कैप्टेन अर्जुनसिंह का बयान सुनकर जब वे दोनों लौट रही थीं, तब दामिनी ने कहा—'देखो, आज भी मंजुला कैप्टेन का बयान सुनने के लिए नहीं आई। आज तो उसको आना ही था।'

अमृता ने हंसकर उत्तर दिया—'उसे अब भैया से कोई लगाव नहीं रहा है।'

'किन्तु मेरा विचार इसके विपरीत है। उसके मनमें शायद अब भी कैप्टेन के प्रति कोई कोमल भावना बाकी है।'

'नहीं, तुम्हारा अनुमान बिल्कुल गलत है। कोमल भावना नहीं, वरन् घृणा और क्रोध की भावना हो सकती है। लड़की उसको कभी क्षमा नहीं

करती जिसके द्वारा वह अपमानित और लांछित होती है। भैया ने उसको ठुकराकर उस विदेशी विषमुखी से विवाह किया था। भला ऐसी परिस्थिति में उसके मन में भैया के प्रति क्या किसी प्रकार की सहानुभूति भी उत्पन्न हो सकती है ?

'हां, तुम्हारे कथन में सत्य का बहुत बड़ा अंश हो सकता है। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम लोगों ने कैसे यह विवाह-सम्बन्ध स्वीकार किया था ?'

'हमारे परिवार में किसी ने स्वीकार नहीं किया था। ममी और डैडी उसमें शामिल भी नहीं हुए। उनके विवाह की कोई रस्म हमारे हिन्दू शास्त्रों के अनुसार नहीं हुई थी। वे दोनों एक दिन जाकर न्यायालय में अपने विवाह की रजिस्ट्री करा लाए, और भोज के निमंत्रण-पत्र में डैडी को लोक-लाज के भय से अपना नाम देना पड़ा था। विवाह होने के बाद उन दोनों के रहने के लिए एक पृथक् कोठी दे दी थी, और न ममी कभी अपनी पुत्र-वधू से मिलने गई, और न वह कभी हमारे यहाँ आई।'

'किन्तु यह स्वीकार करना पड़ेगा कि सूया थी बड़ी चतुर गुप्तचर। उसका भेद उसकी मृत्यु के बाद खुला।'

'चीन में रहते हुए हमें लू के कथन से कुछ आभास मिल गया था।'

'परन्तु उसके पत्र को जो उसने लू को प्रमोद भैया के प्राण लेने के लिए लिखा था, भारत में आने के उपरान्त ही पढ़कर हम उसकी असलियत जान पाए थे और शायद उस समय तक वह चिनमिन्ह की गोली का शिकार हो चुकी थी।'

'हाँ, यह सम्भव है, परन्तु यह कितने बड़े आश्चर्य की बात हुई कि सूया का प्राणान्त उसके एक साथी गुप्तचर के द्वारा हुआ।'

'बहिन कुकर्मों की प्रतिक्रिया इसी भाँति हुआ करती है। सूया ने विवाह होने के पूर्व जो कुछ किया वह अपने देश के हित में किया, अतएव वह किसी क़दर क्षम्य हो सकता है, परन्तु भारतीय नागरिक होने के पश्चात् तो वह उसका विश्वासघात ही कहा जायगा, जो उसने अपने देश, अपने

पति के विरुद्ध किया।'

'आदि से अन्त तक यह विश्वासघात की कहानी तो है। चीन ने भारत के साथ विश्वासघात किया, सूया ने अपने पति के साथ विश्वासघात किया, चिनमिन्ह ने सूया और अपने संघ 'चीनी अजदहे' के साथ विश्वासघात किया······।'

'और कैप्टेन ने तुम्हारे माता-पिता, तथा मंजुला के साथ विश्वास-घात किया। तुम यह क्यों विश्वासघातों की माला में इस महा विश्वास-घात को पिरोना भूली जाती हो ?'

'नहीं, मैं कहने जा रही थी कि तुमने मेरी बात काट कर कह दी। मंजुला का पक्ष तुम अब लोगी, क्योंकि वह अब तुम्हारी भाभी बनने वाली है।'

'अभी इस विषय में मैं कुछ नहीं कह सकती, क्योंकि इधर प्रमोद भैया बड़े अस्थिर तथा चिन्तित दिखाई देते हैं।'

'मंजुला से विवाह की चिन्ता हो सकती है, और उसमें जितनी देर होती जाती है, उतनी अस्थिरता बढ़ना स्वाभाविक है।'

'परन्तु मेरा ऐसा अनुमान नहीं है। चीन में जो कुछ उन्होंने देखा-सुना और यहाँ पहुँच कर सिर मुड़ाते ही जो ओले उनके सिर पर गिरे, उनसे उनकी मानसिक अवस्था में मुझे घोर परिवर्तन दिखाई देने लगा है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वह चिनमिन्ह की मुकद्दमे की सुनवाई समाप्त होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, इसके पश्चात् वह ऐसा कोई कदम उठाने वाले हैं, जिनसे हम सबको विस्मित होना पड़ेगा।'

'क्या वह भी मंजुला के साथ विश्वासघात करने की योजना बना रहे हैं ?' कहती हुई अमृता हँस पड़ी।

'कोई आश्चर्य नहीं, शायद ऐसा भी हो सकता है कि वह मंजुला से विवाह न करें। जो बादल उनके मस्तिष्क में घुमड़ रहे हैं, उनसे प्लावन की आशंका मुझको हो रही है। जो कुछ होनहार है, वह स्वयं समक्ष आयेगा। अपनी कोठी आ गई, इसकी चर्चा अभी किसी से न करना।'

मोटर रुकने पर वे दोनों उतर कर कोठी के लान की ओर अग्रसर हुईं।

२४

डाक्टर चिनमिन्ह के मुकद्दमे का फैसला सुना दिया गया, और उसे प्राणदण्ड मिला। न्यायाधीश का निर्णय सुनकर वह किंचितमात्र भी खिन्न नहीं हुआ, और अपने सब परिचितों से उसने हाथ जोड़कर नमस्कार कर अन्तिम विदा माँगी। उसके मुखपर व्यंग्यपूर्ण मुस्कान खेल रही थी, तथा उसके नेत्र उज्ज्वल आभा से दीप्त थे। उसने सबसे विदा माँगते हुए चिल्लाकर कहा—'चीन चिरजीवी हो। मृत्युदण्ड के लिए मैं भारत का आभार मानता हूँ, क्योंकि मैं उन सब यन्त्रणाओं से बच गया, जो मुझे चीनी अजदहे के संचालकों द्वारा मिलती। मुझे सन्तोष है कि चीन का अभीष्ट संकल्प पूर्ण हो गया है। कूटनीतिक सफलता के साथ मैं अपने प्राणों का त्याग करूँगा, इससे उसकी पीड़ा मुझे व्याप्त नहीं होगी। जय चीन, जय पीतांग जाति।'

निर्णय सुनने के लिए प्रमोद आदि सभी आए थे। कैप्टेन अर्जुनसिंह भी उनके साथ एक कोने में खड़े थे। जब चिनमिन्ह की दृष्टि उनपर पड़ी तब उसने मुस्कराते हुए कहा—'कैप्टेन, आपकी मुद्रा से ज़ाहिर होता है कि आप सूया की मृत्यु से बहुत दुःखी हैं, और मेरे प्रति आपका द्वेष किसी प्रकार कम नहीं हुआ है, आपको वस्तुस्थिति का ज्ञान नहीं है, और सैनिक होते हुए भी आप ज़रूरत से ज्यादा भोले हैं। आप नहीं जानते कि सूया ने आपको किस प्रकार ठगा है। वह आपको सदैव एक विशेष औषधि भोजन या मदिरा में मिलाकर खिलाती रही है, जिससे आपकी विचार शक्ति कुण्ठित हो गई और आप उसकी इच्छा के विपरीत कुछ भी करने में

असमर्थ हो गए। इस औषधि का निर्माण हम लोगों ने अफीम तथा अन्य चीनी औषधियों के संयोग से किया था। किसी समय चीन बहुत विलासी था। अफीम का प्रचार सर्वत्र था। चीनी हकीमों ने सम्राटों के आदेश पर ऐसी कई औषधियाँ बनाई थीं, जिससे मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट तथा प्रतिरोध शक्ति नष्ट हो जाती थी। सूया उन्हीं औषधियों में से एक का उपयोग कर आपकी विवेक शक्ति को पंगु बनाया करती थी। उसके निरन्तर सेवन से आप एक दिन सहसा मर जाते, और आपकी मृत्यु उस समय होती, जब आपके पिता की हत्या करने में वह सफल हो जाती। अभी उसका ध्यान अन्य दिशा में था, इसलिए आपके पिता के प्रति हमारा आक्रमण स्थगित कर दिया गया था। मैंने सूया की हत्या कर दरअसल आपका तथा आपके पिता की जीवन-रक्षा की है। सूया वास्तव में चीनी नागिन से भी अधिक भयंकर थी—उसकी मोहिनी कान्ति में भयंकर विष छिपा हुआ था।' फिर प्रमोद की ओर संकेत करते हुए कहा—'आप भी तो उसके भयंकर पंजे में लगभग फँस चुके थे, और धूपदान में, धूम में जो आपके नासारन्ध्रों में प्रवेश कर रहा था, वह औषधि मिली हुई थी। उससे आप उसके जाल में फँस जाते, किन्तु आपकी अलौकिक शक्ति और मनोनिग्रह ने आपकी रक्षा की। सूया यदि जीवन में किसी से पराजित हुई है, तो वह आपसे। आप कैसे जीवित चीन से लौट आए, इसका भेद नहीं जानता, किन्तु अनुमान होता है कि तिनलिन ने अवश्य लू को आपके प्राण हरण की अनुमति नहीं दी, वह भी शायद किसी राजनीतिक उद्देश्य से। चीन से लौट आने पर आपको बधाई देता हूँ। अच्छा, विदा, अन्तिम विदा।'

यह कहकर वह सैनिकों के साथ मुस्कराता हुआ चला गया। सभी उपस्थित दर्शकों की दृष्टियाँ उन दोनों पर स्थिर हो गईं और पत्रकार प्रमोद को घेरने लगे। उनसे बचकर निकलना कठिन हो गया, परन्तु भीड़ के मध्य घुसकर लुकते-छिपते वे वहाँ से निकल भागे।

रास्ते में अर्जुनसिंह ने पूछा—'क्या सूया ने आप पर भी मोहिनी चक्र चलाया था?'

प्रमोद ने हँसकर कहा—'अब उसकी चर्चा करना असंगत है। मृत व्यक्तियों की बुराई करना हमारी हिन्दू संस्कृति के विरुद्ध है। उसके गुरु-तर से गुरुतर अपराधों पर पर्दा डाला जाता है।'

कैप्टेन मलिन मुस्कान के साथ चुप होकर विचार मग्न हो गए।

× × ×

दूसरे दिन प्रातःकाल प्रमोद ने कर्नल वेदप्रकाश की कोठी में जाकर सबको तीसरे पहर अपने यहाँ आने के लिए आमंत्रित किया। कारण पूछने पर उन्होंने ज़ाहिर किया कि वह एक अन्तरंग सभा का आयोजन कर रहे हैं, जिसके समक्ष वह अपने कुछ विचार रखना चाहते हैं। कर्नल साहब ने उसमें सम्मिलित होने का वचन दिया। इसी प्रकार उसने कैप्टेन अर्जुनसिंह को भी उस समय उपस्थित होने का अनुरोध किया।

तीसरे पहर सबके उपस्थित हो जाने पर प्रमोद ने कहा—'भारत पर जो विपत्ति के बादल मँडरा रहे हैं, उससे आप भलीभाँति परिचित हैं। चीन ने जिस प्रकार भारत की पीठ में छुरा भोंका है, वह विश्वासघात की घटना ज्वलन्त शब्दों में इतिहास में लिखी जायगी। जिस प्रकार हमने हिन्दी-चीनी मैत्री को बढ़ाने में अपना सहयोग देकर चीन को अपनी भूमि पर अधिकार जमाने का अवसर दिया, अब हमें उसी भाँति उसका प्रायश्चित भी करना है। कैप्टेन अर्जुनसिंह, अमृता, दामिनी, मंजुला और मैं इस विश्वासघात के विशेष रूप से सहायक बने हैं—अतएव प्रायश्चित करने का भार भी हम पाँचों पर है। हम पाँचों अविवाहित, और तरुण हैं। हमारी शक्तियों की सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती। यदि हममें लगन है तो हम इस दुस्तर कार्य को पूर्ण करने में समर्थ होंगे। मेरा अपने इन साथियों से निवेदन है कि हम लोग भारत के प्रत्येक घर में जाकर एक-एक सैनिक की माँग करें, जो स्वदेश-रक्षा के लिए अपने प्राणों की बलि चढ़ाने में आगा-पीछा न करें। यदि चीन की आबादी साठ करोड़ है तो भारत की भी जनसंख्या चालीस करोड़ है। वे आक्रमक हैं, और हम रक्षक। आक्रमक का बल केवल पशुबल पर आधारित होने से वह पंगु है, क्योंकि उसकी आधार-भूमि अन्याय, प्रति-

हिंसा और निम्न कोटि का स्वार्थ है। इसके विपरीत रक्षक की शक्ति न्याय, अहिंसा और सत्य पर आधारित होने से वह अजेय है। हमारे पास आधुनिक संहारक अस्त्रों की भले ही कमी हो, किन्तु हमारी दृढ़ता उनके समक्ष अभेद्य कवच बनकर उन्हें विफल बनाएगी। हिटलर ने केवल छः साथियों से नाज़ी पार्टी की नींव डाली थी। उसी पार्टी की सहायता से अन्त में वह जर्मनी पर अधिकार जमाने में समर्थ हुआ, तथा उसने विश्व को अपनी शक्ति से स्तंभित कर दिया। इस उदाहरण से मेरा संकेत उन छः व्यक्तियों की लगन से है। यदि हम सत्य लगन से इस कार्य का बीड़ा उठा लें, तो हम भारत में एक ऐसी सेना तैयार करने में समर्थ होंगे, जो चीन को यदि वह हमारी भूमि हमें शान्ति से लौटा नहीं देता, तो हम बल प्रयोग से अपनी भूमि से हटा दें। बोलिए, प्रायश्चित के लिए आप लोग तैयार हैं। हमें विश्वास है कि हमें अपने गुरुजनों का आशीर्वाद प्राप्त होगा, और उसके बल से हम निस्सन्देह सफल होंगे।'

लाला मनोहरलाल के नेत्र उल्लास से चमकने लगे। उन्होंने गद्‌गद कंठ से कहा—'यह भार अकेले तुम लोगों को ही नहीं वहन करना पड़ेगा। मैं यद्यपि वृद्ध हो गया हूँ, रोगों ने मेरी शक्ति खोखली कर दी है, परन्तु अब भी इतनी शक्ति अवशेष है कि मैं तुम्हारे साथ कन्धा से कन्धा भिड़ाकर इस जागरण-यज्ञ में अपने जीवन की आहुति दे दूँ। बेटा प्रमोद, आज तुमने मेरे उस आन्तरिक विषाद तथा सन्ताप को दूर कर दिया जिससे मैं जर्जरित हो रहा था। तुम्हारे कर्तव्य ज्ञान से मेरा रोम-रोम पुलकित हो रहा है, और तुम्हारी प्रेरणा से वह स्फूर्ति उत्पन्न हुई है कि मैं एक बार पुनः रणभूमि में अवतीर्ण होने के लिए कटिबद्ध हो गया हूँ।'

कैप्टेन अर्जुनसिंह ने कहा—'मैं प्रायश्चित के लिए तैयार हूँ प्रमोद भाई! जिन सैनिकों को मैंने चीन का मित्र बनाया था, उन्हें उसका शत्रु बनाकर अपने पापों का प्रायश्चित करूँगा।'

दामिनी, [illegible] ने भी उठकर प्रतिज्ञा की—'हम भी चीन के विश्वासघात के प्रतिकार के लिए अपना जीवन अर्पित करती हैं।'

सबके अन्त में मंजुला भी उठ खड़ी हुई। उसका शरीर काँप रहा था, किन्तु दृढ़ स्वर में बोली—'और मैं भी आप लोगों के साथ हूँ।'

प्रमोद का चेहरा उल्लास से चमकने लगा।

केसर कुँवर तथा प्रकाश कुँवर एक साथ बोल उठीं—'और मंजुला का विवाह?'

प्रमोद ने शान्त स्वर में उत्तर दिया—'माँ जी, रणभेरी जब बजती है, तब विवाह नहीं हुआ करते। शहनाई बजने का समय आने दो, विवाह भी हो जायेंगे।'

करुणासुन्दरी ने कहा—'बहिन, यह संकट टलने दो, प्रमोद और मंजूला का विवाह तो सम्पन्न होगा ही। वह हमारी वाग्दत्ता वहू हो चुकी है।'

कर्नल वेदप्रकाश ने लाला मनोहरलाल के पास आकर कहा—'भाई, वर्षों पहले हमारा और तुम्हारा रास्ता पृथक् हो गया था। भगवान् की इच्छा से हम दोनों का पुनः उसी भाँति मिलन हुआ है, जैसे दो नदियाँ विभिन्न क्षेत्रों में प्रवाहित होती हुई एक स्थान पर मिल जाती हैं। सेना की सेवा से अवकाश लेने का समय आ गया है, इसलिए मैं भी आपके नेतृत्व में इस महाजागरण के पुनीत कार्य में अपनी सेवाएँ अर्पित करता हूँ। मैं उन युवकों को सैनिक शिक्षा दूँगा, जो देश पर बलिदान होने के लिए अभियान करेंगे।'

लाला मनोहरलाल ने गद्गद् होते हुए कर्नल साहब को अपने हृदय से लगा लिया।

प्रमोद ने जयघोष किया—'जयहिन्द! जय भारत!'

सबके कंठों से जयनाद की तुमुल ध्वनि आकाश को कम्पित करती हुई चीन को चेतावनी देने के लिए उत्तर की ओर अग्रसर हुई।